

डा. राधाकृष्णन

पूर्व

और

पश्चिम

कुछ विचार



राजपाल बुक स्टोर, दिल्ली

EAST AND WEST : SOME REFLECTIONS

का हिन्दी अनुबाद

'बैटी स्मारक व्याख्यानमाला'
प्रथम भाग

अनुबादक
रमेश वर्मा

मूल्य
प्रथम संस्करण
प्रकाशक
मुद्रक

1

पाँच रुपये
जनवरी १९९२
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली
हिन्दी मिडिय प्रेस दिल्ली

दो शब्द

वैदिकविश्वविद्यालय ने बीटी व्याख्यानमाला के उद्घाटन का प्राणम देकर मुझे सम्मानित किया है। गत अक्तूबर मास में जो व्याख्यान मैंने वैदिकविश्व विद्यालय में किये थे उन्हींकी विषयवस्तु प्रस्तुत पुस्तक में है। प्रथम व्याख्यान मे भारतीय संस्कृति की मूल प्रकृति का वर्णन है। दूसरा व्याख्यान पश्चिमी संस्कृति पर है तथा दो भागों में विभाजित है। पहिले भाग में मूलान संस्कृतिया रोम मिस्र धीरे धीरे ईसाई धर्म के धारण का विवरण है और दूसरे भाग में ईसाई मिश्रित इस्लाम धर्मबुद्ध पौरख्य बाद पुनर्जागरण सुधार तथा प्राकृतिक विज्ञान एवं प्राकृतिक धर्म के उदय का। तीसरे व्याख्यान में उन संस्कृतियों की व्याख्या है जिनमें प्रायः पूर्वे धीरे पश्चिम दोनों परेमान हैं तथा एक सृजनतात्त्विक धर्म की प्रावश्यकता पर जोर दिया गया है।

तीन व्याख्याओं में इतिहास के सम्बन्ध-सम्बन्ध बातों का अध्ययन समभव है। केवल कुछ प्रमुख अंगों को लिया जा सकता है। इतक ज़ुमाव में भी व्यक्तिगत रचि परिलक्षित होगी तथा व्याख्यान अनिवार्यतः सगड़ी। इस व्याख्यानमाला का श्रीचिन्तन केवल बड़ी है। मैंने समय रवान धीरे ज्ञान की नीमाओं को दृष्टि में रखते हुए विषय का निरूपण अपने हृदय से किया है। मुझे आशा नहीं कि सभी मुझसे सहमत होंगे किन्तु यदि इनके धर्म्य लोगों का विचार करने की प्रेरणा मिली तो मैं अपना परिचय सफल समझूँगा।

गत अक्तूबर मास में वैदिकविश्व में मुझे अविस्मरणीय अनुभव हुए। इसका श्रेय त्रिनिपाल निरिम जम्म धीरे श्रीमती ईटीम जेम्स को है। उन्होंने प्रत्यक्ष सह्ययता से धीरे सपथम अक्षापूर्वक मेरी मुविधाओं का ध्यान रखा था।

बी. विल्ली
२० मई १९३३

सर्वपत्नी राजाकुम्भत

आमूल्य

'सर एडवर्ड बेटी स्मारक व्याख्यानमाला' की स्थापना डॉक्टर एच० ए० बेटी और मिस मेरी बेटी ने अपने चाई की स्मृति में की है तथा उन्होंने ही धारण्यक भवराशि का प्रबन्ध भी किया है। सर एडवर्ड बेटी ने १९२० से १९४१ ई० तक जब इस वर्ष बमला में उनकी मृत्यु हुई, वैरगिल विरवविद्यालय के कुसपति पद का दायित्व सम्भाला हुआ था। उन्होंने कष्टमात्र वर्षों में बनाया में वार्षिक समर्थन ही फिर सुरक्षित किया। दूसरे विरवपुत्र का भी धारण्य हुआ। कर्मचार कुसपतियों ने उनके नीचे काम किया तथा जो बार सम्भ संभव तक उन्हें ही प्रदायनिक दायित्व भी बहुत करना पड़ा। अन्त में मन्त्रालय के उन वर्षों में वैरगिल विरवविद्यालय के विकास का अभिप्रेत भय इस महान कर्ता-बासी की दूरदृष्टि और दृढ़ निश्चय का है। इस व्याख्यानमाला में उन्हींके नाम से स्थापित प्रदान किया गया है।

इस व्याख्यानमाला का उद्घाटन पूरे एक वर्ष तक स्थगित रहना पड़ा ताकि डॉक्टर राधाकृष्णन प्रथम बेटी स्मारक व्याख्यान बनना स्वीकार कर सकें। उनसे व्याख्यानों के प्रति जिन्हें इस पुस्तक में प्रस्तुत किया जा रहा है सोचों में किन्तनी रति भी यह हमी बान में व्यक्त है कि माटियाम के तीन हजार में अधिकाधिक विद्यार्थी और नागरिक प्रतिराशि उन्हें सुनने चाहते थे। योजनाओं की रति का एक घोर प्रमाण है। रेडपाप हाल में प्रथम अधिकाधिक स्थानों के लिए व्यवस्था नहीं है, अतएव योजना सर चाबेर बहुरी विन्नागियम-सामेरी की गण्य कृतियों पर बैठकर सुनने रहे। यहां पाठक भी टीचर नुनारी नहीं बनी थी। व्याख्यानमाला की गमालि पर के दर तक हांथवति करन रहे।

एच० किरिल बेम्स
प्रिन्सिपल एवं उपाध्याय
वैरगिल विरवविद्यालय

घापने मुझ दृष्टि ही। घब में घोर क्या करूँ?" घब में अगर के बीचोंबीच जमीन पर पड़ा एक बूझा घासमी बीसा। वह रो रहा था। उन्होंने उससे पूछा "तुम रो क्यों रहे हो? बूझ ने उत्तर दिया 'मॉर्डे' में मर गया था। घापने मुझे फिर जीवन दिया। घब में रोने के प्रभाव घोर क्या करूँ?"

हमारी वैज्ञानिक उपसाधन हमारे स्वास्थ्य समृद्धि प्रक्रियाय यहाँ तक कि स्वयं जीवन की सोमबोजिम सहायक तो होती है, सोक्राटिस उनका उपयोग बना करते हैं? अपनी बाल्या को पाराश या बासना में डब जाने देते हैं या सुगंध को मानने मयते हैं जिसके अनुसार बतना एक सबूट है और जीवन से अधिक धयस्कर मूल्य है।

हम कमी-कमी कहते हैं कि हाइड्रोजन बम शान्ति-स्थापना का धस्त बन सकता है क्योंकि उसकी विनाश-क्षमता पुत्र को रोकने में समर्थ है। हाइड्रोजन बम मानव के लिए एक शुनीधी है एक नवीन स्वभाव एक नवीन धार्मिक दृष्टिकोण के विकास की पुकार है। बिपटी ने घपने समय के नीजबानो को समाह दी थी कि वे कोय कम करें, बुरों को मलना न करें बुरों के उत्कृष्ट प्रयत्न विश्वास करने को तैयार रहें, हाइड्रोजन घोर करना जैसे पूर्वों का विकास करे।

२ पूर्व और पश्चिम

इतिहास पर व्यापक दृष्टि प्राप्त करने पर हमें पता लगता है कि प्राच्य जीवन सर्वत्र पारश्चात्य जीवन-सर्वत्र स भिन्न नहीं है। राष्ट्रीय धयबा महाद्वीपीय सभी विज्ञान के प्रमसुसक विज्ञान में जिधके अनुसार सभी प्राच्य एक प्रकार के हैं और सभी पारश्चात्य दूसरे प्रकार के धयिक सत्यता नहीं है। इस प्रकार के सरसरे बनसभ्य निची राष्ट्र के इतिहास की जटिलता का सकेत तो करते हैं, किन्तु वह बासव में जयने कहीं धयिक जटिल है। सचार्ड तो मह है कि पूर्वों घोर पश्चिमी जातिवों का प्रारम्भ एक ही प्रकार से हुआ था। घपनी प्रारम्भिक प्रबस्यार्थों से उन्होंने अपेक्षाकृत स्वतन्त्र दृष्टिकोणों का विकास किया और कुछ ऐसे सक्षम उपसभ्य किए जिनके कारण के परस्पर असम बीचने सये। घात्र बोनों एक ही समस्या का समाधान हूँकने में सये हैं और वह समस्या है मानसिक घोर धार्मिक मूर्खों के एकीकरण की। इन्हीं बोनों मूर्खों के पारस्परिक तनाव में ही इतिहास का धर्म घोर जडेरम निहित है। पूर्व घोर पश्चिम बोनों में धनिकिषण प्रति कूमवाए है और उन्हें हम करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। पूर्व घोर पश्चिम बोनों एक-दूसरे से धीलने नवीन धिरपरिवर्तनशील परिवर्धितवियों के घात्र धरीत से साथ पुनसभ्य कम धार्मिक बिदने क्या उस एक नया जीवन्त क्य देने को

प्रयत्नशील है। मार्क्सिस्ट मूल्यांकों पर मस्तिष्क की उपलब्धियों के बीच के तनाव को कम करने के प्रयास में ही हमें मानवीय आत्मा की प्रतिलिपि उद्घाटन और तब सिद्धि के उपस्रावण के इशान होते हैं। मात्र भी मानव की प्रथम आत्मा पीछे नहीं धाये देक रही है उन्हाई की ओर निरल रही है, तारा तक पहुँच रही है किर बाहे इसका मुख कितना ही अंधियन क्यों न हो और परिचाम कुछ भी हमें प्रयत्न करना हमारा बर्त है, असफलता से कुछ नहीं बिचकता क्योंकि असफलताएं ही सफलता की आधार हैं।

केवल तीन व्याख्यानों में पूर्व और पश्चिम के सम्बन्धों की सम्पूर्ण धक्का कमबठ व्याख्या प्रस्तुत करना संभव नहीं है। इसके लिए अिधते विस्तर अध्ययन और बुनाव-समस्या की आवश्यकता है वह मुझमें नहीं है। मेरा अहंस्प तो विमकुल सीमित है। मैं इस विस्तर समस्या पर कुछ विचार-मान प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

पूर्व और पश्चिम ऐसे शब्द हैं जिनकी ठीक-ठीक परिभाषा संभव नहीं। उत्तरी अमेरिका के 'इन्डियन' (आदिवासी) निरिच्छत रूप से अमेरिकावासी हैं क्योंकि वह भरती जनकी भी किन्तु मूलत्वधारणी जनका सम्बन्ध पूर्वी जातियों के साथ जोड़ते हैं। मात्र का अमरीका यूरोप का ही प्रलेप उसकी ही छाया है। अमरीका ने यूरोप की ही परम्पराएं प्राप्त की हैं और उसके ही सिद्धान्तों आर्थिक विद्वांसों अरिच और आचारसंहिता कानून की प्रथासियों और सरकार के ढांचे कसा और बिज्ञान को धपना मिया है। ऐम्पो-सैकसन उत्तरी अमरीका तथा सेंटिन मध्य और दक्षिणी अमरीका दोनों यूरोप के भी हैं और अरन भी। अमरीकाओं को छोड़ भी दें तो भी हम निरिच्छत रूप से नहीं कह सकत कि यूरोप कहाँ प्रारंभ होता है और एशिया कहाँ समाप्त। यूरोप वास्तव में एशिया के विद्यास भूभाग में जुड़ा हुआ एक सन्धा शैतिक प्रायद्वीप है और इसे वह नाम युमाधियों के दिया या जो इसे 'विज्ञान केनाथ' समझते थे। दसका समुद्रगत बहुत कटा-कटा तथा सन्धा है। दक्षिण में यह पश्चिमी एशिया व पूर्वी अमरीका से मिसा है तथा अरन में एशियाई युमान से संयुक्त है।

इस समस्या पर यदि हम इतिहास और संस्कृति के दृष्टिकोण से विचार करें तो हमें साम्य है कि अरस्तु सम्बंधित भाषाओं का एक परिवार—ईरा यूरोपियन—पश्चिमी आयरलैंड तथा स्कॉटलैंड के पठारों से गंगा और उगम भी धाये तक अजायिन का न जैना है और उनमें कहीं कोई अखरोप नहीं है।^१

१ इ यूरोपियन इन्डियन सम्बन्ध पर अमेरिका का एक अरन (१९२४), १३३ पृष्ठ, ३६९।

सम्भता के मन्त्रों पर पूरा या पश्चिम किसी का भी एकाधिकार नहीं रहा है।

पूनीशास्त्रों के अनुसार, १०० ईसापूर्व या कम से कम उसके अपने समय (४०० ईसापूर्व) में पहले कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं पटी।^१ यह समत है। ज्येठों से बहुत पहले ही एशिया के विभिन्न भागों—चीन ईरान और भारत—में मानव तथा उनकी संस्थाओं को निर्दोष बनाने की आवश्यकता पर विचार किया गया था। अरबुद्ध की चरित्रसंहिता का अर्थ ही भौतिक संसार पर ही नहीं आत्मा पर भी उद्गुणों की विषय दिखाना है और इसकी सहायता से ही यूनानी दर्शन परिपक्व हो सका। व्यक्तिगत मूल्य और सामाजिक भाषा-विचार पर अनुसूचित के विचार बलप्रतिष्ठ हैं।^२

किर मानव का अर्थ प्राणि-विशेष के रूप में हुआ और सम्भता उसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, जवनी। इस समय मानव के इतिहास में विद्यास परिवर्तन हुए। तब ८०० ईसापूर्व से २०० ईसापूर्व तक जिसे ब्रोकमर फार्म संस्था में 'पैग्रीव' बुन कहा है संसार के तीन विभिन्न भागों—भूमध्यसागरीय प्रदेश चीन और भारत—में दानों और बलों का विकास हुआ। इन विचार-प्रचामियों के मातीक बर्ण का लंदन किता और व्यक्ति की स्वामीता तथा 'सावमीय' के साथ उसके सम्बन्ध की पुष्टि की। प्रायःक मूल्य में बौद्धिक प्रपत्ति समाप्त परिस्थितियों—मनैक छोटे-छोटे राज्यों की सपस्थिति—के कारण हुई। राजनीतिक एकता स्थापित करने के प्रयत्न किए गए। सामान्तर प्राध्यात्मिक विकास वास्तव में मानवता की मूलभूत एकता का ही प्रमाण है। लगभग १५ वर्षों तक इन संस्कृतियों का सामान्तर विकास होता रहा। किर वैज्ञानिक और वाचिक उपनिषदों में चरित्रमी देशों में विद्यास परिवर्तन सा दिया और संस्कृतियों की मिश्रता स्पष्ट हो गयी।

अबोधों का अनुमान है कि भौतिक विषय का प्रारंभ चार या पाँच अरब वर्ष पहले हुआ था। उसके पहले न तो तारे थे और न परमाणु। पृथ्वी का अल्प समयप तीन अरब वर्ष पहले हुआ था। किर अमरा^३ दीहपापी तथा स्तनपापी

१ 'ए क्लैसिकल इन्वेस्टिगेशंस' सन्दर्भक : एन. जॉर्जस वाकर एन. जॉर्जस (१९१४) पृष्ठ ४६, पृष्ठ ८-१०।

२ विस्तृत है कि अन्वेषित और बेकर्मन रोमन ही मन्वृषी अरवनी, किछन का मन्वृषी की किछन में बकनत है, एक दोस्रो ही अन्वेषितिक को तुच्छ समझने हैं तत्काल के किछनी हैं सिधवास्तव को लखन का अन्विन अन्विन मानने हैं अन्विन-विशेष की संकलन-मालों के पूर्व किछन पर विस्तृत रखने हैं, और अन्विनन व अन्विननिक दुनों की विस्तृत लेख अरवों समूह करने हैं।

बस्तु पैदा हुए। बादमी इस ग्रह पर लगभग पांच लाख साल पहले आया। वह ध्वज प्राणियों से भिन्न मस्तिष्कीय प्राणी था। वह अपने सबसे नजदीकी रिश्तेदारों बलमानुषों से भी भिन्न था क्योंकि उसने पेड़ों पर रहना छोड़कर दो पैरों पर चलना शुरू कर दिया। मनुष्य अपने विद्युत् पैरों पर चलने लगा तो उसके पगल पैरों घोर पंखों को उड़के घीर का तार संभालने की प्राक्स्पर्शता न रही घीर ने अधिक मुकुमार काम करनेवाले हाथों में बरस गए। इस कारण वह सीबा बड़ा रहने घीर का प्रिय को नियंत्रित रखने लगा फलतः बाणी का विकास हुआ। किन्तु बादमी तथा दूसरे जानवरों के बीच का सबसे बड़ा अन्तर तो है बादमी के मस्तिष्क का आकार घीर का मानों अपने से पहले के जानवरों को पीछे छोड़कर बादमी तर्करहित जीवन के प्रयत्न से बाहर निकल आया घीर प्रकृत करने लगा, क्यों? यही एकमुक्त चेतनवादी प्राणुत्व है। वह सब सभी भौतिक शक्तियों का विचार नहीं है, बल्कि अपने मरिच्य के निर्माण में स्वयं भागी बनता है। जानवर अनुभव से घीर नकल करके ही सीखते हैं किन्तु अनुभव से सीखने की क्षमता का सर्वाधिक विकास बादमी में ही हो पाया है।

विचार-समता का पहला प्रकाशन हबियार बनीने में हुआ। यूरोप एशिया घोर अफ्रीका में हमें पूर्व प्लिस्टोसीन युग के परपर के हबियार मिले हैं जो बिलेप कामों के लिए बनाए गए थे।

जापाना घीर कस्तना विचार के संगी हैं। पूर्व पैरियोसिथिक युग में परपर के हबियारों के आकार घीर बनाकट में सुधार हुआ फलतः वे घीर अधिक उपयोगी तथा सुन्दर हो गए। उत्तर पैरियोसिथिक युग की कुलारमक समता के नमूने—छेबहार सीपियां घीर बाँप लकड़ीसीधर कगन तथा हापीदाँठ की नाक की कीलें—हमें आज भी मिलते हैं। सुधायों की बीमारों पर अधिक या लुटे हुए चित्तों से पता चलता है कि उस समय के बादमी तीन विमार्शवाले कुर्यों को दो विमार्शवाले चित्तों में प्ररिगत करने की योग्यता रखते थे। स्पष्ट है कि उन्हें परियेय तथा तत्सम्बन्धित प्रकाश के नियमों का ज्ञान था। विचारसमता घीर कस्तनासिन् दोनों सन्धिय थी। "आरचयंजनक वस्तुएं तो अनेक हैं किन्तु बादमी के बच्चे से बड़कर सबसे बड़ा, बिलक्षण कोई नहीं है" बहुत समय छोको बसीर का म्यानु कैबल विचारसमता, पध्यकलौसिता घीर स्वयं पर ही नहीं परन्तु कस्तनासिन् जैसे विचारों का मजबूत तथा समग्र घीर स्पान की पूरी को पार करके ज्ञान का नुरदान रखने घीर-अपारिण करने की शक्ता पर भी था। बलमानुष्य कृत्रियां भी व्यावहारिक घीर भौतिक हबियारों के उद्योग ही

पुरामी है।

नियमितिक युग में शामिल हुई। धारणी गाय-गवह करना चाहकर गाय उदात्त करने लगा। धनाज की ऐनी और पशुपालन में परिवर्तन के मुख्य कारण थे और इन्हींके कारण जनसंख्या ठीक से बढ़न लगी। इनमें एक नवीन धर्म-व्यवस्था का उदय हुआ। ऐनी गरुड़ी या कुशान में उमीन शोना फिर बेल या इनी तरह के दूसरे जातघरों द्वारा गीबे जानेवाले हथ का इन्तेजाम नवियों में सहरे भिन्न-रूप उमीन की निर्धारि करना—इन सबके कारण नये विषय का धारम्भ हुआ। नियमितिक जालि का धर्म है प्रकृति के प्रति एक नया तथा धार्मिक धारमशास्त्रक दृष्टिकोण। इस धर्म के मानकों में प्रकृतिप्रदल बीजों की शुभान शोकार न करके धरनी धारमपकनानुसार उगड़े बनना ली। उहोने प्रा दृष्टिक कन से न पायी जानेवाली इजिम बन्तुओं—जैस मिट्टी क बर्तन ईं कपड़—का निर्माण किया। उन्होंने पहिये बनाए के पशु-पालन करने धर बनाने और जमबायु के परिवर्तनों से धरनी रता करने के लिए मूनी या ऊनी कपड़े बुनकर या जमड़ा गिनकर पहनने के बरत बनाने लगे। स्वय को अनुशासित करके उन्होंने स्वामी समुदायों की नीब डामी। गाय-उत्पादन धर्मशास्त्री धारदरयक धर है और प्राण प्रमाथों स पता बनना है कि हमरा धारम्भ मिय और मध्ययुग में यूरोप के किसी भी स्थान से 'लगभग २० • साल पहले' हा बुका था।'

मानव-जीवन सह-सहित्य और सहयोग का संयुक्त जीवन है। यह सामुदायिक जीवन एक प्रकिया नहीं है, परिणय है जिसमें क्रियाएं प्रतिक्रियाएं होती हैं। महामस्मी के धने या बीजियों की बीबी की तरह सामाजिक या सध्यागी जीवन पर प्रकृतियों का नहीं बल्कि धर्म और उदरस का प्रभाव पड़ना है। इसी सांख्यिक समाज क कारण भूद (मिनिब-समाज बन आता है) भाया और संकनों तथा सामिक और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा यही पधार्य प्रकट होता है।

मासों बयों के धराप्य प्राप्ति विहास में मानव के निर्माण की रिण में निश्चित करम उटाए गए। उमकी गुणमा में विद्यमे छः हजार बयों का सिखित इतिहास धोड़े ही समय का है। उम सभ्य युगों में धनेक धाकार के मनुष्य बुनिया के विभिन्न भागों में रहने व और एक-दूसरे के धारे में उहें समिक भी जान न था।

यूरोप को केन्द्र मानकर पूर्व और पश्चिम का संस्तर बनसाया जाता है। जीगो

१. प्रोफेसर बी. एन्जलार का विचार है कि 'सम्पन्नत रम कन की है कि यूरोप में नियमितिक धर्मशास्त्र का प्रथम प्रवेष्ट मिचलर में हुआ था। रि मी. (से स्वीकृत करने है इस विचार का कोर निश्चिन प्रमाण नहीं मिलता।—'द क्राफिकल इन्डस्ट्रियस' पृष्ठ २१ (१९२४) पृष्ठ २१।

मोहनजोदड़ो का सर्वोत्कृष्ट समय ३५००—२०५० ईसापूर्व के बीच था। मगर योजनानुसार बसा था। तटीय फुट चौड़ी सड़कें पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण जाती थी। गलियों की चौड़ाई इनसे घापी थी। इमारतों पकी ईंटों और मिट्टी के गारे से बनी थी। अनेक इमारतों को कई मंजिलों की थी। मकानों में स्नानागार और नालिया का प्रबन्ध था। धार्मिक स्नानागार भी थे। नालियों के पाइप मिट्टी के थे—पकाकर, प्रापस में जोड़कर बनाए हुए। मिट्टी या पत्थर की टाबीडो से उनका सौम्य-प्रेम स्पष्ट है। उनपर कमकवार पालिख है जबवा धैर्य बाब हाथी या मयूर के चित्र कुदे हैं। बालबतों के चित्र मयातप्य हैं। वे छोटा चांदी सीसा ताबा घावि धातुओं का प्रयोग जानते थे। वे काँसे के सकर बनाता जानते थे। धारकपंथ नृत्य करती हुई एक मूर्ती की कांस्य-मूर्ति कुवाई से प्राप्त हुई है। चूड़ियाँ अंगत और नाक की कौनों भी मिली हैं तराजू मिले हैं जिनसे मामूम होता है कि तीसरे और मापने के उपकरणों का उन्हें ज्ञान था। गोटियाँ मिली हैं और एक तराजू का खेम बगों में बिभाजित तकती पर मोहरों से खेला जाता था। उन्हें कपास (या रई) को उपयोग में लाता जाता था।

मोहनजोदड़ो में प्राप्त धार्मिक धर्मोपों में माँ देवी की मूर्तियाँ हैं। इसके प्रतिरिक्त एक पुरय देवता की मूर्तियाँ भी मिली हैं जो परम्परागत चित्र की प्रतिरूप मामूम पड़ती हैं। स्पष्ट है कि धार्मिक हिन्दू धर्म की अनेक विशेषताओं के स्रोत अत्यन्त प्राचीन हैं। सर जॉन मार्सल ने तीन मुर्तों नामे एक देवता (त्रिमूर्ति) का चित्र किया है जो एक चौकी पर पधासन में ध्यानाभिम्यत बैठ हैं। वे मृगछासा पर धासीन हैं और उनको भेरे हुए हैं हाथी बाब नंडा और भंसा। महान वोगी चित्र की यह मूर्ति पांच-छः हजार वर्षों से भारत के धार्मिकतम अवन में प्रमुख स्थान ग्रहण किए हैं और इस तथ्य की प्रतीक है कि धार्मिकतम साहस पवित्रता जीवन में एकता और भाईचारे से ही पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। यही धारण हमें बरमारमा के चिन्तन में तीन उपनिषदों के दृष्टांतों में अज्ञान और ईर्ष्या को पराजित करनेवाले धाम्त एवं सौम्य बुद्ध में धार्मिकमार्ग के पदचान् मार्भमीम प्रेम में एकाकार हो जाने और धार्मिक अन्वयार्थ के अन्तर है। इन युग की मयालि के धार अर्थात् मोहनजोदड़ो के धार धार्मिक चिन्तनों में मूलक मया बुद्ध भी नहीं जाता था सारा है।

—बाल वेत्सर्न इन 'द मोरिजिन एरंड गेण अन्क दिस्ट्री', अमेरिजी अनुवाद (१९२६) पृष्ठ २०६।

१. इन्द्रजिबे धार इरोनटम ने 'बक धोये' का चित्र किया जिसमें कम नहीं लगे बकि मय के कम से मा अर्थात् अरहा अर बन्ध अन्क देता होता है अर्थात् चिन्ते करने के लिये करते हैं।

पुरानी है।

त्रिविध विद्युत् युग में शामिल हुई। धारवी प्राच-अवसृष्ट करना छोड़कर प्राच-उत्पादन करने लगा। धनाज की धनी और वसुधागत द्रव परिवहन के मुख्य साधन में धीरे-धीरे कारण जनमक्या तेजी से बढ़ने लगी। इनके एक नवीन चर्च-स्वरूपा का उदय हुआ। वैनी मच्छी या कुशाम में जमीन छोड़ना फिर बीस या इनी तरह के दूसरे जानवरों द्वारा घीसे जानेवाले इन का इस्तेमाल नदियों से महुरें निहासकर जमीन की सिंचाई करना—इन सबके कारण नये विद्युत् का धारण हुआ। त्रिविध विद्युत् शामिल का धार है प्रकृति के प्रति एक नया तथा धार्मिक धारमधारक दुःखकोश। इन युग के मानवों ने प्रकृतिप्रदान चीजों को बुझाए रहीकारन करके अपनी धार-योजनानुसार उन्हें बदला भी। उन्होंने प्राकृतिक रूप से न पायी जानेवाली हनिम वस्तुओं—बीटे मिट्टी के बर्तन ईटे कपड़े—का निर्माण किया। उन्होंने पहिये बनाए वे समु-यासन करने पर बनाने और जसबामु के परिवर्तनों से अपनी रक्षा करने के लिए मूनी या उनी कपड़े बुनकर या जसका घिसकर पहनने के बरक बनाने लगे। स्वयं को समु-यासित करके उन्होंने स्वामी समु-यासों की नींव डाली। प्राच-उत्पादन सम्पत्ता की धारमधारक धार है धीरे-धीरे प्रमाथों से पता चलता है कि इसका धारण मिस और मध्यपूर्व में क्रोस के किसी भी स्थान से 'लगभग २००० साल पहले' हो चुका था।

मानव-जीवन सह प्रतिस्तर और सहयोग का संयुक्त जीवन है। यह सामुदायिक जीवन बड़ प्रकिया नहीं है, परिणाम है जिसमें क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं होती हैं। मनुष्यवर्गी के धारों या चींटियों की बाबी की तरह, सामाजिक या सहयोगी जीवन पर प्रवृत्तियों का नहीं बल्कि धारें और उदय का प्रभाव पड़ता है। इसी सामाजिक धारमधारक कारण भू-मिति-समाज बन जाता है। भाषा और संकेतों तथा धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा वही धारमधारक प्रकट होता है।

साबों बपों के धारमधारक इतिहास में मानव के निर्माण की दिशा में निरिच्छत काम उठाए गए। उसकी तुलना में पिछले छः हजार बपों का निरिच्छत इतिहास बोड़े ही समय का है। उन लम्बे युगों में अनेक धारमधारक के समुच्च बुनिया के विभिन्न धारों में रहते थे और एक-दूसरे के बारे में उन्हें ठनिक भी ज्ञान न था।

यूरोप को केन्द्र मानकर पूर्व और पश्चिम का अन्तर बढनामा जाता है। भीषो

१ प्रोफेसर बी गगन चारण का विचार है कि 'सम्यक्ज्ञान इस बात की है कि क्रोस में त्रिविध विद्युत् संवेद्यता का अन्तः प्रवेश निकटतम से हुआ था फिर भी, १ दि धीरे-धीरे चलत है, इस विचार का कोई मिलित प्रभाव नहीं मिलता।—'२ क्रोसिकन इन्वेस्टिगेशन' पब्लिशर्स (१९२५) पृष्ठ ५१।

मित्र क्षेत्र सांस्कृतिक या नृसरव्याप्तियों इकाइयां नहीं होते।^१ पूर्व और पश्चिम दोनों में से कोई भी संमृष्ट इकाई नहीं है। दोनों में से प्रत्येक केवल एक घटक है जो विकास की विभिन्न बराधों में अनेक पृथक्-पृथक् भोगों और बर्णों के लिए प्रयुक्त होता है। दोनों की संमृष्टियों का प्रपत्ता प्रत्यक्ष व्यक्तिगत था। प्रपत्तान्त मुसलमान और ख्रिस्तिानो कैथलिक या भीमो वामोवासी और कंकवासी बीड में कोई समानता नहीं है। फ्रांस और जर्मनी तथा स्पेन और स्कैंडिनेविया के समान चीन, जापान और भारत का प्रपत्ता-प्रपत्ता प्रपत्त सांस्कृतिक विकास हुआ था। अतः पश्चिमी वा पूर्वी संमृष्टि कहने का कोई अर्थ नहीं क्योंकि उनका धारक होने पर भी उनके अनेक उपविभाग रहे हैं। फिर भी पश्चिमी अर्थ पर पश्चिमी संमृष्टि की उपसंमृष्टियों को परस्पर सम्मिश्रित किया जा सकता है, उसी अर्थ पर पश्चिमी और पश्चिमेतर संमृष्टियों को नहीं।

इतिहास पर व्यापक दृष्टि डालने पर हमें मान्य होना कि सम्पूर्ण मानव जाति और उसकी सामाजिक व्यवस्थाओं के कुछ मौलिक तथ्य होते हैं, जो हमारे विचारों की आधारभूत विवेक रखनेवासे अन्तर्गत से अधिक प्राथमिक है। फिर भी ये अन्तर्गत स्पष्ट हैं और किसी संमृष्टि को उसका रूप और विविधता प्रदान करते हैं। और संमृष्टि अपने सदस्यों को विपरीत विचारों से कियाधीन बर्णों के अन्तर्गत सूक्ष्म संतुलन के अन्तर्गत अत्यन्त समानता और इतना प्रदान करती है। अन्तर्गत, भारतीय संमृष्टि एक अर्थ एवं वैविध्यपूर्ण परम्परा है। अन्तर्गत और अन्तर्गत कला और साहित्य विज्ञान और मानव-विज्ञान के क्षेत्रों में एक महान अद्भुत प्रयास है।

किसी ऐतिहासिक संमृष्टि की बात करने का अर्थ है उसे अधिक उत्तरेवासे मुखा और विरवासी की बात करना उसके सामाजिक बांध का निर्धारण करने-वासी सामाजिक अर्थों की बात करना। अन्तर्गतियों का विस्तार है कि संमृष्टि अन्तर्गत के मौलिक अर्थों का बाहरी बांध मात्र है किन्तु वह अर्थ नहीं। केवल हिन्दू मारुत बीड एशिया पश्चिमी ईसाई-साम्राज्य वा मुसलमान समाज जैसे नामों से ही मान्य होता है कि प्रत्येक समाज की आधारभूतार्थ सामाजिक परम्पराएं हैं, अर्थव्यवस्था हैं। सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक व्यवस्थाएं और वैज्ञानिक विचारधारा सभी परस्पर अन्तर्गत से अर्थ हैं, जिनके अन्त-

१ क्षेत्र के साथ भौतिक क्षेत्रों के अन्तर्गत वा अन्तर्गत का अन्तर्गत अन्तर्गत, अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत, अन्तर्गत अन्तर्गत और अन्तर्गत में अन्तर्गत है।

पर ही मानव अपनी प्रकृति को इतना विषय और मानव प्रकृति और अर्थ व्यक्ति और समाज—पर विद्यमान ही पाता है। जब तक कोई समाज अपने पारसे पर अधिक रहता है तभी तक उसके जगत् और समाजिकता में अर्थ रहता है। विभागीय अहित हो जाने पर समाज का विकासिकोणक और निम्न होना जाता है। प्रति-बाध विन्यासी का परम्परा ही वास्तविक ज्ञान का मूल्य है। मनुष्य के चरणों में, संस्कृति कठोर होकर मनुष्यता ब्रह्म जाती है, एक निश्चय धारण प्रकृत कर लेती है जिसमें कोई और बन कराने की, यात्रे विकास की समता नहीं रह जाती। पुरानी और नई सभी मनुष्यता की अर्थ होती है। अतएव हमारे प्रभाव रहन है। पुराने समय में चीनी और हिन्दू मनुष्यता का सम्पर्क पश्चिमी संस्कृतियों के साथ था। इसी प्रकार पश्चिमी मनुष्यता का सम्पर्क चीनी और हिन्दू मनुष्यता के साथ था। विचारों का आदान प्रदान बहुत अधिक हो सका है जिसे उस सीमा तक स्वीकार करने की प्रकृति हममें नहीं है।

३ सिद्ध-साम्यता

विद्युत वेस्टकोट ने स्वर्णिम की सी० एच० एच० व से कहा था "भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच के अन्तर्देशीय सम्बन्धों के इतिहास का मूल्य किताब। यूनाइटेड किंगडम का अनुयायी था। उसी प्रकार भारत तथा एशिया का अनुयायी रहेगा।" भारत एशिया का अनुयायी होने का दावा नहीं करता और चीन की मनुष्यता की शारीरता और महत्ता को स्वीकार करता है फिर भी इस समय में इतना ही स्पष्ट है कि शारीरता से ही एशियाई मामलों पर भारत का महत्त्वपूर्ण प्रभाव रहा है।

अपने सम्प्रदायवाद और निश्चयवाद, आत्मविषयक इष्टिकोल और हेतुवादी विचारधारा-महित भारतीय संस्कृति का प्रभाव बार हुआर बर्षों से संसार पर छाया हुआ है। इकोनोमिक्स और इकोनोमिक्स जगत और आर्सेनल बर्षों और संका चीन और जापान कुछ अर्थों में भारतीय धारणा—शास्त्र और बीज—के साथी हैं। अंगकोर का आनन्दार सौम्य और बोरोबुदुर की शान्त रम्यता की वैभव हमें उनके निर्माताओं की सम्भूत भेरना और शिल्पकुशलता पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता।

हमारे एक महान कवि कलिदास को मान्य था कि बिबेधों में भारत का प्रभाव किताब था। इसीलिए क्या आश्चर्य यदि अहोनि हिमालय पर्वत का चर्मन इस तरह

('कालिदास के 'अ', 'कालिदास के 'अ' तथा 'कालिदास के 'अ' (१९४२), पृष्ठ २५ (द्वितीय अंक में 'अ' के अर्थ में))

सिर्फ क्षेत्र सांस्कृतिक या गृहस्थशास्त्रीय इकाइयाँ नहीं होते।^१ पूर्व और पश्चिम दोनों में से कोई भी संघुष्ट इकाई नहीं है। दोनों में से प्रत्येक केवल एक शब्द। जो विकास की विभिन्न चरणों में अनेक पृथक्-पृथक् लोगों और जगहों के नि प्रयुक्त होता है। दोनों की संस्कृतियों का अपना अलग व्यक्तित्व था। अथवा मुसलमान और क्रिस्तिनो कैथलिक या चीनी जापोनासी और लंकावासी बौद्ध कोई समानता नहीं है। फ्रांस और जर्मनी तथा स्पेन और स्कैंडिनेविया के समान चीन जापान और भारत का अपना-अपना अलग सांस्कृतिक विकास हुआ था। पर पश्चिमी या पूर्वी संस्कृति कहने का कोई अर्थ नहीं क्योंकि समान धारण होने पर भी उनके अनेक उपविभाज रहे हैं। फिर भी जितनी अच्छी तरह पश्चिमी संस्कृति की उपसंस्कृतियों को परस्पर सम्बन्धित किया जा सकता है, उतनी अच्छी तरह पश्चिमी और पश्चिमेतर संस्कृतियों को नहीं।

इतिहास पर व्यापक दृष्टि डालने पर हमें मालूम होगा कि सम्पूर्ण मानव जाति और उसकी सामाजिक व्यवस्थाओं के कुछ मौलिक तत्व होते हैं, जो हमारे विचारों को प्राकृतिक किये रहनेवाले घन्टों से प्राकृतिक प्राकृतिक हैं। फिर भी घन्टा स्पष्ट है और किसी संस्कृति को उसका रूप और विधिष्टता प्रदान करती है। और संस्कृति अपने सदस्यों को विपरीत विचारों में क्रियाशील बलों के अत्यन्त सूक्ष्म संतुलन के फलस्वरूप उत्पन्न समतुल्य और इकता प्रदान करती है। जहाँ अन्त, भारतीय संस्कृति एक सम्पूर्ण एवं वैविध्यपूर्ण परम्परा है। अर्थ और अर्थ कला और साहित्य विज्ञान और मानव-विज्ञान के क्षेत्रों में एक महान घट्ट प्रयास है।

किसी ऐतिहासिक संस्कृति की बात करने का अर्थ है उसे भीति रक्षितताओं भूत्यों और विद्वानों की बात करना उसके सामाजिक इतिहास का विचार करने वाली प्राथमिक धर्मियों की बात करना। मार्क्सवादियों का विश्वास है कि संस्कृति उत्पादन के भौतिक उपार्यों का बाहरी अंश मात्र है किन्तु यह ही नहीं। केवल हिन्दू भारत बीड एशिया पश्चिमी ईसाई-साम्राज्य का मुसलमान समाज जैसे नामों से ही मालूम होता है कि प्रत्येक समाज की प्राथमिकता प्राथमिक परम्पराएँ हैं जीवनपर्यन्त हैं। सामाजिक संस्थाएँ, प्राकृतिक व्यवस्थाएँ और वैज्ञानिक विज्ञान सभी परस्पर कुछ मात्राओं से अलग हैं, विभिन्न हैं।

१ यूरोप के साथ भौतिक संस्थाओं के अन्तर्गत पर दृष्टि का विचार निम्नलिखित, अलग अलग देश, अन्तर्गत, अन्तर्गत, अन्तर्गत और अन्तर्गत, चीन अन्तर्गत और अन्तर्गत में विभाजित है।

पर ही मानव धारणी प्रकृति को हततः—राम और मानव प्रकृति और बलि—ध्वजिन
 और सम्राट—पर विचारों हा पाठा है। अब तक को समाज धरने धारण पर
 जो बिन रहना है उसी तक उसके जगणों और जगणिकण में घण रहना है। विचारों
 परिचित हो जाने पर समाज का विचारनिर्माण और विचारों को प्राप्त होने है। मनि
 वाय विचारों का परम्परा ही मानविक जगण का मूलन है। स्वयं के मरदो
 म संस्कृति कठोर हाकर मरदना में जाती है, एक विविधन प्रकार प्रकृत कर
 मेती है विमने कोई और रूप प्रकृत करने की, जाने विचारों की समता मती रह
 जाती। पुरानी और नई सभी संस्कृतियाँ ही जुड़े होती हैं। उनपर हमारे प्रभाव पड़ने
 है। पुराने समय में भीनी और हिन्दू संस्कृति का समस्त परिषदी संस्कृतियों के
 साथ था। इसी प्रकार परिषदी संस्कृतियों का मरदक बोली और हिन्दू संस्कृतियों
 के साथ था। विचारों का ध्यान प्रदान बहुत अधिक हा कहा है विमने उभ नीम
 तक स्वीकार करने की प्रकृति हममें नहीं है।

३ सिधु-सम्पत्ता

विमने हेस्टकोट ने स्वर्णों की सी एक एकदुःख में कहा था "भारत और
 यूनान ही ऐसे दो विचारक राष्ट्र थे जिन्होंने समाज के इतिहास का मूलन किया।
 यूनान युरोप का प्रगुषा था। उसी प्रकार भारत सदा एशिया का प्रगुषा रखा।
 भारत एशिया का प्रगुषा होने का बाबा नहीं करता और चीन की संस्कृति की
 प्राचीनता और महत्ता का स्वीकार करता है, फिर भी इस कथन में इनका तो
 स्पष्ट है कि प्राचीनकाल से ही एशियाई मामलों पर भारत का महत्वपूर्ण प्रभाव
 रहा है।

मनने अध्यात्मवाद और निरक्षयवाद, धार्मिकविषयक दृष्टिकोण और हेनुवार्ड
 विचारवादा-सहित भारतीय संस्कृति का प्रभाव बार हवार वर्षों से मसार का
 छाया हुआ है। ईबोनधिया और ईबोकीन समय और यार्डिनक बर्मा और लंका
 चीन और जापान कुछ प्रसों में भारतीय धारणा—हाहाण और बीज—के मार्ग
 है। संमकोर का धानवाद चीनव्य और बारीबुदुर की धारण सम्पत्ता को देतक
 हमें उनके निर्माताओं की धर्ममूत प्रेरणा और निस्सकृपसता पर धारण्य हा
 बिना नहीं रहता।

हमारे एक महान कवि कसिदास का मान्य था कि विदेशों में भारत का प्रभाव
 कितना था। इनीलिए क्या धारण्य यदि उन्हें हिमाय्य पर्यंत का बलय इसतर

किया मानो वह पृथ्वी को मापने का यंत्र हो। सम्यताओं को मापने का पैमाना हो।^१ कहा जाता है कि हिमालय पर देवताओं का निवास है।^१

जिस संस्कृति का विकास लम्बे समय तक अधिष्ठीत रहा हो उसकी धारणा से सारास्कार करने का हंग यह नहीं है कि किसी विशेष समय पर उसका नेता जोटा से लिया जाए। यह नेता-बोला न तो उसके पहले की बसाधों में मिल सकता है और न बाद के विकास में। किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझने का हंग यही है कि उसकी सम्पूर्ण वृद्धि को समझना चाहे और उस मुझ धर्म को पाने का प्रयास किया जाए, जो हर बसा में अपनी अभिव्यक्ति के लिए संवर्धित रहता है किन्तु कभी भी सम्पूर्ण-व्यक्त नहीं हो पाता। यही है वह अन्तःपरमा को इतिहास की विभिन्न घटनाओं को एक मूल में बाँधती है, और प्राचीनतम तथा नवीनतम सभी घटनाओं में उपस्थित है। भारतीय संस्कृति का यह धर्म यह धार्मिक-केन्द्रित क्या है ?

कुछ समय पहले एक हम सोचते थे कि लगभग तीन हजार वर्ष पहले भारत में एक उच्च सम्यता थी जिसका विशाल प्रभाव पश्चिमी देशों पर यूनानियों और धर्मों द्वारा पड़ा था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की पुरातात्विक खोजों से पता चला है कि ३०० ईसापूर्व सिन्धु घाटी में एक अत्यन्त उन्नत सम्यता थी। मुहूर्तों और ताबीलों पर की गई खुदाई से परिचित निकाला जा सकता है कि बाद के भारतीय धार्मिक जीवन पर इस सम्यता का घनिष्ठ प्रभाव पड़ा था।^२ हर जोन मार्गम का कथन है कि अनेक प्रमाओं से भारत में एक अत्यन्त विकसित

१ कल्पवृक्षों के सिद्ध वेदमन्त्र
विमान्यो नाम मन्द्रसिद्धा ।
पूर्वाप्यै लोकादिनी ब्रह्मण
विन्दु वृष्टिः स्य गन्तव्यः ॥ —कुमारभस्म, १.१

२ देवभूतिस्मरणो)

३ भारत देश में निवृत्त है । स्वयं होने के प्रारम्भिक भारत में धार्मिक परिवर्तन नहीं हुआ है। वहाँ के विद्वान वैश्यायों में विद्वत्ता काटलल रूप है, सकारणा लकी गयी है, लने-लने एनो और अनिघो ने जो सगुनि करके वहाँ शासन किया है, विद्वत्ता लम्बाइयों से लने विचार और लने भारतों प्रदान किया है । लकिन अनेक अनि और अनेक लणु को धार्मिक राष्ट्र और ललकी ललने लम्बाइ ल दैललिन किया है तथा ललका कल लललल और ललल लने लने में लल लर है । लिल, लैलिनेल और अनिलिया की प्राचीन लम्बाइयों का लम्बाइललल लल लल ललल के ललने लर लकी है । किन्तु भारतीय लम्बाइ लिलकी ललला लिलली को, ललल के लुन से ललु लली से लने लिललला लला है लर ली ललल है - ललल लल लने ल ल लली-लैलिल ललल (१९३६), पृ. ११ ।

मस्त्रुति की अपस्थिति का पता चलता है जिसके पीछे पश्चिम ही भारत की परती पर एक सम्राट् इतिहास हुआ चाहिए, जिसके प्रारम्भिक युग की मात्र बुधनी सम्पत्ता ही की जा सकती है।^१ प्रोफसर वाइन्स्टे ने लिखा है 'मिग और बेबिनोविचा के समान भारत में भी ईसा संतीन हजार साल पहले अपनी एक सर्वथा स्वतंत्र व्यक्तिगततासिनी सम्पत्ता थी जो अन्य सम्पत्ताओं की निरमोर थी। और स्पष्टतः उसकी जड़ें भारतीय परती में गहराई तक जाती गई हैं।' वे प्रागे लिखते हैं 'यह धमी भी जीवन है यह निस्तम्बेह प्राणिय है और प्राथुनिक भारतीय मस्त्रुति की प्रापारोपता है।'^२ इन मस्त्रुति का पविष्ठ सम्बन्ध पश्चिमी राष्ट्रों की मस्त्रुतियों के साथ था।^३

१ मोहनगोरहा वेर ए इवलय लिब्रियरेशन (१९३१) पृष्ठ १५६-१५७।

२ 'न्यू लाइव ऑन ए मोस्ट रोटेड ईन्ड (१९३४) पृष्ठ २२। प्रोफेसर वॉल्फर्ट ने लिखा है "एर निर्दिष्ट है कि तन्त्र संस्कार का निर्माण करनेवाली प्राचीनतम अरिथ मस्त्रुति में पुरातनियों के स्थान से पहले मरण का प्रमुख भाग था।

'ए इवलय लिब्रियरेशन वेर ए लिब्र ईन्ड' हेनुअन रिडिबिरोपोटी अरिथ इरिक्कन अरिथोपोगी, लक्क ७ पृष्ठ २२। डॉक्टर वान का कथन है "उमें कोरे मन्हेह गरी कि मरण प्राचिनतम मानव-मस्त्रुति के वेस्ट में मे एक रहा इन्ड और वह कल्पना थी स्पष्टतः कि परिणम को मानव बनाने के अरिथ से पूर्व से मानवत्तम मिथन प्राची, जो न तो सेमेरिक के और न ज्ञान, मरण के ही निशानी है। इस सर्व दखते हैं कि सुपरिचरुत तम भारतीयों के किन्ते समान हैं। इस तथ्य में भी गरी मान्य होना है।" २७४।

३ मिग और बेबिनोविचा की सम्पत्ताओं तथा चीन और मरण की मस्त्रुतियों का सम्बन्ध वेर प्राथमिक मस्त्रुति क, जो अनेकानामिक भी है और अरिथिचरुती भी उदहरत मानते हैं। इसी गुणता से करते हैं मूलानो-बहुरी आधार पर वेचन अरिथम में विरहित लक्ष्यक मस्त्रुतियों में। चार्ल वेल्सर्न इस विचार के विरोध में करते हैं "आज हम जिन मरण और चीन को मानते हैं उनका अन्व 'अस्तित्व' युग में हुआ था उनकी मस्त्रुतियाँ प्राथमिक नहीं लगती हैं। मरण और चीन दोनों ही अरिथम के अत्यन्त प्राथमिक गहरारों में उतर लके थे। वेचन मिग और बेबिनोविचा तक मरण और चीन की अरिथिचरुत मस्त्रुतियों से सम्बन्ध न हो लता था।" चार्ल वेल्सर्न हल 'ए ओरिथिचर वेचन गेल अरिथिचरुती' अगरेटी अन्वुचर (१९३३), पृष्ठ २७७। कन्वेट वेर हम तक से अरिथिचरुती नहीं है। वे लिखते हैं: 'श्री ती ईसापूर्व तक संस्कार से तेज मस्त्रुति-वेस्टो—अरिथिचरुती—बुधनी, मरण और चीन—को लक्ष्य हो चुकी थी। इस समय से ही श्री ईसापूर्व तक तीन्ती वेस्टो में समान अरिथिचरुतक रूप में एक ही समय में और अन्तर लक्षण रूप में अरिथिचरुत प्राथमिक को जें दुर्ग तन्त्र अन्व विचारों और लिखनों की विराट् लक्ष्यमिचरुत की ओर थी। अरिथिचरुत बहुरी मस्त्रुती मूलानो शारुतियों, पुत्र, लक्ष्योने अरिथिचरुत की अरिथिचरुत सर्व प्राथमिक अरिथिचरुतों की गर्तें तक अरिथिचरुत मस्त्रुतियों का विकास हुआ। अरिथिचरुत प्राथमिक मस्त्रुतियों के कारण से और निरिथिचरुत दुर्ग अने अरिथिचरुतों, मिगि दुर्ग पुत्र अन्व अरिथिचरुत दुर्ग का सुपरी। य विरुत के अरिथिचरुतों और

मोहनजोदड़ो का सर्वोत्कृष्ट समय १३००-२२३० ईसापूर्व के बीच था। नगर योजनानुसार बसा था। तीसरा फुट चौड़ी सड़कें पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण जाती थीं। गमियों की चौड़ाई इनसे घाबी थी। इमारतें पकी इटों घोर मिट्टी के पारे से बनी थीं। घनेक इमारतें तो कई मंजिलों की थीं। मकानों में स्नानागार घोर नालियों का प्रबन्ध था। सांख्यिक स्नानागार भी थे। नालियों क पाइप मिट्टी के थे—पकाकर, घापस में जाड़कर बनाए हुए। मिट्टी या पत्थर की टाबीजों से बनका सीस्बर्ब-प्रेम स्पष्ट है। उनपर चमकदार पामिच है प्रबन्ध बँत बाब हाथी या मगर के चित्र लुदे हैं। बानबरो के चित्र मपातप्य हैं। वे सोना चाँदी सीसा ताँबा धारि धातुओं का प्रयोग जानते थे। वे कपड़े के संकर बनाता जानते थे। घाकर्वक नृत्य करती हुई एक मुबठी की कांस्य-मूर्ति लुबाई से प्राप्त हुई है। लुडिया कंगन घोर माक की कौलें भी मिली हैं तराजू मिले हैं जिनसे मामूम होता है कि तीसरे घोर मापने के उपकरणों का उन्हें ज्ञान था। मोटिया मिली हैं घोर एक तरह का बेम बगों में बिभाजित लकड़ी पर मोहरों से सैसा जाता था। उन्हें कपास (या रई) को उपयोग में लाता जाता था।^१

मोहनजोदड़ो म प्राप्त धार्मिक धरुधरों में माँ देवी की मूर्तियाँ हैं। इसके घतिरिक्त एक पुरप देवता की मूर्तियाँ भी मिली हैं जो परम्परागत सिव की प्रतिरूप मानूम पड़ती हैं। स्पष्ट है कि धाधुनिक हिन्दू धर्म की घनेक बिधेपठाओं के मोठ धरवन्त प्राचीन हैं। सर जॉन मार्शम ने तीन मुर्तियों वाले एक देवता (त्रिमूर्ति) का चित्र किया है जो एक चौकी पर पधासन में ध्यानावस्थित बैठ हैं। वे मुबछामा पर घासीन हैं घोर उनको बरे हुए हैं हाथी बाप बैठा घोर भसा। महान मोकी सिव की यह मूर्ति पाँच-सः ह्रवार बपों से भारत के धाध्यात्मिक जगन् में प्रमुप स्थान पड़न किए हैं घोर इस लप्य की प्रतीक है कि धारमबिजय साइस पबिबता जीवन में एकठा घोर भाईचारे का ही पुर्यता प्राप्त की जा सकती है। वही धारण हमें परमात्मा के चिन्तन में सीम उपमियाँ के हृण्यों में घमान घोर ईर्ष्या को पराजिन करनेवाले धान्त एवं सीम्य लुद में धारधमर्षक के परधान् सार्वभौम प्रेम में एकाकार हा जाने घोर धारंनिक ल्यस्थान के घारण्ड हैं। रग लुन की लम्पति के धार, धरान् मोनहरी लम्पती के धार धर्मिक बिलामी में लुपन ल्य लुद भी मरी मोता या सरा है।^२

—बार्न वेल्सम लुन ६ धोरिजिन बरठ मोन जाड हिन्दुी' धोरैजी जनुपल, (१९३३) लुद २७२।

१ लम्पति के धार हेरोनेरुस ने 'कब धारे का चिक बिध चिन्में कप मरी लपने दक्षिण मेर के लुन मे जा धरिध धरुद्धा लीर बरिध लुन पैर हाता है भारतीय चिन्ने कपने लैकर करने हैं।'

ईश्वर का भक्त बन जाने और धारमयीन साधनसाधों में ऊपर उठकर परम पिता परमात्मा की इच्छा का पालन हम पाणिब जगत् में सँभ करनेवाले साधुओं के ध्यानवाचिक में पिबठा है। सुखनारमक जीवन केवल उन्हींके लिए संभव है, जो पुरुष और पवित्र रह सकने हैं, और जिनमें एकाग्र-चिन्तन का साहस है। एकान्त के क्षणों में ही सत्य और सौख्य के ज्ञान हास है और हम उन्हें पूर्वी पर माते हैं। भावनाओं के परिपान पहनाते हैं। शब्दों में व्यक्त करते हैं। प्रतिमयता प्रदान करते हैं या दर्शन के रूप में सांक देते हैं। मस्तिष्क का धारमा का वाहन बनाने के लिए एकाग्र और चिन्तन आवश्यक है। सम्पूर्ण बुद्धि भीतर से बाहर की ओर होती है। धारमा ही स्वतन्त्रता है। सच्चा ऐश्वर्य मानसिक है। मौखिक नहीं। स्वतन्त्रपेता व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से भ्रमण है।

भारतीय इतिहास के प्रारम्भ में ही मानव-धनमा की एक निरिच्छत विद्या निर्धारित कर दी गई है। धनमा प्रतिस्व बनाए रखना धारमा की निष्कृता कीस्वर रखना ही मानव-जीवन का सत्य है। हममें धारमपरकता का तिडीय कामरन है जो बाह्यी प्रमाओं के दबाव में मुक्त है। साधारणतः हम स्वयंभासित बन हैं। हमारे कथन और कार्य सामाजिक स्थितिमा और भावनाएँ, विचार और अभिप्राय सभी बाह्य शक्तियों द्वारा उत्पन्न होते हैं। किन्तु मानव की किसी अन्य साधारण पर कार्यरत होना चाहिए। एक पृथक प्रतिस्व बनना उसके लिए आवश्यक है। जो कुछ वह है उतने में ही उसे सम्पुष्ट नहीं होना चाहिए। अपनी धनमा में उसका पुनर्जन्म या कायाकल्प होना चाहिए। धामोद-प्रमोद और विनाशमय जीवन बिनाशनाला व्यक्ति अनिर्वायत धान्तरिक पत्र के पथिक भीतर से बड़ने और नई-नई शक्तियों व गुण प्राप्त करनेवाले व्यक्ति से ऊँचे तल पर नहीं होता। मानव केवल मौखिक सम्पत्ति—यहाँ तक कि ज्ञानार्जन—से ही सम्पुष्ट नहीं हो सकता। उसका ध्येय कुछ और है—साधनमासाधारण करना।

४ शक्ति संस्कृति

१२ • ईसापूर्व में ६०० ईसापूर्व तक शक्ति युग माना जाता है। अग्नेर होमर का 'साइटेस्टामेंट' से भी पुराना है। वेदास्त के उद्गम केवों के प्रथिम पंच शर्वात् उपनिषदों की रचना 'शौशिक' और एस्पूमीनियाई ब्रह्म तथा पाइया गोरस व ज्येठो से पहले हा बुद्धी थी। शुभ धाय और धायपुत्र दर्शन के सम्मिसन के प्रतीक हैं।

धार्म्यात्मिक उत्पीड़न केवल-मात्र जियने मानव महान हो सकता है। अग्नेर के इन प्रसिद्ध शब्दों में पूर पड़ा है "प्रतिस्व वा धनभित्स्व कुछ नहीं वा। वाबु।

का ऊपर आकाश भी नहीं था। फिर वह क्या है जो गतिशील है ? किस दिशा में गतिशील है और किसके निर्बेधान में ? कौन जानता है ? कौन हमें बता सकता है कि सृष्टि कहाँ हुई, कैसे हुई और क्या देवता इसके बाद पैदा हुए ? कौन जानता है सृष्टि कहाँ से आई ? और कहीं से आई भी तो इसका निर्माण भी हुआ या नहीं ? केवल वह प्रकृता जानता है, जो स्वर्ग में बैठा सम्पूर्ण सृष्टि को देख रहा है, और फिर क्या वह भी जानता है ? * इन सवालों में धार्मिक लोग धार्मिक धर्म स्वीकारता और बौद्धिक सत्यज्ञान की प्रामिष्यक्ति है और नहीं से भारत के सांस्कृतिक विकास का आरंभ हुआ। अन्वेष के दृष्टा एक समय में विश्वास करते हैं। यह समय हमारे अस्तित्व को नियंत्रित करनेवाला एक नियम है, हमारी सत्ता के विभिन्न स्तरों को बनाए रखता है एक असीम वास्तविकता 'एकम् सत्' है और विभिन्न देवता इसीके अनेक रूप हैं। अन्वेष के देवता वास्तव में अमर ईश्वर की प्रतिमा हैं, सत्य के प्रामिषावक हैं तथा हम प्रार्थना उपासना और भेंट द्वारा उनकी कृपा प्राप्त कर सकते हैं। उनकी कृपा के बस पर हम सत्य के नियम 'अतस्य पंथी' * को पहचान सकते हैं।

वेदों में जिन तत्वों का इंगित मात्र किया गया है, उपनिषदों में उन्हींकी व्याख्या की गई है। हम पाते हैं कि उपनिषदों के दृष्टा जिन सत्य को देखते थे उसके प्रत्येक रस-रस्य के प्रति पूर्णतः ईमानदार थे। इस तत्त्व के कारण उनकी व्याख्या के अनेक निष्कर्षों का सब पुराने पड़ गए हैं किन्तु उनकी कार्यविधि उनकी धार्मिक और बौद्धिक ईमानदारी तथा आत्मा की प्रकृति के बारे में उनके विचारों का स्थायी महत्त्व है।

उनका कहना है कि एक केन्द्रीय सत्ता प्रबल है, केवल एक जिसके भीतर सब कुछ व्याप्त है। प्रत्यक्ष भौतिक विज्ञानों अन्तर्गत की प्रमाप विद्यामता और अगणित आकाशीय पिण्डों से पुरे परमात्मा का अस्तित्व है। सम्पूर्ण सत्ता का

* X, १२६।

१ विष्णु धर्मशास्त्र (मन्त्र) में (पौरुषी राजर्षी ईसापूर्व के) अस्मिन् वेदे अस्मिन् विदे व विभवे वैदिक देवताओं इन्द्र, मित्र वरुण और अग्निदेवताओं का विज्ञान है। कहा गया है कि अग्निदेव ने अग्नि में एक मन्दिर का निर्माण कर दिया था। बाद इन्द्र और सूर्य वेदे वैदिक देवताओं का देवताओं की पूजा का आनी को। वैदिक और अग्निदेव विष्णुओं का निरुद्ध सम्बन्ध प्रसिद्ध है और बहुत धार्मिकता से ईश्वर और अग्नि के विद्यार्थी सत्य-अर्थ अन्वेष करने लगे। मित्र पूर्व के अग्नि के वैदिक देवता के और धार्मिक ईश्वर में उन्हें मित्र का कहा गया था। मित्र का सम्बन्ध का अस्तित्व में एक अन्वेष हुआ। इस सम्बन्ध को भी ईश्वरों का सत्य का अस्तित्व और अग्नि के अन्वेष के अन्वेष के अन्वेष का अन्वेष था। एक समय तो वेद अग्नि का ईश्वर अग्नि के साथ ही सम्बन्ध को अस्तित्व में लाने लगे। सभी कुछ सब पूरा अ-रस सत्य के बीच में अग्नि अग्नि के अन्वेष, मित्र का एक देवता मन्दिर मिला है।

प्रतिरूप परमात्मा के कारण है और परमात्मा के ही कारण इस संसार का कृष्ण रूप है।

परब्रह्म पुरुषोत्तम सारी वस्तुओं के भीतर व्याप्त है मानव की धारणा में तो उमका निवास है ही। "अपुत्रम स अविष" लभ धीर महत्तम न अयिक्त महत् मह प्रसित्तव्य वा सारतस्व प्रत्येक प्राणी के भीतर उपस्थित है।" भारत के बाहर जिन सिद्धांत के कारण उपनिषद सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं वह हैं—तत्त्वम् अस्ति परब्रह्म का निवास प्राणी के भीतर है। परमात्मा हृदय की बहाराहया में प्रतिष्ठित है। "वह आविष्टता इन्द्रियपरायण नहीं है अंधकार से विरी घनात का बहाराहया में स्थित है भाटियों में अवस्थित है प्राणियों के हृदय में निवास करती है। परब्रह्म की उपस्थिति की प्रतीति स व्यक्ति पवित्र हो जाता है।

परब्रह्म पुरुषोत्तम को पहचानना और उसके साथ एकाकार हो जाना मानव-मान का सुर्य है। इस सम्मिलन की व्याख्या बाह्य रूप से नहीं की जा सकती। ईश्वर को अपने से बाहर मानकर न तो उसकी धारापना की जा सकती है, और न सेवा या प्रेम। यह एक ऐसा कार्य है जिसे ईश्वर को अपना बना लेना और स्वयं ईश्वर का बन जाना ही कहा जा सकता है। मानवीय बिज्ञेन की इस क्षेत्र में कोई पहुंच नहीं है इसीलिए हमका बिबद्ध विवरण देना मानव के बिज्ञेन के लिए असंभव है। किन्तु मानव का हृदय ईश्वर से अवश्य प्रेम कर सकता है।

उच्चतम अवस्था 'ज्ञान' की अवस्था कही जाती है। इस एक शब्द से ही स्पष्ट है कि ईश्वर को समझना अनिवाप्य संभव है और साथ ही मानव की समझने की सीमित शक्तियों से परे भी। उच्चतम अवस्था बिज्ञेन से परे है। विज्ञेन हीन नहीं। अस्त्युष्टि वह सम्पूर्ण ज्ञान है जिसे हम अपनी समस्त शक्तियों के उपयोग से प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक केवल विचारों का नहीं है। यह तो ज्ञान को परिष्कृत करने की व्यक्तिव को पुनर्गठित करने की प्रसित्तव्य के नवीनीकरण की प्रक्रिया है। यह एक कृष्टि है, अचेतनता है, असीम स्वतंत्रता में मुक्ति है। यहां पर, जानना और होना तथा अपनाता और मान्यित होना एक ही है। जिस व्यक्ति को यह मान्य है वह सत्य में सम्येह नहीं करता जिस प्रकार ठेक भूप में उड़ा हुआ व्यक्ति सूर्य की उपस्थिति में सम्येह नहीं करता। इस 'जानने' को 'विद्या' कहा गया है। इसका विमोम है 'अविद्या' अर्थात् अस्तिष्क और इन्द्रियों का संकरी सीमाओं में बंध रहना।

यह सम्मिलन केवल बिज्ञेन द्वारा नहीं करन सम्पूर्ण व्यक्तिव द्वारा संभव है। इसके लिए आवश्यकता है आत्मानुप्रासन की आत्मकेंद्रित मानसा तथा उसके

सहयोगी धर्म बुधा घोर विन्ता पर विजय पाने की। "धरणी वासनाओं पर विजय पानेवाला सामन धरने ही भीतर धरणी आत्मा के शौर्य को देख सकता है।" पूर्व धारमत्वान के जीवन में ही हम उच्चतर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस ज्ञान के बिना अस्वावी भावनाएं विवेक को धुपित कर देती हैं।

परिच्छदी विस्वविद्यालयों में दर्शन की जितनी प्रथासिया प्रचलित हैं उनमें सर्वाधिक लोकप्रिय प्रचामी का नाम है 'मॉडिफ़ाड पॉजिटिविज्म'। इसमें सभी कथनों को दो विभावों प्रयोगसिद्ध घोर अप्रयोगसिद्ध में विभाजित किया गया है। कहा गया है कि अप्रयोगसिद्ध कथनों में बार-बार एक ही बात को दोहराया जाता है। इसके विपरीत प्रयोगसिद्ध कथन अनिश्चित हैं तथा इन्हियों द्वारा उन्हें सिद्ध किया जा सकता है। जो बातें पुनरुक्ति नहीं होती अथवा जिन्हें सिद्ध नहीं किया जा सकता एकदम स्पष्ट होती हैं। अध्यात्मविद्या नीतिशास्त्र समधारण भावनात्म्य हैं तथ्यों से इनका कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिए इन्हें ज्ञान नहीं कहा जा सकता। इस सिद्धान्त में मान लिया गया है कि अनुभव केवल ऐन्द्रिकता घोर शौरिकता पर आधारित है। इसके विपरीत उपनिषदों में कहा गया है कि मानव की आत्मा की सीमा जागरितात्म्या के अनुभवों तक ही नहीं है क्योंकि वे अनुभव इन्द्रियमात्र तथ्यों तथा उनसे प्राप्त परिणामों पर निर्भर हैं। अनुभव अर्थनीय भी होते हैं घोर अर्थों अथवा विचारों द्वारा उन्हें दूसरों तक नहीं पहुंचाया जा सकता। मानव में ऐसी क्षमताएं हैं जिनका पता उस स्वयं नहीं है।

यदि ईश्वर का साक्षात्कार ही धर्म का मध्य है तो इस साक्षात्कार के लिए हमारे पास काफी समय होना चाहिए। एकान्त में ही मानव सर्वाधिक मानवीय होता है। किसी एकान्तसेवी की जितने धरणी देखी हुई बातों घोर अनुभूतियों को व्यक्त करने की क्षमता नहीं है अनुभूतियां अस्पष्ट रहन हो सकती हैं। ये अनुभूतियां उन व्यक्ति की अनुभूतियों में अधिक अस्पष्ट होती हैं जिसका स्वभाव ही सामाजिक कार्यक्षेत्रों में भाग लेना होता है। बहुत लम्ब है कि जिन दूरियों अथवा प्रमाओं को हमारे सोच एक पलक भ्रमकाकर, एक हलदी टिप्पणी बरक अथवा मुस्कराकर टास जाते हैं उन्हींमें एकान्तसेवी का ध्यान उलभ जाता है। यह दूर्य अथवा प्रमाएं अुरबाध पड़े जाते हैं धर्म ग्रहण करते जाते हैं भावना का अनुभव का रूप ग्रहण कर लेते हैं। विज्ञान घोर दर्शन साहित्य घोर कला सभीमें वैचारिक अन्तर्दृष्टि एक अद्वितीयता मौलिकता वैयक्तिकता को जग्य देती है। धारने उच्च तम विचारों में अन्तर्गत जितनीतियों के मानव प्रकृत होना है।

धर्म अर्थान का अनुभव है। धर्म धार्मिक भावना घोर धार्मिक जीवन का

धनुषासन धीर पृथक्त्व होता है कि वे मनु सत्य के दर्शन कर सकती हैं किन्तु हम सोच तो सत्य को विभिन्न उर्ध्वसंगत रूपों में ही देख पाते हैं। प्रत्येक बर्म का कुछ बिन्दु सत्य एक धीर समान है। सिद्धान्तों में पारस्परिक धन्तर प्रथम है क्योंकि वे हैं मानवीय परिस्थितियों पर सत्य के प्रमाण से उत्पन्न। प्रत्येक युग में धानी विशेषता होती है जिसका पता उस युग की मान्यताओं से लगता है जो युव विशेष में स्वयच्छिन्न मान भी जाती हैं। सत्य की अभिव्यक्ति किसी प्रकार के धर्मों में नहीं हो सकती इसलिए सत्य को पृथक् परिभाषित नहीं किया जा सकता। सभी परिभाषाएँ धर्मिबाधित धनुषयुक्त होती हैं धीर सब कहा जाय तो भ्रामक होती है। प्रत्येक फार्मूला धर्मों धीर विचारों में सत्य को बाधने का प्रत्येक प्रयास—या सीमित धर्मों में सत्य तथा समय धीर प्रथम के धनुष्य होता है—वास्तव में निश्चल-मन के लिए एक आधार-मात्र है। उसकी सहायता से हम उसे समझने की धीर प्रथम हो सकते हैं जिसे किसी फार्मूला प्रतीक पत्रवा सिद्धान्त में बांधा नहीं जा सकता। सिद्धान्त उत्तरदायित्वहीन नहीं है। हम स्वच्छा से विचार नहीं कर सकते। धीर न ही सिद्धान्त धनावश्यक है। जिस भाषा में सत्य की अभिव्यक्ति की जाती है उसमें विभिन्न लोगों की भाव्यकतानुसार विकसित कोनिया होती है। वे एक सत्य की प्राप्ति के धनेक साधन मात्र हैं। धन्तर बहुत प्राकरिक बिन्दु प्रथम है। इकाई ही यथार्थ है।

मान प्राप्ति के एक मरय के धनेकानेक उपायों की मायता भी ही यथी है। प्रत्येक उपाय का धारम्भ नहीं से हो जाता है जहाँ मानव स्वयं को पाता है। हिन्दू धीर बीड सिद्धान्त स्थापक धीर धार्मिक है। वे प्रत्येक मानव की धाम्यात्मिक प्राथम्यताओं धीर समताओं के धनुष्य है। सत्य को पहचानने तथा उस तक पहुँचने के रास्ते धनेक है। किसी विशेष विधि को धपनानेवाले भोग उनी को धर्मिय धीर एकमात्र समझने समन है। किन्तु जब वे यहन सत्य के दर्शन कर पाते हैं तब उन्हें धामास होता है कि जियता विधास सत्य स्वयं है उतने ही थोड़े उम तक पहुँचने के पथ है। धार्मिक धर्मों उत्सवों प्रणामियों धीर सिद्धान्तों द्वारा उनके धरे एक मुस्यत्ता क धेक धे पहुँचा जा सकता है, धीर इतमिा इनके द्वारा केवम धामेव मरय के दर्शन होने है। इनका महत्त्व उचित रवान पर ही है। उन्हें धरक सत्य समझन की समनी नहीं करनी चाहिए। वे सत्य की ध्याना-मात्र को धर्णित करते हैं। वे धर्मित करते हैं परिभाषित नहीं। प्रत्येक धरक प्रथम विचार एक निर्देक है जो धरन में धरे की धीर संकेत करता है। धनेक को धनेकित धरनु समझने की धून नहीं करनी चाहिए। धिनायुक्त धरुी धर्मन नहीं धानी।

परब्रह्म का प्रतिबिम्ब हम ब्रह्मांड पर है इसीलिए यह पवित्र है। यह स्वर का मन्दिर है और ईश्वर 'पृथ्वी' में उपस्थित होते हुए भी पृथ्वी से घनम है पृथ्वी उस नहीं पहचानती वह धार्मिक प्रकाश है वास्तव है। सभी शक्तिमा और संघम में ब्रह्मांड को मुक्ति ईश्वर द्वारा मिलती है।

मानव की तांत्रिक प्रवृत्ति में धर्मिक और धार्मिक प्रवृत्ति पर शिव जाना है। मानव ईश्वर की चेतना का उत्तराधिकारी है। उसके भीतर गुणन की प्रेरणा है जो उसकी स्वतंत्रता का सधन है। वह स्वयं को स्वयं में ऊपर उठाने मरता है। वह धर्मिष्ठता करता है कर्म नहीं। यदि हम मानव को केवल पापित प्रकाश परिचयमयी विचारों का मा प्राची समय में, तो हम समय नहीं मरने नि मानव को धर्मिष्ठता सीमाओं में बाधा नहीं आ मरना क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिरूप है और ईश्वर के समान है तथा एक नैतिक धारणता का उपादन-मात्र नहीं है। वह ब्रह्मांड की प्रकिया का धर्म पदार्थ नहीं है। वह धार्मिक प्राची है और इगणित वह नैतिक और धार्मिक संसार के स्वर से ऊपर है। मानव का स्वामा विव जीवन प्रारम्भ होता है, सभी उसके धार्मिक धर्मिता का पत्रा चरता है।

प्रकृति धार्मिक की विरोधी नहीं है। प्रकृति के साथ मयाव और धार्मिक धर्म का संयोग नहीं बैठता। धार्मिक धर्म का नहीं मोह का विरोधी है। प्रकृति की सीमाओं को न मानना हमारे लिए धार्मिक नहीं। हमारे धर्म ईश्वर के मन्दिर और 'धर्म-साधन' है। धार्मिक स्वाभाव्य और भौतिक जीवन में कोई धर्म नहीं। प्राचीन विचारकों में धर्मिता की महान भूमिका ब्रह्मांड की मरणाप्राप्त रचना तथा जीवन और धर्मिता के सभी स्तरों की धार्मिक प्रकिया पर मरिच और दिया है।

परमात्मा के समझ धार्मिक समूर्ण समर्पण धार्मिक और परमात्मा के धर्मनीय समय को धर्मिक विचारों में व्यक्त किया गया है 'धर्म धर्म में धर्मिष्ठता निकलती है और फिर धर्म में वापस जाती है, जैसे समुद्र के धर्मों में सभी नदियाँ फिर समुद्र में जाती जाती है।

जब मानव का स्पष्ट ज्ञान होता है, जब वे वास्तव होते हैं तब उन्हें समुद्र होता है कि किसी धर्मनीय धर्म में वे परमात्मा की धर्मिष्ठता का उपकरण मात्र है, परमात्मा के 'बाह्य' है। यह समुद्र करने के धर्म धर्म धर्मिष्ठता में ऊपर उठ जाते हैं और धर्म सहायियों का धर्म धर्म करने मरते हैं क्योंकि हम और हमारे सहयोगी सभी एक ही परमात्मा की धर्मिष्ठता हैं। हम परमात्मा

के उपकरण बन जाते हैं और प्रेम, सहभावना तथा करुणा के परिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

हिन्दू धर्म में सक्रिय करुणा बिनम्रता और मानवीय कोमलता का बड़ा महत्त्व है। हिन्दू धर्म की मानवता का प्रसार पशुओं के लिए भी है। बुराई के साथ संघर्ष में सक्रिय को नहीं बल्कि प्रेम के उपयोग की बात कही गयी है। बुराई को पराजित करने के बुरे प्रयत्नों से बुराई बौ ही विजय होती है।

सैद्धांतिक रूप से सभी मानवों का धर्म-मूल्य अद्वितीय मूल्य स्वीकार किया गया है, किन्तु सामाजिक ढांचे में उसकी प्रतिक्रिया का पता नहीं लगाया गया है। पश्चिम में पूर्व से अधिक वास्तविक समानता है। व्यापक व्यक्तिगत धर्मों को स्पष्ट करने के उद्देश्य से जाति-मर्यादा का जन्म हुआ था किन्तु अब यह विषेया विचार और असम्यता का प्रतीक बन गई है। कैवल्य जन्म या धर्मधरो की कमी के कारण अनेक व्यक्तियों को कठोर परिश्रम, संन्यास और बुद्धिपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है। इसके विपरीत अनेक व्यक्ति किसी प्रकार भी अधिक योग्य न होते हुए भी आसान सुखी और सुविधाओं से भरा-पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। अनेक कमजोर व्यक्तियों के मन में इसमें पुजा उपजती है। इस निर्जीव जाति-व्यवस्था के कारण अनेक व्यक्ति अल्पविश्वास के विकार ही गए हैं ऐसे धार्मिक संस्कार मानते हैं जिन्हें वे कतई नहीं समझते। जाति-व्यवस्था मानव में निहित देवत्व के आदर्श के सर्वथा विपरीत है। यह सिद्धांत उन तानाशाहों के प्रयत्नों का समर्थन नहीं करता जो रूप सबको समान बना देना और यदि संभव हो तो एक कर देना चाहते हैं। हम बिलकुल एक नहीं हो सकते क्योंकि हम धर्म-मूल्य अल्पते और मरते हैं और यही कारण है कि हम तानाशाही रास्तों से हमें भागते रहेंगे।

मानव में देवत्व का निजाल है—इस सिद्धांत को मानने के परवाना बहु निष्कर्ष निकलता है कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह बिलकुल ही बड़ा पापी क्यों न हो मुक्ति से परे नहीं है। कोई ऐसी अज्ञानता नहीं है जिसके द्वार पर सिगा हो भीतर प्रवेश करनेवाली सारी आशा छोड़ दो। बिलकुल बड़े व्यक्ति नहीं होते। उनके चरित्र को उनके जीवन के संदर्भ में देखना हीना। पापात्मा संभवतः बीमार व्यक्ति है जिसका प्रम लक्ष्य भ्रष्ट हो गया है। सभी मानव धर्मरत्न की सन्तानें धर्मरत्न पुत्र हैं। प्रत्येक के भीतर, उनके धर्म के समान उमठे व्यक्ति के भीतर स्वर के धर्म के रूप में आत्मा मौजूद है। अनेक व्यक्तियों की आत्मा बर्बरता और निर्दयता के अन्तर्गत भी पिछले जन्मों के समान बनी होनी है लेकिन होनी संभव है। और जीवन तथा सक्रिय होनी है और प्रथम आधुनिक धर्म पर उभरने का महार शर्ती है।

मुक्ति धरने प्राय नहीं मिल जाती यह हमारे प्रयत्नों पर निर्भर है। कहा जाता है कि प्रयत्न करके हम मुक्ति नहीं पा सकते यह तो परमात्मन् का स्वतंत्र उपहार है और इसे समझन पाना ही मरक है। भारतीय विचार में अनुसार प्रत्येक मोक्ष का वर्णन ही मोक्ष प्राप्त करना है। कल्या विनी कूरस्य देवता की देन मान नहीं है।

उपनिषदों में परमात्मन् और वैयक्तिक ईश्वर के बीच धारण के घनिष्ठ सत्य और मरकर घनित्व के सापेक्ष सत्य के बीच घनर स्पष्ट बनाया गया है। कहा गया है कि मानव के धार्मिक विकास का धर्म है जीवन के नीतिक स्तर से धार्मिक स्तर की ओर प्रयाण। उनमें धार्मिक जीवन स्वीकृत करने के इंस बताया गए हैं। वे ईश्वर परिचयनशील हैं निरस्तर हैं और इनसे सिद्ध होता है कि सत्य पर किसीका एकाधिकार नहीं।

३. बौद्ध धर्म

छठवीं शताब्दी ईसापूर्व में गारे संसार में पूरा जागृति हुई। चीन में कन्फ्यू सियस यूनान में पाइथागोरस तथा भारत में महावीर और बुद्ध इसी काम में हुए। बुद्ध का सिद्धान्त उपनिषदों के सत्यों का ही पुनरुत्थन है, जिसपर नये ढंग में जोर दिया गया है। धर्म को उन्होंने 'ब्रह्म' कहा और बताया कि ज्ञान प्राप्ति का उपाय यही है।

परमात्मन् को बुद्ध ने 'प्रमा' और 'कल्या' में भरे-पूरे जीवन में देना। किन्तु ब्रह्म के सिद्धान्तों का प्रतिपादन उन्होंने नहीं किया। धरने अनुभवों के सम्बन्ध में वे सर्वथा मौन रहे। उन्होंने उम पय का निर्रस किया जिसपर ब्रह्मधर्य में चलकर हम भी उस स्थिति पर पहुँच सकते हैं जहाँ वे स्वयं हैं और वह सब देन सकते हैं जो उन्होंने देना है। ह्वें उनके ज्ञान के प्रमाण नहीं मानने चाहिए, किन्तु धार्मिक परिधम करके वह ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। तप में सम्पूर्ण मानव का ब्रह्म टालने और बस्तु के साथ एकाकार कर देने की धमि है।

उपनिषदों के मोक्ष के विपरीत 'निर्वाण' का धारण है। बुद्ध का घट्टमायं वैयक्तिक धर्म का ही दूराय रूप है उपनिषदों के ब्रह्म धम और धान के सिद्धान्त का प्रकारांतर है। प्रत्येक बोधिप्राप्त व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नीचे गिरे हुए प्रत्येक धर्म्य व्यक्ति की ज्ञानप्राप्ति में सहायक हो। हम चाहें या न चाहें जानें या न जानें हमारे भीतर वैयक्तिक धर्म्य है और मानव जीवन का सत्य बुद्धाय प्राप्त करना ही है।

नातुसेन (पहली शताब्दी ईस्वी) ने बुद्ध का वर्णन निम्न शब्दों में किया है

बुद्ध चाहनेवाले धनु के लिए भी तुम भला चाहनेवाले मित्र हो। हमेशा दोन निरामनेवाले में भी तुम सुषों की शोक करते हो।" "तुमने रही भोजन तिया कभी-कभी तुम भूखे रहे बठोर रास्तों पर जमे जानवरों द्वारा खींचे गए, कीचड़ पर सोए। तुम स्वामी थे किन्तु तुमने बोधियाष्टि में कुमरों की सहायता करने के लिए आग्रामान महे अपने पत्र और बचन बराम।" श्रीमो गणाधी ईस्वी के बीड़ दामानिर धर्मग ने बुद्ध की कल्याण के विषय में कहा है 'बोधिसत्त्व सभी प्राणियों को उसी प्रकार प्रेम करते हैं जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने एकमात्र पुत्र का प्रेम करता है। जिस प्रकार चिड़िया अपने बच्चों को चाहती है और उनकी देखभाल करती है उसी प्रकार का व्यवहार बोधिसत्त्व सभी प्राणियों के साथ जो उनके अपने बच्चे हैं करते हैं।' उनका कथन है कि 'दुखी शोधी धर्ममयी वादना के पास तथा गलती करनेवाले सभी के प्रति करुणा रखयो। ध्यानिदेव हूँ 'बुद्ध ने बुद्धे धनुषों की भी भला करने' की सलाह देते हैं। पापानी उरदेगक होनेन (१११२ १२१२ ईस्वी) ने धर्मिताम (धर्मिता-जापानी) की उपासना का धारण दिया है "कोई भी ऐसी शोधी नहीं है जहाँ ब्रह्मा की राहनी फिरसे न पहुँच सके। कोई ऐसा आरामी भी नहीं है जो अपने विचारों को उन्मुक्त करने के पश्चात् देवी साथ को न पहचान सके और उसे हृदयगत न कर सके।"

हिन्दू और बीड़ दोनों धर्मों में प्रणय और संघर्ष के सामाग्यों धर्मानु, स्वयं और नरक का अन्तर-सम्बन्धी है। परमात्मा की परम शक्ति उनके धार्मिक प्रेम की पराजय नहीं होती। हिन्दू और बीड़ दोनों धर्मों का सत्य है सम्पूर्ण मानवता की मुक्ति। महापान बीड़ धर्म के अनुसार, बुद्ध ने जान-बूझकर बोधि की धार्मिक धरणा को प्राप्त नहीं किया ताकि वे राह के अन्य लोगों की सहायता कर सकें। उन्होंने प्रथम किया है कि जब तक सारी मृष्टि धूम की प्रत्येक धन पर्य तक नहीं पहुँच जायगा वे निर्वाण नहीं सेंगे।

अगरा धन यह नहीं कि हिन्दू और बीड़ धर्म सिद्धांतों में भला और सुखी धर्म और दुर्गम न अन्तर ही नहीं समझ जाता। इसका धर्म वैश्व इतना है कि बुद्ध के लिए भी धरणी संभावनाएं हैं। कम सिद्धांत यही है कि धारणा को एक न वाह एक धनेक धारणात्मक धरणा प्राप्त होन है। यदि मानवों को वैश्व एक धरणा दिया जाय ता एक जीवन के अन्त में धरणाई के धन पर मुक्ति और सुखी

१. कल्प-की-सुभानि कथा सुभानि-धर्मग।

२. धरणा तिया लण्णा धूम कोकर-धरणा। १११२

३. धरणा धरणा मक धरणा-धरणा धरणा।

४. धरणा धरणा-धरणा धरणा धरणा १११२ धरणा-धरणा

क बल पर मरक ही धार्मिक प्राण्य हो जाणगी । धीर यदि ईस्वर म धनगत प्रम धीर धनगत बरपा है तो यह सम्पूर्ण सिद्धाण्य ही ठीक नहीं है ।

धीर यह तो सुप्रसिद्ध है कि ईगार्ड सन् के प्रारंभ से पहले निम्नलिखित बर्मा मैगाल कम्बोडिया धान्याम चीन धीर जापान (पूर्वी देगो) म तथा धन्याम निस्तान पामीर तुर्किस्तान गीरिया धीर फिसिसीन (पश्चिमी देगो) म धार्मिक भी रक्षणपान किए बिना बीड धर्म का प्रचार प्रसार हुआ ।

सीमटी ताताग्री ईतापूर्व म इण्डीचीन इण्डोनीशिया मलय प्रायद्वीप धादि लोकों में 'धर्म-बिज्ज' का प्रारम्भ हुआ । हिन्दू संस्कृति बहुत पहले समय म ही जावा में स्थापित हो गयी । वहाँ वारोबुदुर क मन्दिर धीर गिरीष धात्र भी धीरूह हैं । कम्बोडिया में धंगकोर-वाट के सिंघान मन्दिर का निर्माण लगभग १०६० ईस्वी में प्रारंभ धीर उसके १० बर्य बाद समाप्त हुआ । भारतीय उन सिंघेणों के नाम बौद्ध धर्मों में पाए जायेवाये नामों जैसे बन्धा कम्बात्र धीर धनराजडी — पर रक्ष दिए गए । ठीक इही प्रकार धमरीका म सबसे पहले बमने बाने यूरोपीय धाने धाय बोस्टन कॅन्ट्रिज धीर मिराबपुड जैसे नाम म धाए । इत बुहतर कारण से भी बीड धीर काकाधधर्मों का प्रचार हुआ धीर भारत के लगान वहाँ भी धर्मों में एक सामंजस्य स्थापित हो गया । उत्तरी भारत के प्रथिम धातव सम्राट हर्ष' (६०६-६४७ ईस्वी) में सिंध धीर बुड के मन्दिरों का निर्माण करावा ।

भारत में बौद्ध धर्म के लोप हो जाने का कारण यही है किन्तु धीर धीर धर्म एक प्रकार से धायध में मिल गए, सिंघेय रूप से एक जब दोनों धर्मों में धर्म बिन्धाधों का बाहुस्य हा गया । कुछ बौद्ध सम्प्रदायों में कहना धारण किया कि निर्वाण प्राप्ति का केवल एक उपाय है । यह बिन्धार भारतीय धार्मिक धतता भी लक्ष्मी धनेकधर्मिणी लस्त्रिण बौद्धिध्या के सर्वथा विपरीत था । भारतीय धर्म में इत 'एकमात्र' सिद्धाण्य को दूकरा बौद्ध धर्म की प्रमुय सिद्धाण्यों का ग्रहण कर लिया धीर इत प्रकार धरमारा को बनाए रखा । धनेक महान धन्य प्रजा सिधा महान साहित्य कपारमक प्रगति वैज्ञानिक विकास धीर धपरिमित राज नीतिध लक्ष्मिता इत बुध की विधेयताएँ थीं । दक्षिण भारत के बिन्धारकों—

१. यथा में बुड सिंध के छोटे नार्ड के रूप में मूल में । लगभग १३० ईस्वी के एक काल में सम्राट का नाम 'सिंध बुड' था । कम्बोय के एक सिंधधर्मिणी सिंधधर्मिणी (लगभग १२ ईस्वी) में बहुरात्र 'बल्लभ' की धरमधता है । 'बल्लभ' का बाइ बुड है, जना सिंध धीर लक्ष्मिणी सिंधु ।

शंकर रामानुज माधव—जे उत्तर धीर दक्षिण धार्म धीर शक्ति को संस्कृति के एक सूत्र में बाँध दिया धीर भारतीय राष्ट्रीय एकता की नींव रखी ।

६ पारसी धर्म

मुसलमानों के अत्याचारों के कारण अपने देश से निकलकर पारसी धर्म के अनुयायियों ने भारत में धारण पायी । एक पारसी इतिहासकार का कथन है "फारसी या पारसी अरणाबियों को अथवित कष्ट सहने पड़े । यहाँ तक कि वे समयमग बिनष्ट हो गए । एक कहीं जाकर वे भारत के तट पर पहुँच सके । वहाँ एक हिन्दू साधक ने उन्हें धरण ही धीर धर बसाने का अधिकार दिया ।"^१ अनुमान है कि सन् ७१६ ईस्वी के आसपास पारसी भोग संज्ञक के पास उत्तरे से धीर धमनि देवता का जन्म पहाला मन्दिर एक हिन्दू साधक की सदाधमता के बस पर बही बना था । पारसी धर्म धुधरे बर्नाबिसम्बियों का मन-परिवर्तन करने वाला मत न था । यह धुधरे बर्नों को पतन के का पूरा धनधर देने का हामी था ।

७ इस्लाम

पारसी अरणाबियों के रूप में भारत आए वे किन्तु मुसलमान धीर ईसाई विजेताओं के समान आए । इस्लाम के प्रति हिन्दू दुष्टिकीय सहिष्णु था । धरय धिर प्राचीन समय से धरनों के साथ भारत के निकटतम सम्बन्ध—विद्येय रूप से व्यापारिक धीर धार्मिक सम्बन्ध से धीर दोनों देशों के बीच स्वस धीर बल-मार्ग स्थापित थे । हिन्दू साधकों ने भारत में मुसलमानों का स्वागत किया धीर उन्हें मसजिदें बनाने तथा अपने मत का प्रचार करने की धाना दी । भारतीय विचारधारा लोगों को जीवन के किसी विषय रास्ते पर चलने को बाध्य नहीं करती । यह भारत भूमि पर रहनेवासे हर समुदाय को प्रेरित करती थी कि यह धम्ये जीवन की अपनी परिभाषा के अनुसार जीवन-यापन करे । पत्रहवीं शताब्दी के समयमग मध्य में भारत स्थित कारण के साथ के राजदून धधुम रवाना ने मिया है 'यहाँ (कालीकट) के निवासी डाकिर है इसलिए मैं सोचता हूँ कि मैं लक्ष्नेश में हूँ क्योंकि जन्ममा न पढ़नेवासे हर धारमी को मुसलमान अपना धुधमन समझते हैं । फिर भी मैं स्वीकार करता हूँ कि यहाँ पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता है यहाँ तक कि हमें बड़ाया भी मिलता है । हमारी दो मसजिदें हैं धीर हम धार्मिकनिर रूप में समाज पढ़ घाने हैं ।'^२

१ कथनः दिवसी बन्दूधधार्मिक (१-२) धीर १ पृष्ठ १३ ।

२ धरेः दिवसीधनीय धेधर धैधेधध धधधध धधध धधध १ पृष्ठ १ ।

हेतु में इस्लाम के प्रसार के माध-माध समाना घोर बहोर रामगत घोर दाह तुलाउम घोर तुममीशम तथा नामक घोर बंगल क गिदालों में धाम्नि कता की मावना प्रबल हाती गई। हिन्दू घोर मुगलमाम बिनामों में समभोगा कराने की कोशिस मन्त मशरफावों के प्रतिगिन गहगाह परबर न की बा जहूनि इस्लाम की बटूरना बा ना कम दिया बा। परबर बा मग्निन बिलनमीम बा घोर हूय काभन। उनही पोरना है 'मर्भा' यमों में समभगर घारमी तथा ममी यलों में मयमगीन बिचारक घोर उख्यमय गविनयन ध्यनि होते हैं।' बागे उनका कहता है "घानी परिग्यनि के घनमार हर घारमी पर मारमा का नाम रगना है किन्तु बाग्निन में उम घन्य की मजा निर्पागिन करना बसन है। ' जहोवीर ने हिन्दू मायावी जट्टर क बाग में मिया है कि "उम्मे बेगन बिकान घर्षान् मूछीबा" के बिकान बा पुर्ब जान बा।" बाग्निन बा मुबल बड़ा पुब बागामिकोह एक तेम एक बा ग्वमिना बा तिमम गिद दिया गया बा कि हिन्दू घोर मुगलमाम मती में घनर केबन भाया घोर मीनी बा है।

इस्लाम की ईरानी बुद्धिजीवियों का ध्यारन बिलगण मनेत्र घोर गिण बोधवान मिसा बा। इस्लाम-पुर्ब घारमी घर्म घोर मानिरीश बा मिघ्यार त्रेम धारिकामीन घर्म-जग्गहायों न घाग्म में ग्गाम पर बड़ा प्रमार टामा। ग्गाम का मूछी सम्प्रणय—बिनके प्रमिद मन्त है घत्तार मारी जनामहीन म्मी घोर हाकिम—मारनीय घईत बैशाल के घरपल ममीम है। इस्लाम की बिगयना है घत्ताह की बिघेय दूरी पर मानना। इमके बिगरीन मूछीमन न उमकी कानामय उपस्तिथि मानक की घारमा के घरपल निरक घानी गई है। मूछीमन बा बिगनाम घईत परमदहर में है परमे'बर का प्रकाम माना गया है घीर मग्गुय बि'र उमका प्रतिबिम्ब। बार बेकर कहा गया है कि मानक की घारमा घन मरक न घारा हा गई है घोर भीतर भीतर मबा बाहनी है बि घन्य घाकर्षों के बाबरक बापस जाकर उसीमें भय हो जाय। घन-माबायी के हृनिग्न में हूय कग्गन घर्म मानक घोर मक्लिमय घग्गा'मबाक का ममम्बय मियना है। मूछी मा'बाहारी नहीं हैं घोर पुनजग्म तथा घबतार में बिदबास करते हैं। कहा जाता है कि मत्ररबी गनाघरी के एक प्रतिद मूछी सल सम्भनी 'माल मही लाते बे ममजिरी की पबिकता मानते बे मन्दिरी में होमैबासे हिन्दू बाग्निन अनुप्लानी के समान अनुप्लान ममजिरी में करते बे घोर मुमसमालों क समान सिद्धता करते न मपाक पकूते बे। ' उनकी

१. मिनेर मिण : 'जकरर ह रोड मुगल (१-१०) पृष्ठ १४१-२।

२. 'विमो'र्ब बा'क जहोवीर' (धारीकी अनुप्लान), अनुप्लानक : बैरिज, पृष्ठ २, पृष्ठ १४२।

३. 'बिलेपन' (धारीकी अनुप्लान) अनुप्लानक : श्री भीर हापर कंब २, पृष्ठ १०१-२।

जीवन-विधि उन्नीसवीं शताब्दी के हिन्दू सन्त स्वामी रामकृष्ण के समान थी।

स्त्री ने उपासना की स्वतंत्रता के पक्ष में सिरते समय प्राचीन हिन्दू विचार धारा की परम्परा को ही निभाया है। वे लिखते हैं

‘धिराग प्रसंग प्रसंग है सेनित रोघनी एक यह कहीं दूर से घाती है।

यदि कोई धिराग को ही देखता रह गया तो जयना बेड़ा गर्क हो जाएगा क्योंकि वहीं से अनेकता का प्रारंभ होता है।

रोघनी का गौर से देखने पर ही पश्चिम घटीर में निहित ईतावस्था से मुक्ति मिलती है।

हे ईश्वर तुम सम्पूर्ण सृष्टि के सार हो। और मुसलमानों पारसियों व यहूदियों में प्रत्येक सिर्फ दृष्टिकोण का है।

कुछ हिन्दुओं ने एक हाथी खरीता और उसे एक घंघरे बमरे में बड़ा कर दिया। जब देख पाया असम्भव था इसलिये हर कोई उसे हूबेली से छुट्ट मद्दमूस करके मगा।

एक का हाथ हाथी की सूँठ पर पड़ा। उसने कहा ‘यह जानकर तो पानी के नल की तरह है।

दूसरे ने उसका काम छुमा। उसे हाथी पंखे बीया मानूस पड़ा।

तीसरे ने उसकी टांग छुई और बताया कि उसका आहार यम बीया है।

चौथे ने उसकी पीठ बगलपाई। बोसा घरे, यह तो वस्तु बीसा है।

घबराने में से प्रत्येक धारमी ने एक अमती हुई मौमबत्ती से ली हाथी को उनके वर्जित में धिलता न हाठी।’

इस्लाम का भारतीय रूप हिन्दू विचारों और आचारों द्वारा बड़ा गया है।

विद्यामत्त सुन्नीमत की तुलना में हिन्दूधर्म के अधिक समीप है। लोकार्थों के सिद्धांत अल्पक और विद्या सिद्धान्तों के मिश्रण से निर्धारित है उनका विचार है कि प्रती बिल्कुल का बसवा बसवार है। भारत में अनेक बसवतार जातियां हैं। बाहर में जब जिन्हेमी मुसलमान आक्रमणकारियों ने भारत पर हमले किए तो भारतीय मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ कंधे से कंधा बिड़ाकर उनका सामना किया। फिर जब वे आक्रमणकारी भी भारत में बस गये तब भी छोटी-मानी लड़ाइयां होनी रहीं। अनेक उदाहरण हैं जब मुसलमानों के नेतृत्व में हिन्दुओं ने या हिन्दुओं के नेतृत्व में मुसलमानों ने लड़ाइयां लड़ीं। भारतीय मुसलमान भारतीय भाषाएँ बोलने लगे एक ही जाति के बंधन बने और भारतीय ध्यागारिक समुदायों में

१ स्त्री काट्ट ३ दिने ४ (१९२) इट १९२ (अथ २-११ वेट अथ १२) अथी अनुवाद कर व निरूपण द्वारा।

मन्मिषित ११ दर । समा-बन्धी गो प्रत्यक्ष समदान में ही यों पीर प्रगल्लवनों म
 भर करमा उनना ही मुनिम ११ जाता वा खिन्ना मात्र *—दान बन्
 बाहार-बन्धनार पीर खिन्ना में इनकी व्यष्टि सम्मानता गीत। वा ११ वी।
 मुगलों व शासनबान में गाही दरबार हिन्दू यो मूमनमान बिडाना व मिनन
 रपस बन मण्ड, अहा वे एक-दुमरे वा घरती घरती मन्मिषित। मे ११ मिनन बगते
 व। म्पारकी गताकी मे थप्ट मुननमान खिन्ना घमकेनी व मन्मिषित बाग पर
 बिमन बाधना प्राल कर मो। उनक बिमन मे म्प वना बपता ११ वि खिन्ना
 पीर दान के धन म हिन्दुओं की बिमना घर्तुं उतगपिना वी। बाग व बिदे
 गीतनाएव महनगीमता व। प्रभुनि मे मुमनों व। प्रमारिन बिना पीर चौकरी व
 उन्नीसरी गताकी तक की सांगुनिक गतिबिधिया में हिन्दू मुननमान मन्मिषित
 स्पष्ट है। मवीत पीर रघाण्य बिमनना पीर म्प मे हिन्दू पीर मुननमान
 बिबासे वा उन्मूण समस्य वा। सांगुनिक वना गामाखिर म्परेगा पीर
 घामिक म्पिणुना की परमण्य मे भाग्य क हिन्दू यो मूमनमाना वा घनीन
 समान है।

८ ईसाई धर्म

११वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही भारत में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ। मन्मिषित क
 मीरिवाई ईसाईयों का बिमनना है कि उनका ईसाई धर्म मोक्ष मन्मिषित टामन मे
 प्रारम्भ हुआ है। उनका कहना है कि उनका ईसाई धर्म वा स्वक्य पन्मिषित के मूँट
 पीर पीर मट पास डाग रघाण्य ईसाई धर्म के स्वरूप म म्पिणु यो स्वक्य है।
 तीसरी गताकी के एक घामिक घन 'द पन्मिषित घामिक टामन' म बिमना है कि
 पममून टामन म्पिणु नहीं जाना चाहते व सेकिन ईसाई व लमी माया रबी कि
 मान क घामिक घामिक घामिक के प्रतिबिम्ब घामिक के हाथों उन्मू गुमान के रूप
 में बेष बिबा गया। वहुम वा इत पुरी कहानी की कल्पित समस्य जाता रहा फिर
 भारत के उत्तरी-पश्चिमी काने में एक मुन्मिषित मन् १८३४ म म्पिणु बिमनर मोडा
 पन्मिषित का नाम मुना हुआ वा। इमन हम यह निष्कय तो म्पिणु निकाल मन्मिषित कि
 बमन्मिषित टामन पहली गताकी में भारत बने थे—हामाकि यह घामिक म्पिणु नहीं—
 सेकिन यह तो मोक्ष ही सक्ते हैं कि तीसरी गताकी मे भारत पीर मेसापाटामिया
 क ईसाईयों के साथ भारत क निष्क सम्मन्य थे। इतना स्पष्ट है कि बहुत पुराने
 समय से भारत के पश्चिमी तट पर ईसाई बाबाय रहे हैं। हिन्दू उनका यह सम्मान
 करत व पीर हिन्दू घामिक उनके लिए बिमनकारों का निर्माण कराते व। राण्ट
 रेवरेण्ड स्टीफन गीत मे यो कुछ समय तक म्पिणु के बिमन रहे वे 'स्पोटेटर'

में लिखा है 'सीरियाई लोगों की बराबरी हिन्दू जमींदारों की जाति नायर लोगों के साथ है वे स्वयं को अस्य हिन्दू जातियों से ऊंचा घोर परिबलित जातियों से तो बहुत ऊंचा समझते हैं।' धारम्भ के ईसाई अपने को सामान्य हिन्दू समाज का ही अभिवाच्य भंग समझते थे घोर धर्म-परिवर्तन के विरोधी थे।

ईसाई धर्म में परिवर्तन के लिए मिशनरी प्रचार भारत में यूरोपियों के बसने के साथ-साथ प्रारम्भ हुआ। पूर्व में धर्म प्रचार करनेवाला महान ईसाई मिशनरियों में से एक थे प्यसिड वैबियर, जिन्हें अपने मिशन की दैवी प्रकृति पर घट्ट बिरासा था। उन्होंने पूर्व के घने-घने जंगलों में अपने धर्म का प्रचार किया। उन्होंने बाइबल जोषाफो तृतीय को लिखा था "अपने अधिकारियों के सम्मुख आप यथासंभव स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दें कि आपके क्रोध से बचने और आपका अनुग्रह प्राप्त करने का केवल यही रास्ता है कि जिन जंगलों पर वे घासन करते हैं वहाँ अधिक से अधिक लोगों को ईसाई धर्म की दीक्षा दें।"

हिन्दू विचारधारा के अनुसार ईसाई धर्म को प्रस्तुत करने के अन्तर्गत नोबील के प्रयत्नों को बढ़ावा नहीं मिला और इसके बाद तो ईसाई मिशनरी हिन्दू विचारधारा के साथ तनिक-सी भी प्रत्यक्ष समानता को जानबूझकर नजरअंदाज करने लगे। पुर्तगाल की शक्ति का हास और उच्च तथा अंग्रेज शक्तियों के उदय के पश्चात् व्यापार ही मुख्य ध्येय हो गया और प्रोटेस्टेंटों को औद्योगिक धर्म की पठिथियों के साथ कोई हमदर्दी न रही। ईस्ट इंडिया कम्पनी अपने अधिकृत क्षेत्र में मिश नहीं प्रचार को बढ़ावा नहीं देती थी। जब यूरोप के प्रोटेस्टेंट धर्म में धर्मप्रचार की प्रवृत्ति आयी तो भारत में मिशनरी कारनाम भी बढ़ गये। नई नस्थाएँ स्थापित हुई और हिन्दू धर्म के विरुद्ध प्रचार इतना तीव्र हो गया कि साई मिशन को हिन्दू धर्म विरोधी धारे उपदेश रोक देने पड़े। उन्होंने बौद्ध धर्म का अन्वेषण के वैभव में को लिखा "हिन्दुओं का सत्य करके जो पटिया बातें सिंगो आयी हैं कृपया उन्हें पढ़िये। इनमें धर्म-ईसाई पाठक के मस्तिष्क का अल्पुष्ट करने या विचित्र विज्ञाने सायक एक भी शब्द नहीं होगा किमी भी प्रकार का तर्क नहीं प्रस्तुत किया जाता बकिर घुमा की घाम मुक्तवती रहनी है और एक अल्पुष्ट मानव-जाति को बापी ठहराया जाता है—ज्योकि बहुपीड़ियों से चल या रहे धर्म में विचित्र करती है और अपने धर्म की सत्यता पर धिबिरास नहीं करती। क्या हमारे धर्म की यही नीति है? १८१३ में कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हुआ था तो मिशनरियों के कलबा का फिर से बढ़ावा मिला। भारत के प्रमुख नगरों में ईसाई शिक्षण-नस्थाएँ स्थापित हुई, और ईसाई धर्म प्रचार के मामले में सरकार उत्साह दिखाने लगी।

हिन्दू-गुणरक्षण राष्ट्रीयता के बिनास और पश्चिम के धर्म के पड़े महान के ईसाई नेताओं का बाध्य कर दिया कि वे भारतीय गणतंत्रिता का समर्थन और ईसाई बनों-बैतों में उभरा समर्थन करें। भारतीयों के नेतृत्व में उद्भूत भारतीय राष्ट्रीय दल ने उदात्त को विद्वान् बनाया एक प्रमुख उद्देश्य बना दिया ता कि राष्ट्रीय जातियों को हिन्दूधर्म में धन्य करने की मांग का काम हो सके।

सामान्य हिन्दू ईसाई धर्म का महान-कृतिगुण समर्थन और उसके मूल का पालना काहूँ है। ईसाई धर्म हमारे देश में ईसा की दूसरी शताब्दी में ही आने बिना ही होने के साथे राष्ट्र धर्मियों के साथ-साथ देवतागणों के धर्मियों की प्राण है।

धर्म-परिवर्तन के अन्तर्गत ईसाई धर्म ग्रहण करनेवाले धर्मग्राहक बाद के नौवें शतक को भारत की महान संस्कृति का उत्तराधिकारी मानते हैं। अनेक-कृत धर्मिक माहूँ भारतीय ईसाई तथा प्रमाण कर रहे हैं कि उत्तराधिकार भारतीय धार्मिक-व्यवस्था और गृहीत ईसाई विद्वानों में एक प्रकार का समर्थन स्थापित हो जाए, ऐसा ही समर्थन धर्मों की परंपरा और ईसाई धर्मिक विचारों के बीच क्रूरों के अन्तर्-धर्मिक-विचारक स्थापित कर पाए थे। ईसाई धर्म पर 'युवानियों और बंधुओं का बंधन' का है ही धर्मों की धर्म-व्यवस्था पर उभरा काफी लाभ हो सकता है।

६ चीन

भारत और मुद्ररपूर्व के देशों में कुछ मुद्र-धर्म गुरुक परिवारिक सम्बन्ध और पूर्व-जों के प्रति यथा-मान्यता में उपस्थित हैं। विचारों और भावनाओं में एक साहचर्य है जिसे साधोकार और बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में पाए गए हैं। समर्थन वाली धर्मधर्मों एक मुद्ररपूर्व में बौद्ध धर्म ने सम्बन्ध को विकसित करने का काम किया है एमिया को विचारधारा को धारण दिया है महान धार्मिक धार्मिकों और मध्य एमिया की भाषाओं में एक-आपस में आश्रय का मुद्रन किया है। बौद्धधर्म ने अनेक बंधु जातियों को जीव-साधक प्रति दया के धर्म सिद्धों के रूप में समर्थन बनाया है और महान बना का मुद्रन किया है अन्तर्-धर्मिक धार्मिक शिक्षाओं में नौवें-शताब्दी प्रतीक-व्यवस्था और नीतिव्यवस्था धर्म-नवीनता के लिए प्रयत्नरत है। कुछ समय पूर्व के राजनीतिक धर्मधर्मों के सारे लक्ष्य के लिए धर्मधर्म तैयार कर ही है।

साधो का धर्मधर्म सर्वप्रथम है। साधो ही एक ऐसा उपाय प्रकृति का एक धार्मिक विवेकपूर्ण विचार है जिसे एक-आपस धारण में ही विवेक और साधो

व प्रान्दोलित संसार में रहनेवासे हम लोगों के लिए सुपयोमी है। यदि हमें राज्य का काम मुषाव रूप से बसाया है तो अपने परिवारों को व्यवस्थित करना होया अपने परिवारों को व्यवस्थित करने के लिए स्वयं को मुषारना होया प्रातम मुषार के लिए हृदय की सुखि आवश्यक है। कल्पयुधियस के अनुसार हृदय की सुखि परिवार की पुनर्बसवा और राज्य का मुषाव रूप स बालन हमारा कठम्य है। कल्पयुधियस के अनुसार प्रनुसत्ता का शोठ व्यक्ति है। जनता का विश्वास प्राप्त न कर पानवालो सरकार का पतन अवश्यभावी है।^१

कल्पयुधियस ने 'जम' या परोपकार के सिद्धांत पर विशेष जोर दिया है। 'जिस प्रकार के व्यवहार की भासा दूसरों से धाप अपने लिए नहीं करते उस प्रकार का व्यवहार आप स्वयं दूसरों के साथ न करें।' कल्पयुधियस की सिद्धांतों के अनुसार 'जिन' का मंतम्य है—मानवीय व्यक्तित्व के प्रति सम्मान स्वयं अपनी तथा दूसरों की प्रतिष्ठा की स्वीकृति ईमानदारी सहृदयता और मानवीय संबिधताएं।

अपनी 'एनालेक्ट्स' (शाब्दिक अर्थ 'साहित्य-समुच्चय') में कल्पयुधियस ने लिखा है कि परमात्मा के बारे में मैं मौन ही रहूंगा। "मैं कुछ नहीं कहना चाहता। उनका विचारों त्पु-कुद् वृष्ट्या है "यदि आप मौन रहेंगे दुखी तो हम आपके विषय क्या सिलेंगे और किसका पालन करेंगे? गरुडी उत्तर देते हैं "क्या बह्रांड बासता है? चारो अतुण एक रूप से घाटी-जाती हैं और उग्रीके अनुसार घाटी बस्तुओं का अत्यादन होता है, किन्तु क्या बह्रांड कुछ बह्रांड है?" "परम अक्षिणामी ईश्वर के शिवाकसाओं में न ध्वनि होती है और न संभ।"^२ कल्पयुधियस का ज्ञानी पुरुष 'मयवर्गीता' के 'स्वितमरु' के समकस है।^३ कल्पयुधियस का कथन है "मैं जानता हूँ कि परती उड़ सकते हैं मछलियाँ तैर सकती हैं और पशु बौड़ सकते हैं किन्तु बीड़ाक को गिरामा तैराक को कटिया से अंजामा

—

१ सरकार के बारे में प्रश्न किए जाने पर कल्पयुधियस ने कहा : "सरकार को बालन कल्प्य हीन है : एतपराओं की प्रकृता हो कुछ लामपी लुम्पिन हो और एतक के प्रति बलप्र में विश्वास हो।" त्पु-कुद्ने कहा : यदि एतक न हो लुके और एतके से एक को दांडक बने तो लक्ष्य पर किने दांडक अदिए ? "कुड स्रकामे," गुड ने उत्तर दिया। त्पु-कुद्ने फिर कहा "इन से मा बालन बने और एतक बा में स की एक को दांडक वा प्रस उड वात हो, तो सिमे त्याग क्या अदिए ? गुड ने उत्तर दिया "एतपराओं को। एतक में एतक-भाव का अल्पा मुनु ही मिलती रही है किन्तु यदि बलप्र को (कस्यै एतमों पर) विश्वास नहीं है ना (राज्य का) स्वर्णव का प्रस ही मी उच्छ।" अमानकम् XII VII।

'अर्धजि भाव द र्जन' अण्णव ३३।

धीरे उड़नेवाले की धीरे सारा जा सकता है। जिस तरह 'ईमान' बापनों के बीच या उनके पार उड़ता है उसी प्रकार हमें भीतिक परिवारों के प्रायय में मुक्ति पानी ही चाहिए। बीनी समाज में भौतिक का स्थान सम्मानजनक नहीं था। एक प्रसिद्ध बीनी कहावत है

घण्टे सोड़े में कीलें नहीं बनाई जाती

घण्टा धारमी सैनिक नहीं बनता।

इससे पूर्व पाँचवीं सदी के शार्शनिक मोस्तु का एक विद्वान्दशी महाकविनाम सार्वभरिच 'अकिलवण ईस्वर' में विश्वास था। 'उच्चाई पर स्थित ईस्वर के प्रभ से हमें मुक्त करने चाहिए, क्योंकि 'बहु' महतुल्य देवता रहना है कि जगत्ता घाटिया धीरे धमेरी बगहों (जहाँ मानवीय दृष्टि प्रगच्छत रहती है) में क्या है? रहा है। केवल 'जमे' ही प्रसन्न करने की चेष्टा हम करनी चाहिए। 'बहु' घण्टा का चाहता धीरे बुराई से बूझा करता है। 'बहु' म्याय में प्रभ धीरे घम्याय से बूझा करता है। पृथ्वी पर छापी शक्ति उसी के कारण है धीरे उम शक्ति का उपयोग 'उसी' के अनुसार हुआ चाहिए। 'बहु' चाहता है कि राजा अपनी प्रजा के साथ ब्याभुता का व्यवहार करे धीरे धानव-माव परस्पर प्रेम कर, क्योंकि 'बहु' स्वयं सभी मनुष्यों को प्यार करता है। 'बहु' स्वयं को विधवा धीरे बच्चों को धनाय बनानेवाले विश्वासियों से पुजा करता है। मोस्तु ने अपनी शिष्या का निषाद यों किया है "ईस्वर की धाराबना धीरे मानव-माव के प्रति प्रभ—यहाँ बिबेक है।"

बीनी लोग किसी बड़ मठ के पुत्रास नहीं हैं। इसीलिए संशोधन की महाबना सदैव है। बीन की विभिन्न धार्मिक प्रथासियों में धार्मिक सीमा तक पारम्परिक सम्बन्ध है। महतुल्य ईसाई निगलरी धीरे बीनी बौद्ध धर्म के विश्वास का भी गमन में लिया है। 'बीनी लोग एकमात्र कस्तुपूजासबाही साधोबारी धीरे बौद्ध हैं। यह प्रवस्था हम स्पष्ट दिखलाई बहती है। कुछ देवता सभी धार्मिक प्रथासियों में पाए जाते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे तमरों या कस्तों में सम्मिलित मंदिर हैं जहाँ तीनों धर्मों के देवताओं की मूर्तियाँ सिंहासनों पर साव-साव रखी हैं। प्रतिदिन की पूजा ता पोरी दर पीकी कभी या रही बरेण मूर्तियों में ही जाती है किन्तु विशेष प्रथमों पर मामाग्य बीनी लोग मन्दिर में जाना पसन्द करते हैं धीरे वे साधोबारी हैं या बौद्ध इनमें कोई धन्तर नहीं पड़ता। यदि आप किसी पर जा रहे हैं तो धीरे धीरे धीरे विद्यय धाधुय न उगक समपु जीवन-धर्मन के बारे में जानना चाहें, तो आपकी सभजन अनेक विशिष्ट बातें मृगमे को मिलें—सौंपकतर तो टीने-राम रंग में मिथिन बिचार पठति ही सामने धाएनी जिसमें कस्तुपूजासबाही के सिद्धांतों के अनुसार कने हुए

प्राचीन चीनी दृष्टिकोण के साथ बौद्ध अस्तित्ववादी दर्शन का घुंभला-सा मिश्रण ही होगा।”^१

चीन के प्रति चीनी दृष्टिकोण का प्रतिबन्ध परिवर्तन है रुद्धि से मुक्ति। ताओवादियों का कथन है “जीवित मनुष्य कोमल घोर मुकुमार होता है मृत्यु के पश्चात् कड़ा घोर सख्त।” इसलिए कहा गया है ‘रुद्धापन घोर सख्ती मृत्यु के अंग है तथा कोमलता घोर मुकुमारता जीवन के।’^२ सख्ती का विनाश मूल है कुत्सापन परिस्थितियों के अनुसार स्वयं के झलने की लक्षणा। हम दूसरों पर अपने विचार साधने नहीं चाहिए, बल्कि अपने विचारों को दूसरों को प्रभावित करने का प्रयत्न करना चाहिए, घोर अपनी धारणाओं को दूसरों द्वारा संशोधन के लिए सुझाव देना चाहिए।

चीनी ‘ब्रह्मासिक’ कैथोलिक पादरियों के अनुवादों द्वारा यूरोप पहुंच तो सीबिनिक और बॉल्क जैसे राष्ट्रनिष्ठों ने उनके मूल्य घोर महत्व को स्वीकार किया।

१० धर्म में रुद्धि घनाम स्वतन्त्रता

यदि धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार आचरण को ही अन्तिम परीक्षा समझ लिया जाय तो विभिन्न मतानुयायी परस्पर विस्तृत धनज्ञान मामूम पड़ेंगे यदि जीवन की विधि पर ध्यान दिया जाय तो बर्तानुयायी व्यक्ति परस्पर समान मामूम पड़ेंगे। हमारा धर्म ही सत्य का प्रतिनिधि है घोर इसे व माननेवाले काफिर है बिना का विनाश आचरणक है—यह दृष्टिकोण वास्तव है।

मोक्ष एवं समझ में आ सकनेवाली बस्तुओं के बारे में हमारा ज्ञान अभी प्रयोगाचरणा में घोर अपूर्ण है फिर भी ईश्वर के स्वभाव घोर संसार के साथ उठते उठने के बारे में हमें इतना विश्वास हो—यह आचरण की ही तो बात है! केवल हमारा धर्मब्रह्म वा हमारी संस्था होकर ही निरर्था घोर वैधी है तथा ईश्वरीय गिहा घोर कृपा की व्याख्या करने व उन्हें प्रदान करने में समर्थ है—य प्रसार के उर्ध्व

१ 'रिवाइज इन चाइना' (१९१२), पृष्ठ १७२।

२ 'कमो नद विना' LXXVI बुद्धर्त्सु का उल्लास इस प्रकार है “धार्मिक वचन को उठे वन का। वैश्वः कर्त्तव्य कुत्सा है” फिर भी असी तक केवल आचरण का ही ज्ञान गया है। मैं निश्चय ज्ञान में इच्छाशुद्धि पूर्व मुक्त है। मैं नहीं तक व नीचे का ज्ञान व लोकाचरण है। विष्णु वर मनी ज्ञान कि उमरा कर्त्तव्य है। आर्से नेती श्री वैश्व वर का इत पंडित ज्ञान (१९११) पृष्ठ ७१ (१७२५ व १७२६)।

बहुत हद तक हठपूर्व ही है।^१

स्वतंत्रता के लेकर प्रायः तब भारत में विभिन्न धर्म पंथों ने रहे हैं और भारत के वरान में सभी के प्रति 'त्रियो पीर बीने हो' मिठाणत का पानन रिया जाता रहा है। १९ अक्टूबर १९५१ का पारित भारतीय वायम के प्रस्ताव म यह स्पष्ट है "मने जगत्का से ही वायम का उद्देश्य और पोषित नीति धरी गी है कि एक बसनिष्पेक्ष प्रजातन्त्रीय राज्य की स्थापना हा विमम सभी पनों के प्रति पावर हो किन्तु किसी भी धर्म या जाति के प्रति पक्षान न हा और गणतन्त्र का बनाम सभी सभी जातियों धर्मवा व्यक्तिओं का समानाधिकार और धर्मन की स्वतंत्रता मिले। बागन मणराज्य का विधान इसी धारणासून मिठाणत पर धारण है।

सभी धर्म एक धार्मिक प्रदाग की प्राणि म हमारे मजावर है। हम धर्मन रास्त दिनमा^२ पढ़न है लेकिन हमका धर्म यह नहीं कि के विभिन्न तरया गठ म जाने है। जो ठकता है कि कुछ गज या कुछ मान के बाद धारण म विममन संकटीत की एक सङ्क बना में जो तिथि गठ जाती हो।

भारतीय धर्मों में एकाधिकृत पूजा का स्वात नहीं है। उनका धाराय तो बहुत हद तक यही है कि प्रायःसत विरोधी किन्तु वास्तव में पूरक मया को बाध-भाय समझने का प्रयत्न न करके हम बसती करण है। निपिडिया और पयोमल धर्मी-कुविमा^३ ही नास्तिकता का कारण है। मर्य बेबत एक है और मर्य की निश्चित रूप से जाननेबास सभी व्यक्ति उनम प्रभाविठ जाने है। यहा हम विरोध दुल्ल कोनों न परे हू जाते है। भारतीय धार्मिक परम्परा एक मर्य का माननेबास प्रयक मर्य का स्वीकार करनी है। मर्य-केन्द्रित व्यक्ति धार्मिक विचार म नहीं पढ़ते। इस धारणा का मानने पर धार्मिक घटहिष्मता का जो धारणा को जगजगत विरोधिनो है कोई स्वात नहीं रह जाता। बस जब संकटिन हा जाता है व्यक्ति की स्वाधीनता जाती खूती है। तब ईश्वर की यही बन्धित उमके प्रतिनिधित्व का हम करनेबास मयूह या धार्मिकारी की पूजा हाती है। तब सबाई का गंमन नहीं करने मधिकारी की प्रबजा ही पाय बम जाती है।

१. अर्जुनराज 'मन्त्रा मुद्रापूर्वक कय हतिममन ईसर क मर्य का धर्मन काग है: किमया मुद्रापूर्वक धर्मिकत बेबातिक बाग मुद्राके के मर्य के बारे में मति गठ घने। मर्य। पट्टेन, १० केम एकाधिकृत कयकाकी केम मर्य मनेन (१९२३) पृष्ठ २।

२. भारतीय संविधान में स्पष्ट विरय है कि 'राज्य किसी मर्यिक के विरुध धर्म याति काय विरू धरणा जगमर्यव बासत अनेसे मे किसी एक के बाधर पर कोई विरुध नहीं कराग।'^३ एक अन्य स्वात पर लिख है कि 'मर्य व्यक्तिनी को मिममन की मर्यकत का स्पष्ट धर्मि बम के मजाग का ये मानने, धारण करने और मर्यर करने का मर्यन अधिकार है।'

यूरोपीय धार्मिक इतिहास के ज्ञाता चीन और भारत की इस पारस्परिक-जनक दृष्टि को समझ नहीं पाते कि वहाँ साम्प्रदायिक घटकों का उदगम महत्त्व नहीं है जितना पश्चिम में। किसी बौद्ध को बर्मी भी नहीं सूझता कि उसका पड़ोसी चीन नास्तिक है, जिसे धनस्त नरकवास ही मिलाया। ये बेबता ठो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को बघति हैं। ईसा की प्रारम्भिक घटाश्रयों में अनेक चीनी यात्री भारत गए थे। उनके बर्ननों से हमें पता लगता है कि विभिन्न मतानुयायी एकसाथ बैठकर धारमा और परमारमा के प्रश्न पर चर्चा किया करते थे और विभिन्न बर्मा-बसन्धी विराक विरचविद्यालयों में अध्यापन करते थे। सम्पूर्ण मानव-जाति की धारमा का मात एक उद्देश्य है। धसन-धसन लोच धसन-धसन बंध से उसे प्राप्त करना चाहते हैं। भारत में बहुत पहले से अस्पसस्यक यहूदी सीरिबाई ईसाई और पारसी मौजूद हैं—यह इस उष्य का प्रमाण है कि भारत में धार्मिक सहिष्णुता की भावना समाचार कायम है।

इसका धर्म यह नहीं कि बिकास को प्रोत्साहन नहीं मिलाता। प्रत्येक परम्परा मठ सिद्धान्त विभिन्न संघों से बना एक घाकार है और इसमें परिवर्तन साम्प्रदायिक बिकास के कारण होते हैं बाहर से सावे नहीं जाते। विभिन्न मठ घटाश्रयों की दृष्टि के परिणाम हैं और वैदिक घाद्यों द्वारा निर्मित जातीय कुलों की मिट्टी में उनकी जड़ें हैं। साम्प्रदायिक परिवर्तनों का परिणाम भवानक हो सकता है किन्तु दूसरे धार्मिक दृष्टिकोणों का प्रभाव एक प्रकार के 'समीर' का काम करके स्वामा बिक परिवर्तन पैदा करता है। मायमी मंत्र में निर्दिष्ट है कि बाह्य रूपों को भेद कर उन रूपों द्वारा इगित लोच तक पहुंचने का सतत प्रयास प्रत्येक ध्यवित को करना चाहिए। बाह्य रूपों से सन्तुष्टि ही धार्मिक जीवन का सबसे बड़ा दोष है। घात जब विभिन्न धर्म धामने-सामने हैं, पूर्वीय दृष्टिकोण इसी बात पर जोर देगा कि एक धर्म का स्थान दूसरे द्वारा ग्रहण किया जाना घावत्यक नहीं है। यदि हम धाम्यात्मिक यथार्थ और ऐतिहासिक परम्परा में बिबेध कर सकें तो हम स्वीकार करना होगा कि मानवता के धाम्यात्मिक जीवन के पोषण के लिए विभिन्न धर्म सद्भावनापुष्कर कार्य कर गारते हैं।

भरकार और धानी शिना-नस्थाओं की गहायता से भारत पर धामी मंत्रानु धानने के पश्चिमी धानियों के प्रयत्नों से भारतीय जनता की निरक्षयता को जप दिया और भारतीय मन्त्राज की मनह का धाम्योपिन किया, किन्तु महलाई में पैटी भारत की दीक्षवापीत परम्परा पर धधिक प्रभाव नहीं पड़ा। मठपर हमें अपनी धमकनों को मुख्य घातार का टूटना नहीं गमम्य या सकता।

सम्पूर्ण भारत में मार्चनीय धर्म का पुनरुत्थान हुआ है जिसका घातार वेदों

की प्रमुख गिजाएँ हैं। हममें हिन्दूधर्म की मिश्रान्त-बनी अस्मान्त्रय का निर्माण करनेवाले उपनिषद्, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र सम्मिलित हैं। राममाहन राय (1887-1911) ने प्रचलित एक हिन्दूधर्म के सुधार की प्रणाली उपनिषद् से पाई। स्वानन्द सारस्वती को ज्ञानि-अथा और अस्तुत्पत्ता से मुक्त धारणें प्राप्त मयात्र का प्रमाण अज्ञेय के स्थापना में मिया। श्रीमती एनी बेन्टन व नेपुन्य व विद्यामोडितरम मोमामटी ने हिन्दूधर्म का एक प्रमतिगाम और माधमीय प्रकृति प्रणाल की। रायचरण धार्याजन ने जिसके अनुवायिका की मन्था माया से है हिन्दूधर्म के धार्मिक एवं सामाजिक पक्ष पर जार दिया। रायचरण व विभिन्न धार्मिक मतों का गहन अध्ययन किया और उनकी धार्मिक एकता व धार्मिक अनुभवता को उजागर किया। ज्ञान मयापर निम्न की धार्मिक और मयाया पायी ने एक पुनरुज्जीवित भारतीय मयात्र की स्थापना के लिए भगवद्गीता का महारा दिया।

हम मारी गजाविराओं के दीगत भारत के निवासिया ने एक मन्थुति का विकल्प किया है और उसे निम्नर कायम रता है। यह कोई नई विचारधारा नहीं बल्कि एक जीवन प्रक्रिया है जो परिवर्तनशील परिस्थितियाँ के अनुसार स्वयं को ठामन रूप धार्मिक में धार्मिक मयुद्ध होती गई है।

विभिन्न जातियों के विभिन्न माया भायी तथा धर्म मन्थुतियों क मोम मागतीय धरणी पर मिडे हैं और समय-समय पर हुए मयों के बावजूद एक ही सन्तता क मरम्भों के रूप में रहन मये हैं—ऐसी मन्थता जिसके प्रमुख गुण हैं सभी जीवधारियाँ म स्वयं एक 'अदृश्य वास्तविकता' के प्रति धारणा धार्मिक अनुभव का महत्व संस्कारों और मिश्रान्तों की मारेचना बौद्धिक धारणों के प्रति एक धर्ममय और प्रत्यक्ष विराओं को सम करने की मागुरता। उनके धारणों को धर्मविराम नहीं बल्कि जीवन मय मयात्रा जाता है जो मन्थुन मागवता की धार्मिक धार्मिकताओं को पूरा कर सकता है। बहुत पुरान समय से यहाँ तक कि मुँदर काल में वायद ही कोई बर्य या मय्यथा धारा वा स्वयं ऐसा ही जिस धारण म स्वीकार न किया हो फिर भी ज्ञान की धारणा धार्मिक है। गोपीजी व 'मंग इटिया' म मिया था "मै नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों और एक दीवार उठा हो जाए और विद्वक्तियों का बन्द कर दिया जाए। मैं चाहता हूँ कि धार्मिक स्वतंत्रतापूर्वक सभी धारों की मन्थुतियाँ मेरे घर के चारों ओर मरठानी रहें। लेकिन यह निश्चय है कि कोई भी संस्कृति मेरे पाँव नहीं उखाड़ लेगी।" हमारी संस्कृतियों ने भारत को प्रभावित किया है, पठित नहीं।

यूरोप के समान भारत की घमंढता क्षेत्रीय राष्ट्रीय घान्दोसनों में नहीं बदली है और हर समय भाषा वासे क्षेत्र में स्वतंत्र राजनीतिक इकाइयां नहीं बन पाई हैं। इसके कारण है एक प्राचीन संस्कृति की सुदृढ़ता और बाहरी—ईसा की घाटी की घाटी ने मुसलमान और घठारहवीं घताब्दी के बाद यूरोपीय—प्रभाव।

भारत ही संकेता देण है जहां मन्दिरों गिरनों और मसजिदों का घान्तिपूर्ण सह-घान्ति है। मैं स्वयं हिन्दू मन्दिरों म्हरियों की प्रार्थना-सभाओं बौद्ध मठों ईसाई गिरनों और मुसलमान मसजिदों में भाषण है चुका हूँ और न तो मैंने अपनी बौद्धिक बाधकता के साथ कोई समझौता किया है और न अपने घाम्वात्मिक बिस्वासों को छेड़ गहंने की है। पसपातहीन बिबेक की प्रकृति भारत की घाम्बिक परम्परा में घ्याप्त है।

घनेक महान घारमाधों के प्रसनों से भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है—उनकी पीढ़ाधों से बांघा ऊपर उठा और रक्त से निर्मित हुआ है। घताधियां बीतने के साथ-साथ उसमें मिट्टी का रंग मिस गया है। अपनी मन्धी बुद्धि के सारे बाध और घम्बे उतार मीजुव हैं। यह घारुर्षक भी है और बिघर्षक भी अपने बिरोधा भासों से हमें बांघा देनी है और घबिनापी बांघनी घक्ति ने मोह सेठी है। भारत ने बांघा है कि उठकी घमरासीन संस्कृतियां अपनी घदमी पीढ़ी की मस्कृतियों को जमह बेकर बिलीन हो गईं फिर कुछ मबीन संस्कृतियां भी घुप्त हो गईं, किन्तु भारतीय मस्कृति फिर भी बांघित है। उठकी घारमा के घीक की मी कानी तो की किन्तु कुमी कमी नहीं।

मानवीय बिचारभारा निर्मल छरिना नहीं है। सामारकत उसमें सूब मिट्टी मिसी होती है और घाम भारत में काप्री मिट्टी जम गई है जिने हटाना घाबसक है। घंघ-बि-बाम सूब पैना है। घाम भी बहुत सोग भून-असों में बिबेबाघ करते हैं। यहां तक कि गिदिल भारतीय मी अपनी मस्कृति की प्रकृति को उमरी उप-मधियों और मभाबनाधों को नहीं मममने। घ्यबसायमव घन्तरों ने कूड़ बाधियों का रग घहण कर मिया है। छारिकक बिचारोंनाम घ्यकिल घस्यु-यना को घाराब और बुप्रकृति मानते हैं। घनेक सामाघिक रीति-रिघाघ काघम है हासांकि उनमें बीरत का प्रगत रक गया है। सेकिन ये बांघ मीठपी नहीं हैं। भारत के घारमों के गाय इनका बांघ घाम्य नहीं है। भारत घाम उठी बांघित रू-उता है जब यह घदन घामों का प्रनिनिघित न करनेबासी मस्योधों की घुमना बग्य कर दे। घनेक मस्योध तो घदिघ्या—जमी बांघिन प्राणी की वापाण प्रतिमा—बनकर रह गईं हैं। घाम्या के मस्योध न वापाधों को पुन-बीबन प्रगत किया जा सकता है। घाम घाबस्यता है कि भारत अपनी ही प्रकृतियों को बांघ कर गया है।

द्वितीय व्याख्यान पश्चिम (१)

१ पश्चिमो संस्कृति

पश्चिमो मनुष्यो के मुख्यों और विज्ञानों के उत्पन्न प्रान्त रोम और इतिहास स्थान है। पूरान न समीक्षात्मक दृष्टिकोम पयबेक्षण-विषयो और राजनीतिक विज्ञान मिले। परमनिरलेख कामून और व्यवस्था-सम्बन्धी नियम रोम की देन है। अक्टोबरबाह और ईज्बर के निर्देशानुसार आचरण करनेवाले मूलिक मानव के विचार विनिस्तीर प्रवृत्त हैं। पश्चिमो परम्परा के तीन प्रवयव तत्त्व हैं—विचार अनुवायन और धारणा। किन्तु यूरोपीय विज्ञान की निम्नी की व्यवस्था में इन तानों का सामंजस्य स्थापित हो सया एसा नहीं कहा जा सकता। धारणा में प्रव्यापी मनुजन में ही है। तेषेस्य वे मुकराण का मीन के बाह उतार दिया और बाहप्रया का काम सया। रोमक बानुन ने कभी सीडरों और सामान्य नाग रिक्तों की ग्राहणियों पर प्रतिक्रम नहीं मयाया। ईसाई धर्म भौतिक शक्तियों की शक्ति के लिए संपयपीम रहा। धारण राजनीतिक मस्याया की विभुता पर व्यवस्था-सम्बन्धी विज्ञान मागू करने के प्रयत्न विफल हुए हैं और बानुन द्वारा नियंत्रित एक साधनीय मयात्र के आहवाणितुमार आचरण में ही हमें मष्टमता नहीं मिली है—और पुष्ट तथा बिडाह की कपणियों इन्ही प्रवृत्तताओं के बाह मयात्र है।

पूरान विनिस्तीर और रोम पर पूर्व का प्रयत्न प्रभाव था। एमिया माह तर और मिय की मनुष्यियों न पूरान न बहुत कुछ प्रवृत्त किया। ईसा में पहले की शताब्दियों में यहुदी-ईसा में पूर्व की भासिक प्रवृत्त वि परुषपी रही की प्रवृत्त उल्लेख आख्यतिका उदाहरण के ईज्बर और अनुव्य-सम्बन्धी कृति-ईसाई ईसाई विचार को प्रम दिया। ईसाई धर्म ने अपने मीन में प्रवृत्तानिक मती—विद्या मप्रशय और मती के सुधारों—का शास किया। जर्मन और मंकात आचरण कारियों की राजनीतिक और वैदिक व्यवस्था ने पश्चिम के राजनीतिक मयन को

प्रभावित किया। अरबी इस्लाम ने स्पेन और इटली से होकर, पश्चिमी संस्कृति को यूनानी सांस्कृतिक विरासत का कुछ भंदा पुनः प्रदान किया जिसे पश्चिम रोमक साम्राज्य के दिना में मूल भेद्य था। अपने अनुसंधान और पयनेशन से प्राप्त मनीष वैज्ञानिक सिद्धान्तों को भी अरबों ने यूरोप में फैलाया और इस प्रकार पुनरुत्थान और नवजागृति की आचारभूमि प्रस्तुत की।

२. यूनान और पूर्व

ऐतिहासिक प्रथम सांस्कृतिक संदर्भ में पुनः पौर पश्चिम की सर्वा करते समय हमें भौतिक माध्यमों का विचार स्पष्ट रचना चाहिए। पाँचवीं सताब्दी ईसापूर्व के यूनानियों के लिए पूर्व या पश्चिम का अर्थ था आर्य और पश्चिम या यूरोप का अर्थ था प्राचीन विद्युत् यूनानी (हेलेनिक) संसार।

भाषा के जन्म के सम्बन्ध में हमारे विभिन्न सिद्धान्त हैं। पहली परम्परा के अनुसार भाषा में पशुओं के नाम रखे थे और विभिन्न भाषाएँ ईश्वर की देन हैं क्योंकि वे बीजों की मीठार का निर्माण रोक देना चाहते थे। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि भाषा का विकास क्रमशः हुआ परन्तु स्वर और हावभाव क्रमशः भाषीय तत्वों में बदलते गए। अन्य लोगों का मत है कि मानव ने प्रकृति में जो ध्वनियाँ सुनीं उसी नकल की और इसीसे भाषा बनी। भाषा का अन्तर्गत भाव जो है उसमें अभिव्यक्ति की वह शक्ति है जो पशुओं के लिए दुर्लभ है। भाषा के माध्यम से ही विचारों का आदान प्रदान और सहयोग संभव है। यह किसी भी मानव-मनुष्य में पाया जानवाला एक सामाजिक आवरण है।

आज से डेढ़ सौ साल पहले जब सर विलियम जोन्स जैसे यूरोपीय प्राच्यविदों ने यूरोपीय विद्वानों को संस्कृत से परिचित कराया तो ग्रीक सीटिंग तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं के साथ उसका धिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट हो गया। जिस प्रकार फ्रेंच इटाली की पुनर्जागीर अन्वेषणों और स्पेनी भाषाएँ अपने राष्ट्रिय उच्चारण और भाषा-विज्ञान में परस्पर समान हैं उसी प्रकार संस्कृत और फारसी, धार्मिकियाँ अन्वेषणों तथा यूनानी भाषाएँ, ग्रीक सीटिंग द्यूटन भाषाएँ (आरबी एथोपनी जर्मन और जेम्मा-नीकन) तथा केल्टिक भाषाएँ (वेल्सी अर्थ और गैलिक) भी परस्पर समान हैं। क्या ये सभी भाषाएँ किसी ऐसी मूल बोली से उद्भूत हैं जिस इतिहास के किरी पुण में किसी स्थान के निवासी बोला करते थे या वे एकदम अलग बोलियाँ हैं जिनमें विरोध क्रम और समानता अचिर है? क्या ये भाषाएँ एक ही बोली के अलग-अलग विपरण से बन गई हैं या एक-दूसरे

में मिसली हुई एक ही केन्द्र से प्रसारित बोरियों के निरन्तर प्रवाह^१ जैसी है? इनकी व्याख्या चाहे जो हो भाषाओं की समानता के इतना पता तो लग ही जाता है कि कई निश्चित मानव-जातियों की धर्म-व्यवस्था सामाजिक संगठन और धार्मिक विकास किस सीमा तक परस्पर समान थे। सहज ही कल्पना की जा सकती है कि इन जातियों में एक निश्चित भीमा तक स्थानातीत सम्पर्क स्थापित था।^२

जहाँ से हमें वैदिक भारतीयों और होमरी यूनानियों के इतिहास का पता है, उस समय के सामाजिक विकास की समय समान अवस्था तक पहुँच चुके थे। देवी-भाड़ी शिकार और मछली पकड़ने की कलाओं का ज्ञान लोगों को था। घोड़ों का सामाजिक महत्त्व था। पहिया 'पहिये की नाभि' 'पुरी' 'बुधा' प्रादि शब्दों से पता चलता है कि पहियेदार गाड़ियों का प्रयोग होता था। लौकामा और 'डाँड़ों' द्वारा पत्त-परिवहन प्रचलित था। ऊँट काता-बुता जाता था। सामान्यतः पत्थर के बने औजारों और हथियारों हथौड़ों कुम्हाड़ियों और तीरों का प्रचलन था। ताँबा ज्ञात था। कबीले पिता की वंश-परम्परा में वसत के सासन सरदारों और राजाओं के हाथ में था। प्रकसर सुरसा के बिचार से गाँवों को जहारबीबारी से बच रिया जाता था। एक धाकाध-देवता (ज्यूपिटर ज्यूस पेटर, घौस पिता) की पूजा बसि बैकर की जाती थी। ये सभी नाम प्राचीन 'हाई जर्मन' नाम 'बिबू' तथा प्राचीन गार्बी 'टायर' एक ही धातु 'बमकता' से उद्भूत हैं। बरुन के समकक्ष 'घौरागोस' हैं तथा उपस् का इषोस। बुद्धसवारी में पथ प्रपुषक्य बुद्धा प्रकाश और बीपि के विषय देवता अस्विनिकुमार 'डामो स्वबूरी के जिनका काम था देवताओं की रक्षा तथा मानवों की सहायता करना।

१ 'इ यूरोपिकल इन्डिस्ट्रिय (१८५४), पृष्ठ १ पृष्ठ ८३।

२ प्रोफेसर बी. एड्विन काररर ने लिखा है: "जब कबला कन्जल होमर कि इरल्य प्रवेर—जैसे क्लान और धरत—में रहने और वरपर समेका समुदाय बालियों का व्यवहार करनेवाली दो अतिना विकसत की समान अवस्था पर पहुँचकर 'धरत' 'पाव' और 'करत' जैसे समान शब्दों का आधिपत्य करें और समान ढंग से उनका व्यवहार करें, जैसाकि वैदिक भारतीय और होमरी यूनानी संस्कृत करते थे। अवस्था ही कुछ शक्तियाँ व्यपन्न में रहने पद्य रहती रही होमर कि वरपर संवर संभव रहा होगा और अन्ये मिश्रत की एक अवस्था ही धार्मिक कालीन संस्कृति रही होगी।" श्री पृष्ठ ८४। हिट्टी जो यूरोप की सरसे पहली लिपिक और संरचित भाषा है शाल्व लिप्यास, व्यवहार और शब्दकोश में संस्कृत, धर्म का सिद्धान्तिसाई भाषाओं से भिन्न है। अन्त्य 'जब वह हो संभव है कि मिश्रत की जल कल्पना एक पुरुषने से पहले ही बनके पूर्व वैश्वेदिक या ऐतनीतिक शब्दों के कारण अन्य शक्तियों से प्रकृत हो गये होंगे।' श्री पृष्ठ ८४।

इरोस (कामदेव) 'हिसियोस के देवताघा में प्रथम थे।' वेद धीर होकर बनों में घाकाशीय पिठों की पूजा साधारण बात थी। वैदिक ऋतु प्रकृति का नियम यूनानी 'डाइक' में विद्यमान है। यूनानियों का प्रयत्न परमात्मा को इसी संसार में खोजने का था। उनके धर्म में प्रकृति की घायल महत्त्वपूर्ण शक्तियों धीर घटनाओं को संप्राप्त मानकर देवताओं के रूप में पूजा जाता था।

इन समाजताघा से पता चलता है कि इनको मानवजातियों—प्राचीन यूनानी धीर वैदिक भारतीय—में परस्पर सम्पर्क अवश्य रहा होगा यद्यपि दोनों में से किसीको उस काल की याद नहीं है धीर के अरसी साम्राज्य में अपरिचितों की भाँति मिली थी।

यूनानियों को मिस्री असीरियाई अरसी धीर हिब्रू सम्प्रदायों के बारे में भी मासूम था किन्तु वे उन्हें बर्बर मानते थे क्योंकि उनके विचार थे वे तर्कसंगत विद्याओं के साधारण पर जीवन नहीं व्यतीत करते थे। मिस्रियों को जब मुरदाह रक्तने में घायल प्राप्त होता था। असीरियाई सिलने-पड़ने से अन्नमिश्र थे धीर उनके देवता घाबे पशु थे। यहूदियों की घास्वा अनुष्ठानों में भी धीर अरसीयों को स्वतंत्रता का अर्थ तक नहीं मासूम था। यूनानियों को सयता था कि पापों की बुनियाद में वे ही अकेले समझदार लोग हैं धीर हर समय उन्हें पापमय की छूट पग जाने का शतक है। बबरता का शबाब तो उनक लिए सचमुच अलमो था—अरस बाहर में नहीं भीतर में भी।

अनेक अवसरों पर यूनानी अपने को मिस्र धीर मिस्रोरोनामिया की प्राचीन सम्प्रदाया का शिष्य कहा करते थे। धीर-यूनानियों का अज्ञान यूनानियों पर काफ़ी था किन्तु एगले यूनानी बुद्धि की मौमिजता में कमी नहीं घा आनी क्योंकि बुगरी से प्राप्त विचारों का अनेक मासूम के अनुकूल बनाने की शिवा में उन्होंने उन विचारों का काफ़ी बदल डाला था। हम याद में देंगे कि जब उन्होंने ईसाई धारणों को ग्रहण किया तो उन्हें अपने व्यवहार के अनुकूल बना लिया। यूनानियों के बारे में अज्ञान ने कहा था 'हमें मान लेना चाहिए कि यूनानियों ने जो बुद्ध भी यूनानी जातियों में ग्रहण किया उस अत्यंत अदृष्टार ही बना दिया।'^१

अज्ञान ने 'मिस्रियम में सिता है कि मिस्रवासी यूनानियों का अज्ञान हममें से है। अज्ञान है वैदिक समाज के पनोरोमुख दिनों में अविद्यत है इसलिए मिस्री संस्कृति

१ अज्ञान-धर्म के अनुसार अज्ञान की शक्तियों के अज्ञान समाज का अज्ञान का अज्ञान प्रेम है।

२ 'अज्ञानमि २०० टी।

के स्थापित की स्मृति मानते थे।^१ पिरामिड मानव-जाति की महान सभ्यता के प्रथम के प्रतिष्ठित तथा नियोजित धीरे-धीरे वर्णव्यवस्था की पश्चिमीय उपलब्धि थी। मिस्र के मन्दिर प्रायः भी नील नदी के प्राचीनतम निर्माणों की ईश्वर में धात्वा के गढ़ाओं के रूप में पड़े हैं। पैंतीस सप्तशताब्दी में भी अधिक समय में सहर में पूजा होती आ रही है। इस समय के माक-माक नाम बचने का है—यमन ईसा सप्तशताब्दी। पूजा के लिए प्रेरित करनेवाली भावना प्रायः ही उपस्थित है धीरे-धीरे यह स्थान प्रायः ही उतना ही पवित्र है जितना ईसा सप्तशताब्दी में बने थे। पांच हजार साल पहले के मिस्रवासी नैतिक सदाचार के उत्कृष्टतम मिश्रण की मानते थे। मृत्यु से पूर्व हर प्रीमल मिस्री अपने देवताओं धीरे-धीरे गहवोमिया की विधायक दिना देना चाहता था कि उनसे नैतिक धारणायम जीवन व्यतीत किया है। प्रायः मृत्यु से पूर्व के स्पष्ट समय में वे बार-बार बड़ी-बड़ी से कि वे जीवन भर सहायक द्यानु धीरे-धीरे धरने-पड़ोसी रहे हैं "मैंने सपनापा के बराबर ही विधवाओं को भी दिया था। मैंने छोटे-बड़े में मेरे नहीं किया। सभी धर्मों के समान मिस्र की 'मृत्यु-मुक्तक' (बुद्ध धर्म के रूप में) में भी धारण विधि-विधि से ही में सदाचार की विधि-विधि के बारे में सिखा है "मैंने किसीका रोग का कारण नहीं किया। मैंने किसीको मृत्युपुत्रक बात नहीं की। मैंने किसीको धारण नहीं किया। मैंने किसी ग्याय धीरे-धीरे सत्य से धरे-धरे लोगों को धनमुना नहीं किया।"^२ उन प्राचीन ग्रामरूप व्यक्तियों का एक प्रदर्शन नैतिक सदाचार का एक उत्कृष्टतम धारण किया करता था।

यूनानी धर्म समान धीरे-धीरे साहित्य के लिए विधियों के धारण थे। कहा जाता है कि बेसम सोलन पाइथगोरस धरने-धरने के समानाहृत धीरे-धीरे प्लेटो में मिस्र की धारण की थी धीरे-धीरे मिस्री धारणियों में गिटा धरने की थी। यू इन इतिहास का अनुचित ऐतिहासिक प्रयास नहीं है। फिर भी इतना तो निश्चित है कि मिस्र धीरे-धीरे नैतिकता के धरण धीरे-धीरे प्रमाण में अनुचित होकर ही यूनानी साहित्यिक उपलब्धियों में प्रयास है। सोलन-धरने धीरे-धीरे धरने-धरने के

१ 'दिव्य', २२ स-२३ व।

२ इन्द्रजी संविधि के प्रथमकाल में कहा गया है "जो समय देवताओं में मुझे धरने इन्द्रजी को—जो प्रथम नाम धरने-धरने से कहें या धरने-धरने धरने पर धरने-धरने की धरने-धरने का जो धरने-धरने धरने-धरने का धरने-धरने का, "जो धरने-धरने धरने-धरने के धरने-धरने मरी होने के धरने का "जो धरने-धरने को धरने-धरने धरने-धरने का धरने-धरने धरने का—धरने धरने का धरने।"

सिद्ध भी यूनान मिय का साभारी था।^१

यूनानियों की एकलव्य विद्यपता की मानव-विशेष की शक्ति म घास्या।
 अपने मूलिक और पार्थिक दृष्टिकोनों का तर्कमंगल साधार प्रस्तुत करने का
 प्रवास हमेशा उम्हेंमि दिया है। उनके मस्तिक तर्कप्रधान म। मानव विचार
 बाण के शेष को सीमित करके यूनानियों ने सत्य के स्थान पर तर्क और घाघ्या
 तिमक दृष्टिकोण के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्थापित किया।

यूनानियों और बर्बरी का अंतरमात्र वर्णगत या जातिगत नहीं है। वेद
 है मस्तिक की विधिप्यता का। यूनानियों को अपनी संस्कृति की घोटला में
 अपना विदबाध या और तुलनात्मक रूप से वे जाणियत प्रसहिष्णुता में
 मुक्त थे। यूनानी संस्कृति को स्वीकार कर लेनेवासे बबर यूनानी मानसिए जात
 थे। उदाहरणतः सेंट पॉम में जो यहूदी परिवार में जन्मे और बड़ से सारे
 यहूदी अनुष्ठानों और पूषक्य की भावनाओं को त्याग कर यूनानी संस्कृति को
 स्वीकार कर लिबा। श्रीक भाषा और यूनानी जीवन-मदति अपना लेने पर घचीन
 जातिवों को भी नागरिकता और सामाजिक समानता के अधिकार प्रदान कर
 दिए जाते थे।

यूनानियों की दृष्टि म सत्ता और ऐश्वर्य प्राप्त करने में वही घबिक महत्त्व
 पूर्व या मानसिक शक्तियों का विकास और उपयोग। वे यूनान के मुक्त म।
 प्रकृति के प्रति तर्कमंगल और नृजनतात्मक दृष्टिकोण उनकी विशेषता थी। उनकी
 'दशन' पद्व म बहु घची कुछ सम्मिलित या त्रिधे हम पात्र विज्ञान बहने हैं।
 बचन का उद्देश्य यथासं निरीक्षण का हयका-मा पुन ईकर परम्परामुद्ध
 विचारी की एक श्रुताता उपरिचन करना है जबकि विज्ञान म यथासं निरीक्षण
 वा अनुशात घबिक होता है।

यूनान क सर्वप्रथम विधिगत दार्शनिक वेत्त (५२५-४५२ ईसापूर्व) ही
 प्रारम्भिक ग्यामिति और गणान के जनक थे। उनके समय के कई घय दार्शनिक
 और वैज्ञानिक भी थे जिन्होंने पानी, हवा के निघातों का चार घनिचन तर्कों

^१ प्राचिन काल में ताकर गंग का दूनरी का तीपरी शब्दका। एक यूनानी मन्त्रिम देवार
 रण मायक म्प्रा। ने बड़ बड़ प्रसार के नागव पर निघा और कीरी दर कीरी सुघित रण
 जाण रवा का मिय में रणका करसेम कल्पन घकीज काल में होय बना का रवा का और यूनान
 में रणका कल्पन मिय म ही निघा मया बनेकि दानों काधार-प्रसार तथा कल्प माय में
 गमन्य थे।— द मिलीमी काल द्दिप (१९५०) पृष्ठ १५ में बरदा का निघन उ पत्र घटीव
 (पृष्ठ ४) थे।

को मूल मानकर संसार की व्याख्या करने का प्रयत्न किया था। पान्पाओरस (१८२-१०० ईसापूर्व) एक महान वैज्ञानिक थे। मृष्टि में व्यवस्था और सामंजस्य है, इस सिद्धांत का प्राबल्यार करके उन्होंने मानव की संबन्धनात्मक प्रकृति को सम्युष्ट किया था। अपने नमकोण विमूढ़ प्रमथ रस्मी की सम्बाई रंदा का अनुपात और योगाकार पृथ्वी के विचार में उन्होंने सिद्ध किया कि ब्रह्मांड नियमबद्ध है। अपने में पुरातनिक वैज्ञानिकों के समान पान्पाओरस ने किसी सिद्धांत की गार नहीं की बरन् ब्रह्मांड का नियंत्रण करनेवाले मुक्तिविद्युत सम्बन्धों या नियमों पर जोर दिया। बर्नुनों में सामंजस्य उनके लिए काव्यमय विम्व मात्र नहीं था और इससे उग्र सन्तोष था। एनैकमाओरस (१०९-८२६ ईसापूर्व) ने अपने प्रायतवासी धर्मों के स्पष्ट प्रथम सिद्धांतों के स्थापन पर सतिष्टत को रखा। उन्होंने तात्पर संसार के कारणम्बक एक प्रगोचर प्रथम सिद्धांत का प्रतिगाहन किया।

अक्रादमी के विह्वार पर ही हुई व्यटा (४२०-३४३ ईसापूर्व) की विख्यात वेतावनी में मथिन के प्रति उनके प्रम का पना समता है। यूनानियों में सर्वाधिक प्रभाववासी वैज्ञानिक अरस्तू (३८४-३२२ ईसापूर्व) थे। वे यदि बावण एक प्रयोजनीय दार्शनिक थे और तथ्यों को एकत्र करके विज्ञान के समस्त अक्ष में व्यवस्थित करते थे। अक्सर उन्हें प्राबुनिक विज्ञान का जनक कहा जाता है। उन्होंने तर्कशास्त्र अनुविज्ञान और बनसति-विज्ञान की आधारविस्थाएं रनीं। उन्होंने भौतिकी काव्यशास्त्र मनोविज्ञान अंतरिक्ष-विज्ञान तगोस भूगोल मीनिगास्त्र और राजनीति पर लगनी बभाई। लगभग इसी समय यूनानी प्रायप-विज्ञान का उदय हुआ। परिचामी संस्कृति का विज्ञान से अनुप्रेरित करने का अत्र यूनानी विद्वानों को ही है। उन्होंने ही परिचय को बौद्धिक और नीतिक अनुपासन प्रदान किया।

यूनानी लोयोस में अनुपात समन्वय और धार के प्रति आपरुक्ता थी। अपनी सौंदर्यपरक इधियों को धर्मियस्त करने की आकाशिकी पृथ्वी को यूनानी कला का सहाय मिया। मानवों अनुपों और वीषों को चिचित करने में यूनानियों ने अपनी कार्य-कुशलता मगा थी। यूनानी कला अथ कलापी—जैसे भारतीय कला को किसी अत्राप्य किसी पूरत्व अपने से ऊपर किसी तक पहुंच सकने में प्रयत्नशील है—की तुलना में धतिक मानववासी है।

विश्वेकमीस प्राणी की हैसियत से प्राप्त सम्मान के लिए आवश्यक है कि मानव अपनी राजनीतिक और आदिक संस्थाओं की तर्कसंगत आताचना करे, राजनीतिक क्षेत्र में यूनानियों ने सर्वत्र विश्वेकपूर्ण व्यवस्था स्थापित करने का यत्न

नियम अधिनायकवाद के विरुद्ध क्रांति की धोर ऐसे समाज को स्वीकार किया जो अपनी सामाजिकता के प्रति जागरूक हो और स्वतंत्रतापूर्वक अपने कानून स्वयं बनाये। विवेकशील नागरिक स्वतंत्र है और केवल अपने द्वारा निर्मित कानूनों से नियंत्रित है।

अक्रियता प्रस्था को स्वतंत्र रूप से कायशील होने से रोकनेवाली हर संस्था से युवानियों को विद्रुपी। उनके परभूक्तिपूर्वक व्यक्तिवाद का ही यह परिणाम था कि स्वामीय सरकारों के क्षेत्र के प्रभाव के प्रथम प्रभावशाली राजनीतिक संस्थाएँ स्थापित करने और उन्हें चलाने में सफल नहीं हो सके। फारसियों के विरुद्ध युद्ध में यूनानी एक एकाधिकारी सम्राट की प्रथम शक्ति के विरुद्ध अपनी स्वाधीनता के प्रति जागरूक स्वतंत्र व्यक्तिवादों की क्षमता से लड़ वे।

यूनान का विकास वास्तव में 'पौखिम' (नगर) का विकास था। यूनान नगरों का समूह था और प्रत्येक नगर एक स्वधीन पृथक्, सम्प्रभुताप्राप्त राज्य था। नदरों में परस्पर युद्ध होत रहत थे और नगरों के भीतर इतने भयानक बय-भयर्ष होते थे कि कौबी सरी ईसापूर्व में यूनान टैसीटस ने राष्ट्रपति पिरै नगरों के मेनापतिधों के लिए लिखी गई नियमावली में आगाह किया था कि गहरपनाह से बाहर के राष्ट्र जितन खतरनाक हात है उतने ही भीतर के भी।

कुर्माण्ययन यूनानी लोग धारिकामीन समाज की कुरीतियों से राजनीति और पर्यवहार का बाधनेवाली खंजीरें लाड़ नहीं सके। स्वधीन यूनानियों में भारी संख्या में गुलाम बना रहे थे।

यूनानी नगर-राज्यों का अपनी निरभूतता का व्यवस्थित करने की रीति मान्य नहीं थी। वे ऊँच उठकर यूनानी राष्ट्र की बात तक न सोच सके वे संघटित होकर एक राज्य का निर्माण न कर सके जो उनकी समस्याओं को सुलझ सकना। मानव प्रगति के परस्पर प्रतिहार पर धाज भी रोक लगानेवाली उच्च राष्ट्रवादिता यूनान की ही देन है।

विवेकशीलता मानवबल और नागरिक गुण यूनानियों को विशेषता थी। हायर, एनात्मम एरिस्टोचमन पेरिामीन यूनानीशाइइस एनो और एररू रिदार, माइमोनाइइस यूनानी मानववाद के प्रतिनिधि हैं।

वैश्व बाहट ने यूनानी बना पर अपने एक भाषण का समापन करत हुए यूनानी देवताओं की मयधरमरी प्रतिमाओं के चेहूतों पर स्थित उदासी के बारे में बहिनन हमें न कहना दिया था 'धारका धारत्व है कि मैं नगत धारक और विरगत गुण में रहनेवाले धारणित-वासियों में मैं एक—'तना उदाग हूँ? मयमुच हमारे पाग नब गुण था बहिया स्वगित गीण्डर धनन घोरन

साक्षर घाम घोर फिर भी हम मुग्गी न थे हम केरम घरने लिए जीबित्ते ये घोर घण ममी को प्रताड़ित करने थे। हम मये नहीं ब घोर हमीलिए हमें बिनल होना पड़ा " इतिहास की समस्याएँ बड़ी समझिल्लु फिर भी बड़ी कूटिल हती हैं। कोई भी बुद्धिमान युवानी समय सजडा बा कि वेनापानाघिसाँ युड के बार बिजेता घोर बिजित दोनों ही बिदनी गनुया क हाथों म पड जाणप। किन्तु मानव-स्वभाव ही ऐसा है कि अपेसम घोर स्पार्टा एव नहीं हो पाण घोर मार मार की लडाईँ से मान कवन फारसियों घोर मकदुनियाइया को हुषा। जा ममस्या घाम हमें घामान मानूम पड़नी है उमीका समाधान युवानी नहीं प्राप्त बर मरु घोर परिणामस्वरूप मकदुनियाईँ घोर रामब लक्षियों के पाटों क बीच रिम गए। युवानियों के बिनाग का कारण या उनको एव जाने की घयाम्यता।

उम युग में सम्पत्ता की परम्परा का चयन करनेवासी हमरी मभितिया थी। घाम की स्थिति भिन्न है। सामूहिक बिनाग के घायुनिक लम्बों म युड का घयं यदि यह नहीं है कि युष्मी पर सम्पूण जीबित का बिनाग हा जाए तो सामूहिक भारतमहत्या ता घबरप है। इप भावनाओं में उबास घाने लगता है ना घान्ति की रया के लिए केवल परिणामों की तरफमन घामका पर भरोसा नहीं बिघा जा सकता। बिदर के मन्दिणक पर घनीन का बोळ घमी भी जारी है। एक हो पाने की घयक्यता का कारण शान की कमी नहीं है, बरन् मकदुनियाईँ नैतिकता घोर मकदुनियाईँ की कमी है। यदि हम सज्जी तरह समझ में कि हमारे सामन को हा टाले—सद्भावना वा समूम बिनाग—घोर सवुभावना के लिए प्रयत्नघीन बन ताहमार पुण देवना घीनघियाईँ देवताओं क समान उदास नहीं प्रसुन प्रमल होवे।

युवानियों की घम-मन्वभी पारया घामन की पुजा घोर परम्परागत संहि लुटा तक ही सीमित नहीं थी। घाबिकाण मे बनी घा रही भावना मे बिनाकुम घमप एक भावना मे जग्म बिघा एक 'घडरस मास' को पहचानने की मयक बनमी हम ममार के घाचार-शकारों मे घयप हुन की भावना बाणी। माय्यता प्राप्त युवानी हसन मे बिचकुन घमप घोर उपनिषदों के दसन के इतने समान यह परम्परा घाँधी घोर एन्सूचीनियाईँ रहस्यबाद एम्पीडोलीड (५००-४५० ईसापूर्व) पाइथागोरस घोर प्लेगो में बिघमान है तथा मे समी-पुनजग्म-सिडाण्ट परम्परा के उच्चासन से घारया का पनन घारया की बनमान निर्बामन-स्थिति घोर सप-माय द्वारा मालिबकता घोर परिमानन्द की मूल दया में पुन-पहुंचने की मभावना पर बिदबाम करल है। इम परम्परा घोर उपनिषदों के बिघारों की समानता म यह घयं नहीं कि उनके उक्थमों में भी साम्य है।

एल्ब्यूसीनिबाई रहस्वमय समारोह 'दिमीटर' यर्षात् 'बीबनबारिणी माता' के सम्मान में होते थे। सर जॉन मायर्स के अनुसार पूर्वी भूमध्यसागरीय प्रदेशों में दिमीटर की पूजा 'उतने ही पुराने समय से होती आ रही है जितने पुराने का ज्ञान हम अभिलेखों भववा स्मारकों से मलता है। धनातुमिया की प्राक्भारतीय यूरोपीय संस्कृति पर भाषण बैठे हुए सर जॉन मायर्स ने कहा था 'भवता है कि जहां कहीं भी उस संस्कृति ने प्रबल क्रिया भरे-पूरे घरीरबामी नारी मूर्तियां मी बहां पहुंच गई, जो धायक उससे अनिच्छतापूर्वक सम्बन्धित थी। इनसे उनकी प्रकृति-पूजा के प्रकार का पता चलता है 'एशिया की महामाता सम्प्रदाय उसका एक विशिष्ट का है जो भारतीय-यूरोपीय धर्म के सभी धनगर कर्णों में पाए जाने वाले 'पिता-देवता के बिलकुल विपरीत है'। 'माता देवी' पीछे जन्मपूर्व घोर मानकों को बीबन घोर समृद्धि प्रदान करनेवाली फलवती बरती की प्रतीक है।

इसके अभावा डायनीसियाई जम होमर के बाद के समय में य स से बिदेसी धार्मिक की शक्ति ब्रह्मण पहुंचा जहां उसका काकी विरोध हुआ। इस धर्म में रात्रि वालीय धामोह प्रभाव नृत्य-लास का प्राबाल्य था। विश्वास किया जाता था कि इस धर्म के अनुयायियों के शिर पर देवता 'घाँस' है जिसके कारण सब-मात्र के लिए, मशालों छटाक नबीत घोर नृत्य के प्रभाव में पूजापक करनेवाला स्वयं को अपने में बाहर एक ईशो स्तर पर उबवासीय समझने लगता था। डायनीसियस बरमो स्मास का देवता था घोर उसका 'समारोह' रात्रि में होता था * घोर रिबयां ही उसकी सबसे अधिक घोर सबसे विशिष्ट अनुयायी थी। इत समारोह का धन्त स्वयं में एक अनुभव था। दिमीटर के प्रति होमर की स्तुति में कहा गया है "बहु भाव्य वाली है जिसने इन बीबा की 'देगा' है।" यैसी धर्म का बागदान है 'परमास्वास तथा अमरन्ध में विश्वास'। य ही लोग एक भारतीय यूरोपीय भाषा बोलते थे घोर उनका विश्वास था कि मानव की धामा धनिवायत ईबिक है।

घाँसियम का धन्य चाहे जो रहा ही ब्रह्मणी इतिहास में उनका स्वात एक वैगम्बर घोर घुस का है। उनके छिडाम्भ एक संकलन में मौजूद है। इन मिडाम्भ के उदरक छटनी से बोपी लतावरी ईसापूर्व की लपनाओं एमीडोसनीय यूडिडिडीक *

* इन कूर्मिक निबिवाउमलन मन्दाक अक्षर (१९३२) पृष्ठ ११, १२१। मिनू घोर देरक लपनाघो में 'माता देवी' की पूजा प्रकलित थी।

१ कापिटीय घाँसि ५१।

२ कूर्मिकीय नून 'दिरोवाउल में शीतिलन करने देते वर इन लन को सवर धन्य काय है कि शीतिलन के मणुपर वर लारी का बँकन लिये लता है। इनमिडाम्भ में कथना बलना है कि 'इन्ने ब्याग के पता का चाते निगल वर मी लप है' घोर म अर्थात्

(४८४-४०७ ईसापूर्व) जैसा^१ पिटार (५२२-४४३ ईसापूर्व) और इरिणी इटनी की कब्रों पर लपी जाने की तकियों पर मिलत है। इन विभिन्न लोगों से हम समझ पाते हैं कि पॉर्फिरी जीवन प्रज्ञानी में तप-साधन, माताहार के नियम, मातृभक्त्यासन से मोक्षप्राप्ति प्रादि तत्त्व मन्मिषिन थे। इस मत का विरवास था कि प्यायी लोगों को पुरस्कारस्वरूप वरदान तथा प्राणायामी लोगों को सब मिलता है। पॉर्फिरी कब्रों पर पाई गई वस्तुओं पर मृत व्यक्ति की धारणा को इस प्रकार सम्बाधित किया गया है "तुम मानव से देवता बन गए हो।" पॉर्फिरी गीतियों के सम्बन्ध में प्रोफेसर एफ० एन० कॉलफर्ड ने लिखा है "ईश्वर की महती कृपा प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि है परमविधि-उत्सव विमल सम्पूर्ण कष्ट सहन करने परम और पुनर्जीवन के परधातु ईश्वर का मया मानव-मात्मा को प्राप्त हो जाना है और इस प्रकार पुनर्जाय के चक्र में उसकी मुक्ति निश्चित हो जाती है।" इन रहस्यों से साक्षात्कार करनेवालों का पुनर्जन्म माना जाता है। वे देवताओं के समकक्ष हो जाते हैं। सबसे प्राथमिक वर्णध्व है अवलोकन निरीक्षण। इन्हीं रहस्यों से जो प्रकार के प्राणियों के प्राण्य का अन्तर स्पष्ट हो जाता है—उनका अनुभव करनेवासे का सीमाय और उनसे अछूता रह जानेवाले का दुर्भाव।^२

एस्पूरीनियाई, डायनीसियाई और पॉर्फिरी मनों के सिद्धान्त अनिर्वायत होमरी परम के सिद्धान्तों से काफी भिन्न हैं। डायनी देवताओं के समझ मानव के लिए प्राथमिक है कि वह स्वयं को बनादृत करे। देवताओं और मानवों के सम्बन्ध बाह्य हैं। देवताओं के साथ सीधा सम्पर्क असंभव है। मानव अनिर्वायत देवताओं से निम्नकोटि के है इसलिए स्वयं देवत्व की कामना नहीं कर सकते। पिटार का कथन है "सुख बनने को कल्पना मत करो।" उन्होंने ही कहा है "अद्वरों के लिए नदरता ही पर्याप्त है।" और पुन कहा है "अद्वर मनुष्यों को अपनी हीवित्त मामूम है और मानूम है कि उन्हें अपनी जीवन में कितने धन की प्राप्ति होगी है, इसीलिए उन्हें देवताओं के धान को स्वीकार कर लेना चाहिए। यत है मेरी धारणा अद्वर जीवन की कामना न करके उपलब्ध साधनों का समुचित उपभोग करो।"^३ यूरीपिडीज इत 'बाही' में कोरस कहता है "अपनी नदरता की

अधिकतम बात मंजि मना वरिहाय में कोई अकर्मक विरता^४ वता है।

१ 'मेडरलस ५२०-ना 'अननस' ३३-५५ 'साथ १ २३३-ना * ५२३-५।
'दिविध १ ३४४-दी 'अपन ५२३-५।

२ 'दिवि केलेवट विन्दी लोड ४ (१३३३), एड ३३५।

३ 'दिवि 'अननसक अनिल ३-५-१।

४ अणु के लो 'अनी इल मधिजी अणुकर 'द ३५५५ में देवर कीर (१३३०), एड २११-२१४।

सपथी यूनानी समाज ने कभी रहस्वात्मक धर्मों को स्वीकार नहीं किया। ये धर्म सदैव मयम्य घोर बिदेसी भावों जात रहे। धर्म-संभालन राज्य द्वारा पाने हितार्थ होता था। नागरिक की हितवत्ता से प्रत्येक व्यक्ति का राज्य के प्रति धर्म कर्तव्य का पालन करना पड़ता था। माहस्य जीवन में उसे हर्म्य या धर्मों की पूजा करने की स्वतंत्रता थी। रहस्वात्मक धर्म बूझ प्रविष्टायन व्यक्तिगत धर्म और राज्य की सत्ता की उपेक्षा करते थे इसलिए उन्हें धर्म नहीं प्रपञ्चिस्तास पाता जाता था।

रहस्वात्मक धर्मों को यूनानियों से पूर्व गैर-यूनानी जर्मियाई प्रजाजा के भारतन जनजा सपथ्य जाता था जिनपर बाद में होमरी देवता सादर दिये गये।^१ बुरी पिबोबहुव 'बाडी में गिरा है कि बायनीमस मन 'एगिया की पत्नी से प्राया था। सम्पूर्ण नाटक म इस धर्म के धर्म-यूनानी उद्भव पर उार दिया गया है। पेंथ्यूज के एक प्रसंग के उत्तर में एनुपमेयी बायनीमस कहता है 'हर बर्बर (गैर यूनानी) इन रीतियों को मानता है और नाचना है। 'हा पेंथ्यूज उत्तर देता है 'क्योंकि वे यूनानियों से स्वादा देवकुछ है। "नहीं इस बात में प्रथिक बुद्धि मान है सिधं रीति रिवाज मिल है।" यूनानियों ने शीघ्र ही इस धर्म को स्वीकार

१ निम्न मे जर्मनी युगक 'होमर गैर धर्मपनी मे निम्न है 'यूनान' धर्म के प्रदान किरोबन्धन धर्मक प्रथिक के है तथा धर्म के परिदन्धनक वा एन्धन्धनक धर्मों का एन्धन दन्धनिक से बन्धन के मन्धन में हो युवा वा।' (पृष्ठ ५०)। डि. सी. धर्मर द्वारा एन्धनिक अधीकन डिफिन्डिबेसम प्रसंग (१९०५) पृष्ठ ११६ में व इन्धन गैर का कर्मक देविक 'यूनानी सम्पन्न घोर निरोधः यूनानी धर्म को देहा के दो बाधिन लनों के अनुधर (जैमे कनन हो एत ही हो उरने मे) दो लनों में निपात्रि कन्ध घोर एक को धर्मक-यूनानी यूनानी, उरकान्धन तथा ह्मर को अन्धन्धन-यूनानी गैर-यूनानी धर्मि नाम देव्य धर्मक अर्थकिक है। यूनानी धर्म का प्रथनिक युवा वा कर् गैर-यूनानी धर्म के बाध ही युवा कर् कर्ध घोर अधिक अर्थकिक है।" यूनान पर धर्मिक-यूनानी धर्मिकल या धर्मक एन्धनिक युवा वा किन्तु एन्धन मन्धन धर्मिकल है।"

यूनान का निर्यात है कि यूनानी धर्म अधिकाधिक एन्धनिक और अ-एन्धनिक वा। ये धर्म हैं : 'मे देवक बरी अधिन कर्ता अधन है कि उरकान्धनिक किरी धर्मर के समान अन्धन की बोर्द किन्तु यूनानी निधरधर में न थी। नन्-एन्धनिकी युग में धर्मक केव युवा किन्तु एत तक यूनानी बुद्धि किन्तु नहीं रह गई थी। यूनानीय धर्मिकों के धर्मिक कर्मक और एन्धनिक से भी धर्म रिक्कन की धर्मिक है। धर्म किने ह्म 'यूनान'—'धर्मक को एन्धनिक कर्नेशन युवा निधन्धन को धर्मिक एन्धनिक तथा धर्मिक धर्मिक वा—'धर्मक है इस धर्मक का बोर्द निधर कर्ने धर्म म वा और म एन्धन कर्ने धर्म का धर्म एत धर्म में व धर्मक एन्धनिक से ही नहीं कर्न् धर्मिकों और बोर्दा धर्म अधिकाधिक किने मे।' (१९११), पृष्ठ २६ २७।

कर बिना और अपनी सर्व रक्षणा-शक्ति का प्रयोग करके उन्होंने 'माता सर मैरी' को बीबीड की राजकुमारी बना दिया क्योंकि उनके विचार स बीबीड ही पहला यूनानी मयूर था जहाँ वे धार्मिक हृत्य पहुँचे थे। हेरोडोटस का विचार है कि बायनीसस जिस में यूनान पहुँचा था।^१ खुस्सारमक बर्म में लकी पर्वों के प्रति घाबर करना सिखाया जाता था और उनको प्रकृति कड़ म थी। इसके विपरीत होमरी या प्रोतम्पिपार्ई बर्म अपने को ही प्रत्यक्ष मानता था।^२

पाइथागोरस ने खुस्सारमक और तर्कयुक्त प्रकृतियों का सामंजस्य स्थापित करने का संकेत प्रयत्न किया था। उनके विचार का आधार 'पैराड (सीमा) का उदात्तीकरण' है। समस्त और कामून के प्रति हार्मिक निष्ठा भी इस विचार में मौजूद है। सृष्टि एक 'कॉन्सोस' है। स्पून-जयत् की व्यवस्था को समझने के बाद, उसके मनुष्य पर सूक्ष्म जगत् में भी उसी प्रकार की व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। अपनी मात्मा को संभारना मानव का प्रथम कर्तव्य है। पाइथागोरस का विश्वास था कि बस्तुजगत् की वास्तविक और प्राज्ञ प्रकृति केवल समानुपात और संख्या में मौजूद है। उनके विचार स गणित और संकीर्ण का परस्पर सम्बन्ध है। यथोक्त संकीर्ण का देवता है। पाइथागोरस ने एक धार्मिक समाज की स्थापना की जो जिसका एक निश्चित जीवन-विधान था। इस समाज का उद्देश्य एक धर्म कैपासिस में व्यक्त है। इसे धर्म तो कुछ नियमों को मानने तथा अथत रहन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। पाइथागोरस का सिद्धांत था "इस संसार में हय धरनवी है और वरीर मारता का नरुबरा है छिर भी मारताहन मुक्तिरगम मदी है। कारण हम ईश्वर की बल सम्पत्ति है ईश्वर ही हमारा रगजाता है और उसकी आज्ञा के बिना जानने का हय कोई अपिकार नहीं है।"^३ पुनर्जन्म पनुषों के बल पर प्रतिबंध थाकाहायी भोजन तप-सापना द्वारा शुद्धीकरण मन्त प्रपवा व्योरिया की आबदयइता-सम्बन्धी उनके विचार यूनानी कम है मारतीय धर्मिक।

१ कथा ग्राह्य है कि टर्कनीसस में कहा था 'मौनिक की रक्षा मरित करती और धार्मिक को जोइस में लम्बे कान कुन्निच के रूप मन्त में व्यक्त है और मेष गेरेन दे मने मन्त को नरुबरा करे कुन्निजान का आवाहन करन्त।"

२ मैकान की दिवानी मरिण है "दो लार्मिक बर्मिह प्रार्थन सपुा की मरिणरि दिवित कर मे कडिनीच है। १५५ हावड कथा है कि क्लोसी डेवन अपने मरिणरि के और रावकनी के रन करे तप क्लोनिच है। — मिनरनिक्ल एरिडिन्स में इतिमय रा" (१) कृ १३।

३ डी क्री: मर्वा गीक निजालदी (१११) ५५५ १५।

एम्पीडोक्नीड का कथन है कि उन्हें अपने पूर्वजगो की स्मृति थी। उनके अनुसार, छत्य की प्राप्ति का घाघन बिगठन-जनक है। धर्मप्राण तपस्वियों की धारणाओं को उनका देवत्व वृत्त प्राप्त हो जाता है। एम्पीडोक्नीड का कहना है "देने शोष नरवर प्राणियों में द्रष्टा कवि घासक घोर विकिसक बन जाते हैं और घन्तन महामाग्य देवतास्वरूप हो जाते हैं।" उन्होंने हार्दिक धानन्द के स्वरो मे घग्ने गहनावीरकों का प्रतिनग्दन करते हुए कहा था "प्राण समझा स्वामन है। मैं घाघके बीच उपरिघट हूँ—नरवर मानव नहीं घमर देवता बनकर।"^१

पुनाग के सवमे महान हार्दिक मुद्रराज मे किसी बिचार-पद्धति की स्थापना नहीं की बंधों की रचना नहीं की किसी सिद्धांत की सिधा नहीं की। मुद्रराज की जीवन-पद्धति तो है किन्तु कोई मुद्रराजी सिद्धांत नहीं है। मे बाजार में सोमों से मिसते उनके बिचार मानने का प्रबन्ध करते उन्हें बिचार करने की सिधा देने और अपने कार्य की तुलना दाई के कार्य के साथ करते वो मुद्ररो के बिचारों की जन्म गिने में सहायता करती है। मुद्रराज मे ही पश्चिमी मानव का बिरबात दिमावा कि उसके भीतर एक धारणा है—जो सामाग्य आपरितावस्था की बुद्धि और नैतिक चरित्र की प्राचार्यधमा है—धीर बहु मानव की सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज है और मानव को उसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। अपनी मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपने विचारों से कहा था कि धारणा अधिनाधी है और मृत्यु बसकए स्वर्ण तक नहीं कर सकती। धारणा का धादि घरीर के साथ नहीं हुआ इतमिए घरीर की मृत्यु के साथ उतका घन्त बी गही होया। मुद्रराज का पश्चिम कथन प्रसिद्ध है मैं एबम्सवासी प्रबन्ध मुनाती नहीं बिस्व-नागरिक हूँ।

जेटो की दृष्टि में धारणा व्यक्त का सबसे महत्वपूर्ण भंग है, क्योंकि उसका सम्बन्ध घाघवत जगत् मे है नस्वर बसत् से नहीं। उसका जीवन घन्त है। मृत्यु कोई घुराई नहीं घरीर-काठमार से मुक्ति है, जिसके बाव धारणा बिचार-संसार में पुनः पहुच जाती है जिसके साथ पूष्णी पर जन्म मेमे से पहले उसका माता बा। जन्म से पीछा पहले बहु बँठरबी का पानी पी मेगी है और घूसरे संसार का अधि कांत बा घम्भूज ज्ञान बिस्मृत कर बैठती है। वहाँ की बस्तुओं के ज्ञान से उसे अपने किसी समकक सम्पूर्ण और शोपरहित ज्ञान का इसका-हमका घानास होता है। इस जगत् में प्राण सम्पूर्ण ज्ञान पुन स्मृति-मान है। केतन जगत् से ऊपर उठने में घाघर ही जाने के बाव उस सम्पूर्ण ज्ञान का घानास पुनः होने लपटा है। मानव

१ श्री १५६। 'किताबों ईश पेठ बैध', अमेन १९२५, पृष्ठ ३२ मे ३ कन- कालोइएट टायेलर का उद्धरण।

का उद्देश्य 'परमात्मा के साथ यथार्थबोध पूर्वक ऐक्य-स्थापना' ही होना चाहिए। प्लेटो के मतानुसार मृत्यु के लिए छिपारी का नाम दर्शन है क्योंकि उसीके कारण आत्मा इस मोक्ष हो जाती है कि एक बार फिर बहुमानव-शरीर की सीमाओं में बाध प्राप्त करने का बह पाने के बजाय स्थायी रूप से विचारों के संसार में डूबी रहे।

'ज्ञान एक गुण है'—मुकरास के इस सिद्धांत को स्वीकार करते समय प्लेटो 'ज्ञान' को चेतन वस्तु का ज्ञान नहीं बल्कि इससे परे के अत्यन्त श्रेष्ठ वस्तु घोर परम यथार्थ—जिन्हें विचार' कहा जाता है घोर चेतन वस्तु जिसका एक अत्यन्त प्रतिबिम्ब मात्र है—का ज्ञान समझते हैं। हमारे विचारों का योग घोर सर्वोत्कृष्ट विचार है 'गुण का विचार' अर्थात् ईश्वर। ईश्वर को अनुभूति या बुद्धि के सहारे नहीं बल्कि धार्म्यात्मिक पुनर्जन्म अथवा ईश्वर में विलीन हो जाने के प्रयत्न से पहचाना जा सकता है। मानव आत्मा की प्रतिमय शक्ति है 'इश्वर अर्थात् प्रेम जो अनेक अवस्थाओं को पार करके उस 'वैधी सीध' के प्रति जातता में बसत जाता है घोर यह 'वैधी सीध' स्वयं 'सत्य' है।

सत्य के सम्बन्ध में प्लेटो का विचार परम्परागत यूनानी विचार नहीं है। शरीर आत्मा का मकबरा है घोर शरीर त्याग करने के बाद एकाकीपन में ही आत्मा अपना वास्तविक रूप बहिन कर पाती है। तब वह यथार्थ की घोर उन्मुक्त होकर सत्य की प्राप्ति करती है। अपने मटकाल के इस लम्बे दौर के बाद जब आत्मा इस सम्पूर्ण सत्य की स्थिति में पहुँच जाती है तब वह अन्तर-अन्तर तथा अन्तरिबर्तनीय बन जाती है। सत्य सत्य हमारी आत्मा में निहित है किन्तु सामान्य व्यक्ति को इसका पता नहीं रहता घोर वह मन्मथ प्राप्त नहीं होता।^१

प्लेटो ने अविष्य-ज्ञान की दो शक्तियों में रखा है। एक तो उस अविष्यबद्धता की अथवा कला जो लक्ष्यों घोर लक्ष्यों का विरक्षण सीध बुद्धि है घोर बिड़ियों के अज्ञान या बलि दिष्ट वण पशु की धारों का देलकर दवताओं की इच्छा बना सकता है—बहु बुद्धि निष्ठियां प्राप्त कर चुका होता है जिनके बस पर ईश्वर-भयान्ना प्राप्त पाने का दावा करता है जिन भी बहु स्वयं पूर्णतः संपन्न रहना है। दूसरी है प्रेरणात्रय अविष्यवादी। वैतन्त्र स्वयं अथवा व्यक्तिगत नहीं रह जाता। उत्तर दवता का प्रभाव हो जाता है घोर अपने समय के लिए बहु वैज्ञान की भाग की शोद्धनेवाला यन्त्र-साधक रह जाता है। आत्मा की पार्श्विकता^२ अविष्यवादी करने वाली शक्ति दमी प्रकार की थी। 'निष्पात्रिबन्ध' में 'अज्ञानातिवा' से हमें

१ 'अन्तरिम' १०३-४।

२ 'प्लेटो' ४५-४।

३ 'अन्त' ८०-८।

४ 'द्वितीय' 'वैज्ञान' ४४६-४-डी। अज्ञानातिवा, अज्ञान अन्तरी।

उत्पत्तियों में व्यक्त मोक्ष के सिद्धान्त की याद बरबस भा जाती है।

उत्पत्तियों के समान 'रिपब्लिक' में व्यक्त हुआ प्रथम 'सन्' तथा त्रिभि-
यस मध्यम 'डेम्पूरज्ज' प्रथम मोक्ष' व सत्य (ईश्वर) या ब्रह्मांड की धारणा
(हिरण्यमय) १ में प्रस्तुत है। उनकी प्रकाशनी में तीन मौलिक सिद्धान्तों—प्रथम
कारण ब्रह्मांड हुआ तर्क प्रथम 'मोनास' और ब्रह्मांड की धारणा प्रथम परम
धारणा—को हीन देवता माना गया है जो अपने प्रकाश जन्मकाल में ही परलोक
प्राप्त है। 'मोनास' को ही विशेष रूप से संसार के सर्वकर्म एवं निर्यथा प्रविनासी
पिता' के पुत्र के रूप में माना गया है।

मुफ़रात में जेटो की रिपब्लिक में धारण राष्ट्रमंडल का वर्णन किया है
और जब उनसे पूछा गया कि इन प्रकार का राष्ट्र कहां पाया जाता है तो उन्होंने
कहा कि इस धारण के अनुरूप राज्य पृथ्वी पर कहीं नहीं है। "किन्तु राज्य स्वयं
में ऐसा कुछ है जो केवल उसे हीन सकता है जो देखना चाहे और देखने के बाद
धरणी धारणा में भी वैसा ही नजर बसान का बल करे। यह कहीं स्थित है वा नहीं
प्रथम कभी होगा भी वा नहीं इससे कोई प्रश्न नहीं पड़ता। कारण उस प्रकार
का व्यक्ति तो उसी प्रकार के नगर में रह सकेगा किसी ग्रन्थ में नहीं।" २ रिप-
ब्लिक' में वर्ण-व्यवस्था के तीन आधार माने गए हैं—विवेक भावना और इच्छा
पुति—और इनसे उत्कृष्ट भारतीय वर्ण-व्यवस्था की बात आती है।

प्रथम और पुनर्जन्म-सम्बन्धी सिद्धान्तों के प्रतिरक्त जेटो में रुज्जासक
और मोक्ष की उन्मा-जी है तथा देवता के स्तरों ३ की बात की है। इनमें और
उत्पत्तियों की धारणा में पद्मसूत्र साम्य है।

होमरी और प्रॉफ़ियार्ड प्रकृतियों के प्रभाव के कारण जेटो के धारणा-संबंधी
मन में प्रतिक्रिया है। ४ "जेटो के मुख्य सिद्धान्त तथा स्वयं-नरक सम्बन्धी कथाओं

१ वेल्स—'द रिपब्लिक ऑफ़ जेटो' (१९५६) पृष्ठ ५२-५३। (जैन ट्रेड प्रब्लिक)

२ १-२६२ बी।

३ 'मिडलसेक्सियर' में वर्णन देवता के विभिन्न स्तर जेटो के स्तरों में है। "जही ध और
जने बाहर कर्मा ब्रह्म है कि बाहर ब्रह्म इन लोक सिद्ध और प्राचा मन्त्र, तब
होना व्यक्ति में हमारे व्यक्ति को करने विचारों पर पूरा निर्यात हो तो वे प्रत्यक्ष ही ब्रह्म
और सत्य हांग वही कारण है कि हम लोगों की सत्य पर बराबर जोर देने हैं।" 'मिडलसेक्स'
१२२ पृष्ठ।

४ प्रोफ़ेसर अ. व. स्टीवर्ट ने लिखा है "जेटो की मुख्य कथि निम्नप्रद जलिनजल मोक्ष
के धारण में भी, जिसकी प्रेरणा उन्हें बार्थोलोम्ये से मिली थी। जेटोकार के रसी प्रॉफ़ियार्ड
उप ने बार क वर्णन पर और प्रिण्टस से ईस्टर्न वर्म के सिद्धान्त और विचारों पर, सर्वविध
प्रत्यक्ष प्रभाव दिया।" 'द रिपब्लिक ऑफ़ जेटो' (१९५६) पृष्ठ १२२।

के अधिकांश बच्चों का धारण प्रॉक्रियाई श्रोत्रों पर प्रापृत विचार के विवरण है।^१ प्रॉक्रियाई विचारों का प्लेटो पर गंभीर प्रभाव पड़ा था। प्लेटो के मानस में होमर और प्रॉक्रियास तथा मस्तिष्क व आत्मा का संघर्ष बन रहा था।

अपने 'निकोमाखियाई नीतिशास्त्र' में अरस्तू ने कहा है कि मानव का प्रमुख उद्देश्य 'नव्वरता को यथासंभव दूर रखना' है।^२ उनकी बलीम है "चेष्टार है तो अच्छतम भी बबद्व होगा। मानव की उच्चतम प्रकृति ईश्वर की प्रकृति के समान है।" इस (प्रकृति) को विकसित करो और अमरता की प्राप्ति करो।"

समस्त ज्ञान इन्द्रियजन्य है। कुछ जीवों में स्मरण-शक्ति—आत्मा में स्थायी रूप से स्थान बना सेनेबानी इन्द्रियगत प्रभावधीसता—होती है। दूसरों में स्मृति में बैठे प्रभावों को संभारने की क्षमता 'सोमोस' होती है। विचारों के दो माध्यम हैं। प्रथम 'एपिस्तीम' अर्थात् तथ्यों को तर्क-कसौटी पर कसने के बाद प्राप्त ज्ञान तथा द्वितीय 'नाइब' अर्थात् मस्तिष्क की उच्चतम यन्त्री एक प्रकार की सङ्घटन यन्त्रदृष्टि। अपने ग्रन्थ 'थॉन व सोम' के तीसरे खंड में अरस्तू ने लिखा है कि अधिकांश ज्ञान हमें धारीरिक इन्द्रियों तथा इन्द्रियजन्य धनुनृतियों को विवेक द्वारा सोसने के बाद प्राप्त परिणामों से मिलता है। साथ ही यह भी कहा है कि एक दूसरे प्रकार का ज्ञान भी होता है। अरस्तू ने स्वयं तो इस ज्ञान के स्रोत के बारे में कुछ नहीं कहा किन्तु उनके माध्यकार अकॉरीबाइ ने इसे 'ईश्वर बताया है।

यूनान में धार्मिक विचार की दो बाराएँ हैं जिनके उद्गम पूजक तथा प्रकृतियाँ मिले हैं। एक के प्रणेता थे अस्तु और अकॉरीबाइ या अथिनियाई मिनेटस तथा दूसरी की स्थापना पाइथागोरस ने बशिमी इटली और सिविसी नामक पश्चिमी राज्यों में की थी जहाँ पर प्रॉक्रियाई धर्म का भी प्राचाल्य था। पहली विचार धारा तर्कयुक्त तथा नास्तिक थी जिनसे प्रकृतिवाद को जन्म दिया। बाद में इसी प्रकृतिवाद का विचार देमात्राइटस के परमाणुवाद तथा एपीकुरस के आनन्दवाद में हुआ। दूसरी विचारधारा का प्रचार पाइथागोरस एगीबोवनीइ मुद्रागत प्लेटो^३ और अरस्तू, जितेन्द्रियों (जैनों के तथ्यों) और नव-सेनेवादिनों में किया था। इनने ईमान् धर्म को बहुत हद तक प्रभावित किया।

१ बौद्ध धर्म विस्तीकाइ वेगर्न लिखनको (१९४४) अध्याय २ अध्याय १११।

२ X ११ ७३-बी, ११।

३ प्लेटो के मुख्य सिद्धांत तथा उनके अर्थ-सम्बन्धी बच्चों के परिवर्तित बच्चों वा अक्षर अधिष्टों नामों पर प्रापृत विचार के विवरण है।^४ २ व गेटवट इ लिखन अकॉरीबाइ (१९०२) का १२, १६। बौद्ध धर्म में अकॉरीबाइ को 'निसी अकॉरीबाइ नाम' है। 'निसी अकॉरीबाइ लिखनको' १९४४ का १११।

घरने निरन्तर बँधनस्य के कारण ल्हेम्स रगार्न घोर पीडीउ धानी-धानी स्वाधीनता की गतात कर मके । इमाम्पतीउ (लगजम ६ ६ ईमापूर्व) ने मन्हुनियाई प्रभुता से पुनात को बचाने के लिए प्यारस के साथ उग्वि करने का प्रताप रगा । घाएमोत्रीटीउ (४७ १२६ ईमापूर्व) जिगहाने जहा पा नि मुनातबागी की बिरोधता उमकी सरहृति मे है रकन में नही पुनात को फारण की धनीनता मे बचाने के लिए मन्हुनिया के क्रिमि का धामन स्वोकार करने को ठीमार ये ।

३ सिक्खर की बिजय

सिक्खर ने बहुत दूर-दूर के धर्मों को बिबित किया बा । वह रहस्यामक प्रकृतियों का स्वकि था । मिय में वह निबाह रिप्य धम्मन के मणिर म गया घोर मणिर के धाम्पिक कस में भकेने पुकारी के साथ भीतर मया । धान तक मात नहीं है कि वहां क्या हुआ किन्तु इतना स्पष्ट है कि उने धनुमब हुआ कि परबाग्ना के माब उमका कोई बिरोध सम्भव है घोर मसार-जर म एरना स्थापित करना उसका ईरवर-अरत कर्तव्य है । अपनी मन्हुनियाई पुण्ड्रूमि की सहायता से उसने पुनात की स्वयं को मर्पौरुष्ट सपम्हने की नीति के बिरोध में काम किए । धरने मुद धररगु के माब-साब उसका भी बिश्वास बा कि एधियाई लोय सिर्क बास बनने योग्य हैं सेकिज एधिया ईरान घोर पस्चिमोत्तर भारत के निबासियों म सपक के बाब उमे यह बिचार त्याग देना पडा । तब उमने बिभिन्न देसबासियों में परस्पर मैत्रीभाव स्थापित करने के धनेक उपाय किये । उसका कहना था कि उसके साम्राज्य के सभी लोय सामीबार हैं प्रजा नहीं । उसने ईरानी मुनेबार निबुल किए, एक मिमी-जुमी मैता का निर्माण किया तथा बडे पैमाने पर अन्तर्राष्ट्रीय बिबाहों का प्रालाहित किया । उसने घोषित किया कि सभी व्यक्ति एक परमात्मा के बने हैं इसलिये सभी को सामकीय बन्धुत्व-स्थापना के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए ।^१ सिक्खर को आशा थी कि पूर्व घोर पश्चिम का सामंजस्य एक बिषय-धर्म में होगा जिनमें सभी धर्मों की सर्वोत्तम बातें निहित

१ क्लार्क ने सिक्खर के बारे में लिखा है : "धरगु ने उसे मन्वाह की थी कि वह क्या दिनों का केप किन्तु धर्मों का स्वामी बने कपदिधों को अकस मिय और सम्पत्ती सम्बन्ध किन्तु इतरों को पनु का घोष । सेकिज सिक्खर ने उसके निरराने स्वयंसेवक स्वोकि अनुभव निराम बा कि लुमी लोना में मैत्रीभाव घोर संघर्ष में बचता स्थापित करवा उसका ईरवर-परण कल्प्य है । इसके निर, सम्पन्धने में काम नहीं बस ले उमने जोर दाता हर स्वयं के विर सिनों को बड किज, घोर बीजन ईधि-रिबाको निरव सामाजिक धरधार-निरारी को कानो पक

होगी।

पूर्व और पश्चिम को मिला करनेवाली बीवार को सिकन्दर ने छोड़ दिया तो दोनों में घापसी व्यवहार स्थापित हो गया। वह ऐसे साम्राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहा जिसमें पूर्वीय और यूनानी सम्बन्धों का बोग हो। अपनी मृत्यु से कुछ पूर्व महायुद्ध की समाप्ति के घबस पर उसने १०० व्यक्तियों को एक भोज में आमंत्रित किया जिसमें केवल यूनानी ही नहीं बरन् उसके साम्राज्य की सभी जातियों के लोग शामिल थे। भोज के पश्चात् सभी उपस्थित लोगों ने एकसाथ बैठकों को बस चढ़ाया (जो एक धार्मिक इमर था) और दानि के लिए, वहाँ उपस्थित लोगों के देशों के घापसी सहयोग के लिए तथा सम्पूर्ण संसार के लोगों के सहबिस्तन सहयोग तथा सम्बन्धना के लिए सिकन्दर का प्रार्थना के साथ-साथ समारोह का आयोजन हुआ। सभी मनुष्य माई माई हैं इसलिए उन्हें मानसिक एवं हार्दिक एकता ('होमो मोइसा') की भावना से सह-परिचित बनाए रहना चाहिए।

सिकन्दर ने ही उस यूनानवादी (हेलेनिस्टिक) संसार का निर्माण किया जिसने रोम को और रोम के द्वारा प्रायुक्तिक संसार की नींव दी। यूनानी संस्कृति को पूर्वी भूमध्यसागरीय देशों में प्रसारित करने के बाद वह उसे सिन्धुतक तक ले गया। भारतीय साम्राज्यों की स्थापना से सिकन्दर बहुत अधिक प्रभावित हुआ। उसके यूनानी वैदिकीय उत्तराधिकारियों ने समझी चीज मताभिरा। एक प्रकृति निरस्तान और पंजाब में यूनानी संस्कृति को जीवित रखा। अश्वमेध (शासन का ३२१-२२६ ईसापूर्व) से सीरियाई राजकुमारी से विवाह किया और मैसूरु के साथ मैत्री-सम्बन्ध बनाये रखा।^१ सिन्धुतक और मैसूरु के बीच अत्यन्त महोरजक पत्र-व्यवहार हुआ था। एक बार सिन्धुतक ने छोड़ी यूनानी पाराब कुछ मुनकके और एक मिथ्यावादी धार्मिक की मांग की। मैसूरु ने उत्तर दिया कि वह मरान था मुसी में भेज देना मैजिन मिथ्यावादी धार्मिक न भेज पाने के लिए दुनी है क्योंकि 'यूनान में धार्मिकों का व्यापार करने की प्रथा नहीं है। पश्चिम के राजकुल अमर मीर्च-साम्राज्य में प्राया कण्ठ थ।

१ "और लखेटों ने अपने मूल्यी वीथियों के सब निश्चल लखेटें बनाये रखा। फिर भी अहमक है कि यूनानी मध्य का भारत पर विजय कम प्रभाव रहा। कन्दन ने समस्त इतिहास प्रमाण लखेटों को भी अत्यधिक प्रभावित किया था सिन्धुतक राजकुल में एक यूनानी राजी की उद्वेगित लखेटों को और भी रखा व पत्र के आगु-महाशय के बीच व लखेट व विजयानु लखेटों का वरुण कुन्दा प्रभाव है दुसरे तक वरुण ही एक गया।" इतिहास इतरकोम विर बम इतिहास उ व वेमने वरुण (१९१६), पृष्ठ १३।

त्रिया का प्रथमन था। शरीर-विज्ञान ज्ञातिव घोर भ्रमोत् में महत्त्वपूर्ण लोभें हुईं।

तत्त्ववादी जेभो पर बिस्मर के मानवता को एक कर्म के स्वप्न का बड़ा प्रभाव था। उसके अनुसार बड़ाई बेवताओं का एक विधान भवत है घोर घोरमी उम परम शक्ति के बल पर राज्य करता है जिसे खूम जिज्ञता मार्बजीम नियम ईश्वर, बुद्ध नी कहा जा सकता है। तत्त्ववादिया के अनुसार 'भोमोम ईश्वरीय है। ने इस सवार के समाना किसी ईश्वर को न मानते थे। स्वास्थ्य या बीमारी सम्भवता या निर्पकता का घबिक महत्त्व न था। धारमा ही सर्वस्व थी—धारमा को यह संसार सरीर नहीं सकता। दुनिया हमारे साथ बाहे जैठे वेष्ट घाए, हमारे सामने रास्ता मुसा है कि हम अपनी धारमा में निहित होकर दाम्ति प्राप्त कर सें। बौद्धा के समान तत्त्ववादियों का भी विश्वास था कि स्वय को छोड़कर कोई किसीको हानि नहीं पहुंचा सकता। गुण स्वयं धपना पुरस्कार है। यही एकमात्र धामन्द है। तत्त्ववादियों ने ही ईसाईधर्म को प्रवृत्ति के भिन्न से उद्भूत स्वतन्त्रता सजायता घोर बन्धुत्व के सिद्धास्तों में धारमा प्रदान की।

तत्त्ववादियों ने रोम को एक सम्राट मार्कस घारेणियस प्रदान किया। घारेणियस का स्वयन था कि सम्राट की हैमिदल से उनका देय रोम था किन्तु मनुष्य की हैमिदल में बहु मारी दुनिया था था। बहु पागलकार्य लो करता था किन्तु उनका हृदय वही घोर था। उनका प्रतीक था एम्पीडोबमीड का बनु म जो 'प्रकाश में प्रकाशित था घोर सभी बस्तुओं तथा धपने जीनर के लय को देखने में समर्थ था। उसके 'मेडीटेगम्' में पना बमता है कि बहु मबके लिए समान धपि बार में विश्वास करना था।

बिस्मर के घात्रमन के एक ली घाट बर्ग बाद मिमिन्द (मेनेन्डर १७२-१२ ईसापूर्व) ने गगा की घाटी में प्रवेत किया। भाग्यीय स्वप्न में उनली लषि थी घोर बौद्ध बिचारकों के साथ उनसे घात्रार्थ किया। मिमिन्डगस्ट या 'जे स्वम् घांफ रिम मेनेन्डर' एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध पथ है।

घानियर में बैमनगर के लमीन एक पापाम-स्वप्न (१२० ईसापूर्व) पर बाली मिमि मे बैमनगर के स्वकार न रहनेवाले एक घुमानी राजकुल की कथा घरित है

"प्रजापामर घोर बंधवताली सम्राट कापीपुत्र जामभर क समुद्रिवापी पागलपाम के बौद्धक बर्ग में बटान मघाट घानियासरीशस के घुमानी राजकुल स्वप्न के मुत्र लघमिना निवामी हीमिदोडोरम में देवों के देव बामुदेव का यह बरह-स्वप्न जामभर (जवधाम बिन्दु के उगामर) द्वारा निमित्त बमया।"

४ इसाई धर्म का उदय

बाप्राबबू की पट्टियों पर हिन्दी और मिट्टनी नामक दो प्रकार जातिया के बीच बौरहकी वनायो इसापूर्व म हुई मयि का बनन है जब इग्ट मिन और बरम जीमे बैरिफ देवतायो का प्राबाहन उनका बरदान प्राण करन क मिया किया गया था। इस बिबरन मे स्पष्ट है कि इसापूर्व १० - ००० वर्षों के दौरान भारत का प्रभाव निबटपूर्व और एशिया माइनर पर था। एक और मय म दाता राज्य परिवारों के बीच एक बिबाह-सम्बन्ध के उपमध्य म घानीबाँद देने क मिया बढबा देवताया 'धादिबम' का जिहू बेरा म 'मय' कहा गया है प्राद्धान किया गया था। तैमनामार्ता पत्रा म भारतीय नामधारी राजाघा की मूषी का जिह है। उनत प्राचीनकाम म भी भारतीय बिबाह बजसा की उतगी चाटी म पहुच या ब। मिय की प्राचीन राजधानी मेथियम म प्राण भारतीय घबघाया के घाघार पर मर फला इडस पेटी का बिबवास है कि १० इसापूर्व म प्राचीन मिय मे भारतीय उपनि वेध स्थापित था।

१३८ इसापूर्व में माइरम ने बीबीमोन साम्राज्य को पराजित करके बीबीमोन को अपनी राजधानी बनाया। उस समय यहूदिया को भारतवासिया क बार म घबस्य पना चमा होया। उसके उत्तराधिकारी बाग ने सिन्धु चाटी को बिजित किया और उसे अपने साम्राज्य का बीसवाँ राज्य बनाया। भारतीय और यहूदी घबघय ही बीबीमोन में परस्पर सम्पर्क म घाय होंगे।^१ भारतीय लोग यहूदियों को कानून के पाबन्ध घपबा 'बनायी बहते थ। कुछ सूतानियों का ता बिदबास था कि यहूदी लोग हिन्दुओं की ही सन्तान हैं।^२

१ 'पराजोष बाग' की एक कथा सुनेघन के म्यन की कार बिलानी है। कतने एक पूर्ण मय मे पुत्र बनारन के राजा के मन्त्री है। एक बार दो मित्र एक ही बच्चे को अपना बर ली थी और पुत्र को निर्भय बरना था कि बच्चा कितन है। दोनो में से एक ली पक्षि भी और बसने बच्चा को अपने मोहन के लिए पुत्र लिया क। पुत्र ने यथा की कि एक ली बच्चे का मिर पकडे और इच्छी है। और लन अपनी-अपनी ओर लीं ओर बिसे जो धर्म मिय मय म्सीमे स्थापन करें। पक्षि भी मे इस निबन्ध का मयन किया किन्तु लम्बी मा ने बच्चे को अपनी करने के बज्ज बरना नाम की इच्छी ली को दे देवा ली-बर कर लिया। पुत्र ने म्सीका बच्चा लय बिबा।

२ जमेघन (मय) : मारोेरियन के हासन का मन्त्रिम और कालिउना नाम से प्रतिज्ञ नेर कन के हासन का प्रथम वर्ष ३० ईसवी, देवनागेम में मनु राजा ६ वर्ष की अवस्था में ६६ ईसवी के प्रथम बार) के मनुस्मर निबन्धन का कथन है कि 'जुके गुन बरलू ने यहूदी को परिवार बहात थी। निबन्धन लन बरलू के राज बरलू करता है : "क कल्पि मय से यहूदी था और मेनलीरिच का निष्पत्ती था क यहूदी मारोेरिच बार्तानिओ के बंदा है। भारतीय लई कथामो और भीरिक्ट 'बुदर' बहते हैं।"^३

ईसापूर्व अन्तिम दो सताब्दियों में बूढ़ाबाद में कुछ ऐसे मनों ने विकास पाया जो भूत-भेद-सम्बन्धी पारसी विश्वास की उपज थे। "पारसी ईतबाद में धरुतीमान की स्वतन्त्रता के सन्धान यहुवी एकेबरबाद में किसी प्रेतघन्ति की स्थापीनता की युवाइस न थी। किन्तु इन सताब्दियों में बूढ़ाबाद में बहुत परिवर्तन हुआ। सैतान (सिधन) को दुष्टात्मा के रूप में मान्यता दी गई, जिसका काम ईश्वर की आज्ञा से वर्तमान युग में ससार में अज्ञानियों का विरोध करना था। इसके घतिरिक्त प्रबंधकार के घक्तिपामी शासन की आज्ञानुसार काम करनेवासी दुष्टात्माओं की सेना को मानवीय व्याधियों और पापों के लिए उत्तरदायी मान लिया गया। 'ईजीप्सो' में लिखा है कि ईसा सन् के प्रारंभ के समय यहुवियों में यह धारण लुप्त प्रचलित थी। "फारसियों के सम्पर्क के फलस्वरूप ही यहुवी विचारधारा में यह विचार बुझ गया था कि संसार में दुष्ट शक्तियाँ सक्रिय हैं। इस तथ्य के प्रति कोई भी संदेह इस सत्य से मिट जाता है कि 'शोबित' का दुष्टात्मा 'घरमो डियस' वास्तव में 'घवेस्ता' का 'ईरमा बीन' है।"^१

फिनिसीयन का 'घसीनी' और सिकन्दरिया का 'पराम्युटी' संभवतः बौद्ध सम्प्रदाय थे। कम से कम बौद्ध सिद्धांतों से घरबधिक प्रभावित तो घबरप थे। सीरियाई जातियाँ जो ईसा से पहले ही पाँच सताब्दियों तक पहले फारसी साम्राज्य और फिर यूनानी-रोमक साम्राज्य का अंग थीं भारतीय प्रभाव-क्षेत्र में आ गईं। प्लाइनी का कथन है कि सीरियाई फिनिसीयन घोर मिय में बौद्ध धर्मानुयायी रहते थे।

घसीनी लोगों के कुछ धार्मिक विश्वास और धारणाएँ यहुवियों की हैं। जोसेफस के अनुसार घसीनी "अन्ततः यहुवी हैं और घण्य मतावलम्बियों की घसीना परस्पर घणिक प्रेम करते हैं। ये घसीनी गुणियों को बुराई समझकर दूर रहते हैं।"

योसेफस सन् ४ बुद्ध ने लिख है : "अर्बन भारत के धार्मिक वैज्य वरत का नाम मूज सुम में उत्पत्ती संदिग्ध में था। 'द बुद्ध ऑफ द एरन्जि (११३८), पृष्ठ २४।

१ एरिचर वॉलिन वेनर का लेख 'डेविड योसेफस दिग्दी' अन्तः मन्तर, (११३९) पृष्ठ ४११-२ में। डेरेरिचन की पूर्वी जगामों के दौरान अण्य भारतीय जातघानों में मान्यताघरिधों को बन्दे बन्दे विभिन्न मिहल्ल प्ररम्य (कर) जारि ईग्री कबल्लो में श्री इग्दी प्ररम्य का पूर्वी प्ररम्य परिगलिन होज है। पूर्वी एरान के प्रति लल्लेयोघार का घल्ल विघरिध है। पूर्वी विश्वासों के बारे में अण्य विघ्न्युन ज्ञान अन् लल्ल में था वर ज्ञान औरि अन् के लल्ल लल्ल कनीसेर और गैर अण्य ग्रीये दुगल्ल घरिधों के लल्ल में लल्ल है। इन लल्ल पर गैर कर वर पररम्य लल्ल-लल्ल वर अण्य है कि कनी ईग्री कन् के घन्देक रिक्ल्लर—इगारलल्लघ गेगल्ल लल्ल घल्लल्लल्ल—अ कारण वर प्ररम्य लो गरी है। एरिचन बुन (१२९३) निरल्लन इरिगा वेड व वधनी व डे (११९३), पृष्ठ ११।

हिन्दु संयम और वासनाओं के समय को मुक्त समझते हैं। ये धन-सम्पत्ति से बचना करते हैं और इनका साम्यवाद प्रगल्भनीय है। उनके समुदाय में कोई भी व्यक्ति दूसरे से अधिक सम्पन्न नहीं है क्योंकि उनका नियम है कि उनके समुदाय में सम्मिलित होने वाले नामा प्रत्येक व्यक्ति अपना सब कुछ दूसरे के साथ साझा दे रहा महा तक कि उनके बीच मरौबी भयवा धन-सम्पत्तता के लक्षण नहीं है बल्कि हर घादमी को सम्पत्ति हर दूसरे घादमी की सम्पत्ति के साथ मिश्रित है और मान्य पड़ता है कि वे सब एक ही गिता की सन्तान हैं। उनका कोई एक निश्चित नगर नहीं है किन्तु हर नगर में वे सम्पन्नता में रहते हैं। उनका निश्चित मन है कि गरीब धनकारक है और जिस लक्ष्य में उनका निर्माण हुआ है वह स्थायी नहीं है, किन्तु प्राणायाम धन है और सबैव जीवित रहती है। इस धन के बंधन से मुक्त हली है तो माना उन्हें अपने कार्यालय में छटकारा मिल जाता है और वे प्रसन्नतापूर्वक ऊपर की ओर उड़ जाती हैं।^१ अपतिस्मा करने वाले और एक मातृ क जो बिसतुल्य साधारण धारण करते और ऊ के बालों से बने कपड़ पहनते थे। बरसों ईश्वरगाराधना में लीन रहकर वे अपने तथा दूसरों के पापों के क्षमन के लिए प्रार्थना करते रहे।^२

ओपेकम की इतिहास में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि ईसा के समय में यहूदियों को हिन्दुओं के सिद्धांतों और पूजा आदि के बारे में बहुत-कुछ पता था। सन् ७० ईसवी में यरूशलम के समूह विनाश से पहले मत्थाबा में बाबा के मजबूत किम पर एनियाडर नामक किसी व्यक्ति के नेतृत्व में यहूदियों का कब्जा था यहूदियों ने धार्मिकी बाग रोमकों से लोहा लिया। किसे के चारों ओर घेरा बाल दिया गया और एक समय ऐसा आया जब उसकी रक्षा करना धर्ममय हो गया। एनियाडर ने अपने सहयोगियों से कहा कि रोमकों के हाथों में पड़ने से कहीं बचना है कि वे सब एक-दूसरे को मार डालें। उनका कहा "घादमी दुश्मनों के हाथों में पड़ने से पहले हम अपने बीबी-बच्चों को मार डालें और उनके बाद, जाहिर है उमी धानदार मीन को हम साथ भी धसे मसा से और इन प्रकार स्वतन्त्रता को ही धानी उत्कृष्ट यादवार के रूप में छोड़ जाए।" इस मयातक परीक्षा से यरूशलमवासियों के समस्त जमाने जो तक उपस्थित किए थे उनमें उपनिषदों की उपम और भयवद्गीता की विद्याओं की याद आ जाती है। साधवत आत्मा और मस्तर गरीब के बीच का यह स्पष्ट धारण 'मोस्ट टैलामट' में नहीं मिलता। 'धारा

१ 'अपेकम' संपादन पृष्ठ-१ किनेक्ट १९०७, पृष्ठ १ ४-६।

२ मैजू पूर्ण अमि १९-२०।

टेस्टामेंट के अन्तिम अर्थ की रचना घोर उपर्युक्त भाष्य के बीच के समय में ही बहुरी उपदेशों में यह नया विचार हुआ था। यह प्लेटो का प्रभाव भी हो सकता है। किन्तु एलियाडर ने स्वयं इस हिन्दू-उपदेशों से प्रभावित बताया था। जोसेफस के विमान सन् ७० ईसवी में बहुरियों घोर रोमकों के युद्ध में प्रमुख भाग लिया था भाष्य का धर्म यों प्रस्तुत किया है "इसपर भी यदि हमें अपने रास्ते पर चलने के लिए विदेशियों की सहायता की आवश्यकता पड़े ही तो हमें आर्थिक घातकों के अनुयायी भारतीयों ने शिक्षा लेना चाहिए। वे लोग इस जीवन-काल को अतिशयपूर्वक व्यतीत करते हैं। इसे आवश्यक वासता समझते हैं घोर अपनी आत्माओं की घरीर से मुक्त करने को उत्सुक रहते हैं। यही नहीं जब घरीर से मुक्ति के पीछे कोई दुर्माध्यपूर्व कारण का वाच्यता नहीं होती तब भी उदय घातक जीवन के प्रति ऐसी उत्कट कामना होती है कि वे अन्य लोगों को अपनी विद्या की पूर्वमुखता के बंधे हैं। घोर कोई उन्हें रोयता नहीं बल्कि सभी उगह बड़ा सामान्य घामी लमझते हैं। भारतीयों से अधिक विद्यार्थी विचार रखने के कारण क्या हम घमने नहीं घामी चाहिए? ईसा की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद एलियाडर इस प्रकार बहुरियों ने बात करना था मानो वे हिन्दू विद्यार्थी घोर घातकों में सुपरिचित हों।

पूनावादी समार में विदेशी आर्थिक प्रभाव सीरिया बैबिलोनिया घनातु लिया घोर घिम में होकर पहुँचे। बैबिलोन का बोगदान था लक्ष्युवा घोर ग्यो तिप। किन्तु सर्वप्रथम बहुर्युक्त घरे रहस्यारमक धर्म जिन्होंने आत्मबन्ध से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। किसी एक ईश्वर में जो स्वयं मृत्यु का विचार घोर बाद में पुनर्युक्तिवादी हुआ ही व्यक्तिगत संयोग की स्थापना होने पर ही मुक्ति सम्भव है। एस्मितिवादी धर्म में भाष्य की मुक्ति का लक्षण उमड़ी मृत्यु घोर घल्लराता ने पुनर्जीवन को बताया गया है। घिमि 'आत्मिक-अध्यायी धर्म दूर-दूर तक फैला था। उसके घनेक भाग हैं। वह सर्वव्यक्तिमती एवं सर्वगुणवती है विषयों की विषय वैसी घोर घिम है। उसके स्थापन पर घेतोता के प्रतिच्छिन्न होने के समय तक उमझा वास्तव कायम रहा।

मिन्डरिया क बहुरियों ने पूनावादी विचारों को स्वीकार कर लिया। ईसा के उदय में ही बर्न पहले मिन्डरिया के बहुरियों ने प्लेटो के विचारों में प्रभावित होकर एक आर्थिक प्रथ की रचना की। इस मुनेमान की ईश्वरप्रदान बलि का आत्मिक प्रभाव बताया गया। पूनावादी के प्रभाव में एक समस्या उत्पन्न हुई—

१. इस धर्म का ईश्वर की कार्यवाही का स्वरूप प्रकृत का बर्न की। ईश्वर में घान का स्वरूप (ईसा के उदय) और घिम में पंचक लक्षणों का। शैविक लक्षण (मिश्रण-निराल) का

यहूदी पैगम्बरों के मतानुसार निर्धारित एक ईश्वर तथा ब्रह्माण्ड की उत्कृष्टतम व्यवस्था में व्यक्त परमात्मा से परस्पर क्या सम्बन्ध है। सम्पूर्ण सृष्टि में निहित 'ईश्वरीय विवेक' का सिद्धान्त धरनाकर ईश्वर-सम्बन्धी यहूदी और यूनानी मान्यताओं में सम्बन्ध स्थापित किया गया यह 'ईश्वरीय विवेक' ईश्वर में कुछ-कुछ पारमार्थिक रहते हुए भी पृथक् नहीं है। इन धर्म में 'विवेक' तत्त्वज्ञानियों के 'सोसोम' सृष्टि में निहित तर्कसंगत सिद्धान्त में भिन्न नहीं है। यूनानीयानी जुडाकार ने 'विवेक' धार 'सोसोम' की समानता का स्वीकार कर ली लेकिन यह भी कहा कि इसका उद्भव सर्वसृष्टिसमन्व परमात्मा है। ईश्वर ने दुनिया बनाई और मानवा को ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान कराया 'सागाम' उमीची बोली थी। मिस्रदेशिया के क्रिओ ने यहूदी एकेररबाद के कुछ धारारमून सिद्धान्तों को यूनानी पाठकों के लिए इसी प्रकार तर्क-सहित प्रस्तुत किया था। पियों के समय (पहली शताब्दी ईसापूर्व) इस धर्म में धारुर्ष है कि उनमें यूनानी विद्वानों और यूनानी धर्म का सामन्त है। उनमें में धर्मिर्षा की रचना भाग्यम क सामन्तम म रिया की मृत्यु से और धारर उनके जन्म में भी पूर्व हुई थी। पिया न ईश्वर की धर्मिक कता पर विवेक जोर दिया है और उन मारे सम्बन्ध में परे बनाया है। इस उनके अस्तित्व का ज्ञान तो है किन्तु उनकी प्रकृति का ज्ञान नहीं है। उन विचार की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। उनके लिए जो विषय इस प्रयोग करने हैं उनमें सापेक्ष धार सीमित दानों प्रकार के धर्मिक मसार से उमरी बुरी का ही पता चलता है। यदि ईश्वर ही समार नहीं है तो फिर लोगों का सम्बन्ध वेचन उन्ही धर्मियों में व्यक्त किया जा सकता है या उमरी हैं फिर भी 'उमके' पाम नहीं है। प्लेने के अनुसार, यही 'परम ज्ञान' ('धा-रियाड') है, जिसे धार की विचार

धारर सिद्धी समुने के। " 'सागाम' XXII. १७-XXIII ११ के प्रत्येक पर का समानाओं पर एक सिद्धी धर्मिक धर्म (१ ईश्वर धार धर्मिर्षा) में मिल आता है। इस धर्म का पता हमें सागाम करर वर्ष करने लगा था। प्रोफेस XXII १७ के प्रथम शब्द है 'धारने काम म्पेकर येरी धार हुने और दिन धारकर कर्ने धार कर ता। इसक लिए धर्मिर्षा में लिख है, 'काव सागाम येरी धार को ज्ञान से हुना, दिन धारकर कर्ने ममयो। 'दोनों की विवेक-धर्म है कुछ समाने। मरुतों को मरुत मरुतों कर्षी ज्ञानिर्षा में लिखा न करे, धर्मिर्षा किन्तु म्पे सिद्धी, धर्म-समन्त के लीसे मरुत साधे। समुत निर्मा की शब्द का पता धार सागाम है कि दोनों की धर्मिक धर्मिक है। समुत भी धर्मिक धर्मिक धार कर है कि दोनों धर्मों में लिख है कि निर्मा धर्मिर्षा की धर्मिक के समाने कीध धर्मिर्षा करता सागाम, और दोनों में लिख है कि धर्म-समन्त किम प्रकार धर्मिर्षा की धर्मिक कर जाती है।" 'द लीवी धारर धर्मिर्षा (१९७७) पृष्ठ १७-१८, में धारर धर्म धर्मिर्षा।

पारार्थों में ईसा के व्यक्तित्व के साथ जोड़ दिया। यहूदियों के लिए, यही ईश्वर के गुणों के सुष्ठिमान स्वरूप हैं। क्रिस्तो के अनुसार, धार्मिक ईश्वर और सीमित संसार को ओड़नेवाला सिद्धांत 'मोरोस' ईश्वर से उत्पन्न प्रथम पुत्र यहाँ तक कि 'द्वितीय ईश्वर' स्वयिक मानक है। वेदों में व्यक्त 'बाक' (एकर ही ईश्वरीय व्यक्ति है) के तुल्य यह 'मोरोस' सिद्धांत चौपी ईश्वर के सम्मिलित है।

रोमवासी यूनानियों के प्रथम लिप्य सं। बिजेता होने के बादबूढ़ उहोंने यूनानियों से बहुत कुछ सीखा। यूनानियों ने सभियों तक शास-व्यथा को काम्य रता फिर भी उनम मानव प्रतिष्ठा की जगजगत भावना थी जो यूनानियों और यूरुवों के धर्मर को पाटने में सक्रिय थी। वे मानव में जसकी धमता में बिस्वास करते थे। यूनानियों का यह बिचार रोमक द्वारा लप्य में परिवर्त कर दिया गया। रोमन कानून हमारे लिए धानदार बिरासत है। यूनानी रोमक सम्पत्ता म दोनों पारार्थों का सगम हुआ। बजिस हस्त 'एनीस' रोमक भाषा में प्रच्छन्न यूनानी कल्पना थी। यूनानिया की भाकार के प्रति सजबता में रोमनों की उह्रय एक दामिल्य की भावना को बहस जाता। रोमक मस्तिष्क मुम्बबस्था और परम्परा पर जोर देता था यह हमें बांधनेवासी जंजीरें नहीं बनू बिरासत है जिसे हमन सम्हालकर रता है। रोम का बिस्वास कानून द्वारा नियमित एक राजनीतिक बिरासरी पर था जिसमें हर धाकार नागरिक को कानून बनाने में भाग लेने का अधिकार था और कानून की बिबाह में सभी नागरिक समाज थे। रामक नैतिकता यह थी कि सामाजिक कार्यों पर उजय दिव्यरण रता जाय और समाज की भावनावासी के माधने व्यक्ति स्वैच्छा से धानी धावम्भकताओं को बकर धम्याक कर है। सामाजिक रहन-सहन की दृष्टि से यूनानी रोमक सम्पत्ता धत्वग सज्ज थी। इहने व्यक्तिगत और धाम्यात्मिक स्वककताओं की रक्षा की तथा कार्य समता और धाकाराविरता को बढावा दिया। रोमक साम्राज्य सुरोग उभगी धत्रीका मिय और बिबटपूर्व में पैना था। रामक मसार बस्तुन-यूनानीय मसार नहीं बनू यूमध्यसागरीय मसार था जिसमें लंदिया मालर और जलरी धरीता की सम्मिलित थे।

यूनान में स्वर्नत्र बिचार-भावना को प्रोगाहित किया और रोम में बाम करने का मसला पैदा किया। इसके धनिरिचन रिमिलीय में लकेणों को बाध म लछादेकता ईसाई धर्म सुरोग का प्रकान किया। रोम न पहली सनाथी ईसागुरु के मौरिया और रिमिलीय को जीत लिया। बिस् के सिवा-दिया और मीगिया के धम्पोग मधनों में यहरी जनमय्या बायी थी। बागन की धनत्र बोपाबाण, धनिकबाण, मोराधिन-बबाण तथा बिबाणधाराण मीगिया बिस् और रिमिलीय

पहुँच चुकी थीं। पुनाब के समीपवर्ती एगियाई प्रदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार था। ईसापूर्व दूसरी शताब्दी के लगभग मध्य में का भारतीय सरदार अपने राजा के विरुद्ध विद्रोह में अड़पट होकर घोर भायकर उतरी दरमाब तारा नामक स्थान में पहुँचे वहाँ उन्होंने एक मठ बनाया तथा बृह्म-मंदिर का निर्माण किया। मठ और मंदिर बार बी बर म अधिक समय तक चलने-पलने रहे और धाँवर बार में छपरी ने सन् १०६ ईसवी में मंदिर का ध्वस्त कर डाला।

वहाँ कहीं भी रोमक साम्राज्य का बोधदाता रहा उसका कानूनी और संघटनों तथा पदाधिकारियों के संगठन और सम्मान को समुचित मान्यता प्राप्त हुई। राम संघटित धर्म का प्रतीक बन गया। उसकी संघटित धर्म म बानून और शाखाकारिता धर्म तथा सहिष्णुता और स्वल्प प्रतापन की भावनाया का सम रूप था। पुनाब के नाम और इसा के धर्म होना का सम्मिलन रामक साम्राज्य में हुआ। सोचा जाने लगा कि धर्म सम्पूर्ण भूमध्यसागरीय समार को एकता के एक नवीन मूक में बाँध सकता है तथा एक साम्राज्य का सह-शासनिका क रूपन को समाप्त धर्मसंस्मिता की संयोग-धर्म में और अधिक मजबूत बना सकता है।

पॉपुलर की मुपुसन् १४ ईसवी में हुई और टा-बेरियस को उलगविचार मिला। ईसाई धर्मों में बर्णित धर्मार्ण टा-बेरियस के शासनकाल में बर्णित हुई। हिंदू समाज एक प्रकार का धार्मिक संगठन था के एक ईश्वर की पूजा करते क शिने के सम्राट विद्यायक ग्यापार्थीय और युद्ध म धनता नामक मानने क इसी पूजा में उन्हें सम्पूर्ण एवता क मूक में बाँध रखा था। हिंदू धर्मिकार में धर्म और विषी संव म धार्मिक मूसा का प्रभु याहूवेह महान का पैगम्बर माना जाता था। बाद के पैगम्बरों—समाज, हासिया यथानाह् बरमिया और इब्रियम—ने उतरा यसी धर्म को धार्मिक एकेम्बरवार में परिचरित कर दिया। ईश्वर धर्मिकार्यक रूपानु है और बाहुता है कि उनके उगसक भी महत्व नने। याहूवेह म्याम परत-मन्ता का देवता है और म्याव कृता तथा सत्य को रता उगवा प्रमुख उद्देश्य है। यह संसार नियमों से बंधा है और इनमें धार्मिक मूयों का महत्व सर्वोपरि है।

मिक्कर महान की विषयों के फलस्वरूप समस्त मिक्कर और मध्यपूर्व के शाक-शाक जूटिया भी हैमनवार क धर्म में आ पहुँचा। जूटियों ने धीक भाषा बोलना सीख लिया और अपने धर्म को उर म पहुँचान इन की नीमा तक अपने बर्णियों के धाकार-स्वदहार को धरना मिया। हिंदू धर्मिकार्यों क धीक भाषा में अनुवाद हुए। इस प्रकार हिंदू एकेम्बरवार उन समय क धर्मिकारिक और धर्म-रक्षकालक विचारों के और नवीन पहुँचा। मुपन पूर्वीय धर्म हान हुए भी अपने बौद्धिक प्रणामी और धामी का धनता मिया शिवले बारक यह मूर्तीय विरासत

में प्रविष्ट हो सका। यूनानी विचारधारा के शक्तिपूर्ण प्रवेश से उत्पन्न घटपट करीबेबासी प्रवृत्ति मुझ पर सबी और विस्तृत मानवता के लिए उपयोगी हो गयी।

'द ऐक्स गॉड प्रपोसिस्स' एक उदाहरण है जिससे हमें यथा यत्नता है कि उपरोक्त और दार्शनिक प्रचारक और प्रजातापक किस प्रकार साम्राज्य के एक कोने से दूसरे कोने तक जाया किया करते थे। सेंट पॉल अपने कर्षण पर दो सप्ताह रोम में रहकर पूर्व विचारात् से उपरोक्त और पिशाच् देते रहे और 'किसी व्यक्ति ने उन्हें रोका नहीं'।^१ रोम में विचारों की स्वतंत्र प्रविष्टि की प्रोत्साहन दिया जाता था।

पश्चिमी एशिया पर, जहाँ ईसाई धर्म का विकास हुआ पश्चिम और भारत का प्रभाव स्पष्ट है।^२ बौद्ध विचार यूनानी नगरों से होते हुए सम्पूर्ण भूमध्य सामरीय प्रदेश में फैल गए थे वे यूनानी नगर व्यापारियों तथा अन्य प्रतिनिधि मंडलों के रास्ते पर पड़ते थे। सिक्न्दरिया में तो पूर्व के विचारों का स्वागत सीरिया से भी प्रविष्ट था। इसकी शक्ति के प्रारम्भ से पहले की घताब्दी में यूनानी ईजिप्टोनिबाई, बौद्ध और भारतीय जैती विभिन्न धर्मग्रन्थों के विचारों का अद्भुत सम्मिश्रण हुआ। इसी बीच लम्बे समय तक रोम और भारत के बीच सम्बन्ध हाबोबात युगल कालीमिर्च और रेशम—घर्बान् सीमाओं के भीतर न मिलने वाली चीजों—का व्यापार होता रहा।

रोम ने जब निकटपूर्व को राजनीतिक रूप में परास्त कर दिया तो पूर्व की धारणा में रोम में तीव्र प्रवेश किया। इजरायल के पैन्थों और भारत के धर्मनिराकी के जिन लोगों के दृष्टिबाध को व्यापक बना दिया था उनके लिए यूनानी रोमक पत्र भावनात्मक रूप से धर्मनिराकी थे। धारण और उत्तेजित मोक्ष मुक्तिदायक धर्मों के लिए पूर्व की ओर देगने लगे। एशिया माइनर में लाइबल की पूजा घाई जिनमें पीलों और मृत्यों की व्यवस्था के साथ-साथ एक ऐन देवता की कल्पना थी जो पुनर्जीवन के लिए मृत्यु का कारण करता है। गौरिया में विद्याल छात्रों के बीच और भारत में विद्याल की पूजा (ध्यान बीजा लम्बारा रहस्य और अनुशासन के साथ-साथ) धारण। बाह के पार्थी धर्म में विद्याल को मुक्तिदाता परमेश्वर मान लिया गया। 'मनुष्य मरना न पश्चिमारा रहस्य न उन प्रचार

१ ऐरल घाट व जॉर्जिन्स XXVIII ३१।

२ लुक्का १३:३५। एक एक धारणन: लुक्का १३:३५ धारणन (१:२३)। "वर्तमानक कि मुझ इरानापी रोमेश्वर को भी कृति प्रवृत्तों में लता टाना। न कृति प्रवृत्त धारणन किने कर्त लवन्तियों और कर्तियों की किन्तु यथा यत्नता में लगे है।"

माने की। एस्त्रियामा जब मैंने बिस्मृत अरागाहों के देवता मिया की रचना की तब मैंने उसे धारने—सहृग मन्त्रा के—समान धर्मि और प्रार्थना के योग्य बना दिया।^१ मित्राज निरीह प्राचियों तथा पापियों का मुक्तिदाता है।^२ तुमाजेने क पण्डितोक्तम मन्त्र (१६-२० ईसापूर्व) की समाधि ए पता जसता है कि ज्यो-ज्यो मित्रा सम्प्रदाय परिचय म पैमता गया मिया को यवोमो हीमिमोस और हेजो नीम का ही प्रतिरूप समझ जाने सता।^३ इम सम्प्रदाय को सबसे अधिक सफलता रोमक साम्राज्य में मिली। दायीवनीगियन गैनेरियन और सिडिनिमस ने ३०७ ईसवी में कारमन्तुम में मित्राज के नाम पर एक मन्दिर का निर्माण कराया। कॉन्स्टेन्टाइन की बिजय के परचात् सम्प्रदाय में सिडिसना धारने लगी और मन्तत बिमोरोसिमस (३०६-६३) की धाका से इसपर प्रतिबंध लगा दिया गया। मिय से मोसिरिस और धाडिसिस की पूजा का पध पहुचा इसमें सम्पूर्ण मानवता के कष्ट-निवारण क मिए धाजुल एक पीड़ित किन्तु दयामयी 'माता भयवती' की कथना की। इन देवी-देवताओं के समस्त भोक्तव्य क माम्यताप्राप्त देवताओं का महत्त्व कम हो गया। ये समस्त सम्प्रदाय और धर्म पुनाम क रोमकी प्राचीन धाबि कारिक पूजाओं के लिए वो धरस्य बिदेयी ये किन्तु रहस्यात्मक धर्मों क लिए, जो मध्ये धरने तक पुनामियों के बास्तबिक धर्म रहे के एकदम अपरिचित नहीं म। कॉन्स्टेन्टाइन द्वारा ईसाई धर्म को माग्गता दिए जाने के बाद भी जूलियन को एन्सूसिम के रहस्यमय धर्म और मित्राज की पूजा की बीरता ही गई। यदि ईसाई धर्म बिजयी न हुपा होना तो मित्राज या मेरथिमि धरवा 'माता भयवती' की बिजय हुई होगी भोमपियवाई देवताओं की लही।

मिया सम्प्रदाय और ईसाई धर्म म धरमुत नमानताएं की। उनके अनुवाची परस्पर 'बन्धु' म। उनकी धास्वा बपतिस्मा और तपस्वायुक्तक धाचारो म की। दोनों में ही देवता इहलोक और परलोक का मध्यस्थ बा। दोनों की धिखा की कि मुक्तिदाता परमेस्वर पुन' पदार्थ क करेगा मृतकों को जिन्नादेवा पुष्य और पाप का निर्मम करेगा तथा पुष्यारमाओं को धमग्ग क पापारमाओं को बिनाम प्रदान करेगा। जस्टिन का कथन पा कि सम्पूर्ण मित्रावाद सम्प्रदाय मीतान की बालबाची है। और उसका उद्देश्य ईसाइयों को गुमराह करना है।^४

१ 'किरि कप' X.१।

२ की, X. २४। X. २३।

३ 'किन्ट्राम ऐर एरत पेलेन ड सिडिन्सिमिटी' ज्ञानक प्रोफेसर एर की एर मीरन क निर्णय देरिए। सिडई कर्नल, बमबरी १६३२।

४ 'एरौलोपिड' १-१६।

ईसाई धर्म ने रहस्यात्मकता को प्रोत्साहित और घाटा का सिद्धांत प्रचारित किया तथा उसकी पूजाविधि भारत की इसीलिए उसका प्रचार-प्रसार हुआ उसकी विद्या की कि ईश्वर की बुद्धि म वास और सम्राट समान है। इसीलिए निम्नश्रेणी के लोग उसकी ओर आकर्षित हुए। उसने आधुनिक-मेम और साहचर्य को महात्त्वपूर्ण स्वात दिया। धीमे ही मूलानी दर्शन को धपना देने में उसमें एक बौद्धिक तत्व उत्पन्न हो गया जिसने विचारकों को आकर्षित किया। उसके कमलकारक तत्व धर्मविद्वासी लोगों के लिए पहले ही आकर्षक-केन्द्र थे।

ईसा-सम्बन्धी अनेक कहानियों और उनके द्वारा प्रयुक्त दृष्टान्तों के समानान्तर कहानियाँ या दृष्टान्त भारत में थे। ११ ईसापूर्व में रोम ने यूरेशिया पर अधिकार किया। ३० ईसापूर्व से लेकर ४० साल तक यूरेशिया पर हेरोड का शासन था। ईसा के जन्म से संबंधित 'ईजीप्स' में हेरोड का डिक है। एक ठारे द्वारा निर्दिष्ट ईसा के जन्म के समय उग्रहार लेकर पहुंचनेवाले पूर्व के तीन बुद्धिमान व्यक्तिगणों ने हेरोड को बताया था कि एक सम्राट का जन्म हो गया है। इसपर हेरोड ने कैथेलहेम के सभी नगरवात सिन्धुओं की हत्या की आज्ञा दे दी। जोसे फ्रस ने इस प्रसंग का वर्णन नहीं किया। कुछ भी हो यह कथा हमें कंस की याद दिलाती है। उसे बताया गया था कि उसका भाजा ही उसका बच करके राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा। इसी कारण उसने अपनी बहन के सारे बच्चे पंदा होत ही मरवा दिये थे कैथेल हत्या की हत्या बह नहीं कर सका। मैसूर के दूसरे अध्याय में बर्जिन संपूर्व कथा का दृष्टान्तकर्म की कथा से सम्बन्ध साम्य है। दृष्ट की भाँति ईसा की भी ईश्वर-पुत्र कल्प में पूजा होने लगी।

ईसा का किष्कानवासा दृष्टान्त स्पष्टतः बौद्ध धर्म से लिया गया है। कुछ से पूछा गया कि वे परोक्षात्मक कुछ लोगों को अधिक उस्ताह से क्यों उपदेश देने हैं। इसपर उन्होंने उत्तर दिया कि मान सात्रिय किसी विज्ञान के पास हीन गैत है—एक अक्षय्य बुनग मामूली तीसरा पटिया। वह पहले अक्षय्य गैत को फिर मामूली का और सबसे अल्प में पटिया गैत को बोएगा यह सोचकर कि जो उगमें जानवरों का चारा ही उम प्रायण। इसीलिए कुछ पहले अपने भिद्यकों को और फिर साधारण अनुयायियों को उपदेश देने थे। अल्प में दुगरे मनात्मन्विकों को यह सोचकर उगने देने थे कि वे एक ही शब्द समझ गये तो बहुत समय तक उग नाम हाया।

ईसा को जो प्रशंसन दिए गए थे उनमें हमें सातवीं शताब्दी ईसापूर्व के बटोरनिपद् में बर्जिन धर्म द्वारा नविनेता का दिए गए प्रसाधनों धपका मार हाय गीतम को दिए गए प्रतीकनी की बाव घाती है। परबुद्ध को प्रतीकित करते

हृदय धड़कीमान करता है "तुम महारा मखड़ा से मुग मोड़ गा तो हजार बप तक मसार पर राज्य कर सकते हो। जगन्गुण का उत्तर है "मेरे लिए ऐसा करना धर्ममय है फिर चाहे मरा धरि मरा जीवन मेरी धारणा ही बर्षों न मष्ट हा थाप। ईसा के समय के यहूदियों को य हिन्दू बौद्ध और पारसी कहानिया धरत्य मानूब रही हायी। ईसा द्वारा परिवार और गृह का परिष्कार विमुक्त भारतीय परम्परा है। भारतीय संन्यासी धरवार रहिन पयंटक ही मो हाते है। ईसा का कथन है "लौकिकियों की मारि होनी है परी धर्ममो में रहन है मकिन ईसाण के बेटे के पास सिर छिपाने की कोई जगह नहीं है।" उनका गुमरा कथन है "ईसा की श्रद्धा का पासन करनेवाले ध्यविन हो मेरी मां माई और बहिन है।

यहूदियों की बरहबिल परम्परा मे ही ईसाई और इस्लाम दोनों धर्म उद्भूत हैं। मेमिटिक जातियों के बीच जनमे ये तीन धर्म इस धर्म में ऐतिहासिक माने जाते हैं कि किसी न किसी समय में किसी न किसी स्थान पर हुई देववाचियों ही इनकी आधारधिता है। ये तीनों इतिहास की पटनाओं से संबंधित हैं—बिरोप प्रकार की पटनाओं से जिनमे इतिहास के प्रति ईसा के स्व और रबि का पता चलता है। ईसा एक परम धर्मि है वह पृथ्वी पर इसलिये नहीं रहता कि पृथ्वी उसकी ही सृष्टि है। ईसा मनुष्य को अपनी बाकी द्वारा धरणा बोध कराता है। धारणा के बस पर हम ईसायीय जीवन के भागी बनते और ईसा के सहयोगी हो जाते हैं। जुदावाद में ईसा ने यहूदियों को धरणा प्रियजन कहा है। ईसाई धर्म में ईसा के प्रियजन हैं बर्ष के सभी धारणावान लोग। इसी प्रकार इस्लाम धर्म में धारणा रखनवाले गुदा के बन्दे होते हैं। यहूदी धर्म में ईसा ने अपनी बाकी ने धानबकण धारण कर लिया। ईसा का कुंभारी के गर्भ से जन्म 'वास' पर विन्ध कोली से मादा जाना और पुनर्जीवन ईसाकेच्छ क धर्मिधाय धर है।

ईसा स्वयं को यहूदी धनीत से सर्वथा पूषक तो नहीं कर सके फिर भी उसकी विद्याओं का रणान्तर करने की कोशिल उन्होंने की। यहूदी पैगम्बरों की श्रम धारणा को ईसा ने भी माना कि यहूदी धरने ईबी कर्तव्य स ध्युत हो गये हैं और सगुं सर्वजन धरविषय करके पुन धरणा कर्तव्य पासन धारंभ करना चाहिए। रामक साम्राज्य द्वारा यहूदियों की पराजय बास्तव मे राष्ट्रीय धरराज के लिए ईसायीय बंध है। ईसा ने कहा कि इसका धरविषय और ईसायीय नियम को पुन राष्ट्रीय जीवन की धारणाधिता के रूप में स्वीकार करना चाहिए। राष्ट्रीय धरविषय और ईसायीय राज्य की स्थापना के प्रति धारणा के स्वीकरण के रूप में उन्होंने सबसे पहला धारिजनिक काम यह किया कि धरतिरता करनेवाले

जोन के अनुशासितों से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। यहूदी लीप रोय की पराधीनता से मुक्ति पाना चाहते थे। एक बार तो उन्होंने बसपूर्वक ईसा को यहूदी-साम्राट बना देना चाहा था। रोम की सरकार ने ईसा को यहूदी-साम्राट के रूप में ही सजा ही थी। '४ ऐक्ट्स ऑफ़ एपोस्टिल्स' के प्रारंभ में कहा गया है कि ईसा के पुनर्जीवन के बाद उपस्थित व्यक्तियों ने उनसे प्रश्न किया "ब्रह्म, क्या साग इस समय इजरायल को स्वतन्त्र कर देंगे ?" ईसा का बार-बार यह कहना कि वे यहूदियों के लिए जन्मे हैं उनके कृत्यों के राष्ट्रीय महत्त्व की पुष्टि करता है। उन कमानी स्त्री की कथा जिसमें उन्होंने कहा था कि 'बच्चों की रोटी छीनकर कुत्तों को दे देना उचित नहीं' इसका एक उदाहरण है।^१ उन्होंने अपने शिष्यों को व्यक्तिगत और समाजिक दोनों के लिए जाने बोलना सिखाया था। इसके बजाय उन्हें 'इजरायल की लोई हुई भेड़ों' के पास भेजा था। ईसा ने अपना काम यहूदियों को पुनः ईस्वर बलि में लपटा देना निर्धारित किया था।

ईसा ने स्वयं को अपने पुनर्जन्म के धनीन से धरम कर भिदा और अपने जीवन तथा शिक्षा में एक धार्मिक धर्म के मूलधारों को प्रस्तुत किया। वे अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कुछ कहते थे। "मेरी शिक्षा मेरी नहीं उसकी है जिसने मुझे भेजा है। अपनी आत्मा से बोलनेवाला अपनी महत्ता बढ़ाता है किन्तु जो अपने बोलनेवाले की महत्ता बढ़ाना चाहता है अपनी महत्ता भी बढ़ा लेता है।" ईसा अपनी अदम्य चेतना से प्रेरित होकर बोलते हैं। ईसा सारी मायनाओं को ठुकरा देने हैं। कोई कुछ भी कहना रहे मैं तुमने कहा हूँ। अपने अनुभव से प्रभावित सत्य उनका आधार है। उनके लिए सत्य कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं बल्कि धार्मिक जीवन है। उनकी शिक्षाओं में यहूदी धर्म की सारी कानूनी गणेशियों की उलथा है और कहा गया है कि मानवा जीवन सभी बातों पुराने आदेशों में भीतर है। 'तुम्हें अपने प्रभु परमेस्वर को प्यार करना चाहिए।' 'तुम्हें अपनी ही तरह अपने बड़ोंसियों का प्यार करना चाहिए।' ईसा के धर्म में उन दोनों सत्य बातों की मायना है। वे जो जीवन का बचन है 'कानून के प्रमेता मूमा से और दया तथा सत्य के ईसा। ईसा ने परमेस्वर के राज्य का स्वीकरण करने को कहा गया तो उन्होंने कहा 'जो मेरे राज्य का राज्य प्रत्यक्ष दिखता नहीं पचना और नहीं कहा जा सकता है कि वह समुद्र-समुद्र स्थान पर है।' क्योंकि परमेस्वर का राज्य अदृश्य में

१ १२।

२ मैथ्यू XV २४।

है।^१ हम स्वयं के जितन मर्मीय हैं परमेश्वर उससे बड़ी घबिच हमारे समीप है। घबने घन्मत् के परमेश्वर को पहचानना हमारा कर्तव्य है। मानवाय गया हैबो ब्यवस्थाओं क बीच कोई दुर्घट बाधा नहीं है।^२ घनि मानव मर्दया घट्ट हो घौर घास्मिच समार मे उमका कोई मगाव न हो तो घर्म का मन्धे उनके हृदय म कभी भी प्रवेश नहीं पा सकना। घूनाती घनन के कृष्ण मन्धों म ब्यवच परमेश्वर घौर घ्यस्मिच क बीच का घन्तर ईसाई घम म भी प्रबिष्ण है। मानव स्वनाच ब्यक्तिगत घौर 'मघप्रयम' पाय के कायय कमजोर हो चुका है इसमिए रचनारमक कायों के घमाम्य समघ्य जाता है। मानव एक प्रकाय म प्रकृति की उपज है, परिबर्ननघीम है घ्राबम्यवना के घाम भुक्तता है घबने माबावेयो हाग मंघामिच हागा है बिम्बु बहु घास्मा की बिनमायी भी है घौर इसीमिए बहु प्रकृति तथा जगत् मे परे भी है। प्रकृति घौर घास्मा के मंगम पर लड़े मानव के घन्तर में परमेश्वर मे मिलन का बिन्दु मौजूद है। 'स्वर्ग म उतरे हुए ब्यक्ति को छाडकर कोई घम्य ब्यक्ति स्वयं नहीं पकूच सकना।'^३ ईसा मनुष्य के बेटे से घौर ईश्वर के भी। वे घस्मिच के दोनों मन्धों—घास्मिच घौर स्वयिक—के मन्धकें मे ब। वे मध्यस्थ के रूप में घाण य। मानव की हैमियन स उनके सामने घनेक प्रलोमन ब। यहाँ तक कि जीवन की घालिरी घड़ी मे उन्हें प्रनौमन दिये गये। "मरे पर मेश्वर तुमसे मुझे क्या बयों दिया है?" उन्हें मानमिक यातनाएं महुनी पड़ीं। उनके मिए मब कुछ बड़ा कष्टप्रद था। ब घालरिच गंघाधों घौर मबयों प्रनौ भनों घौर हन्धों पर बिजय पा सके इसीमिए ब मानवमात्र के मिए घाहरी बन सक। र्मा की प्रबुडता घौर ब्यक्तिच का बिघाम होना गया। "बच्च की उन्न बड़नी गयी उमकी घास्मा मजबूत होती गयी बुद्धि का बिकाम हुआ घौर ईश्वर

२. बैल बर्न ह्यूजेन ने मेड घामन ब्यवस्था की मिय घलिच को उरुण किया है। 'संघर मे संघोपन ब्यवस्था किलुन है घौर हरेगा बनेरर को घोज मे लय ररर, लगरघर घमररर के मिए घड़े मररर घौर उनकी ब्यवस्था करके बनेक लोम घानन घनरी करते हैं मरकि इन मरे सनच परमेश्वर कभीके र्भर निघान करता है— मरकि उनका घ्यघ्यो ही घमररर क मन्धिर है मरि वह मरेच कन्धिच रहता है।' 'द मिकलेबूराइन' III ३। बैल बर्न घ्युल मिकिचक बनेमेड काडू रिबीकन घूमर संघररर (१९२३), II. पृष्ठ २३१ २।

३. घॉलयेन का ककब है "मामन मन्धसे घी निबंमिच हो चुका है, र्ममिय घलिच बाकू की ब्यवस्था है। रमबिच नहीं कि वे बानून हरव मे र्भिच नहीं हैं बल्कि रमबिच कि बने घने हरव को ही ल्याय रिच है।'

४. बॉन III. १३।

का उदर पर घसर घनुपह था । ^१ उन्होंने मानवीय और देवी के बीच की लाई को पाट दिया ।

'स्वर्ग का साधन' का अर्थ है मानस की एक अवस्था अस्तित्व का एक उच्चतर स्तर, ज्ञान-प्राप्ति की अवस्था बोधि विद्या । सत्य से स्वतंत्रता मिलती है । ईसा के 'पञ्चाताप' का अर्थ है चेतना में परिवर्तन । पञ्चाताप ग्रीक भाषा के एक शब्द 'मिटा-नोइया' का अनुबाह है । इसका अर्थ है चेतना में परिवर्तन धार्मिक विकास ज्ञान का उच्चतर स्तर । मानव-मन उच्चतर सत्य की अनुभूति के योग्य हो जाता है । ^२ यह केवल प्रायश्चित्त अथवा पञ्चाताप नहीं है, बल्कि अस्तित्व और मन का सामूहिक परिवर्तन है । हमारे बुद्धिबोध में अज्ञान है, अविद्या के स्वाम पर विद्या की स्थापना है । यह सोचने अनुभव करने और कार्य करने का एक नया ढंग है । यह पुनर्जन्म है । ईसा ने मौजूदेमुस से कहा था "नये सिरे से बनने बिना कोई भी व्यक्ति परमेस्वर का राज्य देख नहीं सकता ।"^३ प्राकृतिक अनुभव का नहीं बल्कि सुख धार्मिक आध्यात्मिक मानव का पुनर्जन्म होगा है । यह विकास का अंश कदम है । "पञ्चाताप करो तो तुम्हारा परिवर्तन हो ।"^४ यह हमारी चेतना का अक्षर उदर जाता है । "यदि तुम परिवर्तित होकर बच्चों के समान बन जाओ । ^५ हमारे जीवन का बायक ही संसार की माया और रहस्य के प्रति उल्टा होगा है । हम जो साधारण भौतिक अणु और इन्द्रियवाह्य बस्तुओं में ही लगे रहते हैं । जीवन का रहस्य जीवन द्वारा ही मल्ट कर दिया जाता है और एक स्मृति भर रह जाता है और सब भर को ही कभी-कभी उन बानों की याद घानी है जिन्हें हम कभी जानते थे या जो कभी हमारे पास थी । हम अक्षर ही अक्षरी लोभी हुई निधि को पुनः प्राप्त करना चाहिए, ^६ ताकती और स्वाभाविकता का फिर जाना चाहिए । मानव को अक्षर अदम्य है । एधीतिया हों से सेतक कहना है 'सनेवागो जाओ और मृतकी में ऊपर उठो । ^७ मंगलिन और बाह्य-विलून होत से पहले प्रारंभ में ईसाई उपदेशों का गार

१ 'लूक II ३१ ।

२ तुमना बोधि । 'पान-उदर' 'उमने अदर मन में सब-अन्वय' का ज्ञान अन्वय विद्या है ।" III ११ ।

३ अत III. ११ ।

४ 'लूक' का अर्थ अक्षर III. ११ ।

५ 'लूक' XVIII. ३ ।

६ 'लूक' का अर्थ अक्षर III ३ ३ ।

७ V ३५ ।

प्रास्तरिक ज्योति के प्रकार के कारण भीड़ में जागृति में पड़ना ही था। कुछ ही तरह ईसा भी जागरित थे और क्रूरों को जागृति का ज्ञान बनाने में। स्वर्ग का छायात्मक कहीं भविष्य में नहीं है। वह हमारे समीप है। वह हमारे भीतर है। इस प्रबन्ध को प्राप्त करने पर हम नियमों में मुक्त हो जाते हैं। सच का दिन मनुष्य के लिए है मनुष्य सच के लिए नहीं।^१

इजीप्त के उपोद्घात में सेंट जॉन ने कहा है 'परन्तु जिन लोगों ने उसका स्थापित किया' उसके नाम पर बिश्वास किया उन्हें उसने ईश्वर की सन्तान बनने की शक्ति प्रदान की।^२ ईश्वर की सन्तान या पुत्र का धर्म केवल ईश्वर-विरहित प्राणी नहीं है बल्कि सेंट पीटर के शब्दों में 'ईश्वरीय प्रकृति का सामेपार' है। प्रथम भोज के समय ईसा की ईश्वर-प्राप्तियों के सेंट जॉन द्वारा किये गये वर्णन से यह स्पष्ट है 'कि वे सब एक ही जाएं हे पिता जिस प्रकार तू मुझमें है और मैं तुझमें हूँ वैसे ही वे हममें हों जो महिमा तूने मुझे दी जने मैंने दे दी है जिससे कि वे भी एक ही जाएं जिस तरह हम एक हैं।'^३ हममें से प्रत्येक ईश्वर का प्रबन्ध बन सकता है।^४ सेंट जॉन के उपोद्घात के शब्दों में 'सोस' ही 'सच्ची ज्योति है जो सच में धारक, प्रत्येक मनुष्य को ज्योतिर्मय बनाती है।

ईश्वर मस्तिष्क में उपजनेवाला विचार नहीं धनुष्य किया जानेवाला शब्द है। नूजाबाद में प्रास्ता रखनेवासे कोरिन्थियाई ईसाइयों के विरुद्ध पॉल ने कहा था "क्या सर्व करना किसीके लिए ठीक है? क्या इसमें कोई लाभ हो सकता है? फिर भी मैं प्रभु के दर्शन और प्रकाशों की वर्षा करूंगा। मैं ईसा नामक एक व्यक्ति को जानता हूँ जो औरह वर्ष पहले स्वर्ग-सोक की घोर उठा लिया गया। (देहसहित या देहसहित मैं नहीं जानता परमात्मा जानता है)। और मैं जानता

१ मार्क II. १७।

२ L. १२।

३ XVII. २१२।

४ यह बात संवेदात्मक है कि ईसा ने कभी स्वर्ग को ईश्वर द्वारा निकुल्य अंतरकर्ण कहा हो। सर्गोप प्रोफेसर थॉमस जॉन्स का मत है 'जो तो समझता है कि ईसा के भौतिक और स्वर्गिक दोनों रूप इसमें अन्तर्गत ही हैं। इ जीवों का मूल्य बनार होने के कारण वे ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी हैं। हमें अपने ईश्वरीय संज्ञे का आकाश भर मिलता है। हिब्रू पैट्रिस्टिकल सोसायटी (१८८५) पृष्ठ २२२। सेंट जॉन मित्रों के बीच में ईसा का कथन है: 'मेरे विचार से सेंट जॉन ने भी कभी ईसा को परमेश्वर का समकक्ष नहीं माना है। अन्तर्गत में परमेश्वर का शब्द इत्येव 'पिता' से बोध है और संदिग्ध है कि यह कभी इस अन्वयार्थिक विचार को स्वीकार करता कि ईसा ईश्वर के समकक्ष और स्वर्ग ईश्वर के समीप है।'^५—'द प्रिन्सिपल ऑफ़ थ्योलॉजी इन द इंग्लिश चर्च (१८२५), पृष्ठ २२।

है कि उस स्वयं से जाया गया धीर होने ऐसी अवस्थायी बात मुझे जिन्हें मुंह पर माना मनुष्य के लिए उचित नहीं।^१ धर्म ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान धीर चेतना का विकास है। ईसा को ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान था धीर उनकी चेतना विकसित थी। सेंट पॉल के इन शब्दों 'ईसा के स्वभाव के समान अपना भी स्वभाव बनाओ'^२ का संकेत पामिफ चेतना परम पिता की सर्वव्यापकता की धनुर्भूति परमेश्वर के साथ संयोग की धीर है। "तुम्हें अपने प्रभु-परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय आत्मा धीर मस्तिष्क से प्रेम करना चाहिए। हमें ईश्वर को अपने सम्पूर्ण अस्तित्व समस्त प्रेम करना चाहिए। प्रोगस्टीन के मृत्यु से पूर्व स्पष्ट बचन का सबसे प्रसिद्ध वाक्य है 'तुमने हमारी सृष्टि अपने लिए की है धीर हमारे हृदय जब तक ठेरा घायम न था आगये वैचन रहये।' भजन-सहिता में एक टिप्पणी है 'बिना प्रकार हिरनी पानी के बरसे के लिए घायुत रहती है उसी प्रकार, हे परमेश्वर, मैं तरे लिए घायुत हूँ।'^३ ईसा का मत है कि मानस-परिवर्तन ही चेतना का उदात्तीकरण हो। हम लोग साधारणतः इन्द्रियबन्धु बाह्य जीवन जीते हैं। हम तथाकथित 'धीर के मस्तिष्क' इन्द्रिय-आप्त मस्तिष्क के आधार पर जीते हैं। मनुष्य का आत्मिक स्वल्प तो कमी उमर ही नहीं पाता। आन्तरिक परिष्कार द्वारा ही मनुष्य सम्पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

हम ईसा के समान ईश्वर के प्रति आगच्छक होना चाहिए। हमारे भीतर बहु आगच्छकता कुल शीघ्र धीर धनुर्भूत विकसित है। ईसा में यह सम्पूर्णतया न संयुक्त रूप मविद्यमान थी सर्वप्रथम मानव आत्म का धनतन्त्र हमारे लिए पहली बार जगमे स्थिति का जीवन है द्वितीय आत्म का धनतन्त्र दुबारा जगमे देने की धनतन्त्र है। मानव-आत्म के लिए आत्मिक रूप से दुबारा जगमे देना आवश्यक है।

ईसा का धनतन्त्र सार्वभौम तन्त्र का विघटितन उदाहरण है। ईसा हमारे

१ II कोरिन्थियन् XII १-४। टॉम्स काटीनास का कथन है "ईश्वरीय ज्ञान का पूर्ण ज्ञान होता नहीं मरिमा के प्रकाश द्वारा वह ज्ञान का ज्ञान है जिसे धीर से ज्ञान है (अधन-मिथ XXXV १)।" 'तुम्हारे ही प्रकाश में हम प्रकाश को वह ज्ञान मरिमा। क्रिस्तु हम प्रकाश का ही धीर से देगा ज्ञान मरिमा है। प्रथम शब्दी स्वल्प के माध्यम म। हम प्रकाश स्वल्प मरिमा का परिष्कार-वृद्धि होती है। द्वितीय शब्दी स्वल्प द्वारा धीर आत्मिक से की प्रकाश में धीर से प्रकाश दुबारा है। धीर कारण हम आत्म में उन्ने स्वल्प मरिमास्य मरिमा मरिमा कि प्रकाश उन्ने मरिमा तारे में प्रकाश का ज्ञान क्रिस्तु मरिमा प्रकाश ही ज्ञान मरिमा—'तुम्हें विघटित' II १५ १।

२ कोरिन्थियन् II १।

३ XLII. १।

लिए वही जीवन के प्रादुर्भाव हैं। उनसे प्रेरित होकर हम केवल ईसाई नहीं बल्कि स्वयं ईसा बन सकते हैं। इरेमियस के शब्दों में ईसा ने मानवता का पुनरुत्थान किया।

ईसा की बुद्धि में सम्पूर्णविद्या धर्म का मूल तत्त्व नहीं है। सारे इस धर्म परम वही जीवन में समाप्त हो जायेंगे। परमेस्वर के अस्तित्व का आशय आकरणिक है उसके आधिकारिक वर्णन की आवश्यकता नहीं। मनु-सिद्धांत तो इतिहास सभ्यताओं की आभारपूर्ण श्रद्धापूर्ण है। जिनमें आस्तिकिद्वाराओं के त्याग पर शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पृथ्वी पर हम धीरे-धीरे के धार-वार काया-कामा देखते हैं।^१

ईसा की आकाशवाणी जुड़ाई देन है। आकाशवाणी द्वारा ईसा सत् का ज्ञान प्रदान करते और उम प्राप्त करने की शक्ति देते हैं। मनुष्य की आकाशवाणी ईसा की महिमा का ज्ञान है। इसमें एक प्रकार का महत्ता का भाव निहित है, 'है परमेस्वर, मुझ पापी पर दया करो।'^२ ईसा का मत है कि मानव के भाग्य का ज्ञान देन ही नहीं बल्कि एक उपलब्धि भी है। इसके लिए परिधम धाराधन इन शब्दों अज्ञान-मनन का जीवन अर्थात् करना आवश्यक है।^३

ईसा का धर्म यद्यपि सीधा-सादा है किन्तु उसका प्राप्त प्राप्त नहीं। अपनी व्यक्तिगत रक्षियों का परित्याग करके केवल परमेस्वर की आज्ञा का पालन करना होगा। 'सीपी इजील' में ईसा ने कहा है 'मिरा एकमात्र कृतव्य है अपने भेजने

१ 'ओरिजिनस' XIII. ११। सन् १६०० की अपनी शास्त्री में रिस्क ने लिखा है कि ईसा के प्रति हमारा दृष्टिकोण हमें ईसा में निष्पन्न करता है। "नव-वक्त्रों के लिए ईसा अत्यंत समीपवर्ती एक बहुत बड़ा कर्ता है जो ईसा का दृष्टि से प्रोत्साहन कर देता है। उनमें अज्ञान के भ्रम से ईसा को जाने की प्रकृति देना हो जाता है। वे सीधे-सीधे हो जान हैं और सत् में अज्ञान की अंधारों की शक्ति इस में अब आते हैं। वे ईसा, परिक्रम और सत् के बीच अन्तर दे रहे हैं। अज्ञानों और सत् के बीच अन्तर को स्पष्ट करते हैं। अज्ञान अज्ञानों से अज्ञान भ्रम हुए आते हैं। वे न अज्ञान होने हैं न अज्ञान, और न अज्ञान के अज्ञान से अज्ञान आते हैं। वे अपने अज्ञान से अज्ञान हो आते हैं और ईसा को अज्ञान करने के लिए अज्ञान है कि वे अज्ञान न हो। ईसा अज्ञानिक अज्ञान अज्ञान अज्ञान अज्ञान (१६३१) पृष्ठ ३२६।

२ 'लूक' XVIII १३।

३ 'सेंट जॉर्ज' ने अज्ञान-मनन की परिधि का अर्थ में लिखा है : "अज्ञान-मनन का अर्थ है कि ईसा को अज्ञान करने के लिए अज्ञान के अज्ञान करने।" 'इरोमिया' VII. ३। ओरिजन ने इसी प्रकार के शब्दों में अज्ञान-मनन अज्ञान का अर्थ अज्ञान है "ईसा" अज्ञान है, और अज्ञान अज्ञान में ईसा की शक्ति को अज्ञान का अज्ञान करने, अज्ञान और अज्ञान द्वारा अज्ञान ईसा के अज्ञान का अज्ञान है।

नामों की मात्रा का पालन और उसके कार्य की सम्पत्ति ।”^१ हममें से प्रत्येक को ईश्वर द्वारा निर्धारित अपने कर्त्तव्य के प्रति उत्तर्य रहना चाहिए ।

बुद्धि का विकास मायाबाल से मुक्त होने पर ही होता है फिर भी जीवन की कृत्ता को माय्यता और घसत् की स्वीकृति कभी नहीं की गयी । हमारे लिए उपदेश है कि हम अपने पड़ोसी को प्यार करें । किन्तु जने पापी समझकर प्यार करने का उपदेश नहीं है बरन् उसमें विद्यमान ईश्वर के लिए मानव समझकर प्यार करने का है । सेंट पॉल ने लिखा था “प्रास्था प्राणा और प्रेम तीनों का निवास है, और तीनों में प्रेम सर्वोत्कृष्ट है । प्रेम स्वकृत्पा की सिद्धि है ।”^२

ईसा न एक सार्वभौम नैतिकता की बोधना की है कि सभी मनुष्य बन्धु हैं एक ही ‘पिता’ की सन्तान ।^३ ‘गूढ समाहितन’ के दृष्टान्त में ईसा ने पड़ोसी की नयी परिभाषा की है । हर धावस्वकृतावस्त प्राणी और हर प्राणी जिसकी सहायता करने की सामर्थ्य हममें हो हमारा पड़ोसी है । सेंट पॉल ने कलीस्योड रचित यूज के प्रति भजन से उद्धरण दिया है ‘हम उसीमें जीवित परिचासित हैं उसीमें हमारी सत्ता है वैसेकि तुम्हारे कुछ कब्रियों ने कहा है ‘क्याकि हन वास्तव न उमकी ही सन्तान हैं ।’^४ ईसा का उपदेश है ‘अपने धक्कों से प्रेम करो अपने बुरा चाहनेवालों का भसा चाहो अपने पुसा करनेवालों का भसा करो अपने सनानेवालों के लिए प्रार्थना करो सभी तुम अपने स्वय-स्थान ‘पिता’ की सन्तान बन सकोगे ।’^५ सेंट पॉल का कथन है ‘ईसा न गहरी है न पूनागो न बरर न साइपियाई न ह न दास न स्वतन्त्र फिर भी ईसा नामक एन स्वकित में के सब समाहित है ।’^६ ये सारे अन्तर समगत हैं क्योंकि जीवन सम्पूर्ण योग्य परिभाष्य है । हम एक-दूसरे के सय हैं । ईसा का कहना है कि हमें सम्पूर्ण मानवता का उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए । वेग विद्वय के निवामियों और

१ IV १५।

२ रोमन XIII १ ।

३ मैथ्यू XVIII १ ।

४ टिमथ्यू XVII २५।

५ मैथ्यू V २५। XXVI २९ की रेफिण ।

६ ‘वर्चोसकम्प’ III ११। एग्लोसक का कथन है ‘अपने काम पनी बंद प्रगति परत अत्रदाई है जो हमारी अगाध्य के लव अन्विचर्यक एक है और अगाध्य के अंतर अत्रदा ५५५ ईसक के लव है । अन्त न हम अन्विचर्यक ही हैं न ईसक क इरादाय कपे।५ अपने लव पुने मन्व अत्रदायिक के अंतर बर होती है किन्तु बर अत्रदाई निरचय ही अन्विचर्यक और इरादाय अत्रदाय का प्रत्य कारण तो ही है । श्री. अन्विचर्यक अत्रदाय ‘निज मन्व एग्लोसक (१९१९) में मन्वक अत्रदाय अत्रदायक मन्वक अत्रदाय अत्रदाय II १५ का अन्विचर्यक अत्रदाय ।

संस्कृतियों का प्रत्युत्पन्न कोई धर्ममात्र प्राप्त नहीं बल्कि व्यावहारिक वास्तु बिकला है।

ईसा के जीवन से प्रभावित होकर जब कुछ लोगों में उन्हें ईसाई धर्म मानने की प्रवृत्ति आयी तो 'मोगोस' सिद्धांत ने उनके विचारों को सर्वसंगत रूप प्रदान किया। पॉल के पत्रों में संसार और इतिहास के साथ ईसा के सम्बन्ध को ईसायी विवेक और उच्चतम प्रत्यक्षीकरण माना गया है। जॉन ने इस बुद्धिवाच को और विवक्षित रूप दिया। ईसाई 'जायोस' धर्मन्याय में बतमान है और ईसाईयत का साथ मिलकर एक इकाई का निर्माण करता है। यह उसकी धार्मिकप्रतिष्ठा का साधन है। यह संसार ईसायीय 'मोगोस' परम्परा का विवेक धर्मवा विचार की विवक्षित है। इसका विचारधारा मानव के मस्तिष्क में विचारधारा ईसाईयतवादीधारा मनुष्यों के धर्मग्रन्थों और साथ के प्रति जागरूक किता भी देश के लोगों के मस्तिष्क में हाथा है। मनुष्य के मस्तिष्क में इस उद्घाटन का समुचित परिणाम नहीं दिखता और मनुष्य ईसाईयत के समान बनने की दिशा में प्रवृत्ति न कर सके। इसीलिए ईसायीय ज्ञान की उत्पत्ति एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व में प्रस्तुति हुई। "मोगोस" हाथ मांस का धर्म का कारण कर हमारे बीच आया और हमने उसकी महिमा देखी। 'मोगोस' द्वारा ईसायीय ज्ञान का प्रकाशन सर्वप्रथम मूटि में हुआ। फिर धर्म का ज्ञान में फिर धर्मग्रन्थों में और धर्मग्रन्थ ईसा में।

हम कुछ भी करें ईसाईयत का प्रेम हमपर मरेक बना रहता है। मॉट पॉल का कथन है "क्योंकि मुझे विश्वास है कि मनुष्य जीवन पर्यन्त प्रधानताएँ, धर्मिकता वर्तमान धर्मवा मस्तिष्क ऊँचाई गहराई या कोई और प्राचीन इतनेस कोई भी हमें परमेश्वर के प्रेम में धर्मग्रन्थ नहीं कर सकता। यही प्रेम हमारे प्रभु ईसा में विद्यमान है।"

ईसा के जीवन और उपदेशों के साथ 'मरक-मिथ' सिद्धांत का कोई सम्बन्ध नहीं

१. यदि मैं ऊपर उठकर स्वर्ग पहुँचूँ तो तू बड़ा है।

यदि मैं मरक में पहुँचूँ तो तू बड़ा है।" मरक-संविदा १:११ =।

२. धर्म VIII १८-१९। मरक-संविदा का कथन है "यदि तुम्हारा मित्र मरे तो तू न रोय तो मरने वाला ही न रोय फिर मैं क्यों रोऊँ कि तुम मरे तो मरने वाले ? इसलिए, हम मरे तो मरकर यदि तुम मरे तो मरने वाला मित्र न बने तो मैं क्यों रोऊँ या मरने वाला रोना मरने वाला ? यद्यपि यदि तुम मरे तो मरने वाले तो मैं रोऊँ तो मैं मरने वाले रोना क्योंकि तुम्हें ही छोटी बन्धुपत्ति मिली है, तुम्हें ही छोटी बन्धुपत्ति की मूर्ति हुई है और तुम्हीं मरने वाले बन्धुपत्ति के मरने वाले हो तो तुम ही हो, फिर तुम्हारे नाम के साथ मरने वाले ? या तुम मरे तो मरने वाले ? या तुम मरे तो मरने वाले ? यद्यपि स्वर्ग और स्वर्ग के वास्तव में मरने वाले, यदि तुम मरे तो मरने वाले या मरने वाले ? परमेश्वर, तुम्हें ही या मरने वाले कि 'मैं' स्वर्ग और स्वर्ग में परिभ्रमण है।" 'परिचय' C. C. XXXII.

बासे की धासा का पासन और उसके कार्य की सम्पत्ति।”^१ हममें से प्रत्येक को ईश्वर द्वारा निर्धारित अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए।

बुद्धि का विकास मायाजाल से मुक्त होने पर ही होता है, फिर भी जीवन की क्रूरता को मायमता और घसट् की स्वीकृति कभी नहीं की गयी। हमारे लिए उपदेश है कि हम अपने पड़ोसी को प्यार करें। किन्तु उन पापी समझकर प्यार करने का उपदेश नहीं है बरन् उसमें विद्यमान ईश्वर के लिए मानव समझकर प्यार करने का है। सेंट पॉल ने भिक्षा का “प्रास्था प्राणा और प्रेम तीनों का निवास है, और तीनों में प्रेम सर्वोत्कृष्ट है।” “प्रेम स्वकृपा की सिद्धि है।”^२

ईसा ने एक सार्वभौम नीतिकृता की घोषणा की है कि सभी मनुष्य बन्धु हैं एक ही ‘पिता’ की सन्तान।^३ ‘युद्ध समाप्त’ के बुट्यान्त में ईसा ने पड़ोसी की नयी परिभाषा दी है। हर धार्मिककृतप्रस्तुत प्राची और हर प्राची बिकरौ सहायता करने की सामर्थ्य हममें है। हमारा पड़ोसी है। सेंट पॉल ने कसीन्धीय गणित नकुस के प्रति ब्रजन से उद्धरण दिया है ‘हम उसीमें जीवित परिचासित हैं उसीमें हमारी सत्ता है क्योंकि तुम्हारे कुछ कवियों ने कहा है, ‘क्योंकि हम वास्तव में उसकी ही सन्तान हैं।’^४ ईसा का उपदेश है ‘अपने अज्ञानों से प्रेम करो अपना दुःख चाहनेवालों का भसा बाहो अपने दुःख करनेवालों का भसा करो अपने सहायकों के लिए प्रार्थना करो तभी तुम अपने स्वर्ग-स्वर्ग ‘पिता’ की सन्तान बन सकाये।’^५ सेंट पॉल का कथन है ‘ईसा न पहुँची है न नूतनी न बर्तन न साइबिबाई बहुत नाल न स्वतन्त्र फिर भी ईसा नापक एक व्यक्ति हैं के सब सजाहित है।’^६ के छारे अन्तर असमय हैं क्योंकि जीवन सम्पूर्ण और अविनाश्य है। इस एक-बुधरे के धरा है। ईसा का कहना है कि हमें सम्पूर्ण मानवता का उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए। देश-विदेश के निवासियों को

(IV १४)

२ रोमन्स XIII १० ।

३ मैथ् XVIII १ ।

४ रोमन्स XVII २० ।

५ मैथ् V ४४ । XXVI ३२ भी देखिए ।

६ ‘कोलोसिकन्स’ III. ११ । टायमोटिक का कथन है “हमारे काम नहीं कर मनुष्य-मरण कथना है जो हमारा ध्याय के साथ अन्तर्गत एक है और अन्त के मूल अन्तर्गत अन्त अन्त के साथ है। हमें न हम नहीं हो जाने हैं न ईश्वर के उपराय अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत के साथ है। किन्तु वह अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत का प्रथम कारण तो ही है। की-कारणोंक टायमोटिक ‘जन्म अन्तर्गत टायमोटिक (११११) में अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत II ११ का अन्तर्गत अन्तर्गत ।

संस्कृतियों का घटनमिन्न कोई प्रसंगीय आधार नहीं बल्कि व्यापहारिक वास्तु विद्यता है।

ईसा के जीवन से प्रभावित होकर अब कुछ लोग म ऊँह ईवी प्रवृत्त मानने की प्रवृत्ति जायी ठा 'मोमोस' सिद्धांत ने उनके विश्वास को ठरकसयत रूप प्रदान किया। पॉल के पत्रों में संसार और इतिहास क साथ ईसा के सम्बन्ध को ईस्वीय विवेक और उसका प्रत्यक्षीकरण माना गया है। जॉन ने इस दृष्टिकोण को और विकसित रूप दिया। ईवी 'मोमोस' अन्तकाल म वर्तमान है और ईस्वर के साथ मिलकर एव इकाई का निर्माण करता है। यह उसकी आत्मविभक्ति का साधन है। यह संसार ईस्वीय 'मोमोस' परमेश्वर का विवेक प्रथवा विचार की विभक्ति है। इसका विज्ञापन मानव के मस्तिष्क में विशेषतः ईस्वरवाणीप्राप्त मनुष्यों पैगम्बरों और साथ के प्रति जागरूक किसी भी देश के लोगो के मस्तिष्क में जाता है। मनुष्य के मस्तिष्क में इन उपाटन का समुचित परिणाम नहीं मिलता और मनुष्य ईस्वर के समान बनने की विद्या में प्रयत्न न कर सके। इसीलिए ईस्वीय ज्ञान की ज्योति एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व में प्रस्फुटित हुई। 'मोमोस' हाइ मांस का खरीर धारण कर हमारे बीच आया और हमने उसकी महिमा देली। " 'मोमोस' द्वारा ईस्वीय ज्ञान का प्रकाशन सर्वप्रथम सृष्टि में हुआ। फिर मानव जाति में फिर पैगम्बरों में और अन्ततः ईसा में।

हम कुछ भी कर ईस्वर का प्रेम हमपर सर्वत्र यता रहता है। सट पॉल का कथन है 'क्योंकि मुझे विश्वास है कि मृत्यु, जीवन फिरसे प्रमानताएं पकितया वर्तमान प्रथवा अविष्य ऊँचाई यहराई या कोई और प्राणी इनमेंसे कोई भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता मही प्रेम हमारे प्रमु ईसा में विद्यमान है।"^१

ईसा के जीवन और जयदेशों के साथ 'नरक-अग्नि' सिद्धांत का कोई साम्य नहीं

१ यदि मैं ऊपर धरकर स्वर्ग पहुँचू तो तुम्हारा है।

यदि मैं नरक में रहूँ तो धारण करने तुम्हारा भी है।" 'मजक-संहिता' १३३ =।

२ पैगम्बर VIII १८-१९। बर्गेनियन का कथन है : "यदि तुम्हारा निवास मेरे पीछे न होय तो मेरा अस्तित्व ही न होय फिर मैं क्या चाहूँ कि तुम मेरे समीप आओ ? इसविषय से मेरे अत्यन्त यदि तुम मेरे अन्तर विषय न करने तो मैं कभी का न रहूँगा मेरा अस्तित्व ही न रहूँगा। अतः यदि तुममें से न होय तो भी मेरा कोई अस्तित्व न होय। क्योंकि तुम्हीं सारी वस्तुएं निर्मित हैं, तुम्हीं सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई है और तुम्हीं सारी वस्तुओं के संचालक हो। मैं तो तुममें ही हूँ, फिर तुम्हारे पास कैसे आऊँ ? न तुम मेरे पास आओ से या आओ ? क्योंकि स्वर्ग और नरक के बाहर मैं कहीं आऊँ, जहाँ तुम मेरे पास आ सको दे परमेश्वर तुम्हीं तो कहा न कि 'मैं स्वर्ग और नरक में परिव्याप्त हूँ।" 'बर्गिस C. C. XXXII.

है। ईसा कहते हैं कि हमारे बंधु बाहे 'सात के सत्तर मुने बार्'। हमें बट्ट पहुँचाने हमें उन्हें क्षमा कर देना चाहिए। ईसा की क्षमासा यह है कि फिर परमेश्वर की इच्छा भिन्न नहीं हो सकती। यदि ईश्वर निरन्तर नरक-भूमि के लिए उत्तरदायी है तो निरक्षय ही उसमें कुछ घरेबी होया। यह सत्य है कि हम स्वतन्त्र हैं किन्तु मानवीय स्वतंत्रता का उपमाय करने के लिए धावस्तक तो नहीं कि परमेश्वर का क्षमापनी करण कर दिया जाय यदि हमस ब्याभुता बरतने की घाटा की जाय तो घाब ब्यक नहीं कि हम ईश्वर के प्रति सहृदय न हों। "क्योंकि बहु घन्डे घोर घुरे दोनों पर अपने पूर्व की रोसनी क्षमकाता है तथा ग्यापी घौर घम्पायी दोनों पर अपनी बर्पा करता है। यदि नरकवासी सर्वत्र ईश्वर का बिरोध करने में समर्थ है तो बहु पञ्चाताय घौर परिवर्तन में भी अपनी स्वतंत्रता का उपभोग कर सकता है।

अभिमान घार बूबा से हमारा स्वभाव बाहे बितना कमपित हो चुका हो हम अपने भीतर बिदग्धित बेवस्व को समाप्त नहीं कर सकते। यदि हम परमेश्वर हर अपह नहीं बख सकते तो फिर कहीं नहीं देख सकते। एक बानिक ब्याख्या के अनुसार ईसा की मानवता सम्पूर्ण मानवता की प्रतिनिधि है, घौर ऐतिहासिक ईसा ही नहीं समस्त मानव-जाति को इस 'अवतार' का साम मिलेगा। संसार का समस्त संदर्भ न कहा है "परमेश्वर इसलिए मनुष्य बना कि मनुष्य परमेश्वर बन सके।

दूसरे मतानुवायी किन्तु घन्डाई में बिदबास रखनेवासे ब्यक्तियों को भी ईसा अपना मित्र मानते हैं। कुछ लोगों ने ईसा से पूछा कि क्या निर्दोषों को भी ईसा न घन्डाई बरतने देना चाहिए तो ईसा ने उत्तर दिया "जो हमारा बिरोध नहीं करते हमारे सहयोगी हैं। यह पोल के घन्डों में बर्ष 'समी के लिए सब कुछ होता चाहिए। इने सभी आत्माओं पर समान पद्धति की न ता घाटा करनी चाहिए घौर उन न पापना चाहिए।

महानतम ईसाई घम्पासवासी इस मन को स्वीकार करता है कि हम परमेश्वर की प्रकृति का सकारात्मक प्रयत्नीकरण नहीं कर सकते। सेंट टॉमस एक्विनास का कथन है ईश्वी भावना के ब्यबहार न माने का मुख्य बंध परित्याग का है। कारण अपनी बिद्यामता के बस पर बहु भावना हमारे ज्ञान की सीमा के भीतर के घारे धाकारों से परे हो जाती है इसीलिए, अपने ज्ञान डाग उसका स्वकप नहीं जान सकन।" पुन 'परमेश्वर की जानने का रंग है उने न जानना हमारे मरिण्डकी

१ 'मैथ्यू XVIII २१।

२ 'मैथ्यू V ४२।

३ 'दुग्ध केन्सा कर्णिसा' I XIV।

सीमा से परे परमेश्वर के साथ संयोग करना—जब मस्तिष्क सारी चीजों से घ्रमम हटा जाता है स्वयं को भी त्याग देता है और फिर परमेश्वर की परम-व्यक्तिर्मम किरणों में लय हो जाता है। परमेश्वर के परिचय की इस अवस्था में हमारे ज्ञान से परे की ईश्वी ज्ञान की रहिमया मस्तिष्क को घामोचित कर देती है क्योंकि उस परमेश्वर को पहचानना सम्पूर्ण सता में ही ऊपर नहीं बरन् हमारी ज्ञान की सारी सीमाओं से ऊपर है, और यह केवल ईश्वी ज्ञान में ही संभव है।^१

धम्म्यात्मवाद मोक्ष के लिए ध्रावश्यक निरिचय और मुठ विश्वासी पर धधिक बल देता है। इसमें बिररीत महानतम ईसाई बिषारक कहते हैं कि हम शीघे के धार पार धुंभसा-धुभसा देखते हैं और मुठतापूर्वक कुछ नहीं कह सकते। एक हार्ट का धपन है "निरिचय स्वकषों क भीतर परमेश्वर को खोजनेवासा ध्यक्ति स्वकष तो पा लेता है किन्तु उसके भीतर स्थित ईश्वर को नहीं प्राप्त कर पाता। जिधी निरिचय स्वकष में परमेश्वर को न खोजनेवासा ध्यक्ति उसे प्राप्त कर लेता है क्योंकि परमेश्वर उसके भीतर ही है और ऐसा ध्यक्ति परमेश्वर के बेने के साथ रहता है और स्वयं जीवन बन जाता है।"^२

ईसा के उपरोधों में तपस्या का पुट है, जो सभी सन्ध धर्मों का ध्रम है। कसि एक साधन है जिसके बल पर मनुष्य धपनी प्रहति से ऊपर उठ सकता है। परमे श्वर के परधिक्षों का धनुसरण करने के लिए हमें सब कृष परिधाय कर देना चाहिए। "सिद्धि प्राप्त करन के लिए," ईसा ने कहा था "ध्रावश्यक है कि धपना सब कुछ बल डालो गरीबों को बे डालो तुम्हें स्वर्न में धपार धन-धमया धिस जाएगी।"^३ धिनके पूर्वी धर्ष में यह धामधन गंधीरतापूर्वक स्वीकार किया गया क्योंकि वहाँ साधुधों की उपस्थिति का उल्लेख है। सेंट एश्टी (२७ ईसवी) ने एकाकी जीवन धारन किया बे मरूमि में एक क्षामी मकबरे के भीतर जा बैठे और इसी तरह बीस साल बिता दिए। सेंट धधानासियस कृत 'भाइक धाक सेंट एश्टी' के सैटिन धनुबाब द्वारा मठबाब परिचय पहुँचा।

पूर्वी रोमक धाम्राध के उपस्थियों ने एक सूकी (मिस्टिक) धम्माल्म का प्रतिपाधन किया जिसमें ईश्वर के साधाल्कन और ईश्वरत्व-धंयाग पर बल दिया गया है। हममें न प्रत्येक को एक नयी दुनिया का संरिधबाहक बन जाना चाहिए, जो धमी धबनमी है किन्तु धग्य के लिए कतह धबस्य रही है।

ईसा का सम्पूर्ण जीवन और उनके सिद्धांठ इनमें स्पष्ट है कि उन्हें यहूवी

^१ कसेट इ रिभिडिय नॉमिक्लिस्त VII १.४।

'पंडीरिन्धन' CX. VII

^२ मैथ्यू XIX. २१।

द्वितीय व्याख्यान (उत्तरार्ध)

पश्चिम (२)

१ ईसाई धर्म में सत्तागतिक बिहास

पहली और मानवी शताब्दियों के बीच परिपक्वी रखा ने ईसाई धर्म की बीला से ली "समे पश्चिम के विकास में एक नया मोड़ आया। प्राचीन मनुष्य और ईसाई धर्म दोनों की अङ्ग मजबूती में पश्चिमी युग में 'धर्म'। मिथित धार्मिक मस्बाओं द्वारा एक अनीब गभीर आध्यात्मिक एक सार्वभौम आस्था यूनानी-रोमक संसार की आबस्थितियों बिम्बाओं और आचारों के अनुसार बन गयी। इस सिद्धान्त को एक बुद्ध आचार पर ठकमयन रूप दिया गया। राम में अनीब व्यावहारिकता और मुसपटम-धर्म के बन पर धर्म का संस्था का स्पष्टन में बदर की। ईसाई धर्म का हृदयस्रोत पुर्बीय रहा किन्तु उसका मस्तिष्क आध्यात्म और अतीर धार्मिक मसूला, यूनानी-रोमक हा गए।^१ मरत पुर्बीय आस्था तथा उसकी मूठी आध्यात्मिकता एवं ठक और मानवीय बिचारों के बीच निरन्तर एक तनाव की स्थिति रही है। सिक्न्दरिया के कनीमें का बिचार है कि कार्टिनियसियों ने ईसा का यह रूपन मूठी बिबेक धयबा संसृजन ईसाई धर्म के बारे में है "मैं कामना करता हूँ कि तुम्हारी आस्था बड़ जिनसे मैं तुम्हारी परुष से बाहर की बातें मुझे

१ माडेपर कनर बीगर का कवन है : "यूथानियों ने ईसा" आस्था को मैटानिक रूप दिख और ईसा मिहात्मों का मसूला सिद्धान्त यूनानी मनुष्य का भूमि पर बलि दुष्य। विभिन्न मस, मिहात्म और आध्यात्मिक बिबेकता: यूनानी मस्तिष्क का कवन है और उनका बिबेक कवन कुछ हम प्रधार का है कि किमी कवन आरण्य से उनमें के फिगेन गुण पैरा ही नहीं हो सकते। फिर सा इनका कवन यूनानी धर्म में मरत दुष्य कन्तु इराम में दुष्य का "सर्त धर्म के नाब करने संस्था के मयब विभिन्न मसा में बिबल का और अनेक मस की अनीब विरिधन मिहात्म-प्रकारी की। प्राचीन यूनानी धर्मनिका के बीबिक टिकेले का इरानीय युग के मसोलेसों मयब बर-रुपन के सिन्धों के अनुसार कन्तु अनीब के सिद्धान्त को मरत कदा का मकतु फिर भी बरे रही है किन्तु बिचार और माग दोनों की बरि हुई है। 'द बिबलानी आइ कर्तो माक टिक-सुसुते', (१९४७), पृष्ठ ३।

बता सकूँ।" "इससे वे हमें बताते हैं कि धार्मिक रहस्यों का ज्ञान जो परम
 भास्वा की धरतला है, सामान्य उपदेशों से परे की वस्तु है। 'धार्मिक रहस्यों
 का ज्ञान प्राप्त करने का उपाय फिरियों में प्रसिद्ध रूप से कुछ पात्रों से धार्मिक
 ब्राह्मणों को बताया जा रही है हमें प्राप्त हुआ है। धार्मिक का कथन है 'परिवर्तन
 जिससे सामान्य व्यक्ति की परिशुद्धि तो धर्मियों के (कहना चाहिए) 'धरती से
 हा सके और कुछ उन्हाई तक पहुंच चुके व्यक्ति की परिशुद्धि दूसरे प्रकार से
 से। इसके प्रतिरिक्त निर्दोष व्यक्ति तथा ऐसे व्यक्ति की परिशुद्धि दूसरे प्रकार से
 हो सकती है जिसके बारे में ईसा ने कहा है 'हम पूर्वतः गुपी लोगों के समस्त विवेक
 पूर्ण बातें कर सकते हैं—धार्मिक धरतला संसार के धार्मिकों के विवेक की बातें नहीं
 क्योंकि वे बिनासशील हैं। हम ईश्वर के प्रकाश विवेक की गुप्त विवेक की जिसे
 गुप्त पूर्व ईश्वर ने हमारे महिमा-वर्षण के लिए निश्चित किया था बात करते
 हैं। ऐसे व्यक्तियों की परिशुद्धि धार्मिक नियम से जो धर्मागत का संकेत करती
 है होती है। मनुष्यों के समान धर्मियों में भी धरती, धार्मिक और विवेक गुप्त
 धर्मियों की बात नहीं है जिसका उद्भव ईसा से हुआ और प्रसारण पैम्बरों
 परम्परा की बात नहीं है जिसका उद्भव ईसा से हुआ और प्रसारण पैम्बरों
 द्वारा। संत जिनसे 'दो प्रकार की धार्मिक विचारों की बात नहीं है 'जिनमें
 एक सामान्य है दूसरी गुप्त और उनकी धरती धरतल-प्रसंग 'सर्वजनित' और
 'गुप्त परम्पराएं हैं।"

दूसरी शताब्दी में 'एपॉस्तोबिस्ट्स' नामक कुछ लेखकों ने इस नये धर्म की पुनर्नी
 ब्रांम के सर्वोत्कृष्ट धर्मों के अनुकूल जीवन-मार्ग और धर्म के रूप में प्रशंसा की।
 पॉस्टिन मार्टीयर का कथन है "जिन लोगों ने 'सोसोस के अनुसार धरतल जीवन
 व्यतीत किया है वे सभी ईसाई हैं फिर बाह्य वे नास्तिक ही क्यों न कहें बाते हों। जिन
 पुनर्नीतियों में सुरक्षित और हैपकनाइट्स।" संसार को बचाने के लिए परमात्मा

१. रे विभिन्न IV १। रे विभिन्न विन न X. १।
 २. रे विभिन्न विद्वान् गुप्तम इल 'विश्वविद्यालय एडिन्बर्ग' वेर एड्विन डी वरस संघे की
 अनुसार (१९२४), पृष्ठ २३ २४।

३. 'एपॉस्तोबि' ४४। पुनर्नीत जीवन-मार्ग : धर्मियों : धरतल जिसे ईसाई धर्म कहा जाय
 है वह धरतल-प्रसंग में भी धरती मनुष्य-धरतल के धरतल से ईश्वर के रूप तक जाती थी अनुसंधान-
 करी रहा। तभी धरतल में मौजूद धरतल धर्म का नाम ईसाई धर्म बना। "रे विद्वान् LXIII
 २। मनुष्य के नास्तिक धर्मों में धरतल-प्रसंग के विशेषण का कथन है : "ईश्वर ने धरतल
 शक्तियों में धरतल प्रसंगों में धरतल-प्रसंग और धरतल धरतल में ईश्वर

की त्रिध बायीं ने ईसा के रूप में प्रकटार किया था वही बायीं पहले के युगों में ससार को शिक्षा देती थी। बायीं ने यहूदियों को ईश्वरीय नियम विषय और पुनामियों को बर्धन। अस्टिन सभी सत्याचियों का स्वागत ईसाइयों के रूप में करते हैं क्योंकि ईसा सत्य हैं।

ईसाई धर्म को हेनेमबाद के साथ मिथित करने के घनेक प्रयास किये गये जिन्हें 'ज्ञानमार्गी' ('नॉस्टिक' यूनानी शब्द 'नॉमिस से धर्म ज्ञान) कहा गया। 'धर्म अपनी ही मर्यादों को सुबुद्ध बनाना चाहता था इसलिये उस 'ज्ञानमार्ग' से लोहा सेना पड़ा और एक धर्मग ईसाई प्रख्याम को विकसित करता पड़ा।' सिरम्बरिया में एक समय प्लाटिनस के सहपाठी पॉरिजेन ने यूनानी बर्धन का महत्त्व स्वीकार करते हुए ईसाई सिद्धान्त के विकास में योग दिया। अस्टिन से प्लाटिनस तक कं नबपेटोबाद और धर्म के पाश्चरियों के ईसाई धर्म का सम्बंध धर्म के साथ धार्मिक या बर्धन और विज्ञान के साथ कम। कौन्स्टेंटायन के समय में ईसाई धर्म को राज्य की मान्यता प्राप्त हो गई और पियोजोसियस के शासनकाल में बहु साभ्राज्य का सर्वमान्य धर्म हो गया।

काउन्सिलों सहधर्मियों की धर्मभ्रुत होने के धपराप में बंदिता करने लयीं और इस प्रकार एक नई कृति बनी।^१ 'न्यू टेस्टामेंट' में सेंट पॉल उन सभी व्यक्तियों को धाप देते हैं जो (उनकी दृष्टि में) गलत इजीनों का उपरोध देते हैं।^२ टिमोथी के प्रथम एपिस्तल में जो भिन्नमतानुयायी धर्मोपदेशकों को सैतान ('सेटन') के गुपुर्व कर दिया जाता है।^३ सेंट जॉन की इंजीम में कहा गया है कि "ईसाई नियमा बली न जाननेवाला यह व्यक्ति धापपसूत है।"^४ निरिचय विरवास एक विधेय प्रकार से बने मस्तिष्कों में भीषण प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। इस 'मन्तिमुप (Apostolico ago) की मुख्य सिद्धांती धामुसम प्रेम की त्रिधके स्थान पर धधमी

की पूरक निम्न ऊँचे से की जाती है और उसे निम्न जानो से पुकरा जाता है। 'ध' पेश से संकाईशिया किरैरे पंचम (१४२९) का धधराय विरध कलक कलकरी १९२४ पृष्ठ १६ में।

१ 'बीबी एलएन' के एक मसुदा ईसाई पन्थेधारी धधरा के सेर मेमरी का कलम है: इस धिक्कसे धधिक निरिध मूलाधियों में कुछ नहीं है कि धर्म का सार सिद्धान्तों में है। बीयर क्ल 'ध' धैमिधय देर लिपिधौधी (१९४३), पृष्ठ ९।

२ 'बीबी एलएन' के सेर जॉन कलकॉर्टम के साथ धुपना धधिर "धर्म को अपनी माध स्वीकार किये निरध धाप करमेधर को कलक धिध नहीं कहा सकते।'

३ कैलाटिक्कस L. ८।

४ I. १।

५ VII. ४६।

हीन पताशिवियों म मुसंगठिन प्रमना के बंधन की स्थापना हो गई जिसमें धार्मिक बंध देने का बिधाम भी शामिल था। प्रमुता पश्चिम और धर्मनिरपेक्ष थी किन्तु धार्मिक बिबबाध के धन्य रूपा के प्रति प्रसहिष्णु थी और उसका मारा वा 'बो मेरे धाम गही है मेरा दुश्मन है और जो मुझे मिलकर गही रहेया गट्ट हा जायगा।'

रोमक साम्राज्य ने समाज का निर्माण नहीं किया। सभी नागरिको को बांधने वाले समान धारण सामाजिक उद्देश्य मयथा धार्मिक सिद्धान्त नहीं थे।^१ उसमें मनुष्यों का एक बिधाम समुदाय-मात्र वा एक धाधारहीन कुट्ट। सम्राट की सरकार रोमक बिजयों का शिलीना-मात्र रहु गई राजनीतिक मुख्यबस्ता कायम करनेवासी सरकार गही। साम्राज्य का बिजना अधिक बिस्तार होवा गया साम्राज्य के प्रति भावनाएं उतनी ही कम होयी गयीं। धार्मिक ध्य और बाह्य भावमनों से प्राभन्त बिधाम मुन्नाग पर एक केन्द्र स घासन-म्यबस्ता मुन्नाग रूप मे बसा सरुना मुकिफ्त होगया। बर्नस्टेटालन ने कुस्तुलनुनिया को पूर्वी रोमक साम्राज्य की राजधानी बनाया और पांचवी शतावसी का प्रन्त होते-होते पूर्वी रोमक साम्राज्य पश्चिमी साम्राज्य मे बिभक्तुम भलत हो गया। धयली बस पताशिवियों तक महु 'दूसरे रोम' के रूप में स्थित रहा। पूर्वी और पश्चिमी साम्राज्यों का बिभाजन भौतिक बिभाजन-समुद्रतनों धीरन्नाइवोंवासे यूरोप के प्रायद्वीपीय भाग और मुख्य महाद्वीपीय भाग के धाधार पर हुआ। ईसाई धर्म स्वयं दो प्रकार का हा गया-पश्चिम का कैथो लिफ और पूर्व का इतिबासी। रोम धीर कुस्तुलनुनिया एक ही मस्टुनि के भागीदार थ मेकिन मध्ययुग में सामग्री यूरोप की मेनाघों म कुस्तुलनुनिया पर अधिकार कर लिया और वे एक-दूसरे से धमम हो गये।

२० - १ • ईगरी के काम म नेगुल पूर्व के हाथो मे जा पहुंचा और पश्चिमी मंस्टुनि पूर्व मे प्रमाबिन हुने लगी। कुस्तुलनुनिया साम्राज्य के लिए यह बाध

१ कायटीन म मुनता कीधिय "कई धारमी बन्ना है वा सुग हम बरन वा उखर देने के लिए बर गही सुदा जाय कि उनका धर्म क्या है हमसे आसपस क्या है कसू पून जाय है कि वा किमे प्रेक्ष बरल है। 'बर्नस्टेटालन VII' मेर पाल सिन्ने ने कर्मन्ध बंल टॉन्ड मेण्डू मे कडा वा "ईगरी धर्म-मरुकी मगाई वा मगने धार्मिक दुबोधकन बरिलाम बर दुष्य कि मग्ने ईगरी को बरुधमने वा मगर" बरन गरा। ईगरी ने कस्तुल मगरट कग्ने मियाँ के मयय वा रयय था-उनके कावों मे गुम उन्ने परबलन मकाल। बरु बक सिरोल मगर के धर्म-मरुकी मिशन्तो का धाननेकणा हा लरका ईगरी ममना खने मया। रोमक धर्म वा मिया बरलन के मिशमन-सम्बन्धी धर्म में रिस्ताम ब क' को केवल रिगबरी बिबिध को बरबदल वा थाइ थी। लिग कुन रोमन सोम्यबरी मयम बंरो इ मरुकी मरुकेनल (१२ ४), कुट्ट २४४।

सत्य है। यही सपने बड़ी यूरोपीय चर्चा थी जिसमें पश्चिमी मनुष्य के उत्कर्ष और स्तर का विचार था। कुस्तुनतुनिया पर पूर्वीय प्रभाव इतना गहरा था कि उस ऐसा पूर्वीय साधारण ही समझ जाता था जिसने धीरे धीरे जो स्वोपार और रोमन नाम ग्रहण कर लिया था किन्तु फिर भी वह पश्चिमी मनुष्य की बीजम धारणा से प्रभावित रहा था।^१ पुश्चिम समझ जानेवाले मिस्र के निवासी भी म इजिप्शियन या पश्चिमी परम्परा में विभक्त मिस्र एक ईसाई मठवादी का प्रचार हुआ। पूर्व में मोनों के विचार और वातावरण, तर्क और धारणाएँ जारी रहे। पश्चिमी साधारण के विचार के बाद भी कुछ विवेकवान व्यक्ति धार्मिकपूर्ण एकान्त स्थानों में बैठकर उपदेश देते थे धर्म-धर्मों की लड़क करके थे और इन तरह उन्हें मुर्दागत रखते थे। यहाँ-वहाँ बिखरे मठों या एकान्त कोठरियों में प्रतीति के धर्म-धर्मों की प्राथमिक विचारों को ग्रहण करके दूसरों तक पहुंचाने को उत्सुक धर्म-धर्मों की प्रार्थना होने लगी। यहाँ-वहाँ म इसी एकान्तस्थानों में निवास ग्रहण की और इन्हीं साधकों ने बुद्धि के विचार से मठों का नाम 'पुनर्निर्माण' दिया।

२ इस्लाम

परम्परावादी मनुष्यों का विचार था कि ईसाई धर्म एकेश्वरवाद की पहली विरासत के प्रति बंधनकारी का बाधा तो करना था किन्तु व्यावहारिक रूप से हेमिनीय मूर्तिपूजा और धर्म-धर्मवाद के धर्मों को पना था। उसने उस महान पहली उपरम की उपेक्षा कर दी थी कि "तुम अपने लिए किसी मूर्ति का निर्माण नहीं करोगे और स्वर्ग पृथ्वी या पृथ्वी के बीच पानी में प्राप्त किसी वस्तु की प्रतिष्ठा तैयार न करोगे। तुम उनके सामने न झुकोगे और न उनकी सेवा

१ यह कुछ लोग सोचते हैं कि कुस्तुनतुनिया की संस्कृति पूर्वीय नहीं थी। उदाहरण के लिए प्रोफेसर लॉरेन्स के अनुसार यह है कि इस तर्कवाद का कोई आधार नहीं है कि कुस्तुनतुनिया साम्राज्य पर इजिप्शियन प्रभाव कायम था। उनकी धारणा है कि "कुस्तुनतुनिया साम्राज्य की मिश्रित संस्कृति के अन्तर्गत एक संस्कृति में है—अनन्त और अकारण एकान्त स्थान परम्परा; अथवा अखिल और इतना ही बुद्धि की परम्परा; तथा मनुष्यों की धारणा के अनुसार प्रकृत ही रूप में ईसाई धर्म। — 'द इतिहासिक पेरस इन्ट्रोडक्शन टु द ईस्ट टेम्पल डेवेलपमेंटल संस्कृति' पृष्ठ १५५ तथा पृष्ठ १५६ पृष्ठ १५७ पृष्ठ १५८ पृष्ठ १५९ पृष्ठ १६० (१९३८) पृष्ठ १।

रोमों की इतिहासिक संस्कृति थी। प्राचीन मध्य एशिया की पुरानी परम्परा—किन्तु धर्म-धर्मों के अन्तर्गत ही स्वकीयता तथा स्वयंसेवा—के स्थान पर एक धर्म-धर्म परम्परा का स्थापना हुई और अन्तर्गत धर्म-धर्मों का पूरक विधि में ही केन्द्रित हो गया। इतिहास अन्तर्गत ने 'द इतिहास में सामाजिक परम्परा' के अन्तर्गत मनुष्यों के सामाजिक जीवन के विभिन्न विभिन्न स्तरों का प्राधान्य दिया। यह जीवन कुस्तुनतुनिया की संस्कृति का विचार था।

बलाग की बात मौजूद है तथा जुहाबाद की भांति एक बृहद विश्वास कि अस्माह मनुष्य से अमम है। इस्लाम को ईसा का देवत्व स्वीकार नहीं। मुहम्मद यद्यपि सामान्य मनुष्य का बटा ही रहना चाहते थे फिर भी बाद के जीवनी लेखकों ने उन्हें 'ईश्वरीय ज्ञान का प्रवतार' ही कहा है।

अस्माह के साहचर्य की आवश्यकता मामूम पहले पर इस्लाम ने ईसा के सलीब पर चढ़ाये जाने का समकदा उदाहरण भी अभी हुसैन और हुमेन की गहाहत में बूढ़ निदासा तथा यही मानव योद्धा गियासों द्वारा बैरब के प्रवतार बना दिये गये। अस्माह की भरबी मानना सबसे बड़ा कर्नम्य है और उसकी मरबी के घाम मुक जानेवासे मुसलमान हैं जिनका इस्लाम का प्रचार करना और दूसरो को मुसलमान बनाना चाहिए। यही बेहाद का प्रीचर्य है। मुहम्मद (घाम के संसार की दृष्टि में) गलतियों प्रवता प्रपराओं के जिम्मेदार हैं किन्तु ये इत्य वास्तव में उस सामाजिक परिवेश के परिणाम हैं जिसमें मुहम्मद रहते थे और इनके लिए उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है। वे कई मामलों में अपने समाज से थोठ हाठ हुए भी उसी समाज की ही सत्यान थे। अपने समय में अरब मूर्ति पूजकों और हेलेनीय ईसाई धर्म में प्रचलित प्रनकेसरबाद तथा मूर्तिपूजा से उनका वास्ता न था।

धर्मशास्त्रियों के धर्म्य तर्क-बितर्कों और 'ट्रिनिटी' के सवस्थों में प्राथमिकता प्राप्त करने के साम्प्रदायिक ऋणों से अनेक सोप इतने सुबध थे कि उन्होंने सहर्य सातवीं शताब्दी के अरब विजयार्थों का स्वागत किया। निस्टोरिया के एक इतिहासकार ने लिखा "अरब की सत्ता-स्थापना न ईसाइयों के दिन बस्त्रियों सप्रमने लये—ईश्वर इस सत्ता का मुबूद और समुप्रत करे। अनेकालिन कम समय में इस्लाम ने सम्बे-बीड़े अथ अपने प्रविचार में कर लिए। अविहृत बोना में कुस्तुनगुनिया साम्राज्य के कुछ भूमध्यसागरीय मूक भी शामिल थे। ईसाई धर्म का प्रथम विरोधी विजेता धर्म इस प्रकार इस्लाम ही हुआ।"^१

१ अरिस्टर हरमोन का कथन है: "मुसलमान अस्ली अरबों के समुहूर बगुरियों और ईसाइयों की विद्रो करके अस्ली के अपने कैम्बर के पूजाएतों में आ करते थे। इसलिए मुसलमान समाज में अनेक अर-दुर्बियों को अस्ली की आवश्यक हो गई। अगम्य अर मुसलमान अथ का एक अरबक पर अर देश का एक अरबीन अर होख है और मानव-जीवन के अनेक क्षेत्र में अथ-अर्थीक होते हैं। वे अर ईश्वर और नस्र मानव के सम्बन्ध हैं। — मुहम्मद निरम (१९१६) पृष्ठ ७२।

२. अमिरक के जल अस्लाम को एक अरब धर्म समझने व अस्ली की प्रतिपुत्रने कनों के अस्लाम अनुकूल थी। ऐडिय, देनरी विरेन इन 'मुहम्मद वेड ट्यूलिंगेन (१९२४), पृष्ठ १४७ (अर्थीक क्षेत्र अस्लामित)।

सन् १७२ में क्रांतिवी बिजेता कौहर ने अजमेर मस्जिद की स्थापना की। यह बिजद के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना थी। पूर्व और पश्चिम की शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्र भी अजमेर के कोने-कोने में बिचारों यहां घाते हैं। बर्मावासीय मिशाकेन्द्रों में अरस्तू के दर्शन का और अधिक ज्ञान प्राप्त किया जाने लगा क्योंकि वह ईसाई सिद्धान्तों के विरुद्ध मामूली पढ़ता था।

मुबारक की समीप सन् १८ ईसावी में बनने लगे प्रमुखी हुमेन इज्ज सीमा (जिन्हें लैटिन भाषा में 'अबिसेना' कहा जाता था) का पूर्व और पश्चिम दोनों पर बिजद प्रभाव पड़ा था। विस्सन और गैटोस का मत है कि पश्चिमी बर्माबिचारियों बिरोध 'पत' टॉमस एबिनास और इंस स्कोलस पर उनका गभीर प्रभाव है। रबिरबेहन ने उनका बड़ी प्रशंसा की है। उनका दर्शन आकार बस्तु तथा अहंत्व में क्रमशः अरस्तू प्लेटो और नवप्लेटोवाद के अन्तर्गत था। उनके बिचार से मध्यप्लेटोवाद में प्लेटो अरस्तू तथा पूर्विय बिचारों का सम्मिश्रण था। इबिसीमा ने स्वयं अपने बिरोधी तर्कों को मिशाकर एक किया और इस्लाम के आचारमूल सिद्धान्तों के अनुकार उनका एक मजबूत सामञ्जस्य स्थापित किया।

बारहवीं शताब्दी के सर्वोत्कृष्ट मुसलमान बिचारक थे कौहरोंका के समीप के हुकीम अवेरोइ (११२५-११६८)। उन्होंने अरस्तू पर बिजद टीकाए लिखी। अरस्तू से ही उन्होंने मानव-आत्मा की धूर्तता का सिद्धान्त ग्रहण किया। अवेरोइ के अनुसार मानव के सभी प्रयत्नों का अन्त 'मिशा' हुआ है और अच्युत मिशा है। अन्तर्दीप्त हमारे बिजेद की समझ में बाहर है किन्तु उसकी भी प्राप्ति समय की सीमाघा—अबने हम अपने ही और जो हमारी सामान्य बिचार-मयति की जन्म दानी हैं—से परे 'अमी और सदा हो जाती है। अती बिषय समय और सदा अर्थ अज्ञान का पूर्व आत्म्य समय के उस पैमाने के अनुसार नहीं है। अज्ञान बिरोध हम परिचित हैं। हमारी बिचारन की दिशा समय के इस पैमाने के साथ-साथ अज्ञानी है इसलिए हम अज्ञान बुद्धिकोष को समझना कठिन है। किन्तु अवेरोइ के अनुसार हम इस बुद्धि बिदा का आशने और अज्ञान के बाद ही आत्म्य की प्राप्ति कर सकते हैं। इसका अर्थ मात्र यही है कि हमें समय के प्रति हमारे बुद्धिकोष को समझना चाहिए।

३ ईसाइयों के अमयुद

अज्ञान नाम पश्चिम में पैदा गया और अज्ञान मान्य पर तुर्की का प्राप्ति पाए हा गया और 'गार्' साम्राज्य की पूर्विय राजधानी बनने में पत्र गई जब अज्ञानबिचारियों ('होली सी') ने एक प्रयास करने का प्रस्ताव किया बिजद

इसका या स्वयं जब की एकता को पुन स्थापित करना को तुल्यतुल्यता के मन्त्रों के द्वारा १२८ में मज हो चुकी थी। तुर्कों का धारक ईसाई गठन पर बनना था रहा था और फिसिस्तीन पर साम्राज्य हिमात्मक बावों की बहानिया तुल्य फैल रही थी। इन बातों ने बढ़ावा दिया कि यह इत्य राह जाय। ईसाइया के लिए यन्त्रालय बहु पवित्र मपर था जहा ईसा के उद्देश्य दिये उक्त वास पर बनाया और बकनाया गया। उमदी भावना की कि उम भूमि पर उनका अधिकार किसी यन्त्रालय-बासी से कम न था क्योंकि उनके प्राधनता न प्रपद पाहू न उम पवित्र किया था। उमदा विचार था कि 'सॉई' की वजह को बुधित करनेबाये और उनका अनुयायियों को बुधा करनेबास मुसलमान पीढ़ों में अपनी विरासत की रक्षा करना उनका कर्तव्य है। रोमन कैथलिक जब और और धर्मोद्धारक वर्ष बातों ही तुर्कों को पराजित करने के प्रयत्न में एक हो गए। इस प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी के अंत में धर्मयुद्धों (क्रुसेड) का प्रारम्भ हुआ।^१ पहला धर्मयुद्ध १०९७ में १०९९ तक जारी रहा। इसके फलस्वरूप यन्त्रालय को मेरुदुर्ग तुर्कों के प्राधिपत्य में मुक्त होकर सिया स्याबिन्तु ईसाई उसपर अपना अधिकार रख न सके। सन् ११४४ ईसवी में तुर्कों ने एडेसा पर पुन अधिकार कर लिया। इसपर यूरोप के राजाओं को नये धर्मयुद्ध का आवाहन ११४६ ईसवी में किया गया। एक सभ्यत कर्तव्य तृतीय तथा बुई सभ्यत के नेतृत्व में लालीनिर्वा के भाग्य को बदलने के लिए दूसरे धर्म युद्ध का आयोजन हुआ। यह धर्मयुद्ध कन्यरबा के सेंट बर्नार्ड (१०९ - ११२३ ईसवी) की प्रेरणा में हुआ था। अनेक विपत्तियों के परचात् ११४८ ईसवी में इसका अंत हुआ।

तुर्की साम्राज्य साइरेनका से लेकर ईराक के दक्षिण-पश्चिम तक फैला था और बगदाद के लसीय प्रशासिक कालमान के प्रभुत्व में सत्ताधीन सारे साम्राज्य का शासक था। उमने निकटपूर्व के लालीनी उपनिवेशों पर शासनक मुक्त किये और ११८७ ईसवी में यन्त्रालय पर अधिकार कर लिया। इसपर एक नये धर्म युद्ध का प्रारम्भ हुआ जिसमें सम्राट फ्रैंक बार्बरोसा तथा इंग्लैंड और फ्रेंच के बार्बरोसा सम्मिलित थे। बार्बरोसा कभी भी फिसिस्तीन नहीं पहुंच सका किन्तु क्रिस्चियन प्रोटेस्टेंट और रिचर्ड कोएर बार्बरोसा ने ११९१ ईसवी में फिसिस्तीन के सटबर्नी मपर धाके पर अधिकार कर लिया। यन्त्रालय मुसलमानों के अधिकार में ही रहा। सत्ताधीन ने सीरिया और मिश्र के सटों पर मुसलमानों का प्राधिपत्य

१ 'क्रुसेड राष्ट्र का उद्देश्य है लैटिन राष्ट्र 'क्रुस' विपक्ष धर्म है 'क्रुस'। ईसाई धर्म का प्रतीक है 'क्रुस' तथा इस्लाम का 'शूब का चक्र'।

लोक में उन्हें से अधिक महत्व प्राप्त हो बैसा स्वीकार किया। सेंट बर्नार्ड को स्वतंत्र विचारों से भय था। उनके मत में अर्थशास्त्र के विचार वर्म के लिए पाठक थे इस-लिए वे उन विचारों के विरोधी थे। उनकी शिक्षण सिद्धान्त की काउंसिल में अर्थशास्त्र के अनेक सिद्धांतों को वर्मविरोधी मानकर उनकी अस्वीकार की।

ठेरुही और चौदहवीं शताब्दी में पाठित्यवाद के अनेक चरण के प्रतिनिधि थे अलबर्टस मैगनस रोजर बेकन (१२१४-१२९४) टॉमस एक्विनास बोनावेण्ट्यूर और इन्त स्कोटस। अलबर्टस मैगनस (१२०१-१२८०) और टॉमस एक्विनास (१२२६-१२७४) ने कहा कि ठेरुही शताब्दी के सभी अर्थशास्त्र विचारक नूतनी धर्म तथा मुसलमानी केंद्रों तथा अस्तित्व विशेष अध्ययन का विषय था जो और प्राकृतिक व ठो ईसाई धर्म में भी अन्तर्निहित करने का प्रयत्न किया और मध्ययुगीन सिद्धांतों में अस्तित्व को सम्मिलित कर लिया। अपने समय में उनका दृष्टिकोण प्राथमिकतावादी था और उन्होंने ईसाई सिद्धांतों में नये प्राथमिक दिये। बुर्गुमिस्टर नई प्रकृतियाँ पुनः अस्तित्व रही। कथनिक धर्म के प्रतिष्ठित धर्म का निर्माण हमी पुनः हुआ। इसके बाद हुए घोषण कथिमिम (१३ - १३६६) तथा अर्थशास्त्र अर्थशास्त्री एल्हार्ट (१२९०-१३२७) टॉमस और यूरो (१३००-१३६६)।

मध्ययुगीन दर्शन का विकास वैज्ञानिक निष्कर्षों के पुनः प्रथम वैज्ञानिक छात्र अर्थशास्त्र में अस्तित्व हुई और नीतिशास्त्र व रसायन का उपयोग अर्थशास्त्र में किया गया—इसाइरबठ बुतुबुतुमा और बाकू—किर थी सामान्य दृष्टिकोण में अर्थशास्त्र के बाद ही विज्ञान प्राप्त था। मध्ययुग की बाद की शताब्दियों का दृष्टिकोण अर्थशास्त्र में आर्थिक था। इस युग में ईसाई धर्म में प्राथमिक अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र का अर्थशास्त्र व सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण हो रहा था जो अर्थशास्त्र में बहुत समय तक अर्थशास्त्र रहने लगे थे। यूरोपीय अर्थशास्त्र अर्थशास्त्रों तक अर्थशास्त्र में ही दृष्ट रहे और महामुम करते रहे कि अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र में ही निहित है। मध्ययुगीन वैज्ञानिक अर्थशास्त्र का अर्थशास्त्र का अर्थशास्त्र का पुनः अर्थशास्त्र।

५ पुनर्जागरण

'पुनर्जागरण' अर्थशास्त्र का अर्थशास्त्र अर्थशास्त्री के अर्थशास्त्र के अर्थशास्त्र में किया

विषय (२)

जाता है जब बौद्धिक सक्रियता लोगों पर की जाये म जानाजन व। जगत् भूय सी
 धीर भी मुनाता धीर रोमरु संसार के दान म सीध माध्यामर रक्त की बिनाप
 साजना । धरक धीर बुन्दुतनुनिया व मारी डाना पश्चिमी मन्वित ना निवत्तमन
 पुनाती बिनात धीर दान के साथ स्थापित हा तथा वा । नृमायगातगय प्रवत्ता
 मोर मिथिमी बुन्दुतनुनिया तथा विर्मिन्नीम तन पश्चिमा गासाय व। सीमा
 के बिस्तार के कारण पश्चिम पर उन प्रवत्ता का प्रमिन बोद्धि तर मन्वित
 प्रमात पडा पमन्वत्त पश्चिमी ममार म बाधी पश्चिमत हुआ । इन सबम युगा
 को एर नई हुनिया धीर मये मूर्खों का प्रमास हुआ । पू ज न पुनातिया क
 बोद्धि दुस्माहम तथा प्रमपम की प्रवृत्ति को गून प्राण वर गिया । पक्षि कृत्ति
 मूल प्रवृत्तों धीर महान बिचारक में हुआ । प्राप्तामन का बाका इव तन बडाया
 बच सी मिया । मन्वपुनीत धर्म-शास्त्रिया म प्रवृत्त धीर प्रवत्त म प्रवत्त बनाया
 धीर इन प्रचार प्रवृत्ति के अन्वयन म तर्क व प्रयाग री ममाबना वा क्रम दिया
 परिणामस्वरूप उन्होंने ही वैज्ञानिक बिकाम मभी योग दिया । पुनर्जागरण व मन्व
 परिष्कार व मानववाद प्राङ्गिक विज्ञाना का उदय नई हुनिया की सात्र धीर
 धर्म-मुधार ।

तेरहवीं शताब्दी में बिबबिद्यालय की स्थापना हुई । बाइबली शताब्दी म ही
 बानूत क स्कूलों का प्रारम्भ हुआ था जब उन बिद्या म बाबासा तर तथा
 बरक वा । पैरिस उदार बसाधों धीर धमगाएव में धर्य हा गया । बिबबिद्यालय
 हुए गया मे धार्मिक नियमन म धर्मी स्वतंत्रता बचाय रगन को उन्मूय व ।

ज्ञान की पुनर्प्राप्ति का धारक इटली में हुआ धीर धीप्र ही पश्चिमी यूरोप के
 धर्य भाषों में कय गया । टॉमस एक्विनास मैगिस्त्र बिबबिद्यालय म प्राप्तर
 धीर धरलू पर एक पुम्नरु के रचयिता व । सात्र (१-१५-१११) पादरी म व
 किर की उन्होंने धपनी महान कबिता 'ब डिवाइन कमिडी' म धार्मिक समस्याधा
 को उदघरा । यह गुत्ताल है इमीलियु 'कमिडी' है । स्वाधीनता की राह पाव धीर
 प्रापदिशन के निम्न संसार म हाकर ही जाती है ।

ग्यारहवीं शताब्दी में संसार को एक गया स्वतंत्र प्रदान करन का प्रयास किया
 वा एहा था जो ईरवर की इच्छा के अनुकूल समझ जाता था मुनाती मानववाद
 मे द्य प्रदान को बडावा दिया । यह बिचार कि ईरवर का मात्ताज्य इस पृष्ठी पर
 नहीं है त्याग दिया गया धीर गवाधियों तक बिदव का कायाकल्प करने का बुद्ध
 निरक्षर बापय रहा जिनने उदकल्लर ज्ञान व प्रकाश क बिना मानव-मस्तिष्क को
 तैबार किया । इसम धर्म धीर मुसाब-मुधार क धर्म प्रापय म परमम हा गय फलत

साम्प्रदायिकता चीज हो गई। दूसरी धार, पूर्वोप यूरोप का ईसाई धर्म पारसी विकृता और साम्प्रदायिकता पर खोर देता था किन्तु उसका सामाजिक चरित्र पश्चिम के सैटिल ईसाई धर्म के सामाजिक चरित्र से कहीं अधिक कमजोर था।

पेट्रार्क (१३०४-१३७४) धार उनके विषय जीवन के प्रति मानववादी दृष्टि कोय के हामी थे। इस दृष्टिकोय का उद्देश्य था मानव की सक्रियता का विकास और धार्मिक शौचिक व साम्प्रदायिक पूर्णताप्राप्त धारसं मानव की सिद्धि। मानव वादी ईसाई धर्म के विरोधी नहीं थे किन्तु उसकी दृष्टियों और साम्प्रदायिकता क कठार घासोच्छ्रय थे। वे व्यक्ति के अधिकारों तथा स्वतन्त्र निर्णय तर्कपद्धति पर खोर देते थे तथा समाजधर के पक्षस्वरूप मिलनेवासे धाराम की मुक्तता में तर्क की निश्चितता को अधिक महत्त्व देते थे। इरास्मस पादरी होते हुए भी चर्च के जीवन से असन्तुष्ट थे।

साम्प्रदायिकताही और कोय के नियंत्रण न इटली की मुक्ति के पश्चात् दंते और पेट्रार्क हुए थे। अरिस्तो और लॉयो (पत्रहवी और सातहवी शताब्दियों में) के उद्भव के समय इटली ने स्पेनी शक्ति की अधीनता मान ली थी। निकोलो मैकि-यावेली ने राजनीतिक सफलता प्राप्त करने की कला पर एक पुस्तिका 'प्रिम्' (१५१६) लिखी। इस पुस्तक में स्याम प्रववा क्या का कोई स्वात नहीं है फिर भी विदेशी सामन से मुक्त एक मनुक्त इटली का स्वप्न प्रवस्य देना गया है। बुनानी साहित्य के अध्ययन का पुनः धारण हुआ जिससे पुनानी कला के प्रति नई रुचि जायी। महान चित्रकारों में प्रथम वा गियातो जो १५७६ में फ्लारेंस के समीप एक बाघ में पैदा हुआ था। उसके पदचात् कई महान चित्रकार हुए, यथा बॉटिसेली (१४६६-१५१०) लियोनार्डो दा विंची (१५१२-१५१६) माइकेलान्जो (१६०१-१५६६) तीरियाँ (१५७७-१५७६) और राफेल (१५८३-१५२०)। उत्तरमध्ययुग अपने स्वागत क लिए भी इतिहास में प्रसिद्ध है।

पहले पुस्तक हाप न लिखी जाती थी। अब मुद्रकबंध जैसे वैज्ञानिक साधन प्चार हुए जिनमे ज्ञान के प्रसार में निश्चित योग मिला। मुद्रित पुस्तकों से ज्ञान का प्रसार हुआ जिनसे एक नवीन तार्किक प्रकृति को जन्म दिया। यही प्रकृति सचिवालय मोनहबी जनाम्बी के प्रोफेसर्ट थामिड गुबार के लिए उत्तरदायी थी।

१ धार्मिक सुधार

पोल-नीनि ईगार्न पर्मावर्गाम्बियों न सचिक न सचिक मत भांगनी थी। ऐसा था नाचनों पर कर लगाकर या चर्च के सचिवागियों की नियुक्ति तथा प्रत्येक नियुक्ति के समय चर्चा पकड़ करके किया जाता था। इस पोल-नीनि ने बहुतरफ

जॉन कैम्ब्रिज जिस आदर्श जर्म की कल्पना करते थे उसे मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने जेनेवा के छोटे-से नगर-राज्य में एक जर्म की स्थापना की। १२३६ में प्रकाशित अपनी कृति 'इन्स्टीट्यूटियो थिरेक्वाली रेसीजियोमित' में उन्होंने प्रोटेस्टेंट सिद्धान्त की व्याख्या की और जर्म सरकार की रूपरेखा प्रस्तुत की। कैम्ब्रिज का मत था कि मध्ययुग धर्मज्ञान का युग था और पोप मिथो प्रथम बेगरी महान तथा सेंट बर्नार्ड जिस सिद्धान्तों के प्रतिपालक थे वे सिद्धान्त सम्भे जर्म के दूषित परिचय थे। उन्होंने एक नई प्रकार की प्राधिकारिकता को जन्म दिया कि ईसाईयों में व्यक्त सिद्धान्त विरिक्त और अस्थिर है। धार्मिक सिद्धान्तों की पवित्रता को वैज्ञानिक उत्सुकता धक्का नहीं मारने से दूषित नहीं किया जाना चाहिए। उनके अनुयायियों को आश्चर्य—पर्याप्त प्रत्येक मनुष्य के लिए पूर्वनिश्चित है कि उसे मोक्ष प्राप्त होना या शास्त्रत यंत्रणा—आम्य था।

पेरिस विश्वविद्यालय में कैम्ब्रिज के समकालीनों में एक भयान स्वेनी प्रफेसर, इग्नाटियस सोमोला थे। उन्होंने जर्म का बाना पहन लिया और इस प्रकार स्वेनी सेना का पास और अनुशासन जर्म की सहायतायें प्रस्तुत किया। उनकी पुस्तक 'सिपरिचुपम एन्तरसाइजेड' लोगों के विवेक को विश्वास विमानवाली पुस्तक नहीं थी उसका उद्देश्य तो लोगों को धार्मिकारिष्ठा और एहनशीलता सिखाना था। उन्होंने १२४० इसको में 'सोसायटी ऑफ़ जीसस' की स्थापना की। उन समय ने लेकर पास तक ईसाई जर्म जर्मों और सम्प्रदायों में बंट रहा है। वे सभी अपने सिद्धान्तों की व्याख्या और उनकी रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं।

पुनर्जागरण के जर्मनिरपेक्ष मानववादी दृष्टिकोण पर शीघ्र ही धार्मिक-मुबारक सम्बन्धी तथा धार्मिक-मुबारक-विरोधी धान्वात्मन की रक्षियों और धारकाओं का प्रभाव हो गया। वे तर्कित गतिविधियाँ—नाम्निकारिष्ठी धक्का कड़िवाही—की धार्मिक ही थी। धार्मिक मुबारक के कारण विश्व के प्रति सच्चाई और राष्ट्रीयता की जाबना का ज्ञान हुआ और इसका धमर सम्पूर्ण संसार पर पड़ा।

के जब वेनेज़ो में ही जिनमें मध्ययुग जर्मों प्राये नद कण था—सबकी धर्मप्र करते थे। धारण मूलम और रोम ने ही क्लेर को सिखाया था कि मनुष्य का संतुष्टन कैसे करना चाहिए। कुछ जेनेवा लाने काहित और विद्यमान राज्य जेने निर्मित करने चाहिए।" की कोरेरी 'पैरु टैट कार' मधवी धनुवार (१२३३), एड १२४। 'जेन गेड कोन्ग (१२३४) में मिल करका कई में लिख है : 'सोमोला इन्स्टीटुटियो में क्लेर के ज्ञान परिपूर्ण को हरि एक राज्य में ज्ञान करने को बरा भाव तो बरी बहाना होये कि क्लेराल समाज की उपजीव्य धार्मिक शक्ति निरेली धमर राज्य धारि जेनेक विराय' में निराल बुदि कुं और सभ-सभ धार्मिक मनुष्य—जिनका कार्य था धर्मार्थिक संघर्ष की जनसङ्घर्ष तात्परियों को बर धर्मार्थिक संघर्ष का रूप बना—धर्मार्थिक संघर्ष होकर निराल लान।

७ प्रागुत्पन्न विज्ञान

भारत और चीन में प्राचीन और मध्य कालों में वैज्ञानिक विज्ञानों और विधियों को समझा तो ध्वंस्य जाया था । किन्तु उनका विकास उन देशों में नहीं हुआ और प्रागुत्पन्न परिचयों संसार में फैलीकिया हवाई केमामिपस समनर म्युटन तथा अन्य वैज्ञानिकों के प्रादिकीय के परधान् हा सथा । ईसा सन् की पहली चीनह एउताग्रियों में यूरोप इस लान में चीन और भारत से प्रागे था ऐमा नहीं कहा जा सथा ।

प्रागुत्पन्न विज्ञान की परम्पराएँ प्राचीन और मध्यकालीन कालों की सामान्य प्रवृत्ति के प्रतिबन्धन में थीं । यूरान के विज्ञान का प्रागुत्पन्न प्राप्ति न था किन्तु पा बहु विज्ञान ही । उदाहरणतः धरत्यूका बुद्ध धन था कि र्धर्मपूर्वक लक्षेत्र विरी एणों के धारण पर ही परिणाम निकले जा सकत है । स्फूर्तिव्यम द्वारा प्रतिपादित ब्राह्मण का सिद्धांत वास्तव में गैमशी जैसे प्रागुत्पन्न विचारकों का पूर्वमात था । मध्ययुगीन कीमिजापरी और कलीप की वस्तुओं की प्रवृत्ति को समझने के प्रयास थे । प्रागुत्पन्न मन्त्रिक का दावा था कि बहु मध्ययुगीन विज्ञानियों में प्रचलित धरत्यू काय की नियमावली और भद्रमूक्त प्रवृत्ति में मुक्त है, किन्तु उन विज्ञानियों ने ही धरत्यू की मास्यनानुसार, विज्ञान की सच्ची प्रवृत्ति को प्राप्त किया । पश्चिम काय के फलस्वरूप समूहों यथाय का नर्कसंगत विवेकन हुआ । इनमें नर्वयुक्त विचार-प्रवाही और पक्षपातहीन धर्मधन को बढ़ावा मिला । मही दोनों बालों समूहों वैज्ञानिक प्रवृत्ति का कारण बनीं । प्रोफेसर्ट बम-मुपार ने प्रवृत्ति क धर्मधन और धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति दोनों में वैज्ञानिक वृत्ति को बढ़ावा दिया । उनका मत था कि धार्मिकताएँ सत्य की लान में धर्माधिकारियों के पक्षप्रदशन को न मानना चाहिए और इंजीनों की स्याख्या अपने अनुभवों की बर्तीगी पर करनी चाहिए । इसका धर्म यही है कि वैज्ञानिक सत्य की शोत्र प्राचीन कालों में नहीं बरन् अपने अनुभवों में बरनी चाहिए ।^१ वैज्ञानिक के अनुयायियों का मत था कि कुछ विगिष्ट

१ 'परिचय' केपिज ।

२ डॉमन और ने अपने ग्रन 'इंजीनीयरीर र टंकन सोल्युटी (१९९७) में ईसाई वर्ष और एडमन सोल्युटी के लेखों की बर्ती करन हुए लिखत है: 'वे दोनों ही धार्मिक लुद्धर क धर्म काय बरत कर सभन है। बर्तीक बर ने बर बर्ती के वेध में लक्ष्य किया टूने ने सत्य के वेध में । दोनों न समर्थ बर्तीक के विरुद्ध सत्यन टाकर बरतततय दोनों को वृत्ति प्रविष्टियों में गुजरना पडा और दोनों ने बर-प्रवृत्ति के लिए नूत वृत्ति का धारण किया बर ने इ दोनों का, टूने ने बीध के विरुद्ध समुदाय र्वा । दोनों के लक्ष्यों में ऊर्ध्व स्पर्ध ही बर-से बरतततय—धर्मन बरतततय का लक्ष्यने और बर्तीक का ब्रतगत बरने—का बर्ती

व्यक्तिपूर्ण के प्रारम्भ में ही मोल होता है किन्तु सीधे ही कहा जाने लगा कि प्रकृति का भौतिक सम्पन्न। प्राकृतिक विज्ञान के उदय में सम्पूर्ण दृष्टिकोण बदल दिया। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य से सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग तक यूरोप में अविज्ञान विद्यालय परिवर्तन हुए, उन्ने अंग्लो-लैटिन और मैक्सिमेली के बीच के एक हजार वर्षों में भी न हो सके थे।

अज्ञानता की समस्याओं में अज्ञान के कारण पन्द्रहवीं शताब्दी में प्रसंगिक बनने का पुनरागम हुआ। कोपर्निकस (१५०३-१५४३) के कार्यात्म के उदय में प्रथमिक विचारों को भी नष्ट के। ये प्रथम सोलार मूल (१५३६-१५०६) तथा अन्य लोगों ने किये थे। कोपर्निकस ने ब्रह्मांड का अज्ञान पूर्व की माना और पृथ्वी को तीन गतियों प्रदान की—प्रथम की पर प्रविष्टि मूलतः वर्ष में एक बार पूर्व की परिचया तथा (घटन चलन का कारण समझने के लिए) पृथ्वी की घूर्णी का हिलना (आवरोधन)। कोपर्निकस के पक्षों दाहको दाहे और कैपलर हुए। कैपलर के अनुसार पूर्व ही एक ऐसा प्राकाशीय विद्युत का 'बो परम पितापरमात्मा के लिए उपयुक्त है, यहाँ कि वे स्वयं एक जड़ विद्यालय-स्वयं से संतुष्ट हो सकें और अपने अज्ञानता देखरूता के साथ वहाँ रहने को तैयार हों। वैसीतियों और न्यूटन ने कोपर्निकस के कार्य को धार बढ़ाया। १५४३ ईसवी में वैसासियस ने शरीरगत्य पर प्रथम प्राकृतिक ग्रंथ प्रकाशित किया। वैसीतियों (१५९४-१६४२) ने एकोल के क्षेत्र में कोपर्निकस के लक्ष्य विचारों को विकसित करने के साथ-साथ यांत्रिकी के सम्पन्न में गणितीय प्राकृतिक विधि का प्रयोग किया। उन्होंने तापक्रम की माप के लिए पहला तापमापी बनाया समय की माप के लिए पेंडुलम का प्रयोग किया और सर्वप्रथम बंदुगम बड़ी का अज्ञान बनाया। दुर्गात्मकता उन्हें अज्ञान के अधि कारियों का कोपर्निकस होना पड़ा और कोपर्निकस-सिद्धांत को मानने के कारण अज्ञान-विद्युत के अज्ञान में अज्ञान होता पड़ा।

न्यूटन १६८३ में रोमन सोसायटी के सदस्य बने पद्य। युराकार्प्यक-सिद्धांत में उनका अज्ञान प्रथम है। उनका सिद्धांत का कि समय स्वयं और गति परम अज्ञान है। अज्ञानकारी होने के कारण उन्हें एक प्रकार का गणितीय विद्युत-विद्युतकारी दृष्टिकोण मानना पड़ा। जो अज्ञानियों से अधिक समय तक न्यूटन के अज्ञान

अज्ञान। दोनों का ही विचार है कि उनके पूर्व अज्ञानता के अज्ञान के अज्ञानों के अज्ञान में अज्ञान अज्ञान है। अज्ञानों की अज्ञानता अज्ञान के अज्ञान—अज्ञानों का अज्ञान अज्ञान अज्ञान—अज्ञानता के अज्ञानों अज्ञानों और अज्ञानों में अज्ञान अज्ञान अज्ञान है”।

१ “अज्ञानता अज्ञान और अज्ञानता के अज्ञान अज्ञान के अज्ञान अज्ञान अज्ञान”

'त्रिनिविया' के पाषाण पर बरतों की यांत्रिक व्याख्या प्रस्तुत की गई और भौतिक विज्ञान का विकास किया गया। ग्लूटन के बारे में माइकल व ब्रह्म या "केवल एक बरतों है और उसके नियमों की व्याख्या करनेवाला बिरल 'निहाम' में केवल एक व्यक्ति।"

ब्रह्मरुबी घटावरी में इयनर का विज्ञान मुख्यतः प्रायोगिक का और वास्तव का विज्ञान मुख्यतः वैज्ञानिक। लार्सेन (१७१९-१८११) और लाप्लास (१७४६-१८२७) ने यांत्रिकी और ज्वाल के सिद्धान्तों का विकास किया और लवार्दिये (१७४३-१७९४) ने जोसेफ ग्रीस्ले (१७११-१८०८) जैसे प्रथम वैज्ञानिकों के प्रायोगिक परिणामों का इस्तेमाल करते सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। इन्स्टी हबी (१७७८-१८०६) और माइकेल कैरर के माय-माय समापन और विद्युत् का विकास आरम्भ हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी को वैज्ञानिक युग की पहली शताब्दी कहा जा सकता है। इस युग के विचारकों ने प्राकृतिक व्यवस्था की एकता को स्वीकार लिया और मानव को उमा व्यवस्था के नियमों और परिमितताओं के अधीन उमना एक घन मानना आरम्भ कर दिया। ब्रह्मरुबी घटावरी में भूपरमाणु एक घन विज्ञान बन गया। चार्ल्स मेस (१७६७-१८७२) ने भूपरमाणु पर महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं यथा 'त्रिनिविस घाँक त्रिवोसोर्जी डॉन ऐन एटेम्प्ट टु एक्सप्लेन द फ़ॉर्मर कैम्प्रेड फ़ोर्ड द मर्य नरजेन बाई ऐकरेंस टु कर्बोरेट नाऊ इन एपिरेगल (१८३०-१८३३) और 'मेडिसिबटी फ़ोर्ड मैन' (१८६३)। चार्ल्स डार्विन ने अपना प्रारम्भिक कार्य भूतजशास्त्र में किया का और उन्होंने अपनी 'आत्मकथा' में लिखा है कि वे भूपरमाणु के अध्ययन के पश्चात् ही जीवशास्त्रियों के विकास-सिद्धान्त तक पहुँच सके वे यद्यपि विकास की प्रक्रिया का विचार उन्हें मास्पर के 'एमे घनि परिणाम' से मिला था। 'द हिस्ट्री फ़ोर्ड मैन' के अन्तिम अनुच्छेद में उन्होंने लिखा था 'मानव यद्यपि अपने प्रयत्नों के फलस्वरूप नहीं ऊपर उठकर प्राचिक्रम के मीन पर पहुँच सका है "न बाव वर उमना पर्य घन्य है। और यह उच्च कि वह आधिक्रम से घीरं वर नहीं या किन्तु ऊँच उठकर पहुँचा या आगा का मन्चार करना है कि मूलर अविध्य में उमना प्रारम्भ उसे और ऊँचाई तक उठाया।" इन्हीं बीच, एक अन्य प्रसिद्ध जीवशास्त्रिक बालेस (१८२३-१९१३) ने 'प्राकृतिक चुनाव का सिद्धान्त'

लन्स स्टैट एगन का सर्वक है "लन्स घनी लण के आरय वर घन अतीम परस्व मन्विक का लन्स लन्स का घनी लन्सलन्स लन्स और इन प्रकार लन्स के लन्स का निर्माण व लन्सियाय का लन्स है। लन्स लन्स के लन्स के परिणाम वी भी लन्स लन्स लन्स लन्स है।"

विकसित कर लिया। स्वतः सिद्ध मान लिया गया कि 'परिस्थितियों के सर्वाधिक अनुकूल प्राणी ही जीवित रह पाते हैं' के अनुसार प्रकृति तो प्राकृतिक है। हर्बर्ट स्पेंसर (१८२०-१९०३) ने स्वतंत्र व्यापार और धार्मिक प्रतिबोधिता की नीतियों का समर्थन 'प्राकृतिक चुनाव के सामाजिक हथ' में किया। डॉकिन के सिद्धान्त ने पारिस्थिकी और धर्म को बलमानुस के साथ सम्बन्धित बताया और इतने पर्यन्त धर्म को रक्षक माने लोग परेशान हुए। डिब्रॉयली ने १८९४ में कहा 'आध्यात्मिकता का साथ बिना प्रसा को समाज के सामने रखा गया है और जो मुझे प्रकृतिक विभिन्न मान्य पड़ता है, वह है क्या? प्रकृतिक है मनुष्य बलमानुस है या कृत्रिम? माई लॉर्ड मैं तो कृत्रिमों का पक्षपाती हूँ। मैं चुनाव और उपेक्षा से इन नये सिद्धान्तों का खंडन करता हूँ।

सामाजिक विरोधों के बावजूद, जीवविज्ञान और कृत्रिमव्याप्त में विकास सिद्धान्त का उपयोग किया गया। डॉर्मि मेन्डेल ने संस-परम्परा की प्रकृति पर शोध की (१८६३)। फ्रांसिस वास्टन ने मनुष्य के सामाजिक विकास में उत्तम प्रकार के योग पर जोर दिया (१८६७)। मिन्हेल्म बुड ने अपनी 'प्रिंसिपल्स ऑफ़ क्रिडिबिलिटीज्म साइकोलॉजी' में मस्तिष्क और शरीर की परस्पर-निर्भरता पर जोर दिया (१८७२)। वास्टर बैयहॉट ने विकास और प्राकृतिक चुनाव के सिद्धान्तों को सामाजिक रीति-रिवाजों और संस्थाओं पर लागू किया (१८७३)। इन सबसे मानव की उत्पत्ति और विकास-सम्बन्धी नये सिद्धान्त का प्रचलन हुआ। इनसे पहले टॉमस हेनरी हक्सले और जर्मनी में अल्बर्ट ह्यूकेल जैसे शक्तिशाली नेताओं ने इन सिद्धान्तों को लोकप्रियता तक पहुँचाने में योग दिया। जीव-विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के बीच में जोनेस मिस्टर (१८६५), लुई पास्च्यूर और रॉबर्ट कोच ने महत्वपूर्ण काम किये जिनसे बैक्टीरियल दृष्टिकोण को सामान्य और गुण-सम्बन्ध प्रयोगों को बढ़ावा मिला।

पार्लियामेन्ट ने जिनकी कानून पुस्तक समय पूर्व ही हुई है, दुनिया के बारे में हमारी विचारधारा ही बदल दी। वे अज्ञान को धार्मिक नहीं जीवित मानते थे। उनकी परना थी कि धर्म और ऊर्जा एक ही बल के दो रूप हैं। उनका 'सापेक्षवाद' अद्वितीयता में सहायक हुआ।

८ प्राकृतिक टर्नोलाजी

रोडन लोलायट्टा का जेरेस या 'प्राकृतिक बलुओं तथा प्रयोगों द्वारा सभी प्राकृतिक कानूनों, उत्पादनों, संघर्षों, रचनाओं और धार्मिककार्यों के बारे में ज्ञान का संवर्धन करना। टर्नोलाजी मानव में विकास की सम्पत्ति है और स्वयं विकास

के विषयों और विषयों पर आधारित है। पश्चिम बंजन में टेक्सासोत्री कविकाम के उन्नाहरनम्बरूप बाबर मुसल धार कृनुबनुमा के प्राविष्कारों का नाम मिया था। उन्होंने नेरहूरी घनास्थी के घनने नामरुमि रॉडर बंजन क त्रिनका मन था कि बैज्ञानिक विधि क उपायस्वरूप प्राग् तर्कनीकी प्राविष्कारों म प्रविष्य प्रपन्न मुन्दा हागा विचारों को घनना मिया था। टॉडरिड बेकन का कहना था कि प्रकृति की वैज्ञानिक व्याख्या और उसके लक्षनीता नियमन क उपयोग में 'जमा' ऐस प्राविष्कार' संभव हो सकते हैं 'जा मानवता की प्रावरणवशाओं को कम और संभवताओं का समाप्त कर सकते हैं। मुसहूरी घनास्थी में तानमापी दाबमापी दूर दर्शी घनुबीसन यन्त्र हृषारण्य विद्युत् की मगीत और पेंडुलम की घडी तैम उन करणों का विकास हुआ।

पट्टरहूरी घनास्थी में औद्योगिक क्रांति के युग में टेक्सासोत्री की अन्य उन लक्ष्मिनां सामने आई। पट्टरहूरी मशासरी का मकने महत्त्वपूर्ण प्राविष्कार था मात्र का इंसुल। मात्र उत्तरी अमरीका में टेक्सासोत्री प्रपन्न समुत्पन्न है और वह बुद्ध तथा पांडि के घनक विमालकाम उपकरण तैयार कर रहा है। मात्र जावन की प्रामात्र समृद्धि तथा मानव शौर्य के विकास के लिए ही इन उपकरणों का उपयोग प्रयत्नित था।

प्रापुनिक सम्यता का नियन्त्रण वैज्ञानिक और तर्कनीकी विधियों के हाथ में है। प्रत्येक विधेयत्र विवेकपूर्ण व्याख्या की महान विधि की उत्पत्ति है और अन्वयहार भी। इसी विधि न प्राकृतिक विज्ञानों टेक्सासोत्री प्रायिक प्रतिपादितता और तर्कनीतिक प्रतिश्रुतिता के साथ गठबन्धन करके प्रापुनिक औद्योगिक समाज का जन्म दिया है। इस विकास न युरोप के सामन्ता और कृनु भा समाज को लक्ष्य कर दिया और विद्या उपनिवेशीय लक्षों को आकार प्रदान किया। वा विन्धयुओं में क्रांति का संशुपन विद्याइ दिया है, और टेक्सासोत्री की बुक्तियों का अनात्म-बामे विद्याम बधों में सार्थी प्रतिश्रुतिता है। काश्य स्पष्ट है। नाभिनीय ऊर्जा के धर में मानव की लक्षों न समूर्ण मानव-सम्यता क विधर्म के उपाय पैदा का विदे है और एक ऐस प्रविष्य का प्रामात्र दिया है जा मानवता के मात्र क स्वर्ण से प्ये है। विज्ञान और टेक्सासोत्री क परिणामों को अमममकारी उहयों को पूर्ण में सुगता विमय और टेक्सासोत्री की प्राम्ना का ही अरासर रूपित करना होया वैज्ञानिक विद्या का उहय मानव क बुद्धिकोय और रक्ति को अवन क भीति क्रापों तक ही सीमित कर देता नहीं है। उसका उहय है मानवता की एकता में प्रति एक सहामय अगता कर्षीक वैज्ञानिक प्राविष्कारों में त्रिन मयाक साक्षर्य

को जन्म दिया है उनके द्वारा ही समूह बिनाश से मानवता की रक्षा यही प्रह्लाद कर सकता है।

१ प्राधुनिक बर्तन

वैज्ञानिक धान्धोलन ने मानव-मस्तिष्क को उजागर कर दिया है और दर्शन तथा बर्तन का अत्यन्त प्रभावित किया है। प्राधुनिक यूरोपीय बर्तन का प्राविर्भाव अत्यन्त तीव्र वैज्ञानिक सक्रियता के युग में हुआ है। कोसा के निबन्धन (१४ १-१४१४) ग्यार्हानो बूनो (१५४५-१९) और फ्रांसिस बेकन ने प्राधुनिक बर्तन की आधारभूमि तैयार की। दृष्टिकोण का केन्द्र ईश्वर नहीं रहा मानव हो गया। मध्ययुगीन बर्तन पादरियों का उत्पादन था और पूर्णतः ईसाई सिद्धान्तों के दामरे के भीतर था इसके विपरीत प्राधुनिक बर्तन अधिकाधिक बर्तनिरपेक्ष होता था और सामान्य जन द्वारा उद्भूत हुआ। विज्ञान की प्रकृति और परिदृश्यगत ही प्राधुनिक पश्चिमी बर्तन की केन्द्रीय समस्याएँ बनीं। फ्रांसिस बेकन (१५९१-१६२९) को मान्य था कि मानवता के जीवन में विज्ञान का कितना बड़ा भूमि हो सकता है। वे वैज्ञानिक विधि को प्रायोगिक और अनुमानहीन मानते थे। विज्ञान के लिए बलिदान का महत्त्व तो उन्हें स्वीकार था किन्तु विज्ञान और निबोधक (इन्डिक्टिव) तर्कधारण का संघ पसन्द नहीं था। रॉबर्ट बासेटेस्टे और रॉजर बेकन ने किसी भी हुई विचारप्रणाली के आधार पर परिष्कार निरामने की प्रथा का विरोध किया और तथ्य-निरीक्षण गणित के प्रयोग तथा प्रयोग-विधि का समर्थन।

रेने डेकार्त (१५९६-१६५०) ने गणित के अध्ययन में प्रयुक्त गणितीय विधि का आधारभूतत्व करके प्राकृतिक क्रियाकलापों का यांत्रिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। किन्तु गणितीय-प्रायोगिक विधि की पहलूय माप-बोध प्रक्रियाओं में परे न थी। पदार्थ के माप-प्रयोग गुणों, जैसे रंग, स्वाद, गंध, जो जालेन्द्रियों के चित्त-विषयक गुण समझ जाते या बाह्य संसार में जिनका कोई अस्तित्व नहीं है। इसके विपरीत तन्मात्रा यदि विस्तार प्रादि मापबोध्य गुणों को पदार्थ के प्राथमिक वास्तविक पदार्थ-विषयक गुण माना जाता था। डेकार्त के अनुसार सभी मापबोध्य गुणों का महत्त्व एक समान नहीं होता।

सहज बुद्धि से कुछ आधारभूत विचार भूमे से जितना प्रारम्भ करके गणितीय परिष्कार निकाले गये। ये हैं अदि विस्तार और ईश्वर। डेकार्त ने कहा था "गणि और विस्तार भूमे मिल जाय ता मैं संसार का निर्माण कर दूंगा। उनकी विचारप्रणाली का मुख्य आधार ईश्वर था। ईश्वर ने विस्तार बनाया और ज्ञान का पनि प्रदान की। ज्ञान में बलि या परिष्कार स्थिर है क्योंकि वह वैश्व

एक बार निर्माण के क्षण में मिला था। इस प्रकार दकाठ संवेग की अभिव्यक्तता के नियम तक था पहुंचे थे।

बेकन प्रयोगशील परम्परा के पोषक थे। दकाठ ने जोर देकर बताया कि यथिन का योग विज्ञान में कितना हो सकता है। उन्होंने यथिन की तकनीक में प्रमुख योग दिया और नियामक (ओप्राइटेड) ज्यामिति का प्राविष्टार किया।

दकाठ के मन में सभी भौतिक वस्तुएं यानित्री के नियमों का पालन करने वाली मानीं हैं। इन वस्तुओं में धकात्रनिक पदार्थ पीछे जानकर और मानव शरीर सभी को उन्होंने सम्मिलित किया था। दकाठ ने प्राध्यात्मिक संसार के अस्तित्व को स्वीकार किया है, मानव जिसका भागीदार अपनी आत्मा के बस पर बनता है। मानव ब्रह्मांड के यानिक और प्राध्यात्मिक दोनों रूपों में भाग लेता है। दकाठ के समय से यह ईश्वरवाद यूरोपीय दर्शन का केन्द्र है। दकाठ ने अनुसार पदार्थ का नियंत्रण विवेक और विज्ञान द्वारा तथा आत्मा का नियंत्रण आस्था और धर्मशास्त्र द्वारा होता है। इस ईश्वरवाद दकाठ का विचार था कि मानव-मस्तिष्क अविच्छिन्न शरीर के प्राकृतिक क्रियाकलापों पर निर्भर करता है। अपनी कृति 'डिस्कॉर्म ऑन मेच' में दकाठ कहते हैं "शरीर के अंगों की व्यवस्था तथा सम्बन्धों के साथ मस्तिष्क का इतना गहरा सम्बन्ध है कि मानव को धाम से अविच्छिन्न युक्तिमान और प्रवीण बनाने का कोई उपाय अधिपश्यास्त्र में ही पाया जा सकता है और वहीं उसकी खोज होनी चाहिए।

दकाठ ने गणित की उपपत्तियों के समान स्पष्ट और स्वयंसिद्ध प्रमाणों से प्राध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया। उनका विचार था कि वे ईश्वर तथा ब्रह्म संसार की सत्तासिद्ध और मानव तथा ब्रह्माण्ड में पदार्थ और आत्मा के परस्पर-सम्बन्ध का विवेचन प्रस्तुत कर चुके हैं। एक बार सृष्टि के सृजन ने परचाए ईश्वर ने उसकी कार्यशीलता में व्यवधान नहीं आता। यह घोषणा गमत है कि ईश्वर ब्रह्मांड के विनानुहित कार्यक्रम में भाग लेता है। पास्कल वैज्ञानिक और धर्मशास्त्री दोनों थे और सृष्टि के परिचामन के लिए ईश्वर को जाने और बाह में हमेशा के लिए छुट्टी दे देने के विचार के लिए दकाठ को कभी क्षमा नहीं कर सक। कोई धारण्य नहीं कि रोम और वेरिस में दकाठ के अन्तों को निपिष्ठ कोटि में रखा गया।

स्पिनोसा ने अपने अध्यात्मवाद की विवेचना के लिए ज्यामितीय विधि प्रय नायी। उन्होंने अपनी योजना का केन्द्रबिन्दु ईश्वर को व्यवस्थ माना किन्तु प्राकृतिक नियमों के अनुसार 'फोस्ड टेस्टामेंट' की व्याख्या करने का प्रयास किया। सन् १६५६ में बहुवी धमाब ने ऐम्सटर्डम में उनके काम को बर्मबिरोबी और बर्म

के लिए आंतरजात होने का अपराधी ठहराया।

जर्मन दार्शनिक लीबनिज़ (१६४६-१७१६) 'डिडरेन्डियम कैंस्टुलस' के प्राक्कृतकारकों में से एक थे। उनके मत में अस्तित्व सत्य सारे परिवर्तनों और घटकों के नीचे बचा अप्रत्यक्ष कोई अपरिवर्तनहीन वस्तु नहीं है। परिवर्तन और अस्तित्व का सिद्धांत स्वयं ही एक बात है। उनका मत था कि हमारी दुनिया सब सम्भव दुनियाओं में सर्वश्रेष्ठ है और 'अधिकतम व न्यूनतम के सम्बन्धों पर आधारित है जिसके कारण हम से कम व्यय करके अधिक से अधिक प्रभाव पैदा किया जा सकता है।

मॉर ने अपने 'एसे ऑन ह्यूमन एंडरस्टैंडिंग' (१६६०) में मानव-अस्तित्व को जन्म के समय कोण कायदा बताया है जिसपर बाह्य संसार के उद्दीपनों का प्रभाव पड़ता है जिनके फलस्वरूप भावनाओं और विचारों का जन्म होता है। उनका दृष्टिकोण था दार्शनिक बर्तन को सांगु करने का। बास्तेयर ने मॉर के बारे में कहा है कि "उनसे अधिक सख्ती तरह कोई नहीं सिद्ध कर सका है कि ज्यामिति के ज्ञान के बिना भी ज्यामितीय प्रकृति को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। मॉर के मनोबिज्ञान के सिद्धान्त ने तीन महत्वपूर्ण समस्याओं को जन्म दिया (१) दृष्टि ध्वनि स्वाद स्पर्श और संज्ञ के विभिन्न प्रभाव किस प्रकार मिश्रित होकर एक ही चेतना प्रदान करते हैं? (२) चेतना किस प्रकार भावना में बदल जाती है? (३) भावनाएं किस प्रकार परस्पर सम्मिश्रित होती हैं?

मॉर ने धर्म के मूल्यों को अस्वीकार नहीं किया। कुछ शताब्दियों से बीजा निकल चित्तन और धर्मशास्त्रीय विचारों का सामंजस्य स्थापित करने के प्रयत्न हुए हैं। १६६६ में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक विधेयक पारित किया कि ईसा के ईश्वर को अस्वीकार करना बंडनीय अपराध है। किन्तु मनेक व्यक्तियों की निजी सम्मनियों परम्पराबादी न थी। यूरोप के विभिन्न भागों में धार्मिक सहिष्णुता विभिन्न मात्राओं में उपजी।

घायरमैंड में मॉलीनों और बर्कले तथा फ्रांस में दिडेरो और कॉण्टसाफ ने मॉर के दृष्टिकोण का विकास किया। इस में ने अपनी 'ट्रीटार्ड ऑन ह्यूमन नेचर' (१७१६) में इस समस्या को उठाया कि भावनाएं किस प्रकार सम्मिश्रित होकर विचारों को जन्म देती हैं। अपनी इति में उन्होंने लिखा: "भावनाओं के संयोग के तीन नियम मान्य पड़े हैं यथा 'आवृत्त समय सास्वान में 'घर्माई' तथा 'आरब्ध' या 'प्रभाव'। मनोबिज्ञान के ये नियम भीतिही में दार्शनिकों के नियमों के समानुष्य हैं।

ह्यूम धारमवेतन को माना नहीं बरन् मान मानते थे। उनके अनुसार धारम वेतन भावनाओं और प्रभावों की शृंखला है जो कल्पनाशील धीमता से निरन्तर

घाते हैं और सदैव प्रबहुमान व पतिघीन रहते हैं। यदि धारमचेतन मानसिक घट नाशों का प्रवाह या बय मात्र है। तो संस्तेयक प्रवृत्ति का ज्ञान सम्भव नहीं। ज्ञान हमें एक पूर्व इकाई के रूप में नहीं बरन् खंडों में प्राप्त होता है जिनका संस्तेयक धार स्वक है। धारमचेतन में एकाग्रता या विधिपट्टता न हो तो ज्ञान सम्भव नहीं। ह्यूम और परिकल्पना के अनुसार ज्ञान संभव ही नहीं है। हम किसी निश्चय पर नहीं केवल संभाव्य परिणामों तक पहुँच सकते हैं।

ब्रिस्फोर्ड ब्रिड हार्टमी (१७०२-१७५७) ने १७४६ में प्रकाशित अपने ग्रंथ 'प्रोब्लेमस ऑन मैन' में इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया कि ज्ञानेन्द्रियों पर पड़नेवाले प्रभाव किस प्रकार भावनाओं में बदल जाते हैं। चूंकि इन्द्रियों पर स्वभाविक ढंग से प्रभाव हमें पड़ते रहते हैं इसलिए कोई भी एक प्रभाव सम्बद्ध भावनाओं की गृहणा का धारम कर सकता है।

इस सिद्धान्त का उपयोग फ्रांस में मानवता की सहाई के लिए किया गया। ब्रिडज्म के समय सभी मनुष्य समान हैं (जैसा सॉक ने कहा था) वो उनमें भिन्नता पैदा होने का कारण है बाधाकरण का असमान प्रभाव। हेमडेविच (१७१२-१७७१) ने मनुष्यों में भिन्नता का कारण शिक्षा की असमानता को माना है और अपनी दृष्टि 'मैन व माईंड' में जोर देकर कहा है कि 'समुचित शिक्षा प्राप्त करके ही मानव मुझे और शक्तिशाली बन सकता है। बास्तेयर की दृष्टियों और बिबेरो की 'एन्साइक्लोपीडिया' की भी यही ध्वनि है कि ज्ञान ही मानव की प्रगति का आधार है। बास्तेयर ने लिखा था "बिबेक और उद्योगों की अधिकारिक प्रगति होगी मात्राप्रय कलाओं का उत्कर्ष होगा और मनुष्य को दूषित करनेवाले दुर्बुन तथा उनसे पैदा होनेवाले शपकारी पक्षपात राष्ट्र के साधकों में क्रमशः समाप्त हो जाएंगे।" बिबेरो ने कहा कि 'एन्साइक्लोपीडिया' के उद्देश्य हैं 'मृतम पर जैने समस्त ज्ञान को एक स्थान पर एकत्र करना और इस प्रकार एक सामान्य विचार प्रणाली का मुबल करना जिससे बीते युगों की उपलब्धियाँ ध्वंस न होने पाएँ और हमारी प्राणामी पीढियाँ अधिक ज्ञानवान पक्ष अधिक मुभी और सम्पन्न हो जाएँ।

बर्कस और ह्यूम के संभाव्यतात्मक तर्कों का उत्तर काष्ठ ने दिया धारमचेतन के वर्तम्य को प्रमुख मानकर। काष्ठ ने धारमचेतन के दो विभाग किए बिद्युद्ध धारम चेतन या ज्ञाना प्रवृत्ति में और अनुभववात्मक धारमचेतन या ज्ञान प्रवृत्ति 'मुझे, मुझमें, मुझको'। धारमचेतन ही खंड-खंड और क्रमशः प्राप्त धारमचेतन की संस्तेयक करके ज्ञान-वस्तु तैयार करता है। काष्ठ के अनुसार ज्ञान-सम्बन्धी क्रिया कलाओं के तीन स्तर हैं प्रतिबोधन के स्तरों से सम्बन्धित, 'सौन्दर्य-विषयक' मेधा की आरंभों से सम्बन्धित 'विस्तृत-आत्मिक', बुद्धिपरता से सम्बन्धित 'वाकिक'। मेधा की

धारणाएं ही मस्तिष्क की सृजनात्मक प्रकृति का अनुभवों का निर्माण करती हैं जिनके बिना अनुभववाचक जगत् का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। वे मस्तिष्क की एकीकरण-प्रवृत्ति के ठर्क-संगत प्रयुक्त रूप नहीं बन सकीं प्रकाशक हैं। अनुभव बहुम होने पर ही धारणाओं का उपयोग हो सकता है। इन कारण-कार्य विज्ञानों का परास्पर उपयोग गम्य है। उनके ही अनुस्यू अनुभववाचक जगत् ब्रह्म होता है। अतः ज्ञान अनुभव जगत् तक सीमित है। वस्तुओं के वास्तविक रूप का ज्ञान उनसे नहीं प्राप्त हो सकता।

मेधा की धारणाएं अनुभव को व्यक्त करती हैं। इसके विपरीत बुद्धिपरता परास्पर है। उनके उपयुक्त वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया जा सकता। वे वास्तव में विचार के इतने ऊंचे स्तर हैं कि इन्द्रियशास्त्र अनुभवों के रूप में व्यक्त नहीं हो सकते। वे धारणाएं हैं स्वप्न हैं, जिन्हें त्यागना नहीं जा सकता। बुद्धिपरता के उपयुक्त वस्तुओं का कोई 'विज्ञान' संभव नहीं है, यद्यपि हमारे 'आचरण प्रतिबन्धित' ऐसे होते हैं मानो इस प्रकार की वस्तुएं हैं। हमारे ज्ञान-सम्बंधी जीवन का आधार प्रवस्था और धारणा है। हम सिद्ध नहीं कर सकते कि ईश्वर की सत्ता है और आत्मा अतस्वर है। नैतिक के कारण बुद्धिपरता को गंभीरतर अर्थ प्राप्त होता है। अपनी कृति 'नैतिक धर्म जगत्' में काटने एक सहज बोध की सम्भावना की बात नहीं है। यह बोध विधिपरता और सार्वभौमिकता में कोई अन्तर नहीं करता।

जोड़ों के परास्पर बुद्धिवादिता के समान बुद्धिपरता इस अनुभववाचक संसार की नियामक विद्या है। ईश्वर के सृजनात्मक मस्तिष्क की उत्पत्ति संसार का प्रथम कारण है। यह हमारी कल्पना की उत्पत्ति नहीं बल्कि का प्रथम है।

हीनत वैज्ञानिक ज्ञान और बार्थनिय विचारों में अन्तर करत हैं। प्रथम धार्मिक और अतस्वर हैं, किन्तु द्वितीय साकार और अतस्वर हैं। काट और हीनत दोनों ही सांसारिक वस्तुओं को इन्द्रियशास्त्र मानत हैं किन्तु कारण भिन्न हैं। हीनत ने कहा है "काट के अनुसार ब्रह्म जगत् की सारी वस्तुओं को हम देख भर सकते हैं उनके वास्तविक रूप का ज्ञान अभी प्राप्त नहीं कर सकते उनका वास्तविक रूप हमारे जगत् की वस्तु है जहां हम पशु ही नहीं सकते। सत्य वास्तव में यों हैं जिन वस्तुओं को हम तीव्र अवस्था में हैं वे मात्र अतस्वर हैं, केवल हमारे लिए नहीं अपने वास्तविक रूप में जो वे सीमित हैं इसलिए यही मानना उचित होगा कि उनकी सत्ता का आधार वे स्वयं नहीं बरत एक सार्वभौम अतस्वर है। यह सही है कि दृश्य जगत् के बारे में यह विचार काटने विचार के समान बुद्धिवादी है, किन्तु इसे 'नैतिक अतस्वर' के धारणा बुद्धिपरतावाच के विपरीत 'पूर्वप्रत्ययवाद' कहना चाहिए।^१

१ 'अन्तरात्मिक' वैज्ञानिक प्रकाशक।

हीमस के अनुसार 'दायालेकिन्स' धारणाओं का विवेचन है। निम्नतर धारणाएं स्वतंत्र सत्ताएं नहीं बनकर सबंधा स्वतंत्र और यथार्थ उच्चतम धारणा की संघ हैं इसीलिए हम उनमें दुर्जरने पर बाध्य होना पड़ता है। ज्ञान के अनुभवारम्भक और ठाकिक रूप धर्म हैं क्याकि वे धार्मिक हैं। उच्चतम धारणा के पतिरिक्त अन्य कोई धारणा पृथक् बुद्धिपरक और यथार्थ नहीं हो सकती। पूर्ण प्रत्यय उच्चतम धारणा है। तथा धार्मिक धरणा बाह्य सम्पूर्ण यथाय और सारे धनुभवजगत् की सभी वस्तुओं में व्याप्त है। धार बुद्धि सारे धनुभवों में यह पूर्ण प्रत्यय व्याप्त है इसीलिए हम किसी निम्न धनुवस्तु धारणा में सम्पुष्ट नहीं हो पाते। हम सबैव पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। मानस में निरक्षयत वह 'पूज' रहता है जिसमें धार्मिक मय निकलते हैं।

जयनी के विद्यवत् किस्ते और हीमस के दार्शनिक पूर्णताधार का दावा था कि उसे पूज्यता माधुम है कि ईश्वर क्या है और जगत् की भाकांशाएं क्या हैं। इसमें मानव-बुद्धि में पर क धार्मिक विचारों का बहिष्कार हुआ है और मानव-बुद्धि में विन्धाम दुः हुआ। हीमस का कथन है कि स्वतंत्रता धारणा और ईश्वर दार्शनिकों के लिए ज्ञान प्राप्ति की वस्तुएं हैं।

भठारजूकी गलाभी की जामुति को 'बुद्धि का युग' कहा गया। ब्रह्मांड में उन स्थित नियमों के आधार पर बताया गया कि उसमें एक लक्ष्मण व्यवस्था व्याप्त है। पूर्ण विद्वान् किंवा ज्ञान मया कि मानव सभी वस्तुओं की माप का पैमाना है धार सर्वोच्च धारण है अधिकधिक मनुष्यों की अधिष्ठात प्रसन्नता। धर्म की प्रकृति भी मानवतावारी हो गई। इस्मैड में 'मैथॉडिस्टों' जर्मनी में 'पीलिस्टों' और 'सोमायटी फाऊ फोर्म्' ने जोर दिया कि सामाजिक व्यवस्था का सुधार हो जलों धार धरणाओं का सुधार हो बह-विधान में गरमी हो दासता का नाश हो। बुद्धि बारी और धार्मिक दोनों प्रकार के व्यक्ति अधिक सामाजिक न्याय की मांग करने लगे। धर्मरीका की जामि कमनरिसेस और किसी हद तक ईसाई-विरोधी जामुति में हुई थी किन्तु 'स्वाधीनता-सोपचापत्र' की धारणाओं से स्पष्ट है कि उसने ईसाई परम्परा का तोना नहीं। धर्मरीका की जामि के थोड़े समय पश्चात् फ्रांस में जमि हुई उसने स्वतंत्रपेठा मठाओं ने उन्हें तोड़ने की मधुमध काशिस की। १७७ में ऐडबोकेट जगरल सगूर ने स्वीकार किया था कि "विचारकों ने लोकमठ परिवर्तित करके सिंहासन को हिमा और धम को धरमुनिठ कर दिया है। फ्रांसीसी जमि १७८६ में हुई थी।

धनक मोगों का विन्धाम था कि जामि के फलस्वरूप बुनिया का पुनर्जम हा रहा है। वैदिक के पठन का जो सामान्य प्रभाव लोगों पर पड़ा उस बहसधर्म

ने सिखा है

यूरोप में उस समय लुथी की लहरें बीड़ रही थी
पाँच स्वर्णयुग के क्षीय पर स्थित था
और लग रहा था मानवता पुनः जन्म ले रही है।

फ्रांसीसी चार्लि को केवल यंत्रणा और कुसासन के विरुद्ध बिद्रोह नहीं बरम्
मानवता का अद्वितीय पुनर्जन्म समझा गया। सरकार जनता के मानस में है, यह
बिचार खोल पड़ता गया और मध्ययुग से बनी आ रही संस्थाएँ बाँटो गट्ट हो
गयीं या उनकी प्रभावशालिता बहुत कम हो गई। प्रजातांत्रिक राष्ट्रीयता की मानवता
फैलान लगी।

बहुमुख के आदर्श ने आदर्शवादियों को बहुत प्रभावित किया। गॉडविन ने
सिखा "उस घुम दिन में बीमारी यंत्रणा निरुद्धा और विरोध कृष्ण न होया।
सन् १७९४ में कंडामेंट न अपना 'हिस्ट्री ऑफ द प्रॉग्रस ऑफ द ह्यूमन स्पिरिट'
लिखा। इस ग्रंथ में उन्होंने लिखा "मानव की पूर्णता प्राप्त करने की अक्षिप्त वास्तव
में निस्सीम है यह अक्षिप्त अथ पूर्ण तरह स्वतंत्र है और कोई भी ताकत इसे रोक
नहीं सकती। इसकी सीमा का अन्त है इस पृथ्वी का अन्त जिसपर हम आसीन
है।" माप्पास ने अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि सौरमंडल यात्रिकी के
सिद्धान्तों के अनुसार स्याही है इससे मानवता की असीम प्रवृत्ति का विश्वास बूढ़
हो गया। एक और माप्पास ने सौरमंडल के विकास का सिद्धान्त सामने रखा
(१७९६) ता दूसरी ओर काबानी ने उसी विकासवादी इतिहास के फलस्वरूप
मानव की मानसिक क्षमताओं का अनुमान प्रस्तुत किया। सामार्क (१७४४-
१८२९) का विश्वास था कि पशु मछीनें हैं जो विकास के निरम के अनुसार अंधी
धेकी में पहुँच गए हैं। उन्होंने प्राप्त सुषों की विरचन का सिद्धान्त प्रतिपादित
किया। इरास्मस डाबिन (१७११-१८ २) ने अपनी 'यूनीवर्स' (१७९६) में
पीपों और पशुओं की जानियों के विकास के मंडर्म में प्रगति के सिद्धान्त को सामने
रखा। सामार्क और इरास्मस डाबिन का विश्वास था कि हर जीववारी के भीतर
एक रूप होता है जो उसे उच्चतर भवियों में पहुँचाता है।

पीपों का बर्गीकरण करनेवाला एडम बडा वैज्ञानिक था मिना यूस (१७७७-
१७७८)। उग्लान पीपों और पशुओं दोनों का बर्गीकरण किया। बफन (१७७७-
१७८८) का कहना था कि सभी जन्तु बर्गीकरण भ्रामक है। अपनी 'नेचुरल
हिस्ट्री' की भूमिका में उन्होंने लिखा था "अप उलान होता है कि प्रकृति की
प्रकिया का न समझ पान में जो सर्वत्र अलग अलग स्तरों पर जाता है" बर्गीकरण
पूर्व जीववारी से उतरने हुए आकारहीन रूप तक पहुँच जाना इस प्रकार संभव

है कि अनुभव एक न हो।”

ग्रन्थ हैकेम (१८१८-१९१९) ने जर्मनी में 'हाबिसवाद का प्रसार किया। 'प्रकृतिवादी पूर्वनिश्चयवाद' पर विश्वास किया जाने लगा। माना जाने गया कि ब्रिटेन का शररक अज्ञानता प्रकृतिवादी लोहाइकाओं के बीच की रीठ से हुआ और कीरे-कीरे लम्बे समय परचात् जीवन का प्रथम हुआ और फिर परवानी मध्यमिया जमीन पर एकदमाल पशुओं की जन्मुदा के पश्चात् प्राविमानक जन्मा। विवास प्रथ के ये जीव प्राकृतिक बालाबरण के अनुसार स्वयं को अनुकूल बना मने की प्रकृति के बहिषा उदाहरण है। मस्तिक्य विचार और मूल्य एक बन्द भौतिक प्रकाशो के जो पूर्वनिश्चित मुद्द नियमों के अनुसार परिचासित है उत्पादन है। इस प्रावििक भौतिकवाद में माथर्म के इन्द्रात्मक भौतिकवाद के लिए स्वात धामी कर दिया। जार्ज माथर्म का कथन है कि इतिहास एक योनिरवादी प्रक्रिया है। मानव भौतिक वाचर्यकताओं जर्न-म्बाओं और सम्पत्ति-मधिकारों का प्रतिफल है। इन्द्रात्मक भौतिकवाद बहु बल है जो मानवता को परिषन्त करता जा रहा है। परती पर समाजवादी स्वर्म के मानववादी सुवेरा ने करोड़ों कामगारों क जीवन को नया धर्म दिया। माथर्मवादी सामाजिक विरलेपय की वैज्ञानिक विधि और राजनीतिक सामु हिक्र धाम्दानन की पीति के पोषक है।

धारपर्यजनक वैज्ञानिक प्राविणारों और तथमीरी उपमस्त्रियों के कारण घनेर मोयों का वृद्धिकरण हो गया है कि भौतिक अर्थान् जो लोता और मापा जा सके ही सत्य है। प्रयोगों द्वारा मिड मकी जा सकनेवासी स्थापनाएँ म सही हैं न मठ। प्रयोगमिड स्थापनाएँ, जैसे भौतिकी क नियम और प्रेरण ही नश्य हैं। नीतिशास्त्र और प्राम्पत्यविद्या की स्थापनाओं का कोई धर्म नहीं है। वास्तविक बलुधों से

१ इस दृष्टिकोण की सतरी बेकन धर्म ह्युम में की मिलती है। बेकन ने कहा था : "सभी मन्व बारात्मिक प्रकृतिक बालन में मरक है, किन्तु बन्दगी स्वर्न-वर्षिन अज्ञानिक और वास्त-निक दुनिख अरिण है। वैज्ञान्य अथ प्रकृतिक मन्वात्मिक मन्वा मर्षिन उपमन्वो और धार्मिक र्णो के बारे में ही मेर विचार कर रही है। अरु रती प्रचार के अनेक मरक धर्मी और की मियर अन्वो और र्णो इतिहासपूर्क प्रमत्त किने अर्थों। — 'बेकन धार्मिक । वरा पर बेकन ने धार्मिक विचारों का तुमम निरुत्तर्ण वैज्ञानिक निरुत्तर्ण से की है। रती मन्व में ह्युम का बल है "मन्वमन्विक के धर्मिकों के विरुध मन्विक मन्विक एव विरुत्तर्ण अर्थों पर है कि वर मन्व निरुत्तर्ण है। अन्वमन्व का लो मानव के अर्थों के मन्व प्रचार का जो मन्व स पर के निरुत्तर्ण की मानवोन परक है, परिषन्त है। वा लोचनमन्व धर्मिकमन्व की मन्वकी है कि अर्थों मन्व मन्वकी र्णो न कर घने पर मन्वी मन्वी को अर्थों और मन्विक अर्थों के विरु अर्थों मन्वी धर्मिक मन्व की है। 'मन्वमन्वी मन्वमन्व मन्वमन्वी' मन्व मन्व ।

ने लिखा है

यूरोप में उस समय लूची की सहरेँ दीङ रही थी
फ्रांस स्वर्णयुग के शीर्ष पर स्थित था
और लय रहा था मानवता पुनः जन्म से रही है ।

फ्रांसीसी श्रमिन् को केवल संभला और कुशासन के बिना विद्रोह नहीं बरन
मानवता का अद्वितीय पुनर्जन्म समझा गया । सरकार जनता के मानस में है यह
विचार और पकड़ता गया और मध्ययुग से अभी भा रही संस्थाएँ या तो नष्ट हो
गयीं या उनकी प्रभावशालिता बहुत कम हो गई । प्रजातांत्रिक राष्ट्रीयता की भावना
फैलन लगी ।

बहुमुख के आदर्श ने आदर्शवादियों को बहुत प्रभावित किया । गॉडविन ने
लिखा "उस घुन दिन में बीमारी संभला निराशा और विरोध कुछ न होना ।"
सन् १७१४ में कंबामेंट ने अपना 'हिस्ट्री ऑफ द प्रॉजेस ऑफ द ह्यूमन स्पिरिट'
लिखा । इस ग्रंथ में उन्होंने लिखा "मानव की पूर्णता प्राप्त करने की शक्ति वास्तव
में निस्सीम है यह शक्ति अब पूरी तरह स्वतंत्र है और कोई भी ताकत इसे रोक
नहीं सकती । इसकी सीमा का अन्त है इस पृथ्वी का अन्त बिसपर हम घासीन
हैं । साम्नास ने अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि सौरमंडल वायुकी के
सिद्धान्तों के अनुसार स्वामी है इससे मानवता की असीम प्रकृति का विश्वास दृढ़
हो गया । एक और साम्नास ने सौरमंडल के विकास का सिद्धान्त सामने रखा
(१७६६) जो बूनरी और काबानी ने उनी विकासवादी दृष्टिहास के अमस्वरूप
मानव की मानसिक समताओं का अनुमान प्रस्तुत किया । सामार्क (१७४४-
१८२६) का विश्वास था कि पशु मशीनें हैं जो विकास के नियमों के अनुसार ठंठी
धेनी में पहुँच गए हैं । उन्होंने प्राप्त मुर्तियों की विरासत का सिद्धान्त प्रतिपादित
किया । इरास्मस डाबिन (१७११-१८२) ने अपनी 'जूनोमिया' (१७६८) में
बीबा और पशुओं की आतियों के विकास के संबंध में प्रकृति के सिद्धान्त को सामने
रखा । सामार्क और इरास्मस डाबिन का विश्वास था कि हर जीवधारी के भीतर
एक बस जाना है जो उसे उच्चतर धेधियों में पहुँचाता है ।

पौधों का वर्गीकरण करनेवाला सबसे बड़ा वैज्ञानिक का सिना ब्रूस (१७०७-
१७७८) । उन्होंने पौधों और जन्तुओं दोनों का वर्गीकरण किया । ब्रूटन (१७७७-
१७८८) का कहना था कि सभी जन्तु वर्गीकरण भ्रामक हैं । अपनी निचुरन
हिस्ट्री की भूमिका में उन्होंने लिखा था "अम जलान्न होता है कि प्रकृति की
प्रक्रिया को न समझ जाने में जो सबैव अलग अलग स्तरों पर होता है 'सर्वाधिक
पूर्व जीवधारी से उत्तरन हुए आकारहीन अथवा एक पहुँच जाना इस प्रकार संबंध

किन्तु हमारे दृष्टिकोण का मानन का बाबा करनेवाले लोगों के आचरण पहले दृष्टिकोण नाम भावों जैसे होते हैं। यदि हम अपनी बुद्धि और ईर्ष्या को पराजित कर सकें तो जितनी पवित्र बात हमारे पास है उसमें हम हम पृथ्वी की स्वर्ग में बदल सकते हैं। किन्तु हमें भय है कि किसी पापकारण या मिथ्या गमना का काय करके—पापम तो हर देम में मौजूद है—हम सम्मता की आत्महत्या का राग उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक नियंत्रण और आध्यात्मिक अनुशासन की उत्कृष्ट आवश्यकता है। बियट्टी के शब्दों में यूनान और वीसीसी का अर्थवा मस्तिष्क और आत्मा का संघर्ष अभी भी जारी है। प्राणा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति का प्रति आगच्छ हैं।

किन्तु हमारे दृष्टिकोण को मानने का वादा करनेवाले लोगों के आचरण पहले दृष्टिकोण वाले लोगों जैसे होत हैं। यदि हम अपनी पूजा और ईर्ष्या को परित्यक्त कर सकें तो अतिनी घनिष्ठ धारा हमारे पास है, उसमें हम इस पृथ्वी की स्वर्ण में बहल सकते हैं। किन्तु हम भय है कि किसी पापतपन या मिथ्या गणना का काम करके—यामस तो हर देश में मौजूद है—इस सम्पत्ता की धारणहत्या का राक्षस उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक निबंधक और धार्मिक धर्मशास्त्र की तरफ़ास धारणहत्या है। बियटी के पात्रों में पुमान और नैनीनी का अथवा मस्त्रिक और धारमा का संघर्ष अभी भी जारी है। धारमा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हैं।

सम्बन्धित उक्तियों धीर घोषा के मन में विद्वेष भावनाएं पैदा करनेवाली भाषा पोसाकक उक्तियों में प्रकृत है। कविता की उक्तियों की सत्यता का प्रश्न नहीं उठाया जाता केवल उनके द्वारा व्यक्तित्व संवेदन की बात की जाती है।

ब्रह्मांड का सप्रमाण और सुव्याख्यित विवरण का प्रवास वर्धन है, यह सब नहीं सोचा जाता। ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान प्रदान करना विज्ञान का कार्य है। वर्धन का उद्देश्य धार्मिक से धार्मिक है विस्लेषक, स्पष्टीकरण। धार्मिक को कोई मतलब नहीं कि ईश्वर, आत्मा भयवा संसार है या नहीं। वह इस उक्ति का अर्थ जानना चाहता है कि ईश्वर, आत्मा या संसार है।

भौतिक लोग तो प्रयत्न धार्मिक भौतिकवाद या धार्मिक प्रयोज्यसिद्धिवाद से संतुष्ट है किन्तु सामान्य मन में आस्था कौ कमी होती जा रही है। वैज्ञानिक ढंग से प्रसिद्धित भौग धर्मनिरपेक्ष मानववाद के हमी हैं तो दूसरे भौग धार्मिक परम्पराजन्य धूम्यवाद के पोषक हैं। हमारे समय की कृतियां हैं—ईश्वर से धर्मय रूढ़ता सम्प्रदाय को दूर रखना और मर्यादावाद मानसिक दृष्टिकोण।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोप में प्रकृतिवादी वर्धन का बालबाया था। धार्मिकी स्वयंसे मधीन की प्रतिस्पर्धि में देखता था।^१ मानव के दो दृष्टिकोणों में विरोध है। उसमें मूर्खों का ज्ञान और असीम की मूर्ख है, इसलिए वह पृथ्वी पर सर्वाधिक स्पष्ट प्रतिमान ईश्वर है। यह ईसाई धर्म के अनेक रूपों में सम्बद्ध उपनिषदों धीर प्लेटो की परम्परा है। एक दूसरा दृष्टिकोण है, जिसका धार्मिक पुनर्जागरणकाल में हुआ था धीर जिसकी उक्ति के अंतर्गत विज्ञान की महान खोजें और तकनीकी आविष्कार हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे उसकी सहायता के बिना जीवन-प्रवाह में बलों के संसार में फेंक दिया गया है धीर वह महसूस करता है कि उसका बचना एक ही धर्म पर संभव है कि जिन उक्तियों के साथ उसका अर्थ है उन्हें वह धार्मिक धर्मनिरपेक्ष धर्मनिरपेक्ष में रखे। स्वामी समाज की स्थापना के लिए बोना मूलभूत प्रवृत्तियों का धार्मिकत्व धार्मिक है। एक धार्मिक प्रकृतिवाद या धर्मनिरपेक्ष मानववाद धीर एक कृत्रिम धर्ममानववाद लक्ष्यमानववाद फंडामेंटलिज्म धीर लक्ष्यधियावाद के रूपों में दोनों ही धर्मनिरपेक्ष हैं। भयवा है इन किसी भी धर्मनिरपेक्ष में पड़ने को तैयार है फिर चाहे वह पोष की हो या बाइबिल या मार्क्स की।

१ गुणना कीर्ति, धर्म-धर्म : "अधरकी एक धीर है, जिनकी मूर्ख है, धर्मनिरपेक्ष का धीर है सम्बद्ध एक धीर है किन्तुके अंतर अनेक धर्मनिरपेक्ष धर्मनिरपेक्ष धर्मनिरपेक्ष की धीर का सुभक्त्य करण है। '१ धर्मनिरपेक्ष धर्मनिरपेक्ष धर्मनिरपेक्ष (१९२१) पृष्ठ १९०।

किन्तु हमारे दृष्टिकोण को मानने का दावा करनेवाले लोगों के प्राचरण पहले दृष्टिकोण वाले लोगों जैसे होते हैं। यदि हम अपनी पूजा और ईर्ष्या को पराजित कर सकें तो तितनी शक्ति प्राप्त हमारे पास है उसमें हम इस पृथ्वी को स्वर्ग में बदल सकते हैं। किन्तु हमें भय है कि किसी पावसपन या मिथ्या गणना का काम करके—पावस तो हर वरस में मौजूद है—हम सम्पत्ता की धारमहत्या का शत्रु उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक नियंत्रण और आध्यात्मिक प्रशासन की उत्कृष्ट आवश्यकता है। बिपटी के घण्टों में मुत्तल और बीसीसी का प्रयत्न मस्तिष्क और धारमा का सर्वप्रथम भी जारी है। आघात का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हैं।

सम्बन्धित उक्तियों धीरे धीरे के मन में निश्चय भावनाएं पैदा करनेवाली बात नात्यावक उक्तियों में प्रथम है। कविता की उक्तियों की सत्यता का प्रश्न नहीं उठाया जाता केवल उनके द्वारा जागरित संवेदन की बात की जाती है।

ब्रह्मांड का संप्रमाण धीरे सुखस्वित्त विवरण का प्रयास वर्धन है यह प्रथम नहीं सोचा जाता। ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान प्रदान करना विज्ञान का कार्य है। वर्धन का उद्देश्य अधिक से अधिक है विश्लेषण स्पष्टीकरण। धार्मिक को कोई मतलब नहीं कि ईश्वर, धारमा अथवा संसार है या नहीं। वह इस उक्ति का धर्म जानना चाहता है कि ईश्वर धारमा या संसार है।

बौद्धिक भोग तो प्रत्यक्षतः धार्मिक भौतिकवाद या तार्किक प्रयोगविद्धवाद से सन्तुष्ट है किन्तु सामान्य जन में धारमा की कमी होती जा रही है। वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षित भोग धर्मनिरपेक्ष मानववाद के हामी हैं तो दूसरे भोग धार्मिक परम्पराजगत्स्य धूम्यवाद के पोषक हैं। हमारे समय की खूबियां हैं—ईश्वर से घसग रहना धारमा को बुर रखना धीरे बर्चार्थवाद मानसिक दृष्टिकोण।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप में प्रकृतिवादी वर्धन का बासबाला था। धारमी स्वर्ग की मधीन की प्रतिस्पर्धि में देखता था।^१ मानव के दो दृष्टिकोणों में विरोध है। उसमें मूर्खों का ज्ञान धीरे धीरे की भूल है, इसलिए वह पृथ्वी पर सर्वाधिक स्पष्ट मुक्तिमान ईश्वर है। यह ईसाई धर्म के अनेक रूपों से सम्बद्ध उपनियमों धीरे प्लेटा की परम्परा है। एक दूसरा दृष्टिकोण है जिसका धारम पुनर्जागरणकाल में हुआ था धीरे जिसकी शक्ति के स्रोत विज्ञान की महान खोजें धीरे तकनीकी आविष्कार हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे जमीन सहमति के बिना जीवन-दबाह में बलों के संसार में फेंक दिया गया है धीरे वह महसूस करता है कि उसका बचना एक ही शर्त पर संभव है कि जिन शक्तियों के साथ उसका संघर्ष है उन्हें वह अधिकाधिक अपने अधिनार में रखे। स्वाधी समाज की स्थापना के लिए दोनों मूलभूत प्रवृत्तियों का सामंजस्य आवश्यक है। एक धार्मिक प्रकृतिवाद या धर्मनिरपेक्ष मानववाद धीरे एक कृत्रिम प्रतिमानवाद मानववाद फंडामेंटलिस्म धीरे मर्यादित्यावाद के रूपों में दोनों ही धर्युक्तियां हैं। जनता है हम किसी भी शक्ति में पड़ने को तैयार है फिर चाहे वह पौध की हो या बाइबिल या मार्क्स की।

१ गुणना काश्चित् मूल-धर्मः 'धारमी एक धीरे है किन्तु मूर्ख है प्रकृति मूर्खों का भेदार है सम्बन्ध एक श्रेणी है किन्तु धर्म पर अनेक व्यक्ति धर्म के अलग-अलग मित गति धर्मनिरपेक्ष का मीर वा मुद्रवता करण है। ६ एण्ड्रु 'डोमैट डॉट डेवर्स मिन (१९२३) पृष्ठ ११०।

किन्तु दूसरे दृष्टिकोण को मानन का दावा करनेवाले लोगों के धारण यहसे दृष्टिकोण बाल लोगों जैसे होते हैं। यदि हम अपनी बुद्धा और ईर्ष्या को पराजित कर सकें तो अतिमी शक्ति प्राप्त हमारे पास है उससे हम इस पृथ्वी को स्वर्ग में बदल सकते हैं। किन्तु हमें भय है कि किसी पागलपन या मिथ्या धन्यता का काम करके—पागल तो हर देश में मौजूद है—हम सम्यता की आत्महत्या का लक्ष उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक नियंत्रण और साम्यात्मिक धनघासन की उत्क्रान्त आवश्यकता है। ब्रिटीश के राष्ट्रों में यूनान और पैंसीनी का अथवा मस्तिष्क और धासा का संघर्ष अभी भी जारी है। प्राणा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हैं।

तृतीय व्याख्यान पूर्व और पश्चिम

१. पूर्व पर पश्चिमी प्रभाव

विज्ञान और टेक्नॉलॉजी प्राबुद्धिक संसार का निर्माण करनेवाले मूल कारकों में से हैं। वत ४०० वर्षों में पश्चिमी मानव ने अपनी सम्यक्ता का प्रसार दूरस्थ क्षेत्रों तक किया है और सभी महाद्वीपों पर अपना प्रभाव डाला है। लगभग १२०० ईसवी तक पूर्व और पश्चिम में काफ़ी समानता थी। किन्तु टेक्नॉलॉजी की तेज़ प्रगति के कारण यह अन्तर बढ़ गया है। हम चार अताखियों में इतिहास का अर्थ है यूरोपीय इतिहास, रोम संसार का मात्र धौनवैदिक इतिहास वा। हीनेल के अर्थों की उत्पत्ता सिद्ध हो चुकी है। "यूरोपवासियों ने अहाडों पर पृथ्वी की परिभ्रमा की है और सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी गोल है। उनके अधिकार में यदि कोई चीज़ नहीं था पाई तो या तो वह इस योग्य नहीं है अपना जलिय में था जाएगी।" यूरोप ने एशिया और अफ्रीका पर अधिकार कर लिया तथा आस्ट्रेलिया और अमेरिका को आबाद किया।

उत्तमाया अन्तरीय होकर भारत के लिए समुद्रपथ मान्य होने पर अमेरिका की यात्र के पश्चात् पृथ्वी के विस्तीर्ण स्थानों पर पश्चिमी लोगों का अवाचित प्रभाव और नियन्त्रण स्थापित हुआ बना गया। इसे कभी-कभी कहा जाता है कि पश्चिम ने पूर्व पर आक्रमण कर दिया। यूरोपीय व्यापारियों ने पूर्वी देशों में पहुँचकर, जिनके कारणों और औद्योगिक धनुं स्थापित किये। अन्त-साधनों के विकास का अग्रगण्य समूह अथवा पश्चिम को है। पश्चिमी देशों के अहाड ही दुनिया का अधिकांश साधन और सकारियां समुहों के कारण ल जाते हैं। उनके विमान महासागरों और महाद्वीपों के पार उड़ते अने जात हैं। उनके अने इंजन ठार, बिजली के यंत्रिकाएँ, सेनी-बाई के अन्त एशिया और अफ्रीका में उपयोग में आते हैं। उनके कारणों के उत्पादन मुख्य असाधियों की आब अवनता पूर्ण करने हैं। मोटरकार, विमानों की मशीनें अथवा अनेका ठार

राष्ट्र, फाउण्टेनपेन कैमरा पेटेंट इत्यादि सभी देशों में घाम उपयोग की बन्तु हैं।^१

पश्चिमी शक्तियों के समझाव से अनेक राष्ट्र अधिक प्राचीन संस्कृतियों पर उन शक्तियों का राजनीतिक और धार्मिक प्रभुत्व तो स्थापित हो गया किन्तु उन (संस्कृतियों) की अपनी अपने समय में दबी पड़ी शक्तियाँ जाग उठी और उनमें राष्ट्रीयता की भावना उदित हुई। पश्चिम ने ही अपने प्रभुत्व की विरोधी शक्तियों को समझ किया और गुलाम देशवासियों में उन मोह्यताओं और संस्थाओं को पत पाया जिनका प्रयोग उसके ही विरुद्ध भली प्रकार किया गया। टार्निंग और बॉक्सर-विद्रोह भारत का स्वाधीनता-संग्राम और धार्मिक जापान का उद्भव 'पश्चिमीकरण' की उपसम्पत्तियाँ हैं। कुछ ही दशकों में जापान भी पश्चिमी नमून की पूर्णतः औद्योगिक धार्मिक शक्तियों में जिता जाया गया। अमरीकी स्वाधीनता बोधनापत्र फ्रांसीसी और रूसी शक्तियों अंतर्जातिक पापनापत्र तथा मनुकत राष्ट्र-बोधनापत्र ने करोड़ों धार्मिकों को प्रेरित किया कि वे शान्ति का बुझा उतार फेंकें और राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करें। जापान ने इस को पराजित किया तो एक नया विज्याम धार्मिकों के मन में जागा कि अपने उद्देश्य को प्राप्त करना उनकी शान्ति में परे नहीं है। दोनों युद्धों में 'अ-यूरोपीय' सेनाओं के उपयोग से शान्ति की भावना जागी किन्तु उसके परिणाम तत्काल प्रत्यक्ष नहीं हुए। इस प्रकार पश्चिमी प्रभुत्व ने स्वयं अपने नाश के बीज बोए।

एशियाई समाज पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव ही एशियाई राष्ट्रीयतावादी और एशियाई एकता का आधार है। हिन्दू धार्मिक पुनरुत्थान अथवा पश्चिमी प्रोब का परिणाम है—संघर्ष पश्चिमी प्रभुत्व की प्रतिक्रिया का और संघर्ष ईसाई मिशनरी प्रचार के प्रति विद्रोह का। 'सोसायटी ऑफ पीसर्स' क सदस्यों पर पूर्वी एशिया के मिशन की विस्फेदारी थी। सोसायटी के उत्तरार्ध में अंधिध ईशियर गोष्ठा और जापान गये। सोसायटी के एक इटासबी सदस्य मातियो रिडी १२८२ में मैकाओ पहुंचे और १६०१ में पीकिंग वहाँ १६१० में उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने और उनके सहयोगियों म चीन के बौद्धिक समाज के आधार-भ्यक

१ 'साम्बन्धी बोधनापत्र से मुक्तवा कर्मिण 'बुद्ध का कर्म' ने' अपने अपने सिद्ध कर दिया कि मानव की सम्पन्नता क्या कर सकत है। अपने मिमी सिद्धिओं रोमक कर्मों और शक्ति शिरों से कभी अधिक आरक्षकक कर्म कर विनये हैं 'बुद्ध का कर्म' सभी एशिया को सम्पन्न के मने में ला गया किया है। अधिक म अधिक ही कर्म के साम्बन्ध में बुद्ध का कर्म ने सभी सिद्धि और सभी शरी जवाइक शक्तिओं का ध्यान किया है किन्ता अपने परते की शरी शक्ति एकस्य मिश्रक म कर गई थी।

हार सील मिये और पश्चिम इबिकी तथा पश्चिम-सम्बन्धी अनेक चीनी प्रयोगों के अनुवाद किया। पूर्व में यूरोपीय बस्तियों की स्थापना आरम्भ होने के बाद ईसाई मिशनरों ने अपने कार्बोनेन का विस्तार किया। यद्यपि अनेक मिशनर अपने कार्य की भाङ में धार्मिक प्रसार कर रहे थे। मिनिस्टर का वाणिज्य और ईसाई-धर्म-सम्बन्धी तारा इस बात का प्रमाण है। उनका कहना था कि व्यापार के रास्तों के खुलने के बाद ही मध्य अफ्रीका के आदिवासियों तक सम्पत्ता धर्पाई (उनके अनुसार) ईसाई-धर्म की पहुंच संभव है। उनके लिए ईसाई-धर्म का धर्म एक सिद्धांत नहीं था बल्कि 'एक बुझसी दाज-माधमा की दबाइयाँ व्यापार, शिक्षा थे। एशिया और अफ्रीका के निवासी भी ईसाई-धर्म के प्रति आकर्षित हुए क्योंकि उनका विचार था कि प्रभु पश्चिम का धर्म 'ईसाई-धर्म है इसलिए वह पश्चिम की श्रेष्ठतम नैतिक समता और वैज्ञानिक चर्चित का व्यावहारिक प्रेरणास्रोत भी है। राष्ट्र रेबरेण्ड स्टीफेन मीस ने लिखा है "यह सबोत्तम मान्य है कि ईसाई-धर्म के प्रसार की 'महान शताब्दी' ही यूरोपीय प्रसार की महान शताब्दी भी थी।" अनेक बार तो मिशनरी प्रवेश राजनीतिक नियंत्रण का बहाना बन गया। डॉ० स्टीफेन मीस का कथन है "इसलिये भारत में वर्षों को मुड़क बनाने का कार्य वैहात के शिकारों ने किया जिनके बैतल का अधिकार सरकारी अनुबन्धनों से मिलता था।" एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्रीयता की भावना के साथ-साथ उन मिशनरों की विरोधी भावनाएं बढ़ती जा रही हैं जिनको सरकारी सहायता प्राप्त थी फिर चाहे वह बुनियाद कर लेने पर लोगों की स्थिति धार्मिक अंधी हो जाए। स्वभावतः राजनीतिक समानता के दिनों में जो वर्ष धार्मिक रूप से सरकार पर धारित थे स्थायीता के लिए संघर्ष करनेवाली जनता की सहायता नहीं मिल पा सके। इसीलिए कहा जाने लगा कि वे साम्राज्यवादी पक्षियों के एजेंट थे। अब स्थायीता प्राप्त हो चुकी है ईसाईयों की दोनरकी बच्चाकारी के बारे में सन्देश नहीं रहे गये हैं और अनेक राष्ट्रों में वे सम्मानित नागरिक हैं। भारत में समाज के नेता बनने के लिए भारतीय विरुद्ध की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना यह नहीं है कि कृषी राष्ट्रों—

अमेरीकी, इण्डो-चीन, ब्राज़ील—की पराजय हुई। वे तो इतने कम समय में ही अपनी पूर्ण स्थिति पर पहुंचने और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में प्रभाव डालने योग्य हो गए हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है एशिया में नई शक्तियों—चीन, भारत, पाकिस्तान, इण्डोनीशिया, बर्मा, श्रीलंका, तिब्बत—का उदय।

विदेशी शासन की घटाधिकियों के बावजूद, एशिया और अफ्रीका के बारे में सर्वाधिक विविध तथ्य है उनकी अकथनीय बुनिति निदान्त गरीबी और निरक्षरता अकाम और बीमारियाँ। अफेली आयाजनुक बाह्य है अयनी अमान अमान अीय परिस्थितियों से अर उठने की हन देखा की अमता की सासछ। सोम यह मूस करने सने है कि अिम अुराहयों से वे पीड़ित है उन्हें अूर अिमा आ सछता है और उन्हें सहन नहीं करना आहिए। वे अिश्वास करने सग है कि अयनी अर्तमान स्थिति स अर उठने के लिए उन्हें अिज्ञान का अुष्टिओष तथा टेकनॉलॉजी की अिअियाँ अयनानी पड़ेंगी। यह सत्य है कि पश्चिम की सअनीकी अिअिप्यता के कारण असासनों की होक में पश्चिम अाने हो गया। पूर्व एअ और पश्चिम की सैदिक अिअयों और अरबर्सती के अासन का अिओषी है, अिअु दूसरी ओर पश्चिम के ससने अंअनों अापनेमो और अिमान का स्वागत भी करता है। यह अिअेठाओं को अिकास आहर करना आहता है अिर भी उनकी अिअयों के अयकरणों अानिकी टेकनॉलॉजी के अयकरणों और राजनीतिक संस्थाओं को स्वीकार करता है। पूर्व के देअ हनका अयओग पटीषी को अिदाने आर्थिक अयतरों को अिसुत करने तथा आअयअओं स्वाअ्य और सअार्ई के स्तर को अंअा उठने में करना आहते है। अोय हण अमय को पुरा करने और संसार के समुअत राअुओं के समअय पहुँचने के लिए पूर्व टेकनॉलॉजी की आाअुनिक अिअियाँ को अयना रहा है।^१

असमान परिस्थितियों ने पूर्व और पश्चिम दोनों को आप्य कर अिया कि वे टेकनॉलॉजी का अयओग करें पूर्व का अहेस्य है राजनीतिक परअमता तथा आर्थिक और सामाजिक अिअेअन को अूर करना, और पश्चिम का अहेस्य है अयनी अुप्यता अनाए उठना। हन परिस्थितियों ने आसंका है कि अहीं अनुप्य अयन और अौतिक अअमता की अिरंअुअता का अिअार न अग आए।

पूर्व और पश्चिम का सअरक एक ही ओर से नहीं रहा है। पश्चिम पर नवीन अमान पड़े है। रेअों ने मुगस अिअों की अनुहतिअों अनाई और आपाम से नई सलित असाए पहुँची। अ्यापार और आसन के अहेस्य स पूर्वीय आपाए पड़ी अान लयी। ईसाई अिअन गैर-ईसाई देअों के अरसन में अधि सने लये। अनुअुअिअयअ की 'अनासअरुस' अैदिक साहिएय अौअरम का 'अिअिटक' अुरान तथा अय्य हस्तानी अयों के अुरोपीय आपाओं में अनुआह हुए। अिअेयी अमों में अिअेक और आअ

१ स्वर्णि अरु सर अ्यसर् अिअर्ट ने, १९२० में अयनी अिअर मेअअरअअ [आमक पुस्तक में अिअा दे अुअ अमअ परअए अरि पूर्व अुरअुअि में पश्चिम को पयास कर दे, तो अुअक अरु अरब देअ कि पूर्व ने पश्चिम की टेकनॉलॉजी को पूरी तरह अयअकर अउअ और अिअरत अिअ है तथा हन अअर अने पश्चिमी सअ्य में पश्चिम हो गया है।

रिमः महाराई मिसे जिनका पहले पता तक न था। लीबनिज ने कहा कि यूरोप और चीन के बीच बिचारी का आदान-प्रदान होना चाहिए। वास्तेवर की बुद्धि में कम्यूनियम एक महात्मा बार्सिनिक पैगम्बर और राजनीतिज्ञ के और अमस्कार नहीं बिल्लाते थे बल्कि केवल सद्गुणों की शिखा देते थे।

२ साम्यवाद और प्रजातंत्र

पूर्वीय देश केवल बिज्ञान की धारणा और टेक्नॉलॉजी की विधियों को ही नहीं बरन् पश्चिम में सफल राजनीतिक व्यवस्थाओं—उदार प्रजातंत्र प्रणवा साम्यवाद—को भी अपनाते जा रहे हैं।

मानव पूर्व-पश्चिम सम्बन्धों की बात की जाती है तो हमें प्रायः और पश्चात्त्य एमिया और यूरोप का क्याल नहीं आता बरन् यूरोप के राजनीतिक पूर्व और राजनीतिक पश्चिम का क्याल आता है। जब यूरोप में ईसाई-धर्म का रोमशाखा या तो रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेंट मत पश्चिम के प्रतिनिधि थे और ग्रीक चर्च तथा रसी परम्परावादी चर्च पूर्व के प्रतिनिधि। दोनों एक ही स्रोत ब्रुडार्ड-ईसेनीय स उद्भूत थे। दोनों में परस्पर जितनी समानता है उतनी समानता इनमें से किसी एक और किसी अन्य समज के बीच नहीं है। इसके बावजूद साम्यवादी पूर्व और प्रजातांत्रिक पश्चिम के बीच की टाई पश्चिमी संसार के बीच की आई है।

साम्यवाद का बंधूत है—जेटो म्यू टेस्टामेंट ऑमबेस-मुन के सामाजिक समानतावादी रिवाइज ऐडम स्मिथ हीवेस पुरबाह मार्स एंगस लमिन। साम्यवाद के कुछ विभिन्न लक्षण पश्चिम के हैं।

यूनानी मानव तर्कप्रधान था। उनमें बिबेक की बिशिष्टता पर जोर दिया था। साम्यवाद का दावा है कि वह बैज्ञानिक बिधि और बिदयेपग-गडनि को उपयोग में लाता है। उसे स्वयं म बिस्वास है, वह निर्भ्रमि है।

मानववाद यूनानियों के समय से ही पश्चिमी दर्शन का एक गुण रहा है। यूनानियों ने सामाजिक परिस्थितियों और स्वयंमिह प्रजातंत्र पर जोर दिया था। मानववादी रसी धरती पर एक पूर्व समज की स्थापना करना चाहते हैं। श्रीयोगिन अमि के अधिष्ठर्च पर पड़े प्रभाव—बहुत कम बैतन बर्षों और रिचों से काम घाल बिह अदमंश्यासानी शमी बधिया पारिवारिक बीजन का बिनाघ—के बिस्व मानववादों आगव बुन करते हैं। सामाजिक ग्याय के नाम पर वे पूंजीवादी व्यवस्था की आमाचना करते हैं। सेनिन का कथन है कि एक भी पीरिह बन्ने की चीज हमारी दुनिया के प्रति एक बिबहार है।

आगव गवत की केवल मौनिक आचस्वताओं की पुनि की ही मांग नहीं

करता करता उच्च शिक्षण समाजता, धार्मिकता मुक्ति राजनीतिक व्यवस्था धार्मिक पोषण से मुक्ति जैसी मानवीय आकांक्षाओं की मांग भी करता है। मार्क्स एक नये मानव की, एक सच्चे मानवीय मानव की बात सोचते हैं जिसकी सत्ता पहले कमी नहीं की और जो धार्मिकरहित में मुक्त होवा। अपने दार्शनिक के अनुसार साम्यवाद प्रत्येक मनुष्य की जो आकांक्षा और कुंठाग्रस्त है, गंभीरतम आकांक्षाओं की पूर्ति का प्रयत्न प्रदान करता है। मानवीय प्रकृति में सबसे अधिक उद्देश्य है इस दुष्ट नरकर व्यक्तिगत जीवन को जिसमें नरकर धार्मिकता मौजूद है किसी ऐसे उच्च काम में लगा दिया जाय जिसकी कल्पना तक धर्म के द्वारा और नीतिकार के उदय के पश्चात् कोई मानव न कर सका हो। यह धारणा है पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना का मानवजाति को उद्देश्य उठाने का। अपने एक मानवीय क्षण में मार्क्स ने एक घनायत समाजवादी समाज का स्वप्न देखा था जहाँ "विभाजित मानव के स्वान पर पूर्णतः विभक्त व्यक्ति होगा ऐसा व्यक्ति जिसके लिए विभिन्न सामाजिक कार्य सक्षमता के ही रूप होंगे। मनुष्य मछली मार करके शिकार खेत खेती या साहित्यिक आलोचना करेगे और इसके लिए उन्हें पेशेवर मछलीमार, शिकारी या आलोचक बनने की आवश्यकता न होगी।"

इतिहास में कोई भी बात नहीं है कि एक निश्चयी उद्देश्य ताकिकता के फल स्वरूप किम प्रकार सामाजिक प्रकार में परिवर्तित हो जाता है। "तुम सम्पूर्ण संसार में जाओ और प्रत्येक प्राणी को इंसानों की धिखाओ।" ऐसा सगठ है कि साम्यवाद 'परमनिरपेक्ष' ईशान्य है।

प्रतिकूलता नियम के अनुसार प्रतिकूलताएं लाभ-साधन निर्वाह नहीं कर सकती। साम्यवादियों और समाजवादियों का संघर्ष ऐन्स और स्टाई रोम और कार्लो मरिदियों और गैरमरिदियों युनानियों और बर्बरो ईसाइयों और मूर्तिपूजकों प्रोटेस्टेंटों और कैथलिकों के संघर्ष जैसा ही है। भाव यह स्वर्ग मनुषीय जनतंत्र और समता के अवतार के बीच है। यह दया 'यह या नह' संघर्ष के कारण है। इसमें संसार दो देवों में विभाजित हो गया है—मर्याद का साम्राज्य और संघर्ष का साम्राज्य। बर्गोन्मत्त व्यक्ति का मस्तिक संघर्षरमय और हृदय कठोर होता है तथा वह अपने धनु को बिगड़ कर क्षमता चाहता है। अपने विरोधियों को नास्तिक घोषित करने से एक प्रकार के नैतिक छद्मस्वीकरण का आभाव होता है। परिचयी मानव की मानसिक रचना में विभाजन प्रकृति एक आवश्यक तत्व रहा है। 'ब' शर्म कराना सब में बस्तापबस्ती का एक पाप कहता है "धार्मिक समाज स्थापित करने की यह क्षमता धार्मिकता से प्रत्येक मानव और सम्पूर्ण मानवता के लिए सापेक्ष है। अपने देवताओं को ताक में रखकर, धार्मिक और हमारे देव

रिक्क पहुराई मिसे जिनका पहले पठा तक म बा । मीबनिज ने कहा कि यूरोप और चीन के बीच बिचारों का आदान प्रदान होना चाहिए । बास्तेपर की दृष्टि में कम्युनिज्म एग महारत्ता दार्शनिक पैगम्बर और राजनीतिक से और कमत्कार नही बिलमाते से बसिक केबल सन्तुनों की शिखा सेते से ।

२ साम्यवाद और प्रजासंघ

पूर्वीय सेच केबल बिज्ञान की आरम्भा और टेक्नॉलॉजी की बिचियोंकी ही नही बरन् पश्चिम म सफल राजनीतिक व्यवस्थाओं—उदार प्रजासंघ प्रथमा साम्यवाद—को भी अपनाते जा रहे हैं ।

आजकल पूर्व-पश्चिम सम्बन्धों की बात की जाती है तो हमें प्रायः और पारस्पर्य एगिया और यूरोप का स्थान नही घाता बरन् यूरोप के राजनीतिक पूर्व और राजनीतिक पश्चिम का स्थान घाता है । जब यूरोप में ईसाई-धर्म का मोमबाला था तो रोमन ईसाईक और प्रोटेस्टेंट मन पश्चिम के प्रतिनिधि से और ग्रीक धर्म तथा रूसी परम्परावादी धर्म पूर्व के प्रतिनिधि । दोनों एक ही स्रोत जुड़ाई-हूमेनीय से उद्भूत से । दोनों में परस्पर जितनी समानता है उतनी समानता इनमें से किसी एक और किसी धर्म सम्म समाज के बीच नही है । इसके बावजूद साम्यवादी पूर्व और प्रजासंघाधिक पश्चिम के बीच की खाई पश्चिमी संसार के बीच की खाई है ।

साम्यवाद का बंधुता है—प्लेटो न्यू टैस्टामेंट थॉमसेल-मुग के सामाजिक समानतावादी रिफार्मों ऐबम स्मिथ ह्युमेन पयूरबाल मार्कस एबस्स सेनित । साम्यवाद के कुछ बिभिन्न लक्षण पश्चिम के हैं ।

पूतानी मानस तर्कप्रधान था । उनमें बिकेक की बिशिष्टता पर आर दिया था । साम्यवाद का दावा है कि बड़ ईसाईक बिधि और बिस्तेपक-गठन को उप माग म लाता है । उन स्वयं से बिचभाग है बड़ निर्भरत है ।

मान्यवाद पूतानियों के समय से ही पश्चिमी वर्गन का एक मुम रहा है । पूतानियों से सामाजिक परिस्थितियों और स्वयंछिष्ठ प्रमाणों पर आर दिया था । मार्क्सवादी ग्नी घरती पर एक पूर्ण समाज की स्थापना करना चाहते हैं । धीरोगिक बान्ति के धनिजधर्म पर गड़ प्रभाव—बहुत कम बैतल बच्चों और रिशियों से काय प्रत्य पिक अनसंग्यावाणी नदी बन्धिया पारिवारिक जीवन का बिनाश—के बिपद मान्यवादी घाबाव बुलन्द करते हैं । सामाजिक ग्याप के नाम पर से पूंजीवादी व्यवस्था की घालाचना करते हैं । सेनित का कथन है कि एक भी सीद्ध बच्चा की चीन हमारो दुनिया के प्रति एक पितकार है ।

साम्यवाद मान्य की केबल औचित्य घाबदवस्थाओं की पुति की ही मांग करती

करता वरन् उच्च स्थिति समानता, प्रायिण्यसे मुक्ति राजनीतिक अथवा प्रायिक पोषणसे मुक्ति जैसी मानवीय प्राकाराणोंकी मांग भी करता है। मानस एक नये मानव की एक उच्च मानवीय मानव की बात सोचते हैं, जिसकी सत्ता पहले कमी नहीं थी और जो भारतवर्षित से मुक्त होगा। अपने दावे के अनुसार साम्यवाद प्रायक मनुष्य की जो प्राज निराश घोर कुंठप्रसू है संकीरतम प्राकाराणों की पूर्ण का अक्षर प्रदान करता है। मानवीय प्रकृति में सबसे अक्षा उद्देश्य है इस तुच्छ नरकर व्यक्तिगत जीवन को जिसमें अक्षर प्राप्पारिकता मौजूद है किसी ऐसे उच्च काम में लगा दिया जाय जिसकी कल्पना एक धर्म के हास और मीतिक-वाद के उच्च के परचात् कोई मानस न कर सका हो। यह प्रादर्श है पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना का मानवजाति को उच्च उठाने का। अपने एक मानवीय अणु में मानस में एक अगाध समानवादी समानता स्वप्न देना का जहां "विनाशित मानव के स्थान पर पूर्वत विकसित व्यक्ति होगा ऐसा व्यक्ति जिसके लिए विभिन्न सामाजिक कार्य सक्रियता के ही रूप होंगे। मनुष्य मक्ष्मी मार सच्चे विकार सेल सच्चे या साक्षरियक प्राप्पोजना करने और इसके लिए उन्हें पेथेकर मक्ष्मीमार, शिवायी या प्राप्पोजना करने की प्रावश्यकता न होगी।

इतिहास में कोई नई बात नहीं है कि एक विघनरी उद्देश्य साक्षिकता के फल स्वरूप किम प्रकार प्राप्पमक प्रकार में परिवर्तित हो जाता है। "तुम सम्पूर्ण संसार में जाओ और प्रत्येक प्राप्पी का ईंधीनों की शिवायी दो। ऐसा सगता है कि साम्य-वाद 'असंविशेष' ईशाईधर्म है।

प्रतिक्रमता नियमके अनुसार प्रतिक्रमताएँ साध-मात्र निर्वाह नहीं कर सकतीं। साम्यवाधियों और अगाधवाधियों का अक्षर एक्स और स्पार्टा रोप और कार्बेज यतृधियों और गैरयतृधियों मूमानियों और बर्बरो ईशाईयों और मृतिपूजकों प्रोटे स्टेटों और कैथलिकों के अक्षर जैसा ही है। प्राज यह संघर्ष मंकीय अक्षर और अक्षरता के अक्षर के बीच है। यह अथा 'यह या अह'-अक्षर के कारण है। इससे संसार दो खेमों में विनाशित हो गया है—अक्षर का साम्राज्य और अक्षर का साम्राज्य। अक्षरमक्षरव्यक्ति का मक्षर अक्षरमक्षर और अक्षरमक्षर होता है अथा यह अपने अक्षर की अक्षर कर अक्षरता अक्षरता है। अपने विरोधियों की मक्षरक पीपिठ करने से एक प्रकार के मक्षर अक्षरमक्षर का प्राभास होता है। परिचमी मानव की मानसिक अक्षरता में विनाश-अक्षरता एक प्रावश्यक अक्षर रहा है। 'अक्षर अक्षरमक्षर' में अक्षरमक्षर का एक प्रावश्यक अक्षर है "प्रायिक अगाध स्थापित करने की यह अक्षरता प्रायिकता से प्रत्येक मानव और सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रावश्यक है। अपने ईश्वरों को एक में अक्षर, प्राप्पी और अक्षर ईश

तामा की पूजा करो बरना हम तुम्हें और तुम्हारे देवताओं सबको मार डालेंगे । और यही कम दुनिया के अन्त तक यहाँ तक कि जब बैबता भी पृथ्वी से जायब हो जायमे बनता जायगा ।

जब तक धार्मिक सिद्धान्त और उनके प्राबल्य का व्याप्यकार रह्ये तब तक नास्तिकता भी खेवी और नास्तिक बंदिह भी किय जाते खेयेंगे । धार्मिक सिद्धान्तों को प्रथित और निर्घातित सरयों का प्रकाशन मान मेने पर सिद्धान्तिक मतमेरों और दोष की बिधियों से मुक्ति संभव नहीं है । ईसाईयम की प्रारम्भिक शताब्दियों में सात समितियाँ मुझ सिद्धान्त का निरूपण करने और नास्तिकता को बंदिह करने के उद्देश्य से बंठी थीं ।

तमाकबिध , धपराबियों की पाप-स्वीकृति और कठोरतम बंड़ों की मांग की बातें हमने पकसर सुनी हैं । प्रारम्भिक ईसाई कर्ष में पाप-स्वीकारोपितयों और परबता ताप के उपाहरण हैं । बसी नागरिकों की मारमा की धार्मिक प्रभृति का ध्यान रलें ता हमें प्राप्तर्ष नहीं होना कि वे राज्य के प्रति अपने धपराबों को स्वीकार कर लेते हैं ।

पश्चिम मुक्यत (यद्यपि एकान्तत नहीं) ईसाईयक विवेक शास्त्रशास्त्र सिद्धा
नदी प्रचार और संसार को दो बिरोधी खेमों में बांटेने पर खोर बैता है । साम्यवाद इन्ही बातों को और बका बैता है ।

काल मार्ग के उन्बेड़ों से सम्बन्धित प्रपनी कृतियों में मेनिग ने सिद्धा है कि मानम "घडूर्य मेसावी पुक्य के जिम्हूनि मानबता के तीन सर्वाधिक उन्नत बैडों का प्रतिनिबित्व करनेवाली उन्मानवी गनुापी की तीन प्रमुख बिचारबारायों का प्रागे बडामा और परिनमाप्ति तक पहुँचाया । ये तीन पाठ्यपुं भी परर्यरावादी-जर्मन इर्दंग परर्यरावादी पदेडी राजनीतिक प्रर्षभाक्य और फाँवीसी अम्तिकारी सिद्धान्त, सहित फाँवीसी समाजवाद ।

साम्यवाद स्वब ही पश्चिमी इर्दंग का परिचाम है ही उरका प्रसार भी पश्चिम । राज्यागियों—ग्रिमिन् डैलिन्, जेनेवा—म प्रविधित नेगापीं द्वारा हुपा है । प्रथम बिन्डमुड के जर्मन सरकार ने पबिप्य के कम को एक रेल के बिद्ये मं रनकर मुहरबान करके बिस्टोट के लिए सन्नासीन फिनर्नरुड क स्पेचन देबापार रवाना कर दिया था ।^१ यन साम्यवाद पूर्वीय सिद्धान्त नहीं है यद्यपि उत्तरा प्रचार

१ १९१४ ।

१ निदिता फ़ीरेड क्कटिम का सिद्धान्त का कि राजरोसिक लोग सभामन्बरां बर्दनी के नेननसगी कउरुड के खीर 'बोनेरो उरुवाड केय 'क्य उरुनर का बिने बर्दनी के कन्दे ल्याक-मन्बन के निरु वारा रिष का ।

यह पूर्व में हो रहा है।'

यह मान लेना गलत है कि पश्चिम की परम्परा के अनुक्रम सरकार केवल सनरीय प्रजातंत्र हो सकती है। इसमें यही चाहिए होगा कि हम यूनाइटेड स्टेट्स के नवर राज्यों की निर्दोषता से लेकर अपने युग की तातागाही को ध्यान दें। पश्चिम की विरामत में सभी प्रकार की सरकारें शामिल हैं।

यह सोचना गलत है कि यहिनाम्यवादी देश ईसाई-धर्म को स्वीकार कर में तो कुछ नहीं होंगे। कॉन्स्टेंटिन के समय में रोम-साम्राज्य ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था किन्तु अपनी समाप्ति तक वह मुझल रहा। इतिहास का मास्य नहीं है कि ईसाई राज्य कुरानों में कम मुझप्रिय हैं।

निम्नलिखित संसदीय प्रजातंत्र सरकार का सर्वाधिक सम्युक्त रूप है। इसमें हम प्राथमिक रूप से सीधे और कारिणीकारी सामाजिक-साक्षर परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं। प्रजातंत्र में विरधान करने पर हमारी जिम्मेदारी हो जाती है कि हम राष्ट्रों के बीच सामाजिक स्थान स्थापित करें और अन्य राष्ट्रों को प्रजातांत्रिक परिष्कार प्राप्त करने में सहायक हों। यूनाइटेड स्टेट्स प्रजातंत्र का नारा समानता समान है, समका पालन करना कठिन। यदि प्रजातांत्रिक देशों में उद्देश्य के प्रति ईमानदारी की स्थापना का जल्दाह पैदा हो जाय तो वे घोषित राष्ट्रों को स्वतंत्र कर देंगे और मेरमान मिटाने का प्रयत्न करेंगे और पिछड़ हुए देशों को साक्षर प्रगति में सहायक होंगे। यदि संसार के प्रजातांत्रिक राष्ट्रों की प्रजातंत्र के प्रति बुद्धि का स्थापित हो सके तो प्रजातांत्रिक राष्ट्रों का विरोध कम हो जाएगा। घोषित देशों के घरों में निवासियों और संसार-भर के जगहों कामपारों साम्यवादी व्यवस्था में सामाजिक समानता राजनीतिक स्वतंत्रता और साक्षर विधायिकाकार के उन्मुखन की संभावनाएँ बीसती हैं। क्या हमारी जाने ही प्रजातंत्र का उद्देश्य नहीं है ?

साक्षरता है प्रजातंत्र के प्रति प्रतीकवादी प्रस्ताव की कि साक्षरता पढ़ने पर अपनी बलि देने में भी शिक्षक न हो। हमें जातीय सीप्टता की भावना को त्याग देना चाहिए और हमारे देशों में होनेवाले साक्षरता प्रस्तावों को समान करना

१ प्रोफेसर हानेकी ने अपनी पुस्तिक 'निम्नलिखित' में लिखा है कि 'यूनाइटेड स्टेट्स में हम का प्रान्त में सरकार निवाज्य कर करने का प्रयत्न किया है। उक्त प्रयत्न है 'हम सीधे प्रान्त से निकालन प्रिन्सिपल के साम्राज्य के कम का अधिक यूरोपीय व्यवस्था के बारे में कहे का कुछ तर्कों सरकार १९१० में अपनी लाज्य कारकारी — जिम्मेदार बर्ष के प्रारंभ साल में हरिकलाकार्य की रिता में प्रारंभ किन्तु अपने प्रथम किशय व्य—यदि यूरोपीय-प्रिन्सिपी नहीं तो कम से कम अ-यूरोपीय की और है ।'

चाहिए वरन् जिम्मेदारियाँ टहराना चाहिए। हमें दूसरे राष्ट्रों के निवासियों से समता के स्तर पर मिलने को तैयार रहना चाहिए, चाहे वे किसी भी जाति के हों और उनकी लम्बा का रंग कुछ भी हो। अपनी जनता का सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्तर ढंका उठाने के लिए मलमलीक सभी देशों की सहायता करने का हमें तैयार रहना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शांतिपूर्वक ढंग से हल करना प्राथमिक है। समार की युद्धभारत जनता यह अनुभव नहीं करना चाहती कि राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता की घाटा खोप नहीं रह गई है।

हम नहीं कह सकते कि साम्यवादी राज्य कामगारों के स्वयं हैं जहाँ हर प्रकार के भेदभाव और वर्गीय विरोधाधिकारों का उन्मूलन हो चुका है। इन राज्यों में सम्पूर्ण सत्ता एक छोटे-से बस के हाथ में रखी है और बस का प्रमुख सगमन धनीम हो जाता है। उनकी नीति का वास्तविक प्रयास नैतिक नीतिरूपही डारा होता है। बस का नेता हर व्यक्ति के लिए हर बात का निर्णय करता है, जिसका परिणाम यह होता है कि मानव-जीवन का प्रस्तुतन भी कठोर नियंत्रण में होता है। यदि किसी/स के बानी हम प्रकार शांति होने को तैयार हैं तो जब तक वे दूसरों के जीवन में बाधा नहीं बनने हमें उनके साथ मित्रता का ही व्यवहार करना चाहिए। हमें एक ऐसी विश्वव्यवस्था कायम करनी चाहिए, जिसमें कुछ एक समाजवादी को जूगरी में धेड़ मानव की भावना वर्गभेद और निरकुशता न हो। हमें एक सचिवालय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसमें सभी मानवीय समस्याओं के माने में सभी देशों के बानी समुचित नाम से सके।

हम साम्यवादी देशों के साथ सम्बन्ध नहीं बना पा रहे हैं। प्राथमिक सम्बन्ध विचारित होने में हम घरेले पर जाते हैं और घरेले-साथ-जुड़ना है मज, मजरे पुष्पा का। आज के समय में समार में सबसे बड़ा गीप है छोटे-छोटे देशों की अपनी-अपनी राष्ट्रीयता। जिस समाज में हुआ में उड़ना और परमाणु को तोड़ना नीरत किया है उल्लेखनीय एकता की स्थापना का प्रयत्न करना हमारा ही कर्तव्य है।

पहले समय में हुआ में घरेले समाज के जो घरेले-घरेले डंव त धीरे-धीरे विरमित हो रहे थे। इन विभिन्न प्रयोगों के फलस्वरूप दर्शन करना और विज्ञान की समुच्च विरामन हम फिनी है। अब दुनिया मिडूफकर एक समाज में बदलती जा रही है। बनों पग पग-पुष्पे के विरोध पर बटिबड है इसके बावजूद यह सही है। यहाँ तक कि बोना विरोधी व्यवस्था में भी राष्ट्रीय समानता है और वे एक ही दिशा में बढ़ रही हैं। कहीं व्यवस्था की संज्ञा का गोल है— देवताओं की। यह अपनी व्यक्तिगत सामाज्य प्रवृत्ति और बिबेक बनाये रखने को उतुक है और उसे

पूर्व घोर परिषद

मान्य है कि परिषदी प्रजापता के सामने वह टेकनॉलॉजी पर काबू करने के बाद ही उठने लगेगी। हम वर्ष पूर्व जब ८ मई १९४२ को जर्मनी ने धाममसमर्पण किया था 'सम्बन्ध टाइम्स' ने लिखा था "ग्रहणार श्रुता घोर घातक की सामना से राष्ट्रीय के करोड़ों पीड़ित इन्सानों पर त्रिभूत राक्षसी धामन का बुधाकार दिया जा उठाका निरस्तारमय विनाश इस प्रकार हो गया घोर डीक ही हुया। उम पुत्र म दुनिया ने महसूस कर लिया था कि बिबेक द्वारा प्रतिबंधित वैज्ञानिक ज्ञान ने मनुष्य का विनाश की कितनी मयानक घातक प्रदान की है। सामूहिक विनाश के रक्षा की मयप्रद बुद्धि को मजर में रखते हुए हम हमबात को मसा नहीं मकते कि मानव-मयुक्त राष्ट्रों की एकता घोर घातक की मयदंठता मत्यामयक मय है। मामाय बाणाए मार नहीं। किमु हमारे भीतर मय पूया राष्ट्रीय ममिमाम घोर मयनी मयनी विचारमारा के प्रति मयविश्वास उममित है। ये बिबेकपूर्व म्मिमाम मही मरनु मानमामक प्रकृतियाँ हैं जो मदेव मानव-मयमहार को मप्रभावित मरती हैं। हमममय के मयसर पर उतर मनेमामी इस मप्रकृति को हम म्यामना होया कि हमारे मयु मूमिक मप्रकृतिक मय है त्रिभूत मसूल विनाश नहीं तो कम से कम मराज्य विरमगान्ति के लिए मराममयक है।

मरुमान मप्रमिम प्रमामिबों में ममान मय है कि ये ममिकता घोर तकनीक की मरुममिमता घोर मीतिकमय की मप्रकृति पर ममिमाम करते हैं। मोंनी ही मकिक पूया को मय में एम उममय मानते हैं। मय की मयमयकतामों के ममाने ममिम को मया मते हैं घोर राष्ट्र मय के उपासक हैं। मय के मयामार से मजता मीकित होनी है किर महे मय मयामार मीमी हिमा का मय ममम मदे, महे ममिम ममममी मम म। राष्ट्र मय की पूया मूमामियों से ममिी मिरामत है। हमने पूमानियों का मय मिया घोर मय हम मी मसी मरते पर मर रहे हैं। ममर मीमामियों से म्मिरे मम ममों में हम मरते हैं म राष्ट्र मही, एकता की मयामिमी दुनिया के मयमममम है।

मानव मय मानवीय ममिक की पूया करने मयते हैं घोर मय को मय मय का ममिकमयी ममम मते हैं। मी मप्रिकार के ममिकारी मय मते हैं। मय का मीत मुत्र मनी मियेय मय के मय नहीं है। मय को राष्ट्रों के बीच का मयय मही है, मानव की मालमा पर ममिकार मरते के दो मयमों के बीच का मयय है। मीतिकमय की मूम मप्रकृति मियेय मयय करने को मयसे मया मता है। मरम म हमारे लिए मय मय नहीं है। मकि मयुम दुनिया के मयुमय ही ममम मरती है। इस मप्रकृति का मीरोव मरनेमामी मप्रकृति का मया मोंनी मनों को किर मयामा है। हम मुत्र ममिमों को मानने का मया मरते हैं घोर मरते हैं कि हमारे मयुमों के मय मे ममिम नहीं

है किन्तु भावस्थयता यह बात भी है कि शत्रुओं को मनवाने के प्रतिरिक्त इन सिद्धांतों को स्वयं भी मानें। यदि हमारा उद्देश्य मानवजाति की उच्चतर संभावनाओं का उद्देश्य है, तो उसे हमारी सामाजिक संस्थाओं में भी सम्मिलित होना चाहिए।

हमें यह रचना चाहिए कि मानव और उतकी संस्थाएं संघर्ष प्रणाली और संघर्ष कुरी है इसलिए संघर्ष प्रणाली और संघर्ष कुरे उद्देश्यों के लिए ही उनमें संघर्ष होता है। केवल शक्ति को डंका समझने और शूना की प्रकृति को उत्साहित करनेवाले लोग यह मूल बातें हैं कि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का अंश मौजूब है। अपने शत्रुओं में मानव को देख पाने की प्रयत्नशीलता का अर्थ विश्वशांति की स्थापना नहीं बसौम बिनाशकारी मुक है।

सह-अस्तित्व की बात करते हैं तो हम पश्चिमी 'यह वा वह' से अलग हट जाते हैं। हमारा विश्वास है कि वो व्यवस्थाएं एक-दूसरे को प्रभावित करती हुई साथ-साथ रह सकती हैं। सह-अस्तित्व का अर्थ समझौता या समर्पण नहीं है। इसका अर्थ है एक-दूसरे को समझना सुधार करना। कोई भी सामाजिक व्यवस्था स्थिर नहीं है, कोई भी नियम अपरिवर्तनशील नहीं है, कोई भी संविधान स्थायी नहीं।

स्टालिन की मृत्यु के पश्चात् सोवियत व्यवस्था की कठोरता में हिसाई घाई है। यात्रा-सम्बन्धी प्रतिबन्धों में परिवर्तन हुआ है और कस में जनता को मुक्तिपाए मिली हैं। जोरिया और इण्डोचीन के समर्थों को मुक का रूप नहीं धारण करने दिया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में भी सोवियत रथैया वहुसे की अनेसा अतिक संघर्ष और भीमि रहू है। पश्चिम के माप समझौता करल की इच्छा स्पष्ट है। समुचित समय सहिष्णुता और समझदारी से अग्निय समझौता हो सकेया ऐसा सोचना अकारण ग पने नहीं। विशा के प्रसार और लोगों की मांगों में वृद्धि वा अाव अक परिणाम है सहिष्णुता की प्रक्रिया। साम्यवादी देशों के लिए भी यही सच है। यदि हम प्रक्रिया को रोगा गया तो सभी अन्तर्राष्ट्रीय शानतों की भांति वे भी अपने अान्तरिक विरोधों के अल पर ही मट्ट हो जाएये।

११ अक्टूबर १९६६ को गर बिस्टन अविषय में लिखा था "हमें अगता है कि अटल बृटि कोन और अा बिनास पैमाना अपनाने पर हमारी व्यवस्थाओं के बीच वा अन्तर अा हो आगता और अविवायिक लोगों के जीवन को अविट समुझिगाती और सुगमय बनाने वा महाम सम्मिगित अायाण हर अर्प अदना वा रहा है। अायाण अाया के लिए अागि अायापित हो आण ता अ अन्तर वा अाया अुनिया को

इतना अधिक परेदान कर सकते हैं विज्ञानों के विचारों के विषयमात्र रह जायेंगे।”^१ वन सात वाद, १२ जुलाई १९२४ को उन्होंने 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में इसी दृष्टि को बतलाया "मुझे विश्वास है कि (पान्तिपूर्ण सह-मस्तिष्क की) इस नीति को अपनाते से कुछ वर्षों बाद संसार का प्रायः विभाजित करनेवासी समस्याओं का समाधान मिल जायगा—या अनेक समस्याओं की तरह वे स्वयं सुलभ जायगी— और वह भी इस प्रकार कि मानवजाति का सामूहिक विनाश नहीं होया और समय मानवप्रवृत्ति तथा ईश्वर की कृपा से हम मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे।

यही समय है जब हम निर्णय करना है और ज्यादा अच्छा होगा कि हम ईश्वर, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि मैं धीरे धीरे नहीं हूँ के स्वाम पर शर्मना करें है ईश्वर मुझे पापी पर कृपा करो। स्वतन्त्र (निर्गल) और साम्यवादी दोनों ध्यवस्थाओं में भीषण दुर्गुण है और यह समझ नहीं है कि सम्पूर्ण मानवता किसी एक को स्वीकार कर ले। हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपनी मानवता को सुदृढ़ करें, अपने विश्व को नवीनता प्रदान करें, महगुप्त करें कि जिस विनाशकारी दुस्वप्न के बांगुल में हम छटपटा रहे हैं वह यथार्थ नहीं है। हमारी वर्तमान यज्ञया एक नये संसार के जन्म से पहले की पीड़ा है। इससे अधिक निरिपथ और कुछ नहीं है कि इस पृथ्वी की अनेक अन्य सम्प्रदायों के समान इस सम्प्रदाय का भी अंत होगा। कितने समय तक यह सम्प्रदाय बनी रहेगी बताया असंभव है, जिस प्रकार पादसी की उम्र की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। हमारे ही प्रयत्नों पर निर्भर है कि यह सम्प्रदाय अताविश्यों तक रहे या समय से पूर्व पतित होकर अकासमृत्यु को प्राप्त हो। वैदिक बुद्धि और मृत्यु की अनिवार्यता जैसी प्रथी अनिवार्यता सम्प्रदायों के साथ नहीं होती। हमारा प्रयास बीसा पड़ गया अतुलासन कम हो गया हमारा धार्मिक धर्म विनष्ट हो गया तो हमारा अन्त हो जायगा। निर्णय होना 'विलिप्तावस्था में आत्महत्या'।

जिस युग में हम रहते हैं उसकी प्रवृत्तियों को ग्रहण करने उस युग की महत्ता समझने हमारे लिए प्रस्तुत उद्देश्यों को महगुप्त करने और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रबलनीय होने पर ही जीवन का कोई अर्थ है। हम पूर्वनिर्णयकार के अद्ययय और नही हैं। इतिहास अत्यधिक की नहानी है। इतिहास में कोई वैदिक विकास नहीं हुआ और मानवता अपने अतीत को स्थावर नवीन हो जाती है और साथ ही इसमें किसी नवीन और अज्ञात का विकास भी होता रहता है। प्रायः हम अपने ही मस्तिष्कों और हृदयों के बल पर नये विचारों से प्रारंभ करना है।

३ टेक्नोसॉजी : स्वामी नहीं, सेबक

हमारे मन में यह मानने की भावना उठती है कि टेक्नोसॉजी की प्रगति ही वास्तविक प्रगति है और भौतिक सफ़लता ही सम्पदा का मापदंड है। यदि पूर्वीय देशों के निवासी मशीनों और तकनीक के प्रति आकर्षित हों और पश्चिमी राष्ट्रों के समान उनका उपयोग बिनालौघ औद्योगिक संस्थानों या सैनिक संस्थाओं की स्थापना में करने लगें तो वे अग्नि राजनीति में उभरकर आएंगे और मृत्यु का खतरा मोस से सेवे। वैज्ञानिक और टेक्नोसॉजिकल सम्पदा में अन्धे घबहर और अन्धी संभावनाएं हैं और साथ ही बड़े-बड़े खतरे और सामथ भी हैं। मशीनों का प्रमुख स्थापित हो गया तो हमारी सम्पूर्ण प्रगति व्यर्थ हो जाएगी। हमारे सामने की समस्या सार्वभौम है। पूर्व और पश्चिम दोनों के सामने एक ही खतरा है और दोनों का अविष्य समान है। बिनाम और टेक्नोसॉजी न अच्छे हैं न बुरे। धार स्वकृता उन्हें निषिद्ध करने की नहीं बरन् निर्बंधित रखने और उचित स्वाम पर स्थापित करने की है। वे प्रभु हो पायं तभी खतरा है।

उस मुहूर बुझने घटीत से लेकर जब मानव ने पहला परवर का प्रौढार बनाया वा सारे मुकों को पार करते हुए धाक तक—जब मानव ने सारे संसार पर वैश्वीय का ज्ञान बिछा दिया है और आकास से बम गिराकर बुनियावर के सहर्तों का विनाश करने की योजनाएं बना डाली हैं—मातृसजीवन की यात्रा भौतिक विजय और पौष्टिक उपलब्धियों की कहानी है। कमल कृषी पहिपा फाबड़ा हल नाव 'सीवर' घिरी इंजन अस्तर्जमन इंजन अमिक बिकास के धर्म हैं। वैज्ञानिक रूप में नाभिकीय मजब की शिया अग्नि क आबिष्कार से अग्नि नहीं है। मशीन परार्थ पर मस्तिष्क की विजय की प्रतीक है। वह स्वयं धरने में ही उद्भव नहीं। वह है एक उपकरण जिसका आबिष्कार मानव ने धरने परार्थों को मूर्च्छित देने के लिए किया था। हमारे धारण ही बसत हा ता इसकी अग्नि दायी हमारा है, मशीनों पर नहीं। हमारे धारण छोड़ी हों तो मशीनों का उपयोग अस्वार्थ के निवारण मानवता की दया को मुघारने और आत्मा की परिपक्वता प्राप्ति करने के प्रयत्न में सहायक हो सक्ता है। मोटरकार में ऐसी कोई बात नहीं है कि हम उसे ठेकी स बलाकर वेदन धारमी को मार डालें। बिनाम में ऐसी कोई बात नहीं है वा हमें धरने सहयोगियों पर बम गिराने को बाध्य कर है। मशीनों में स्वयं कोई घुटाई नहीं। उनके बुरा साबित हो जाने वा कारण मही है कि हम स्वयं मुक्त हैं।

मुक्त लोगों का कथन है कि दैनिक जीवन में मशीनों का अविश्वस्य प्रयोग

ही हमारी परिस्थिति का उत्तर है। ऐसा कहकर वे वास्तव में प्राकृतिक सम्मता की प्राथमिक टेबल रचना, जीने की प्रतिमोगिता व सम्बन्धित विन्ता जीवन की अनिश्चितता घनेट नाममात्रों के जीवन की शुष्कता और एकरमता—जिन्हें बंटे पर बंटे एक ही तरह के काम मशीनों की तरह करने पड़ते हैं—हमारे मनोरंजनों को उनेत्रक प्रकृति और बेहद टेबल रचना व काम के पूर्व काइनवासी माबाओं के प्रति समाज की ओर इषारा करते हैं।

धर्म की बचत करनेवासी पुरानी तरीकों का उपभोग मानव की शक्ति के भीतर ही किया जाता था। मानवीय नियंत्रण से मुक्त हो जाने के बाद टेक्नॉलॉजी अपना धर्म खो बैठती है और उहूँ पर उपार्णों की विजय हो जाती है। प्रौद्योगिक शक्ति से पहले धारणी मशीनों को नियंत्रित करके बलुण तैयार करते थे। वे अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। अपने काम को वे धर्म के समानुस्य समझते थे। ऐसे काम के बारे में हीयत का कथन है 'नृत्य के अङ्ग-भाजन में लेकर स्वापत्यकता की विस्मयजनक विस्मयकाय कृतियों तक य सारे काम यत्र की योगों में घाते हैं' 'किया स्वयं मेट है' इस उपलक्ष्य में मेट 'ओ केवल एक बाह्य बलु न रहकर आन्तरिक बलु हो जाती है' एक धार्मिक विदाधीनता है और यह प्रवास आत्मबनमता को नकार कर अन्तर्वाणी और कल्पनावासी उहूँ की पूर्ति करता है तथा बाह्य जगत् के लिए प्रस्तुत करता है।"

टेक्नॉलॉजी की सम्मता में जहाँ हम सम्पूर्ण के एक घंघ पर ही ध्यान देते हैं, हमारे काम को धारणा का संस्पर्ण नहीं मिलता। उत्पादन की रचना बढ़ाने की होड़ में कारखानों में काम को इतने छोटे-छोटे घंघों में बांट दिया जाता है कि कुममता धरवा बुद्धि की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इस पुनरावृत्तिवासे नाम से करोड़ों कामगार धरवा एक धीर एकरमता में डूब चुके हैं। कामगार अपनी व्यक्तिगत प्रकृति खो देते हैं और चेतना की सतह पर पीबित रहते हैं। हम मानव के सबधेष्ठ धर्म का प्रकामन नहीं करते। उच्चतर मानवों के लिए उल्लुके इस युग में हम सरल धीर परिचय जीवन के अनिवार्य मूस्य को नजरअन्दाह कर रहे हैं। किसी व्यक्ति-विषय का महत्त्व उसकी सम्मति में नहीं बल्कि जीवन मापन के ढग से धांका जाता है। मौलिक आवश्यकताओं और सांसारिक भागी धार्णों के संघर्ष में भारत ने अन्तोप धीर धारमसंघर्ष के मूस्य पर जोर दिया है। इस टेक्नॉलॉजी-सम्मता में उत्पादक या उपभोगता किसी भी हैसियत से जो जाने वाला धारणी व्यक्तिगत हो जाता है, अपनी जड़ खो बैठता है, अपने स्वाभाविक संघर्ष से धरवा या पहुँचता है और मानो शून्य व्योम में फेंक दिया जाता है।

व्यक्ति के असीम सूक्ष्म मानव के प्रतिमान और प्रविष्टियों और आत्मा की स्वाधीनता को टेक्नोलॉजी के युग में खरबित करना प्रायोगिक काम नहीं है। आत्मा के पुनर्जीवन—जिसका अर्थ है मानव की गहराइयों में आत्मा की परिपूर्ति और जिसमें अपने से ऊपर उठकर मानव अपनी सत्ता के साथ से जुड़ जाता है—से ही यह संभव है।

दुर्भाग्यवश विज्ञान और टेक्नोलॉजी की उपलब्धियों से प्राकृत्य हमारे युवक कुछ नेता मानव को एक विद्युत् यांत्रिक भौतिक और स्वयंचालित इच्छाओं से निर्मित प्राणी समझते हैं। वे मानव की भौतिक प्रवृत्तियों पर तो जोर देते हैं, किन्तु उसके अन्तर्ग में उपस्थित उच्चतर पवित्रता को भूले-से सगते हैं। हमारे युवक अनेक लोगों का रोष है आत्माहीनता। वे प्राथमिक रूप से विस्थापित हैं, उनकी सांस्कृतिक जड़ें उखाड़ चुकी हैं। वे परम्पराहीन हैं। और चूँकि उनकी जड़ नहीं हैं, इसलिए वे गहरा अकेलापन महसूस करते हैं और अमन नहीं भी मैत्री की तलाश करते हैं। वे फिरकेपरस्त बन जाते हैं। अन्तर केवल यही है कि प्राकृतिक फिरका पिछी भी पैर से बढ़ा है। यह महाडीनों में फैला है। पृथ्वी पर स्वर्ग के मये मसीहा उन सभी निराशियों का घोषण कर रहे हैं जो उदर हो चुके हैं या जिनमें शून्यवाद की अपरिमित निराशा भर कर चुकी है।

अपने भौतिक वातावरण को काबू में रखने की हमारी असीमित क्षमता से नहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है स्वयं अपने और अपने सहयोगियों के साथ हमारे सम्बन्ध। विवेक की उपस्थिति हमारी मानवता की गारंटी नहीं है। मानव बनने के लिए हमें विवेक के प्रतिरिक्त किसी और बस्तु की आवश्यकता है।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी को ही नहीं सम्पत्ता का आधार नहीं बनाया जा सकता। वे एक गुदगुद नीब का निर्माण नहीं कर सकते। संभाव्य विज्ञान को दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम किसी मये आधार पर जीना सीखें। हमें निश्चय ही प्राथमिकता की शोष करनी होगी। मानवीय व्यक्तित्व का अनादर करना होना सभी प्राथमिक परम्पराओं में व्याप्त पावनता की प्राप्ति को प्राप्त होगा और इसके उपयोग से एक नव मानव का निर्माण करना होगा जो इस नवीन प्रवृत्ति के साथ अपने प्राविष्टता उत्तरों का प्रयोग कर सके कि वह प्रवृत्ति को नियंत्रित करने से अधिक महत्त्व प्राप्तियों की संपूर्णता का क्षमतावान है। मानव को मानव की, उसके भीतर की अज्ञानता की सेवा में सीट प्राप्त चाहिए। मानवीय चेतना का ध्यान रखना प्राथमिक है।^१

^१ 'मेरे मन के अनुसार मानव अज्ञान और अज्ञानता का शत्रु है। मध्य अस्तित्व के रूप में V १३।

मानव-चेतना क्या कुछ प्राप्त कर सकती है। इसके प्रतिरिक्त ये उपसंक्षिप्तों कठोर-मासिक और वैज्ञानिक अनुशासन पदापातहीन सत्यनिष्ठा समर्पण की भावत और रचनात्मक वस्तुतापीयता की सुपरिणाम है।

विज्ञान और धर्म का संबंध ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण है। बीते इमान में वैज्ञानिकों ने धार्मिक और राजनीतिक प्रथाचार सह है। म्यार्दानो बूतो को पिठा पर पीबित बना दिया गया था और वैज्ञानिकों को कैद करके फासी के लिए धमकाया गया था। प्रायः भी वैज्ञानिकों का राजनीतिक आच या नैतिक बहिष्कार की धमकियां देकर सत्य कहन स रोका जाता है। धार्मिकीय ऊर्जा का स्वागत प्रायः इस रूप में नहीं किया जाता कि प्रकृति पर मानव की विजय में यह एक नय युग का आरंभ है और इसकी शक्तियां मानवता की भलाई के लिए हैं। इसके विपरीत इस मानवता के लिए नया अंतरा समग्र जाता है। इसका कारण है दूर राष्ट्रीयतावाद का धर्मित प्रभाव। वैज्ञानिकों को सार प्रथाचारों का सामना करना चाहिए। उन्हें नटिबद्ध रहना चाहिए कि वे विज्ञान की सभाई को कायम रखें और इसके उचित साधन-उपयोगों से इसे नीचे नहीं बिरने बने और सम्मता के प्रथम ही विभास के लिए विज्ञान का उपयोग बनन म रोके। मय ही ईश्वर है और सत्य की प्रेक्षा ही ईश्वर की सेवा है।

धर्म और विज्ञान दोनों प्रकृति की एकता की पुष्टि करते हैं। विज्ञान की केन्द्रीय धारणा ही धर्म का अन्तर्धान भी है कि प्रकृति बोधगम्य है। प्रकृति की प्रतियाधो का अध्ययन करते समय हमें उनकी व्यवस्था और सामग्रस्य प्रमाथित करते हैं और ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास होता है। मॉट टॉमस का कहना है "ईश्वर-निमित्त वस्तुओं में हमें—सबने पहले—ईश्वरीय विवेक की एक म्भक मिस सकती है, क्योंकि किसी हक तक उसकी क्षति सभी वस्तुओं में मौजूद है। हमें ईश्वरीय विवेक को अपवादों और अतिकल्पनाओं में नहीं बरन् प्रकृति की व्यवस्था और स्थिरता, सुन्दरता और सुगुणता में देखना चाहिए। ब्रह्मांड का अस्तित्व लगभग एक प्रारंभियों से है, और इस कल्पना-मान में कि सम्पूर्ण इतिहास का आरंभ ब्रह्मांड के किसी स्थान पर किसी समय घटित एक अपूर्व घटना से हुआ है सामान्य मनुष्या की भी वैज्ञानिक चेतना म तनाव भा जाता है। प्रारंभ स ही ईश्वर पृथ्वी से संयुक्त है।

१. एस्पेकर ने कहा था : 'धर्मो महा के सत्र हिंसात्मक उपायों से हमारे मालस को गुनाम बनानेवाला बर्ष करन् मक्षिण पर एव के बह से बा बनेवाल हैं। विरनेवा का कफन है : "विधरो को सत्या हास मरी ध्यत्वा की म्भाम्भ इत्य विज्ञान विष अत्य है।" सम्भवेय बने मालस—एव ही विधरी इत्य है अन्ध्र म्भो भारत का म्भो अन्धर-अन्ध है।

बटे का कथन है कि क्रैस्ट ने मानवीय ज्ञान की सभी शाखाओं का सम्बन्धन किया कोई भी अत्योपजनक उत्तर नहीं पाया और सत्य की खोज करता हुआ 'अकुत्सापि' बसुह पर आ पहुँचा। वह बिस्वा पढ़ता है, 'और धर में वहाँ आ पहुँचा हूँ। मुझे। अर्थ ज्ञान अभिप्रेत है और मैं पहले ही जितना बुद्धिमान हूँ।' उसका ज्ञान अर्थ सिद्ध हो जाता है और जो निरर्थक। वह निराश हो जाता है। वह एक प्राचीन पुस्तक को खोजता है, और उसकी पाँचों सुलेखों की मुहर— एक-दूसरे पर उभरे खे जो त्रिभुज जो त्रिभुज और उच्चतर, प्रकृति के संयोग के प्रतीक हैं—पर पड़ती हैं। उसमें परिवर्तन हुआ है और वह बिस्वा पढ़ता है 'बाह। हर क्षण कितना नया ईदवरीय नवीन जीवन प्रत्येक भावना में भरता आ रहा है! मुझे जीवन का उदय फिर महानुभ होने लगा है। कितनी ईश्वर ने यह विज्ञान बनाया या क्या?' पृथ्वी और ईश्वर तुम मिले हैं।^१ दुस्य अन्त की एक नई समझ उससे आ जाती है। उसकी यात्रा में उसे प्रथकार में पहुँचा दिया किन्तु उस क्षण भी उसके समक्ष एक नया प्रकाश ज्योतित हुआ।

विज्ञान प्रयोगविद्ध है यह अडिवासी नहीं है उदार है। जिन धार्मिक मूल्यों को स्वीकार करने की आवश्यकता है हमने की जाती है उनमें और धर्मिकसमीय रुचियों में बड़ा अंतर है। धार्मिक मूल्यों का आधार है अनुभव—भौतिक संसार का नहीं बल्कि धार्मिक मयार्थ का अनुभव। विज्ञान के सिद्धांत भी अनुभव द्वारा प्रमाणित होते हैं। अनुभव का अर्थ केवल ऐन्द्रिक अनुभव या चिन्तनकार्य तक सीमित नहीं है। सामाजिक पठनाएँ और साध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि भी अनुभव ही हैं।

धार्मिक मूल्यों के समान धार्मिक मूल्यों को भी अनुभव द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। मानव-स्वभाव-रूपी कश्च मान को निर्दिष्टता नगता और प्रेम ने बना दिया जाय तो ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। धार्मिक धर्मार्थों का उद्देश्य है धार्मिक परिणाम तक पहुँचना। अन्तर्दृष्टि का कथन है धार्मिक विवेकपूर्ण विचारधारा का अन्तर्दृष्टि में होना है।^२

पूर्व में धर्म को अनुभव या जीवन की संज्ञा ही गई है। यह विचारधारा धर्म की देवी के धार्मिक लोभी द्वारा धर्मिशास्त्र स्वीकार की जा रही है। धारण्यता धर्म की नहीं कार्य की है। 'ईश्वर ईश्वर' विष्णुधर्मार्थे लोभी

१ "अन्तर्दृष्टि का प्रेरण मूल्य में होता है और मूल्य में ही प्रेरण गतिविधि होती है।" — मूल्य की शक्ति में धर्म-धर्म लोभिय नहीं हो जाती, और धर्म-धर्म अर्थ है। रूढ़ि के धर्म-धर्म-धर्म है। — इन्द्रधर्मार्थे धर्म-धर्म लोभी है।

२ विष्णुधर्मार्थे धर्म-धर्म लोभी है। (१९९३)।

की नहीं ईश्वरेश्वर का पालन करनेवाले लोगों की प्राबल्यवन्ता है।^१ तास्मद् का अर्थ है "यह है कि मेरा नाम भूमि जाय और मेरे आदेशों का पालन करे।" त्रितीय विश्वयुद्ध में विभिन्न ब्रह्मनिपायी पंथ की अविश्वसनीय गहराइयों तक जा पहुँचे थे और इस प्रकार प्रत्यक्ष सिद्ध हो गया था कि हमारे धार्मिक विश्वासों की प्रकृति अस्थिर नहीं है।

परम पिता की आज्ञा मानने के लिए जिज्ञासुता आवश्यक है। जगत् की जो प्रत्यक्ष मानवजाति में चलती जा रही है। "और परम पिता परमात्मा ने कहा मैं तुम्हारे भीतर एक भई जेठना भर दूंगा और मैं उनके धरती में परब्रह्म का बिना निकालकर हाइ-मार्ग का दिम रज दूंगा।"^२ मूल्य और ईमानदारी पवित्रता और गंभीरता, क्या और क्षमा जैसे गुण निस्सुहृता से उत्पन्न होते हैं, और निस्सुहृता द्वारा ही धार्मिक परिवर्तन संभव है। अब हमारी सामंताओं और अधिभाषाओं का हमपर शासन है, हम अपने पड़ोसी का अपमान करते रहेंगे उसे शान्ति से न रहने देंगे अपनी हिंसात्मक प्रवृत्तियों का प्रयोग और मोक्षपथा से परिपूर्ण संस्थाएँ और ममानिर्मित करते रहेंगे। धारमकेन्द्रीयता के स्थान पर ईश्वर केन्द्रीयता की स्थापना से शान्ति और जीवन-सौख्य की प्राप्ति होती है। अर्थात् चिन्तन और अज्ञानता द्वारा ईश्वर की प्रकृति को गहराई तक जाना जा सकता है। धर्म का मूल तत्त्व धार्मिक सिद्धान्तों अथवा ऐतिहासिक घटनाओं की बौद्धिक स्वीकृति नहीं है। यह तो उन अनुभव की तैयारी मात्र है जो हमारी सम्पूर्ण सत्ता को प्रभावित करता है हमारी अज्ञानता पीडा हमारी संकुर और निष्कर्म सत्ता की व्यर्थता की भावना का अन्त कर देता है। सेंट एम्ब्रोस का कथन है "परम पिता परमात्मा अपने उपदेशकों की रक्षा तर्कशास्त्र द्वारा नहीं करता चाहते थे। धर्म केवल मूल-चिन्तन नहीं बनने सत्य के लिए पीड़ित होता है। हमारा विश्वास है कि सत्य प्राप्त हो चुका है, मूर्तिमान है उसके मानक निर्दिष्ट किसे जा चुके हैं और अब मानव का केवल यही काम रह गया है कि निर्दिष्ट परिपूर्णता के अनुसंधान गुणों को व्यक्त करें किन्तु कुछ है कि हम विश्वास में मानव-मन की धार्मिक विश्वासाधारण को संयुक्त बना दिया है। यह तर्कसंगत धारमनिष्ठ का अर्थ है कि एक युवक नकारात्मक कर देता है कि धर्म धार्मिक 'एडवेंचर' भी है।

१ अर्थात् अविश्वसनीय ने २ अर्थात् १९२२ को आन्तर्गत से अपने पुत्र के नाम पर मेरे सिद्ध था "धार्मिक धर्म आर्थिक या वैज्ञानिक नहीं करे अन्तर्गत है और धार्मिक को अपने अनुसंधान कर देता है।" अर्थात् धर्म केवल धर्म के नाम पर अविश्वसनीय है। अर्थात् १९२२ (१९२२) पृष्ठ १००।

२ 'दिव्यता' XI. १३ और २६।

पूर्वीय धर्मों में मानव-जीवन की स्थिति एक अनुभव है जिसमें उत्तरी सत्ता का प्रत्यक्ष स्तर उच्चतम तम तक पहुँच जाता है। हम प्रपञ्च में प्रकाश में पहुँचते हैं। हम स्वयं को एक मार्बनीय उद्देश्य में बँधना हुआ पाते हैं। हमारी सत्ता सम्पूर्ण हो जाती है। हमारे अकेलेपन का अन्त हो जाता है। हम अपने चारों ओर के संसार के विचार नहीं बल्कि स्वामी बन जाते हैं। जिस तल दिल्ली धार्मिक इष्टा को बुद्धि प्राप्त होती है और वह अपनी सत्ता की गहगहई में पहुँचता है। उगी दास वह एक नये मार्ग पर चल पड़ता है। बुद्ध या ईसा हमें नया जीवन प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं और हमारे मुक्तिदाता अथवा रक्षक हो सकते हैं। उनके जीवन और उपदेश इस परिवर्तन के उदाहरण हैं। इन्हींका पालन करके हम अपने पहले जन्म और प्रकृतिप्रदान बंधनों को तोड़कर अपनी भौतिक सम्पूर्णता से ऊपर उठ सकते हैं। जब हमारी चेतना सामान्य स्तर से ऊपर उठ जाती है हम अज्ञेय को जानने समते हैं और इसी अधिक प्राम्णता का अनुभव करते हैं कि जब आत्मा अपनी ही गहगहई में अपने जीवन और सम्पूर्ण मर्यादों के आधार को प्राप्त कर लेती है तब समय के अपने आत्मसंसार को किसी भी भाषा में व्यक्त करना असंभव है।

परम सत्ता के प्रति यह आपूर्ति जिसकी चर्चा इष्टा करते हैं अचर्चनीय है।^१ सुरबिन्दु विनेम्टाइन के दृष्टा में इस अचर्चनीयता को प्रकृतित तो किया जा सकता है। दृष्टो में बाधा नहीं जा सकता। इस विषय पर ब्रह्मसंज्ञक का श्रेष्ठ बयान है "धर्म प्रकृतित जानिबों का स्वाभाविक गुण है। फिर भी माताएँ अनेक बानें लौकती हैं जिन्हें वे कह नहीं पाती। इस प्रकार यही अनेक बानें अन्तिम धार्मिक प्रमाण हैं जिनके बर कोर् तक नहीं है।"^२ इस अनुभव को प्रतीकों में व्यक्त किया जाता है जो इच्छाओं के ज्ञान और विश्वासों के अनुसार प्रतीक अनेक प्रकार के हो जाते हैं। फिर भी हिन्दू बीड 'माई का मुखी अध्यात्मवादिषां सभी का गुण अनुभव एक ही है। स्वर्गीय जीवन दृष्टका अर्थ है कि 'यम समय और राष्ट्रीयता के बावजूद अध्यात्मवादिषा के शास्त्रों में आरक्ष्यजनक सृजनित है।'^३

१ 'इष्टा का मत' में कहा है 'अज्ञेय सत्ता और विज्ञान अज्ञेयों की अज्ञानता के अन्त का अन्त गरीब रहता है। हमें यह उम्मेद है कि उम्मेद एक अज्ञेय-सत्ता का अन्त है केवल एक मात्र अज्ञेय। अज्ञेयता के अन्त का अन्त विचार उम्मेद अज्ञेय में लगी अज्ञेय। अज्ञेय अज्ञेयों की एक अज्ञेयता का अन्त हो गया होगा तो वे अज्ञेय हो जाने क्योंकि अज्ञेय के अन्त ही। अज्ञेय अज्ञेयों में अज्ञेयता का अन्त है।

२ 'इष्टा का मत' में—'अज्ञेय अज्ञेय' अज्ञेय का अज्ञेयता ३३ ३३३ ३३ ३३३।

३ 'अज्ञेय अज्ञेय' में—'अज्ञेय' ३३ ३३।

४ 'अज्ञेय अज्ञेय' में—'अज्ञेय' ३३ ३३।

प्रथम के उद्भव से जब सम्पूर्ण अस्तित्व अथवा सम्पूर्ण आत्मा के अनुभव का बौद्धिक प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया जाता है तो वह प्रतीक मात्र होते हैं। अवस्था को पूर्वोक्त समय के दौरान पर व्यक्त नहीं किया जा सकता अस्तित्व को अवलोकन को मत्ता के दौरान पर—अर्थात् समय-व्यक्त के प्रतीक म—सभी प्रकार व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी वे अस्पष्ट नहीं हैं। कुछ धार्मिक विचार गंभीर तम अस्तित्व के परिचय हैं। प्रतीक घोर विस्थापन का उदाहरण अन्वेषण के लिए उदाहरण के रूप में दिया जाता है के स्वयं उपासना की वस्तु नहीं हैं।

धार्मिक विद्वानों के विकास का प्रथम प्रारम्भ के अस्तित्व को किसी वस्तु में परिचयित करना। जो कुछ हमारे अस्तित्व का पहलू बिना हमें या हमें हमें एक वस्तु में परिचयित कर देते हैं जिसे हम स्वयं पहलू करते हैं। कुछ अनुभव ज्ञान का एक भाग बन जाता है। ईश्वर के बारे में मानव की धारणाएँ स्वयं ईश्वर नहीं हैं। ईश्वर के बारे में धार्मिक विद्वानों का परीक्षण प्रथम के हो तथ्यों अथवा अनुभवों द्वारा होता है। उन विद्वानों का अन्तिम घोर साक्ष्यमिष नहीं समझना चाहिए।

ब्रह्म बना घोर कर्म के धर्म से पर है क्योंकि बिना बिना-व्यापी इतिहास का प्राचीनिक करता निरंतर रहना और धारणाएँ करता है। किन्तु संसार का अर्थ अन विज्ञान करता है वह आत्मा का ही प्रकाशन है। सम्पूर्ण प्रकृति और जीवन ब्रह्मम है।

मगर ईश्वर की इच्छा का परिचय हैं कहने का अर्थ यह नहीं है कि उसकी इच्छा अर्थ है। इसमें केवल नहीं धारणा होता है कि ब्रह्मांड की सम्भावनाएँ निरसीम घोर अर्थ है। इसका अर्थ यह भी है कि सृष्टि का स्वभाव परम नहीं बन सकता। ऐसा संभव होता तो शोषण ही परम हो जाता। जूनि मानव ईश्वर के समान है घोर उसकी ही प्रतिवृत्ति है—ब्रह्मा उनका अस्तित्व ही न रहता—इसलिए मगर ईश्वर की छवि है। जूनि मानव ईश्वर से मिल है इसलिए मगर भी ईश्वर से मिल है।

सभी धर्म पढ़ाई में प्रेम करने का उपदेश देने हैं, किन्तु प्रेम करने की क्षमता या लक्षणा कठिन काम है। आध्यात्मिक जीवन का विकास ही वह काम है जो पढ़ाई में प्रेम करने की क्षमता प्रदान कर सकता है, फिर चाहे हम स्वभावतः बसा न कर सकें। 'परिचित घोर में वे' म कहा गया है, 'तुम्हारे बाप मुझे और मुझे कहाँ से प्राप्त है? तुम जाहो भी तो तुम्हारे य मुझे यहाँ से नहीं जाने।' मानवों की परम्पर-विराही आजादाओं में ही मानवों में उदात्तता घोर सचों का जन्म होता है। हमें अपने भीतर अनुभवना रखना आवश्यक है। मेट टेक्सा के शब्दों में गंभीर अर्थ है, "इस पूर्वी पर तुम्हारे घोर के अतिरिक्त ईसा का

घोर कोई घरीर नहीं है। तुम्हारे ही पांव हैं जिनके बस चलकर वे मसाले करते रहते हैं। तुम्हारे ही हाथ हैं जिनसे वे घापीबाँध बेते हैं।” भठारहवीं शताब्दी के महात्म्य महात्मबाबी विमिषम जी ने कहा था 'धर्म से भेदा मतसब उस स्वामात्मिक क्रोमनता से नहीं है जो प्रत्येक व्यक्ति में उसकी घरीर रचना के अनुसार कम या अधिक मात्रा में उपस्थित है। इससे भेदा धर्म है विनेक घोर धर्मनिष्ठा परमात्मा रित आत्मा का एक अधिक व्यापक सिद्धान्त जिससे हम प्रत्येक प्राणी को ईश्वर द्वारा निर्मित प्राणी मानते हैं और उसके प्रति क्रोमन देयायु और उदार हो जति हैं, और ऐसा हम ईश्वर के सिव ही करते हैं।" बामिक पयहिष्णुता के कारण इस दुनिया ने बड़े दुःख उठाये हैं और रणत बहामा है। हमारे समय की राजनीतिक घसहिष्णुता ने भी—जो किसी भी बामिक संघर्ष के समान दूर, बिस्व व्यापी और हीली है—बामिक नामा घाढ़ मिया है जो मध्ययुग के धर्मयुद्धों की याद दिमाता है। धर्म के नाम पर ईसाई मनाषों ने पूर्व पर आक्रमण किया था। किन्तु मंभीर बामिक धास्वा भी उम्मत घसहिष्णुता से रसा नहीं कर सकती। धर्मयोद्धाओं का बिचार था कि वे मुसलमानों के खुदा के बिरेह और ईमादों के ईश्वर क पक्ष म लड़ रहे थे। वे इस बिचार को संभव ही नहीं समझते थे कि मुसलमानों का खुदा वही ईश्वर हो सकता है जिसपर उनकी अपनी धास्वा है।^१ धरुमर लीम लोचने हैं कि धरुने धर्म के प्रति बघावार रहकर वे ब्यभिगत रूप से कुछ भी करने को स्वतंत्र हैं। हमारी महत्वाकांक्षाएँ बढ़ जाती हैं पाने सिग

१ कप कघनि किना धर्मे सताधरयो बरि ।

प्यवारवरथं बरुधद्यमिनि रधिः मुदरानभू ॥

किसी भी धर्मनुयायी का प्रवृत्ति बरि सताधर के प्रति होनी है जो बर प्रमनन को प्रति में बिस्व ही उरुत होना है। परी र प्यकोल डीक है।—मुनेष आर्य-मनाषा (१४३) पृष्ठ १२ ।

२ धर्मयुद्ध के र गालदार भा रथीने ब लोम्यक धरने बिचार को रन सफूर्त राधर से लयाय धरन है मरुभारमधिक बिरेमिर्दा के संघर्ष से बिनाय पूय लामन्य है। "पूर्व और पश्चिम के धारमिक मानन्ये और मन्ये की लयाय कयला में जिसने हयारी लामन्य का बरुधर दुष्य है ईश्वर धर्मयुद्ध क दुःखर और विनासाकारी बरुधर था। लन रानाधिश्य पर रडिगय कयन मुन रडिगयलार को बरु रडिगय प्रमनन के लामन्य दुःखर की हयय है कि गालन प्रवृत्ति किनी मरुधिय है। किनाय बरुधर मरुधय या किन्तु किनी कय प्रमनन कयनी कयिक कयेकिणय की किन्तु किमन्य कयकयन । लयने को उरुधिग कयने-मिष लमनन का बरुधर और लरुधर मानन्य को कयन लोम्य, दुःखसाहय और कययय ने बरुधररुतों को दूरिन कर दिया था । लयने बरुधर कयन ईश्वर के लामन्य पर कय लमने घसहिष्णु कार्य से कयिक दुःख म का और वरी उरु रडिगय के बिरेह कयकर्म था।"—'२ दिरही बरुधर र कयमेरु' पयव २ (१४५५), पृष्ठ ५५ ।

महीं बल्कि अपनी धार्मिक संस्थाओं के लिए। इन प्रक्रिया को विनियम लाने में धर्म को स्वयं बिल्कुल ईश्वर की ओर धारणा' कहा है। इत्युक्त की सारी साक्ष्याएं और पक्षपात व्यक्तियों के लिये बने रहते हैं और किसी तथ्याकथित धार्मिक उद्देश्य से कुछ जाते हैं। "इन धर्म प्रवृत्ति पुराण और धर्याचार धर्मेक कावों को धार्मिक योग वा बाना पहनाकर पवित्र बना देते हैं प्रकृति स्वयं बिल्कुल तगदास्यर सम सती है।" ईश्वरभक्ति के नाम पर इन धर्मग्रन्थों और धर्याचार को भी नैवार रहते हैं। सगता है कि मानवता किसी धामुहित पापकर्म की बाध हो गई है और कुदृश्य करती सभी का रही है। सगता है कि कोई ईश्वर मानवता पर अनुप्य और उसकी परिस्थितियों पर, हाथी हो गया है। और ईमानदार धारमियों के समस्त सत्यवाचों और सविष्ठाओं का उपयोग पुष्कलों में करता जमा का रहा है। यदि प्रेम ही ईश्वर है तो ईश्वर ईश्वर महीं हो सकता। यदि ईश्वर के प्रकाश से ही प्रत्येक मानव धामुहित होता है तो ईश्वर न अपनी सत्ता का प्रमाण भी प्रस्तुत किया है तो हमारे धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों के अनुयायियों को भी ईश्वर का प्रेम प्राप्त है। ईश्वर के रहस्य को जानने के धर्मेक रास्ते हैं।

धर्मोत्थापूर्वक विचार करने तो धर्म धर्म मीन और बाधासता से समान है। एक ही धार्याचार पर विभिन्न धार्मिक परम्पराएं स्थित हैं। इन सामान्य धार्याचार का भोग इतिहास से परे है, धार्याचार है, इसलिये इनपर सबका समान अधिकार है। विभिन्न धर्मों के इच्छाओं के धर्मुधर्मों में समान तत्त्व मिलते हैं। विभिन्न सभों के लिये हम एक ही तत्त्व तक पहुँचना चाहते हैं। धर्मुधर्मों की धर्मोधर्मों और नियमों के प्रतिबंधों को धार कराने के बाध सभी को समान धार्याचारिक जीवन प्राप्त होता है। इतिहास के धर्मुधर्म द्वारा प्रमाणित धार्याचारकृत सिद्धान्तों की सार्वभौमिकता ही धर्मुधर्म की भाषा है। इसमें फिर उमी गंभीर सत्य पर प्रकाश पड़ता है जिस पर पूर्वोक्त धर्मों ने सर्वेक ओर धिया है—धर्मों की प्रत्यक्ष धर्मुधर्म में एक प्रकृत्यन एकता है।

इसलिये ससार में भी धर्मेक ऐसे गंभीर विचारक हुए हैं जो धार्याचारिक धर्मुधर्मता पर विश्वास महीं करते थे। यूसा के निकोलस पैर-ईसाई धर्मों में भी सत्य के सत्य मानते थे। वे 'कॉपेन्हीगेन्सिया धर्मोविटोरम'—धर्मुधर्म प्रत्येक धर्मुधर्म दो धर्मोधर्मों के धर्मुधर्म-विन्दु पर स्थित है, और इसी कारण जीवन तथा प्रभावशाली है—पर धार्याचार करते थे। ईश्वर सार्वभौमिक धर्मुधर्म है और समुत्तम

१ 'धर्मुधर्म', IV २३।

२ 'धर्मुधर्म' I ३।

३ 'धर्मुधर्म' XIV २०।

वस्तुओं में भी ध्यात है।^१ प्रोफेसर धार्मिक ज टॉपनबी^२ ने लिखा है 'मेरा विश्वास है कि मेने जीवन-नाम के चार उच्चतर धर्म वास्तव में एक ही 'बीम' के चार रूप हैं घोर यदि हम स्वर्गिक संगीत के चारों प्रकार एकसाथ समान स्पष्टता से पृथ्वी पर एक मासब को सुनाई पड़ें तो योना प्रसन्न होया कि उसे कर्कश ध्वनिया नहीं मधुर संगीत सुनाई पड़ रहा है। वे विष्णुवाय नहीं करते कि कोई एक धर्म ही आध्यात्मिक मार्ग का प्रत्यक्ष घोर प्रतिबिम्ब उद्घाटन है। दूसरे धर्मों को यह कहकर धम्बीकार करना कि हो सक्ता है 'ईश्वर ने उन्हें भी स्वीकार किया हो घोर के भी कुछ मानवीय धारणाओं के समान ईश्वर के रहस्य का उद्घाटन करने हों मेरी दृष्टि में ईश्वरनिष्ठा है। उन्होंने साक्षमाक्ष का कथन उद्घुन किया है "इतने महान धर्मों का ज्ञान एक ही रास्ते पर समझ नहीं हो सकता" धार्मिकविषय विविधय तेष्वित् बूसरे दायों म यही बात कहते हैं "मेरे ईसाई विचार या धाधार या धागापना की प्रभाविया में जो कुछ भी धाधर्म है वह सब उनपर ही उनके भीतर ईसा का प्रभाव है। ईश्वरीय ज्ञान—धर्मान् ईसा

१ ईसा के चारसाह सत्रस मे देवतानिवा को किङक धरिचार में श्रुतिवा च वरुणि करने के बरुवा बरुावस तथा इन्क मरुद के पुनरिर्माण के लिए बरुुदियों को बरु मलय मलयक सी भं। म् १२२० मे हनी के समक 'दादो के दाम' मिस मिलिमिने-एक कोनया बीक कि 'कलेक ल व को अमी मरि के अनुसर धर्म घोर धारवा का जालन करने घोर जारे धर्म के उरोहा का पच लने की ललरव है किन्तु किने की वरुनुवावी को जाजा बरी है कि वरु दूसरे धम-वनिने को कावमय मे बरा टान च रूई हानि च धारिक वरुत पुनये। — ईश्वर ज्ञान अमी १२२४ गुठ १२० पर उरुण।

२ '० धर्म के विषय' रंग २ (१२२४), गुठ ४२०।

३ प्रोफेसर टॉपनबी धर्मान् श्रुति को म्क लार्थ में वरुन करते हैं। हमारे आध्यात्मिक रूप मे है करने है मेरा अनुमान है कि वरिधम तथा लार्थ संघर मानव मे बुर करने का रह है—किङकबराओ, मारुधर और धर्मविरुध धरिणार, के जालन करने का रहे है—और एक वरिध धर्म के अनुवावी बनने का रहे है किमता इत्यम म कम में हुआ है व वरिधम में। मेरा अनुमान है कि वर ईसा-धम हाव को धरिणार मे कान और रोम वरुवा च। कम्क हनी हाव कि धारुिक ईसाई धर्म के वरु-उ लनी वा ललम मरुत का एक मय लने मे मया। मेरा धारवा है और मैं धारवा करता हूं कि ईश्वर धर्म के धा अधर मे ईश्वर का धम वा धारवा वा बाना जाया। किन्तु मेरा यह भी धारवा है धर मे धम्य मे वरु हूं कि हममें ईश्वर का ईश्वर ईश्वर मान-माना ईसा बरुवा मरी रहनी और हम किन्तु ईश्वर की धार प्रमया कि उमह जे ल धरिण करुण है को भी वरुन मरी दिव मरुद। वनी म्क वं वरुवक है। धमका धारवा (ईश्वर को धम वा म्वा केने का वरुव) है कि धर्म वा धारुवक करने वरु वही धरुके धारम और लरुन करने का रं ठा हान रहे है। — धरुम धारवा म्क-मरे (१६ वीज १२२४) गुठ १२१।

मनीह—के बल पर ही इग्रायह प्तनो जरयुम्न युद्ध घोर कल्पयुगियम धन पापित सायों को समझ घोर कहूँ गके ये। केवल एक ईश्वरीय प्रकाश है अपनी मीमा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उसम प्राकारित होता है। फिर भी प्रत्येक को उस प्रकाश की कुछ किरणें ही प्राप्त होती हैं और सम्पूर्ण प्रकाश के धामोत्तम के लिए सम्पूर्ण मानवीय परम्पराओं के सम्पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता होगी।^१

ईसाईधर्म का इतिहास बताता है कि अपने अन्तर्द्वय के समय में उसम प्राकार प्रकाश की प्रकृति थी। वह हमेशा पलंग बातों का महत्त्व देता और अपनी कर्तव्यों को त्यागता भी रहा है। रोमक साम्राज्य को बीडित करने के बाद उसने स्वयं को ठाकामीन व्यवस्थाओं के अनुसार बदल लिया इसम पूर्व रोमक साम्राज्य अपनी पुनर्र्जा सांस्कृतिक परम्पराओं और सामाजिक संस्थाओंवाला बर्बर समाज था। मध्ययुगीन कैथलिक विश्वास कि स्वर्ग के बिना मुक्ति संभव नहीं है प्रब नहीं रह गया। मैं सोचना है कि साठेरा अनुक के साफ-साफ कर्मसे 'द किने कैथलिक' को माननेवाले अधिक लोग होंगे। केमसा है "कामिक प्रास्थातानों का केवल एक सार्वभौम स्वर्ग है, जिससे बाहर किसीकी मुक्ति नहीं है। इस परिवर्तनशील संसार में कृपिया भी बदल जाती है। उदाहरणतः मध्ययुगीन सिद्धान्त कि जिन बच्चों का बपतिस्मा न किया गया वे धनस्तकाम तक मरक वाली रहेंगे। प्रॉपेटीन के शब्द हैं "बच्ची तरह इस बात को समझ लो। समझ बार प्राधमियों के प्रतिनिधित्व बिना बपतिस्मा के यदि कोई नासमझ बच्चा भी इस संसार में जन्मा गया तो उसे सर्वत्र मरक की धमि में जलने का बन्ध मिलेगा।" कैथलिक 'एम्साइकलोपीडिया' के अनुसार ११० इसी में भी गैट प्रसेल्स भी गैट प्रॉपेटीन के साथ पूर्वतया सहमत थे कि बिना बपतिस्मा के बच्चों को पापियों के समान यन्त्रधारण सहायी पड़ती है। काठमिंस प्रॉफ ड्रेक्ट की अधिष्ठित प्रलोत्तरी (१५९९) में कहा गया है कि बिना बपतिस्मा के बच्चों का जन्म 'धनस्त यन्त्रधारण और मरकवास के लिए होता है। प्रायः कैथलिक लोग इस सिद्धान्त को नहीं मानते।

हमें किसी बस्तुपरक सार्वभौम सिद्धान्त की ध्येना नहीं करनी चाहिए। सबके एक प्रकार से सोचने का मतलब है कोई नहीं सोचता। बिस्व-समाज में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता है कि वह अपने अनुसार ईश्वर का समझ घोर ऐतिहासिक तन्त्र तो स्वतन्त्रतापूर्वक बटमार्यों के अनुसार विकसित होते ही जाएंगे। जिस प्रकार किसी 'सिम्फनी' के संगीत की अतिवृत्ता और मधुरता में प्रत्येक स्वर का योग होता है उसी प्रकार प्रत्येक कर्म का योग सम्पूर्ण की समृद्धि में जाता है।

प्रायः के सकटकाल में प्राचरवक है कि समस्त विश्व की धार्म्यात्मिक धर्मिता प्रायः में मिस भायं और महान धार्मिक परम्पराएं अपनी कृपागत विमताओं को मूलकर अपनी प्राचारभूत एकता समझें और उसीमें मौलिक पूर्वनिश्चयवाद का चिराज करने की शक्ति ग्रहण करें। जिस धर्म की क्यरेला यही प्रस्तुत है वह वैज्ञानिक प्रयोगसिद्ध और मानवतावादी धर्म है। इसीसे मानव और उसकी भारता का पूर्ण विकास हो सकता है। मानव के प्रति मानव की अमानवीयता बैसकर यह मौन नहीं रहेगा।

इसाई धर्मानुयायी धर्मशास्त्रीय विरोधों में समझकर रह गए और सामाजिक समस्याओं से उनका ध्यान हट गया। इसी कारण इस्लाम ने लोगों को आकर्षित किया। पुनः, धर्म की अंतर-सांसारिक और प्रतिक्रियावादी प्रकृतियों की मर्त्सना के कारण साम्यवाद प्रायः आकर्षण-केन्द्र है। अपने धर्मशास्त्र प्रायः चल रही सामाजिक धार मानवीय जाति के साथ सामंजस्य स्थापित करके मानवता की श्रेष्ठतर व पूर्वतर जीवन की प्राप्ति के प्रयत्न बनेगे।

इसा बूझता धारम है एक नई मानवजाति का प्रथम उत्पन्न पुरुष। ज्यों-ज्यों पृथ्वी पर धार्म्यात्मिक राज्य का प्रसार होता जायगा इसा प्रकृति और अतिप्रकृति में ऐक्य स्थापित कर सकेंगे—जिस प्रकार वा ऐक्य प्रायः विचारों और अन्तु-प्रकृति में स्थापित हो चुका है—और उसमें भी प्राये बहु प्राण्ये। जिस प्रकार विश्वपूर्व जीवन प्रथम में निम्नतर ऐंग्रिक जीवन को पार कर जाता है। एक ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार स्वयं को और अपने संसार की पुनर्निमित्त करने वा मानवीय प्रयत्न उसकी असफलताओं को महानता और विधिप्यता प्रदान करता है। इसाइया की प्राणा है धार्म्यात्मिक व्यक्तित्व की एक नई जाति का मूलन जिसके प्रथम सधर्म्य व ईसा तथा प्रथम सम्त। वे पृथ्वी पर सत्य के समुद्रा हैं धार्म्यात्मिक धर्म का प्रसार करनेवाले ईश्वरीय उपकरण हैं। मूलन की प्रक्रिया अत्र भी जारी है। यह नमान्य नहीं हो गई समाजि की गह पर है।^१

५. निष्कर्ष

हम मार्क्सवादी मानवतावादी नये युग के उदात्त में हैं। प्राणा की उत्तेजना है प्राणाधर्मों की हृषयन है जैसा प्रायःकाल में अत्र और की क्रिया पृथ्वी को जमाने ही होता है। हम प्राणा न चाहें रहने एक संसार मही है और हमें मानव

१. 'बोवात्मिक' १२।

२. वे दिव की न मुझे दे वर मगर और धर्म

मानव को मान्य होने के रोष विषय करने से।

के ज़रूरत और भाग्य की समान धारणा प्रयत्नानी है। विभिन्न राष्ट्रों को मानव जाति के सदस्यों के रूप में एक-दूसरों के समान नहीं बल्कि सम्यता का बिकसित करने के प्रयास में संसन्त मित्र-भागीदारों के समान रहना चाहिए। घनिष्ठ घासी राष्ट्र कम-बोर की सहायता करेवा और सारे मानव स्वतंत्र राष्ट्रों के बिरतन्यापी संघटन के सदस्य होंगे। यदि हम गिरिबन्धवार व्यक्तियों के मिदन्तन और जब तक प्रकल्पनीय शक्ति-श्रोतों के घटते से बच गए तो हम सभी जातियों को एकत्र करके एक उदार, बिघाम सहयोगी समाज की स्थापना कर सकेंगे। हम समझ लेते कि सम्यता के बिकास में किसी जाति या जाति-समूह का एकाधिकार नहीं रहा है। हम सभी राष्ट्रों की उपसम्पत्तियों को मान्यता देंगे उनके लिए प्रसन्न होंगे और इस प्रकार साधनमय बन्धुत्व को प्रोत्साहन मिलेगा। विशेष रूप से धार्मिक मामलों में तो हमें दूसरे-दूसरों और युवों के मनीषियों के महत्त्वपूर्ण योगदान को तो प्रकल्प समझना चाहिए।

युद्ध की अनुपस्थिति ही शांति नहीं है यह एक सुबुद्ध बन्धुत्व-भावना का बिकास है, प्रत्येक लोगों के बिचारों और मूल्यां को ईमानदारी से समझने का प्रयास है। मानव के मान्तरिक जीवन की महत्ता का ज्ञान बढ़ता है तो शैतिक युवों के घन्तुर का महत्त्व कम हो जाता है। हमें पूर्व और पश्चिम के प्रतिसमीपी संघर्ष की ही नहीं प्रतिसमीपी ऐक्य की बिचारों के मिशन की माननाओं के संयोग की धार रखना है।

मानवता का उद्भव एक स्रोत से है जहाँ से इसके घनेक धाकार हो गये है। जब वह टूटे हुए को जोड़ने के लिए प्रयत्नशील है। पूर्व और पश्चिम का घसगाव समाप्त हो चुका है। नई दुनिया का एक दुनिया का इतिहास प्रारम्भ हो गया है। धारणा है कि यह इतिहास व्यापक बहुरंगी और दुर्लभयुक्तमुक्त होगा।

जब कभी भीतो मूर्च्छाएं भर रहा था
 पश्चिम में घण्टर दुर्धिमेष का लक्षण था।
 और कभी केनेवा में केमिनल ईस्कर की हजा के शारे में ज्वरेता सेते वे
 कुद के सुध पर ईस्कर की ल्वागलमल मुस्काव थी।
 औरब हमारी भरस्करसम्बद्ध दुर्धिमेष शब्दी बोयी हो गई है
 कि हमसे मोखूद एक डिटकर का जर्ब है उपका शकलपल।
 सारे संसार में किन्ना का लक्षण है
 और कस्सेन तथा स्पेस रोना को कुद का मन है।

—मार्शल निकनर लेटर्स २ मल्लक प्रथम और डिटोव १९४१, पृष्ठ १४ १२।

मुप्त (छत्रों और छातर्षी घटाया) महावीर (नबी घटायी) धीपर (बसबी घटायी) भास्कर (बाख्खी घटायी) ।

श्रीपथविज्ञान का जन्म बहुत पहले हुआ । बुद्ध के युग में भारतवर्षवासियों में घण्टापथ व और जगत घण्टापथकृत कमजोर समझायीत मुक्तकारी (घण्टा बनारस) में घिटाक व । बाह के विज्ञानिया में घण्टाविज्ञान पर जोर दिया— घण्टाकाप में घांत उतरने पैडू औरकर बरबा पैडा करण मूत्राघय की पथरी घातिपाविन्द की घण्टाविज्ञान प्रचलित हुई । घण्टाविज्ञान के १२१ मिस घीठारों का वर्णन मिलता है । मनेगिया और मण्डरों का सम्बन्ध मानूम किवा जा बुका या और मनुमह के रानियों के मुख में घर्करा की उपस्थिति मानूम थी । कश्मीर में घनने और कनिष्क के समय में जीवित (१२ - ११२ ईसवी) चरक ने घानेय के एक सिष्य घनिष्क के घाचार पर एक बंध की रचना की । ब्रह्मसूत्र (पिता और पुत्र) तथा मायबकर व बुन्द इस सत्र के घण्टा व्यक्ति थे ।

हिस्ती का सीहू-नुम सगमग ४ ईसवी में खड़ा किया गया था । इसकी ऊंचाई २३ फुट में घण्टा है । तथा घाघार का व्यास १६ ४ इंच है जो कम होते होठ १२ ० ४ इंच हो जाता है । यह विपुळ मोर्चा न घानेघाने लाड़े का बना है । इसे ने कैसे बना घके ? घुस्तामबंज की बुद्ध की मूर्ति विपुळ ठांवे की हो परतो से बनी है जो ७॥ फुट ऊंच और एक टन भारी एक घण्टाभाग पर गड़ी गई है । ये इंडीविपुळ के कौमस के घाटचर्वजनक नमुने है ।

मंस्कृत व्याकरण का विकास श्रीक व्याकरण से पहले हुआ था । यास्क ने देवों की घुत्पतिविषयक टीका 'निरुक्त' लिखी । यह पाणिनि-नाम में पहले १००-७० ईसापूर्व के घासपास की है । भाषाविज्ञान और व्याकरण में पाणिनि का नाम सर्वोपरि है । ये छत्रों सत्री ईसापूर्व के जतरार्ध में हुए थ । पाणिनि ने यास्क और लीनक को घण्टा घदम माना है । उनकी 'घण्टाघ्यायी' एक हीर्षकामीत भाषाविज्ञानी विकास का हीर्षविलु है । पाणिनि में निमयों को स्वीकार और घण्टाघ्यायी का व्यक्ति किया है । उनकी घण्टाघ्यायी में समयम ४० सूत्र हैं । केवल एक सेबक घकस्मान् इनका घाविष्कार करके घुसगों पर साध नहीं सकता था । यह घताम्बियों की बुद्धि है और पाणिनि परम्परागत व्याकरण को घण्टिम घसकार प्रदान करमबाध बैयाकरण ने और उनकी कृति में घनेक घदजों के नाम है । घाणी मुद्धता और बिस्तार के कारण ही ये घण्टे घदजों से घाग बह घये ।

पर्वजमि के घनुसार, पाणिनि की कृति घसी प्रकाश सम्पादित एक महान घण्टा है ।^१ काव्यायन ने घाणी टिप्पणियों 'वातिक' का प्रघयन पाणिनि के सूत्रों

१ पाणिनिर्ण मन्त्र सुधिरितम् ४ १.३.१; २ ३.५२ । ऊर्ध्वे घण्टिके तामन्विके एत मन्त्र

इंडोनीशिया ३१

ईरान ३३ ३५, ५० ६५, ७० ७६
७६ईसाई धर्म १६ ३५-३७ ४४ ४६
४७ ६४ ६५ ६६-१०७ ११२
११७ १२० १२३-१२४ १२७
१३८ १४१ १४३-१४४

ईसाई धर्मयुद्ध १८-१०१ १४४

ईशानसीह १०-११ ४७ ५१ ७१
७४ ७७-८० ८७ ११३ १४२,
१४६, १४८

ईसाई विद्यालयी १२३-१२४

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ३६

उपनिषद् २० २१ २२, २४ २५, २७
२८ ३८ ४५, ६७ ६९ ७१ ७८
८२ १२०

ए धार बालेस १०६

ए० एच० गाडिनर ७३

ए एडवोकेट १४२

एकहार्ट ८६, १०२

एडवर्ड प्रथम १००

एडवर्ड वेंटवर्थ बिपटी ६-१० १२१

एडवर्ड हुंटेन ११०

एडविन बेचन ७

एच एम० स्टाडविन ७६

एच बी० युड १६७

एच रिगेन ६७

एनी बेनेट ४५

एनेलागारा ५३

एपॉलोबिस्ट्स ६२

एपीक्यूरस ६४

एपीडेनिमस ६६

एफ एम० कॉर्नेफर्ड ३७

एम० रिधी १२३

एम स्किनर, १४६

एम्पी डोकलीज ४० ५५, ५६, ६१ ६४

एरिस्टोफेस ३४

एरिवाकर ७२

एन्सुपिडियाई एहस्वात्मक धर्म ३६
७२ ७७

एस० ए० कुक ७०

एस० बी० एड० ब्रीडन ७७

एस० वंसीमान १०० १४४

एसाइमस ३६

एथेस १२६

ऐडम रिमथ १२६

ऐम्पटर्डम ११३

ओ० एम्पर, १७

ओमिबर कामबेस १२६, १४१

ओयोगिफ्र बान्ति १२६

पंगारो, १७ ३१

पुण्य २१ २२, ४३ ४५, ५८

पनिफ १३१

पवीर ३३

पयोदिया ३१

पुस्तकमालिका

कल्पपूजियम १३, २६, ३६-४१ १२६
१४७

काष्ठ ११३-११७

काशानिम ११८

काम मार्ग ११६-१२१ १२३ १२६
१२८

कार्तिकीय १३ १६

कालिदास १७

कौर्त्त-तृतीय ६६

कौर्त्त-पञ्चादश, ७७ ६३ ६४ ६६, १२६

कौर्त्त-पिपा ६६

कृष्ण ३२ ६६ १२३

कुम्भनतुनिया १०१ १ ३

कुम्भनतुनिया साम्राज्य ६४ ६६, ६७
१०१ १ ३

केप्लर, १ ८

कैवल्यकर्म ३६, ४२, ६४ ६८-६९,
१०० १०२ १ ३, १०४ १०५,
१२६ १२७ १४७-१४८

कोपेनिकम १ ८

कोरिया १३२

कोयबट, १३२

कौटिल्य ११८

कौटिल्य ११४

कृष्ण ७८

काजा ३४

ग्यातो १ ४

ग्यावर्ना बुला ११२ १३६

गिबल ६६, १०

गिबर्ट मटे, १४

प्रेयसी महात १०६

पेटे १४० १४२

पेननर १ ७

पैमैटी १०७

पैलीमियो १०० १०८ १३६

पान्गुल ६६

पार्मि टाबिन १०६

पार्मि टियर एंड्रूज १० ६

पार्मि बियट १२३

पासा मेम १०६

पीन १६ ३१ ३७-४२, ४४ १०७
१२३-१२४ १२६

पुमाह्लू, ४२

पैतन्य ३३

पयाहित्य १३२

पहांगीर ३३

पत्रूप ३१

पर्मनी १२८ १३०-१३१

पस्तिन ७७ ६३

परफोब २२

परबुस्त ३३ ७६, ७६

पापान ३० ३१ १२३ १२४

पापा ३१

पॉम कैस्विन १०६ १ ७

पॉम आइबोस्टॉम (सल) ६३

पॉम इ बीटिस्ट ७१ ८०

पॉम पर्वा १०३

पॉम मार्ग (सर) २६

पॉम मार्ग (सर) १८ २०

पॉम वाइकिंग, १०३

जॉन हंस १ २
 जॉर्ज मेंडेल ११
 जी० एम० ट्रेवेलियन १४१
 जी० फ्रेरेरो १०६
 जुझाबाद ७०-७१ ७६-८ ८२ ८३,
 ९३ ९७ १२६, १३८ १४१
 जूमियन ७७
 जे० ए० स्टीवर्ट ६४
 जेनेवा १०६
 जे० बनेट ६०
 जेफर्सन १३
 जेनो ६८
 जेम्स बर्कहार्ट ३४
 जोषाधा द्वितीय (सम्राट) १६
 जोसेफ ग्रीन्गे १ १
 जोसेफ सिस्टर ११०
 जोसेफिन ६९ ७०-७१ ७८
 जोहान, ९८
 टाडपो बाहे, १ ८
 टाडवेरियल ७३
 टामर, १ २
 टानेमी किनाडेल्स ६७
 टॉमस एबिन्नास १०२
 टॉमस हर्बर्ट १०७
 टी एच० हफ्लेने ११
 टीगटन ३४
 टम्स स्कोटन ९८ १०२
 टम्बू० नाडिविन ११८
 टम्बू जीवर ९१ ९३
 टायनीनियार्थ फर्म ५६ ५८, ६०

टायनीसियस (राजकुट) ६७
 टायफलीथियन बेमेरियस ७७
 टिन्नरामली ११०
 टिन डज १४२
 टी एच० मिहार-बास्टो ९, १०
 टोमास ६७
 टोन मैम्पूज ८३ ९४
 टेमोन्नाइटस ३१ ६४
 टेमोन्सनीज ६४
 टेविड सिक्विम्टन १२४
 टेविड हार्टमी ११३
 टायोबाद ३७-४२
 टायो १०४
 टिम्बल ३१
 तीरयो १०४
 तुकायम ३३
 तुमतीदाय ३३
 तुर्क ९८-१०
 तुफिरतान ३१
 तु-कुट, ४०
 त्रियोडोमियस ७७ ९३
 त्रियोन्स्टस ६७
 त्रियोमोक्रियम घोलापटी ४३
 थराप्पुनीज ७०
 थेम्स ३१ ३२, ६४
 थुमीडाइडन १३ २४
 थयानन्द सरस्वती ४२
 थारू ३३
 थारुगिबोह, ३३

- बफम ११८
 बर्कल ११४ ११५
 बर्टोल्ड रतम ६४
 बर्बर घाक्रमध ४० ६२
 बर्मा ३१
 बहामुप्त १५०-१५१
 बहामुम ४५
 बारबरा बार्डे १०६
 बाम यमावर तिमक ४५
 ब्राह्मण बर्म २५, ३१ २८-३६
 बॉन्निमेली १०४
 बिन्मुसाट, ६६
 ब्रिटेन ३६
 बी० वीसित १२५
 ब्र १६ २० २६-३२ ३७ ४१ ४६
 ६७ ६८ ७० ७१ ७६ ७६,
 १२५
 बीसोमिया १६ ३१ ६६ ७२ ७६
 १६६
 रज बॉन ह्यूजेस ८१
 केनोबेन्दुपूष १ २
 तारोबुबुद, १७ २१
 तिमोना १०३

 तपकवृगीता ४० ४५, ७१
 तर्कहति, १२२
 तारम १६, १७ १८ २० २१ ३१
 ३२ ३४ ३६ ३६ ४३ ४६ ४५
 ६७ ६८ ६६ ७४ ७६ ७८ ६०
 १ ७ १०२ १२३ १ ६ १३५,
 १५०-१५२
 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ३६ ४३

 माम्बर १२१

 मकबूतिया ५५, ६७
 मनी ४७
 मलय प्रायद्वीप ३१
 महात्मा गांधी २७ ४५
 महावीर २६ १६१
 माइकेल फ़ैरबे १०६
 माइकेल्स जेलो १०४
 मापी (बुद्धिमान व्यक्ति) ७८
 मातुमत २६-३०
 मायब ३२
 मायबकर, १२१
 मानीफीबाब ३३
 मास्वस १०६
 मार्कस मारेलियस ६८
 माटिम नुपर १०५
 मालीगुक्त ११४
 मिथाक २२ २३ ४७ ७६-७७
 मिय १५ १६ ४७ ५० ५१ ५२ ६०
 ६५, ६७ ६६, ७० ७२ ७७ ८६,
 ६५, ६६
 मिटो (मॉर्टे) ३६
 मुहम्मद २६ १०१
 मेनाम्बनीज ६७
 मेपांडिग ११७
 मेनाम्ब घववा मिनिम्द (गम्राट्) ६८
 मेमोगोटामिवा ३५, २०
 मेरगिल विरवविद्यालय ६
 मेरगम ६
 मेरियावती १ ६ १०८
 मोहनजोदड़ो १८, १६, २०

मोस्मु, ४१

मौर्य ६६

मंगोल ४७

महलसम ७१ ६६

महूदी ४४ ४६, ४७ ४८ ४९ ५० ६६-

८१ १४६

पास्क १५१

पूकिलड ६७

पूनाम १३ १७ १६ ४६-६८ ७२,

७४-७६ ६१ ६२ ६३ १०३

१ २, १२१ १२६ १२७ १२६

१३१ १३८ १४६, १५०

पूनानी परम्परबादी अर्थ ६५, ६८-

६६ १०१ १ ४ १२६

पूरिपिडीड ४६ ५७ ५६

पूगेवियस ६६

पोग्रान्स केपलर १०८

पोय २

रबीन्द्रनाथ ठाकुर, ६०

राष्ट्रेल १०४

रामकृष्ण ३४ ४५

रामबास ३३

रामानन्द ३३

रामानुज ३२

राममोहन राय ४५

रॉजर बेकन ६८ १ २, १११ ११२,

११३

रॉबर्ट कोच ११

रॉबर्ट प्रॉस्टेडे ११२

रॉबल सोमायनी १ ७ १०८ ११

रिवाडी १२६

रिचर्ड प्रथम ६६

रीसेस्ट (बॉकलर) ४१

रूमी ३४

रुस १२३ १२७-१२८ १३० १३२

१४६

रूसी शान्ति १२८

रेम्बा १२५

रैम वकार्त ११२ ११३

रोम ४७ ४५ ६ ६६, ६८ ७१

७४-७७ ८० ८६ ६४ १०३

१०५ १२७ १२६, १३८ १४७

१५०

रोमक १५०

साभोले १६, ३८

साईन्ज १०६

साप्पास १०६, ११८

सामार्च ११८

सॉफ ११४ ११५

सॉबिकन गॉबिटिवियस २४

मिनाइयस ६७ ११८

मियोगार्डो वा मिषी १ ४

मियो प्रथम १ ६

मिसिनियस ७७

मीन्ज ४२, ११४ १२६

मुई नवम १

मुई पास्म्युट, ११०

मुबकिय फ्लूजेस्टीन १४२

मुई सप्तम ६६

मेनिन १२६ १२८

मेवाइसिये १ ६

वेस्ली स्टीडन ४३	वैजय ३४
लोजिकल पॉजिटिविज्म २४	
स्पूनटियस १०७	संकर, ३२
बर्द्धवर्ध ११७	सर्ववर्ष १२२
बर्जिस ७४	द्यास्तियेव ३०
बराह्मिहिट, १२	साहजहा ३३
बसिष्ट १४	धिया ३४
बाग्मट्ट १२१	सिब २ ३१ ४४
बामन १४२	घौनक १२१
बाभेपर ११४ ११२, १२६ १३२	पी भरविन्द ४३
बिल० डकूरेट २०	बीचर, १२१
बिलियम (ओबम के) १ २	सम्मती ३३
बिलियम ओम्स (सर) ४०	सतावीन २२
बिलियम मेप्पिन १४६	संजन ३२
बिलियम मॉ १४४ १४३	संयुक्तराज्यधमरीका ३१ १११ ११७
बिल्लेस्म बुट ११	संयुक्त राष्ट्रसंघ १३७
बिबलवेवठावासी १००	साहभाकस १४६
बिबलमुक्त (प्रथम) १२०	साहमोनाइस २४
बिबलमुक्त (द्वितीय) १२४ १३ -१३१	साहरस ६२ १४६
१४१	साही ३३
बिष्णु, ३१ ४४	साम्यवाद १६, ११२-१२० १२६-
बिस्टन पश्चिम (सर) १३२ १३३	१३३ १४०
बिज्ञान १०७-११० ११०-११२	त्रिकम्बर महान ६३-६५ ७२
१२२, १२६ १३६-१३६ १३०-	मिन्मरिया ६७ ७२ ७३ ७६
१३२ १४० १४०-१४२	मिपुलाम्यता १७ १८, २६
बी गौडन चान्द १४, १२ ४२	मिनेरिया ११३-११४ १३२
बेनाम ३३	नीरिया ३१ ६६ ७० ७२ ७४ ७६,
बेनिग १०	२१ १२०
बेमानियम १०७ १ ५	सी बोन्क ६२
बेन्ट बोट (विगत) १७	मुद्रण ६७ ६१-६३ ६२
बैरिड साम्यता २१-२२ ४२, ४८ ६२	मुन्नी ३८

मुभेमात्र ७०
 मुसुन १५१
 मूषीबाद ३३
 मूर्य १५०
 मूमो १ २
 मीगापर, ११७
 मेस्सुनय, ६७
 मेंट घबानासिमस ८८ ८९
 मेंट प्रमेम १०१ १४७
 मेंट प्रम्बो १४१
 मेंट प्रोगलीन ८१ ८४ ८७ ९२
 १४१
 मेंट इरेमांस ८५, ९२
 मेंट एण्टमी ८९
 मेंट क्कोर्मेट, ८५, ९१ ९२, ११८
 मेंट प्रेपटी ७५
 मेंट प्रगरी (म्यासा क) ९१
 मेंट जॉल ७३ ८७ १४५
 मेंट जेण्ड १४१
 मेंट टॉमस १५
 मेंट टॉमस एक्विमास, ८४ ८५ ९८
 १०२, १०३
 मेंट डेरैसा १४३
 मेंट डेरिस ९२
 मेंट पॉल १५, १२, ७६ ८३ ८६, ८७
 ८८ ९१ ९४ ११६
 मेंट प्रीन्ट, ३५, ८२
 मेंट प्रीमिंग नैबियर, १६, १२३
 मेंट बर्नेर्ड (कॉप्यरवा के) ९९, १०१
 १ ६
 सोओफनीब १४
 सोमोन ५१

मागापटी प्रांठ जीमम १०६ १२३
 मोमापटी प्रांठ वेन्गम ११७
 म्यालिन ११७
 म्यात्र ऋषे १ ०
 म्डीकेन मीम १५
 स्टोडर ६४ ६८
 म्नेन १०१ १ ३ १ ४ १०६

हकणा १८
 हर्बर्ट स्पॉर, ११०
 हन्डी डेबी १०९
 हम्मुरबी २१
 हर्ष ३१
 हगरी १४६
 हाइजोवन बम ११ १११
 हाडिज १३
 हाम (डॉक्टर) १९
 हामेडी (प्रोजेक्टर) १२९
 हार्बी १ ७
 हिन्दू धर्म १६ २० २६ २८ २९
 ३२ ३३ ३६ ३७ ४५, ७१-७२,
 ७८-७९, ९० १२३ १२५, १४४
 १५०-१५२
 हिप्पार्कस ६७
 हिमालय १७-१८
 हिंसिपोर ३०
 हीरोक ११३-११७ १२८ १२६ १३५,
 १३२
 हुमन ९७ १०१
 हुप क्वाइलम ९२
 हुपस (आवर) १८
 हुरोरोटस २ ३८ ६

१६२

पूर्व घोर पश्चिम

हेरोड ७८

हीमड ३६

हेस्वेटियस ११५

रूम ११४-११५, ११६

होमेन ३०

होमर, २१ ४६ ५४ ५७ ६० ६३

विपिटक १२५

६४

० ० ०

